चेतन भगत

2 स्टेट्स

मेरी शादी की कहानी

दो स्टेट

चेतन भगत ने पांच बेस्टसेलिंग नॉवल लिखे हैं—फाइव पॉइंट समवन (2004), वन नाइट @ द कॉल सेंटर (2005), द थ्री मिस्टेक्स ऑफ़ माय लाइफ़ (2008), *2 स्टेट्स : द स्टोरी ऑफ़ माय मैरिज* (2009) और रेवॉल्युशन 2020 (2011)

चेतन की किताबें अपनी रिलीज़ के बाद से ही बेस्टसेलर्स की सूची में बनी हुई हैं। उन पर फिल्में भी बनाई गई हैं। द न्यूयॉर्क टाइम्स ने उन्हें 'भारत के इतिहास में सबसे ज़्यादा बिकने वाला अंग्रेजी नॉवेलिस्ट' बताया है। टाइम पत्रिका ने उन्हें 'दुनिया के सौ सर्वाधिक प्रभावशाली लोगों' की फेहरिस्त में शामिल किया है और अमेरिका की फास्ट कंपनी ने उन्हें 'दुनिया के शीर्ष सौ रचनात्मक लोगों' में से एक माना है।

चेतन भारत के शीर्ष अंग्रेजी और हिंदी अख़बारों में लिखते हैं और उनका फोकस युवाओं और देश की विकास संबंधी समस्याओं पर रहता है। वे मोटिवेशनल स्पीकर भी हैं।

चेतन ने वर्ष 2009 में अपने इंटरनैशनल इंवेस्टमेंट बैंकिंग कैरियर को अलविदा कह दिया, ताकि अपना पूरा समय लेखन और देश में बदलाव लाने की कोशिशों के लिए दे सकें। वे मुंबई में अपनी पत्नी अनुषा, जो उनकी आईआईएम-ए की एक्स-क्लासमेट हैं, और दो जुड़वा बेटों श्याम और ईशान के साथ रहते हैं।

चेतन के बारे में और जानने के लिए www.chetanbhagat.com देखें या उन्हें info@chetanbhagat.com पर ईमेल करें।

शायद किताबों के इतिहास में ऐसा पहली बार हो रहा होगा, फिर भी:

मेरे ससुरालवालों के लिए*

*लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं दब्बू या जोरू का गुलाम हूँ या मेरे पुरुषत्व में कोई कमी है।

आभार

दुनिया में कोई भी सृजन किसी एक व्यक्ति का काम नहीं होता। यह किताब भी अपवाद नहीं है। ड्राफ़्ट की ज़ेरॉक्स कॉपी बनाने वाले व्यक्ति से लेकर इस किताब को दुकानों तक पहुंचाने वाले डिलिवरी ब्वॉय तक, सभी की इसमें अपनी एक भूमिका है। फिर भी, मैं इन लोगों का शुक्रिया अदा करना चाहूंगा:

- मेरे पाठकों, यानी आपका, जिन्होंने मुझे आज इस मुक़ाम पर पहुंचाया। पिछली बार मैंने कहा था कि मैं भारत का सबसे लोकप्रिय लेखक बनना चाहता हूँ— और आप लोगों ने इसे संभव कर दिखाया है। शुक्रिया। कृपया अपना सहयोग जारी रखें और यदि मुमकिन हो तो अपने दिल में मुझे एक छोटी-सी लेकिन स्थायी जगह दीजिए।
- ईश्वर का, उनके प्रेम और आशीर्वाद के लिए।
- शाइनी एंटनी का, जो मेरी हर किताब की पहली पाठक और संपादक हैं। वे मुझे यह बताती हैं कि केवल किताब में ही नहीं, बल्कि ज़िन्दगी में भी, क्या कारगर है और क्या नहीं।
- अभिषेक कपूर का, उनके अद्भुत सुझावों के लिए। प्रतीक धवन, शांभवी किरावंत, रतिका कौल-हकसर और अनुषा भगत का, किताब की पांडुलिपि पर बेहतरीन टिप्पणियां करने के लिए।
- मेरे प्रकाशक रूपा एंड कंपनी का, मेरी कहानियों को देश पर में पहुंचाने के लिए।
- कॉलेज के दोस्तों, दोयचे बैंक और गोल्डमैन सैश के साथियों और मुंबई के मौजूदा मित्रों का।
- उन अख़बारों का, जो मेरे कॉलम छापते हैं और मुझे एक ऐसे नए प्रगतिशील भारत के बारे में अपने विचार पाठकों से साझा करने का मौक़ा देते हैं जिसका मैं लगातार सपना देखता हूं।
- उन फ़िल्मकारों का, जिन्होंने मेरी कहानियों से प्रेरित होकर उन्हें परदे पर जीवंत करने के लिए सालों मेहनत की।

मैं कुछ अन्य बातें भी स्पष्ट करना चाहूंगा। पहली बात यह कि कहानी मेरे अपने जीवन और पारिवारिक अनुभवों से प्रेरित है, लेकिन इस किताब को फिक्शान की तरह ही देखा जाना चाहिए। प्रामाणिकता के लिए मैंने कुछ वास्तविक स्थानों, व्यक्तियों और संस्थानों के नामों का भी उपयोग किया है, क्योंकि वे मौजूदा समय के सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रतिनिधित्व करते हैं और वे मेरी कहानी में भी मदद करते हैं। इसके पीछे मेरी और कोई मंशा नहीं है। मैं सभी दक्षिण भारतीयों से भी कहना चाहूंगा कि मैं उनसे प्रेम करता हूं। मेरी पत्नी इसे प्रमाणित कर सकती है। अगर मैंने आपके और पंजाबियों के साथ थोड़ा-बहुत मज़ाक़ करने की छूट ली है तो इसकी वजह यही है कि मैं आपको अपना मानता हूं। हम केवल उन्हीं लोगों के साथ थोड़ी हँसी-ठिठोली करते हैं, जिनकी हम फ़िक्र करते हैं।

इसी के साथ, मैं दो स्टेट में आपका स्वागत करता हूं।

प्रस्तवना

‘मुझे यहां क्यों भेजा गया है? मैं बिलकुल ठीक हूं,’ मैंने कहा।

उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। बस इशारे से बताया कि मैं अपने जूते निकालकर काउच पर बैठ जाऊं। उसका दफ़्तर किसी डॉक्टर के दफ़्तर जैसा ही था, बस उसमें दवाइयों की गंध, सर्दीलापन और ख़तरनाक औज़ार नहीं थे।

वह इंतज़ार करती रही कि मैं और कुछ कहूं। मैं थोड़ा झिझका और फिर बोलने लगा। 'मुझे पक्का पता है कि लोग यहां बड़ी-बड़ी मुसीबतों के बोझ तले दबे आते हैं। लड़कियां अपने बॉयफ्रेंड्स डंप कर देती हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि इसके लिए किसी दिमाग़ के डॉक्टर को दिखाया जाए। आपको क्या लगता है, मैं साइको हूं?'

‘नहीं, साइको मैं हूं। साइकोथैरेपिस्ट, टु बी प्रिसाइस। यदि तुम्हें हर्ज़ न हो तो मैं दिमाग़ के डॉक्टर की तुलना में साइकोथैरेपिस्ट कहलाना ज़्यादा पसंद करूंगी, 'उसने कहा।

‘सॉरी,’ मैंने कहा।

‘इट्स ओके,’ उसने कहा और कुर्सी से टिककर बैठ गई। उसकी उम्र तीस से ज़्यादा न रही होगी। उसे देखकर लगता नहीं था कि वह दिमाग़ की डॉक्टर, सॉरी, साइकोथैरेपिस्ट होगी। दीवारों पर टॉप अमेरिकी यूनिवर्सिटियों के सर्टिफिकेट कुछ यूँ शान से सजे थे, जैसे शिकारियों के घर बाघ के सिर सजे होते हैं। जी हाँ, एक और साउथ इंडियन ने एकेडेमिक्स की दुनिया में अपना झंडा गाड़ दिया था। डॉ नीता अय्यर, वेलडिक्टोरियन, वस्सार कॉलेज।

‘मैं हर घंटे का पाँच सौ रुपया चार्ज लेती हूं,’ उसने कहा। 'अब यह तुम पर है, चाहो तो दीवारों को घूरते रहो या मुझसे बात करो।'

मैं बिना किसी नतीजे पर पहुँचे बारह मिनट यानी सौ रुपए ख़र्च कर चुका था। मैं सोचने लगा कि अगर मैं जाना चाहूँ तो क्या वह थोडी-सी फ़ीस लेकर मुझे जाने देगी?

‘डॉ. अय्यर...

‘आप मुझे नीता कह सकते हैं,’ उसने कहा।

‘ओके, नीता, मुझे नहीं लगता मेरी प्रॉब्लम इतनी सीरियस है। पता नहीं डॉ. रामचंद्रन ने मुझे यहां क्यों भेज दिया है।'

उसने डेस्क से मेरी फ़ाइल उठाई। 'देखते हैं। डॉ. राम ने मुझे यह ब्रीफ़ किया है—मरीज़ को नींद नहीं आती, पिछले एक हफ़्ते से उसने किसी से संपर्क नहीं किया है, वह कुछ खा भी नहीं रहा है और उसने ख़ुदकुशी करने के बेहतरीन तरीक़ों के बारे में गूगल-सर्च की है।’ वह रुकी और भौंहें उठाते हुए मेरी तरफ़ देखा।

‘मैं गूगल पर हर तरह की चीज़े सर्च करता हूं,’ मैंने बुदबुदाते हुए कहा, 'क्या आप ऐसा नहीं करतीं?'

‘रिपोर्ट कहती है कि महज़ उसके नाम, उसके आस-पड़ोस के लोगों या उससे जुड़ी किसी भी चीज़, जैसे उसकी फ़ेवरेट डिश का ज़िक्र भर होने पर ही आपके भीतर कई तरह की भावनाएँ उमड़ती हैं। आंसू, गुस्सा, झल्लाहट... किसी भी तरह की कोई भी भावना।'

‘मेरा ब्रेक-अप हुआ है। ऐसे में आप और क्या उम्मीद कर सकती हैं?’ अब मैं असहज होने लगा था।

‘यक़ीनन, अनन्या से ब्रेक-अप, जो मयलापुर में रहती है। उसकी फ़ेवरेट डिश क्या है? कर्ड राइस?'

मैं सीधे उठ खड़ा हुआ। 'डोंट, 'मैंने कमज़ोर-से स्वर में कहा। मेरा गला रुंध रहा था, लेकिन मैं अपने आंसू पी गया। 'डोंट,’ मैंने फिर कहा।

‘डोंट क्या?’ नीरा ने मुझे कुरेदते हुए पूछा, 'माइनर प्रॉब्लम, है ना?'

‘माइनर की ऐसी-तैसी। यहां मेरी जान पर बन आई है।’ मैं हैरान-परेशान-सा खड़ा रहा।

‘क्या तुम साउथ इंडियंस समझते भी हो कि इमोशंस क्या होती हैं?'

‘मैं इस नस्लवादी कमेंट को नज़रअंदाज़ कर रही हूं। तुम खड़े-खडे बात कर सकते हो, लेकिन यदि तुम्हारी कहानी लंबी है तो तुम काउच पर आराम से बैठकर भी बोल सकते हो। मैं पूरी कहानी सुनना चाहती हूं,’ उसने कहा।

मैं अपने आँसुओं को नहीं रोक सका। 'आखिर यह मेरे साथ ही क्यों हुआ?’ मैंने सुबकते हुए कहा।

उसने एक टिशू आगे बढ़ाया।

‘कहा से शुरू करूं?’ मैंने कहा और काउच पर ऐहतियात से बैठ गया।

‘वहीं से, जहाँ से हर प्रेम कहानी शुरू होती है। जब तुम उससे पहली बार मिले थे, ‘उसने कहा।

उसने परदे खींच दिए और एयर-कंडीशनर चालू कर दिया। मैंने बोलना शुरू कर दिया। अब मैं अपने पैसों का सही इस्तेमाल कर रहा था।

अंक 1 : अहमदाबाद

1

वह आईआईएमए मेस की लंच लाइन में मुझसे दो क़दम आगे खड़ी थी। मैंने आँख के कोने से उस पर नज़र डाली। मैं सोच रहा था कि आखिर इस साउथ इंडियन लड़की के इतने चर्चे क्यों हैं।

उसने जैसे ही किसी भूखे रिफ़्यूजी की तरह अंगुलियों से स्टील की प्लेट पर थपकियां देनी शुरू की, कमर तक आने वाले उसके बाल लहराने लगे। मैंने ग़ौर से देखा। उसकी गोरी-सी गर्दन के पीछे वाले हिस्से में तीन काले धागे थे। देश के सबसे पढ़ाकू बी-स्कूल में एक लड़की ऐसी भी थी, जिसे सजने-संवरने से कोई ऐतराज़ न था।

'अनन्या स्वामीनाथन–फ्रेशर बैच की बेस्ट गर्ल,' सीनियर्स पहले ही डोर्म बोर्ड पर उसका नामकरण कर चुके थे। दो सौ स्टूडेंट्स की बैच में केवल बीस लड़कियां थीं। उनमें भी गुड लुकिंग लड़कियां इनी-गिनी ही थीं। आखिर आईआईएम में लड़कियों का चयन उनके लुक्स के आधार पर नहीं होता। उनका चयन इसलिए होता है, क्योंकि वे देश की 99.9 फ़ीसदी आबादी की तुलना में ज़्यादा तेज़ गति से मैथ्स की प्रॉब्लम्स सुलझा लेती हैं और सीएटी पास कर लेती हैं। आईआईएम की अधिकांश लड़कियां मेक-अप, फिटिंग कपड़े, कॉन्टैक्स लेंसेस, फ़ेशियल हेयर रिमूवल, बॉडी ऑडर जैसी तुच्छ चीज़ों से परे होती हैं। ऐसे में यदि भूल से अनन्या जैसी कोई लड़की आईआईएम में आ जाए तो वह पुरुष यौन हॉर्मोन्स से भरपूर और स्त्री यौन हार्मोन्स की किल्लत से जूझ रहे हमारे कैम्पस के लिए फ़ौरन सपनों की रानी बन जाती है।

मैंने कल्पना की कि मिस स्वामीनाथन को पिछले एक हफ़्ते में लड़कों की जितनी अटेंशन मिली होगी, उतनी उसे पूरे जीवन में नहीं मिली होगी। लिहाज़ा, मैंने मान लिया कि वह पहले ही बहुत उखड़ी हुई होगी और ऐसे में उसे इग्नोर करना ही ठीक होगा। स्टूडेंट्स ऑटो-पायलट पर इंच-दर-इंच आगे सरक रहे थे। ऊबे हुए किचन स्टाफ़ को इस बात की कतई फिक्र नहीं थी कि वे क़ैदियों को खाना परोस रहे हैं या आने वाले कल के सीईओज़ को। वे एक के बाद एक करछियां भरकर वह तरल पदार्थ स्टूडेंट्स की प्लेट में उड़ेले जा रहे थे।

ज़ाहिर है, मिस बेस्ट गर्ल को थोड़ी तवज्जो की ज़रूरत महसूस हो रही थी।

'यह रसम नहीं है। यह और चाहे कुछ भी हो, लेकिन यह रसम तो क़तई नहीं है। और वह क्या है, वह गढ़ा पीला पदार्थ?'

'सांभर,' मेस वर्कर ने लगभग गुर्राते हुए कहा।

'ऊह, कितना गंदा लग रहा है! तुमने यह कैसे बनाया है?' उसने पूछा।

'तुम्हें सांभर चाहिए या नहीं?' मेस वर्कर ने कहा। उसकी दिलचस्पी रेसीपी पर बहस करने से ज़्यादा अपना काम ख़त्म करने में थी।

मैडम सोचती रहीं। हमारे बीच खड़े दो लड़कों ने काउंटर की ओर प्लेटें बढ़ा दीं, बिना कोई टीका-टिप्पणी किए खाना लिया और आगे बढ़ गए। अब मैं उसके ठीक पीछे था। मैंने कनखियों से उसे देखा, यक़ीनन, वह औसत से बेहतर थी। वास्तव में वह औसत से कहीं बेहतर थी। वास्तव में आईआईएमए के स्टैंडर्ड्स से वह कहीं ऊपर थी। उसके फ़ीचर्स पेरफ़ेक्ट थे। आखें, नाक, होंठ कान सभी सही आकार के थे और सही जगह पर थे। आखिर किसी व्यक्ति को ये चीज़ें ही तो ख़ूबसूरत बनाती हैं–उसके शरीर के सामान्य हिस्से–फिर भी कुदरत अक्सर इसमें गड़बड़ क्यों कर जाती है? उसके माथे पर सजी छोटी-सी नीली बिंदी उसकी आसमानी और सफ़ेद सलवार कमीज़ से मेल खा रही थी। वह श्री देवी की स्मार्ट कज़िन जैसी लग रही थी।

मेस वर्कर ने वह पीला पदार्थ मेरी प्लेट में परोस दिया।

'एक्सक्यूज़ मी, मैं इनसे पहले हूं,' उसने मेस वर्कर को अपनी बड़ी-बड़ी आत्मविश्वास से भरी आँखों से बेधते हुए कहा।

'आप चाहती क्या हैं?' मेस वर्कर ने भारी साउथ इंडियन लहज़े के साथ कहा। 'आप रसम को रसम मानने को तैयार नहीं हैं। आप मेरे सांभर को देखकर मुंह बना रही हैं। मैं सैकड़ों स्टूडेंट्स को खाना खिलाता है, वे तो कभी कोई शिकायत नहीं करते।'

'और इसीलिए तुममें कोई इंप्रूवमेंट नहीं है। शायद उन्हें शिक़ायतें करनी चाहिए,' उसने कहा।

मेस वर्कर ने सांभर की देगची में कड़छी पटकी और हाथ फेंकते हुए बोला, 'आप चाहती हैं कि मेरी शिक़ायत की जाए? जाइए, मेस मैनेजर के पास जाइए और मेरी शिकायत कर दीजिए... आजकल के स्टूडेंट्स को तो देखो,' मेस वर्कर ने सहानुभूति की अपेक्षा के साथ मेरी तरफ़ देखा।

मैंने लगभग सिर हिलाकर सहमति जताई।

उसने मेरी तरफ़ देखा। 'क्या तुम यह खा सकते हो?' वह जानना चाहती थी। 'कोशिश करो।'

मैंने चम्मचभर सांभर लिया। गर्म और नमकीन, वह यक़ीनन बहुत लज़ीज़ नहीं था, लेकिन यदि आपके पास और कोई विकल्प न हो तो आप उससे अपना काम चला सकते थे। मैं लंच के तौर पर उसका इस्तेमाल कर सकता था, आखिर मैं होस्टल में चार साल जो रहा था।

बहरहाल, मैंने उसके चेहरे की ओर देखा। उसके चेहरे पर गुलाबी रंगत आ गई थी और वह अब और ख़ूबसूरत लग रही थी। मैंने पचास-एक साल उम्र वाले मेस वर्कर से उसकी तुलना की। मेस वर्कर ने लुंगी पहन रखी थी और उसकी छाती पर सफ़ेद बाल देखे जा सकते थे। संशय की स्थिति में ख़ूबसूरत लड़कियां हमेशा सही विकल्प होती हैं।

'वाक़ई, बहुत ख़राब है,' मैंने कहा।

'देखा,' उसने बच्चों सरीखे उत्साह से कहा।

मेस वर्कर ने मुझे घूरकर देखा।

'लेकिन मैं इससे अपना काम चला सकता हूं,' मैंने उसे सांत्वना देने की कोशिश करते हुए आगे जोड़ दिया।

मेस वर्कर धीमे-से कुछ बुदबुदाया और प्लेट में ढेर सारा चावल उड़ेल दिया।

'आपको जो पसंद हो, वह ले लीजिए,' मैंने उससे नज़रें बचाते हुए कहा। पिछले कुछ दिनों में पूरा कैम्पस उसे आंखें फाड़-

फाड़कर देख चुका था, मैं उन सबसे अलग नज़र आना चाहता था।

‘मुझे रसगुल्ले दे दो,’ उसने मिठाई की ओर इशारा करते हुए कहा।

‘मिठाई खाने के बाद मिलेगी,’ मेस वर्कर ने कहा।

‘तुम क्या मेरी मां हो? मेरा लंच हो गया। मुझे दो रसगुल्ले चाहिए,’ उसने ज़ोर देते हुए कहा।

‘एक स्टूडेंट को एक ही रसगुल्ला मिलेगा,’ उसने उसकी प्लेट में रसगुल्ले वाली कटोरी रखते हुए कहा।

‘ओह, कम ऑन, इस गंदे सांभर के लिए लिमिट नहीं है, लेकिन जो इकलौती चीज़ खाने लायक़ है, उस पर पाबंदियां हैं,’ उसने कहा। क़तार लंबी होती जा रही थी, लेकिन क़तार में खड़े लड़कों को कोई ऐतराज़ न था। आखिर उन्हें बैच की सबसे ख़ूबसूरत लड़की को निहारने का एक जायज़ मौक़ा जो मिल रहा था।

‘मेरा रसगुल्ला भी इन्हें दे दो,’ मैंने कह तो दिया, लेकिन कहते ही मुझे ज़रा-सा अफ़सोस भी हुआ। वह तुम्हारे साथ कभी डेटिंग नहीं करेगी, उल्टे तुम्हारा एक रस्सगुला भी ज़ाया हो जाएगा, मैंने ख़ुद को कोसते हुए कहा।

‘मैं तुम्हें एक रसगुल्ला दे रहा हूं,’ मेस वर्कर ने मेरी प्लेट में मिठाई परोसते हुए विजयी भाव से कहा।

मैंने अपनी कटोरी उसकी ओर बढ़ा दी। उसने दो रसगुल्ले लिए और क़तार से बाहर चली गई।

ओके बडी, प्रिटी गर्ल अपने रास्ते और बिना रसगुल्ले वाला लूज़र अपने रास्ते। बैठने के लिए कोई कोना तलाश लो, मैंने ख़ुद से कहा।

वह मेरी ओर मुड़ी। उसने मुझे अपने साथ बैठने को तो नहीं कहा, लेकिन उसे देखकर लग रहा था कि यदि मैं उसके पास जाकर बैठ जाता हूं तो उसे कोई ऐतराज़ न होगा। उसने अपनी नन्ही-सी अंगुली से एक टेबल की ओर इशारा किया और हम आमने-सामने बैठ गए। पूरा मेस हमें घूर-घूरकर देख रहा था। वे सोच रहे थे कि आखिर मैंने ऐसा कौन-सा तीर मार दिया, जो वह मेरे साथ बैठी है। मैं उन्हें बताना चाहता था कि मैंने कितनी बड़ी कुर्बानी दी है–मेरा एक रसगुल्ला।

‘आई एम क्रिश,’ मैंने सांभर में चम्मच घुमाते हुए कहा।

‘आई एम अनन्या। ऊंह, कितना ख़राब है ना? ‘सांभर चखने के बाद मेरे द्वारा मुंह बनाने पर उसने कहा।

‘मैं होस्टल के खाने का आदी हूँ,’ मैंने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मैंने इससे भी बदतर खाना खाया है।'

‘इससे भी बदतर की तो कल्पना करनी ही मुश्किल है,’ उसने कहा।

एक हरी मिर्च कुतरने के कारण मुझे खांसी आ गई। उसके पास पानी का जग रखा था। उसने जग उठाया, आगे झुकी और मेरे गिलास में पानी पड़ेल दिया। मुझे लगा जैसे पूरे मेस ने आह भरी हो। हम दोनों सभी के लिए मैटिनी शो बन चुके थे।

उसने चार कौर में दोनों रसगुल्ले ख़त्म कर दिए। 'मुझे अब भी भूख लग रही है। मैंने आज नाश्ता भी नहीं किया है।'

‘या तो बेस्वाद खाना खाओ या भूखे मरो, होस्टल लाइफ़ का मतलब ही यही है कि जो आसानी से मिल जाए, वही सही’, मैंने कहा।

‘तुम कहीं बाहर जाना चाहते हो? मुझे पक्का य़कीन है कि इस शहर में ख़ूबसूरत रेस्टोरेंट्स होंगे,’ उसने कहा।

‘अभी?’ एक घंटे बाद हमारी एक क्लास थी। लेकिन मिस बेस्ट गर्ल ने अपनी पेटपूजा के लिए ही सही, पर मेरे सामने बाहर चलने का प्रस्ताव रखा था। और जैसा कि सभी जानते हैं, लडकियों का दर्जा हमेशा पढ़ाई से ऊपर ही होता है।

'अब मुझे यह मत कहना कि तुम लेक्चर अटेंड करने के लिए बेचैन हुए जा रहे हो,’ उसने कहा और मुझे चुनौती देते हुए उठ खड़ी हुई।

मैंने चम्मच में थोड़े-से चावल लिए।

उसने अपना पैर पटका। 'यह गंदी चीज़ छोड़ो।'

जब मैं आईआईएमए में पॉपुलर वोट से बेस्ट गर्ल मानी गई मिस अनन्या स्वामीनाथन के साथ मेस से बाहर निकला, तब चार सौ आखें हमारा पीछा कर रही थीं।

‘तुम्हें चिकन पसंद है?’ उसने मुझसे पूछा। मेनू उसकी नाक पर टिका हुआ था। हम टोपाज़ में आए थे: एक मामूली, ख़ाली-ख़ाली-सा, लेकिन एयर कंडीशंड रेस्टोरेंट, जो कैम्पस से आधा किलोमीटर के फ़ासले पर था। सभी मिड-रेंज भारतीय रेस्टोरेंट्स की तरह यहां भी पुराने हिंदी गानों के बोरिंग इंस्ट्रुमेंटल वर्जन बज रहे थे और टेबल पर कतरे हुए मसालेदार प्याज़ सजे थे।

‘मैंने तो सोचा था कि अहमदाबाद वेजिटेरियन है,’ मैंने कहा।

‘प्लीज़, नहीं तो मैं मर ही जाऊंगी।’ वह वेटर की ओर मुड़ी और रूमाली रोटियों के-साथ हाफ़ तंदूरी चिकन का ऑर्डर किया।

‘क्या यहाँ बीयर मिलेगी?’ उसने वेटर से पूछा।

वेटर ने मानो दहशत में अपना सिर हिलाया और वहां से चला गया।

‘हम गुज़रात में हैं। यहां शराब पर पाबंदी है,’ मैंने कहा।

‘क्यों?'

‘गांधीजी का जन्मस्थान', मैंने कहा।

‘लेकिन गांधीजी ने तो हमें आजादी दिलाई थी,’ उसने प्याज की कतरनों के साथ खेलते हुए कहा। 'अगर पाबंदियों ही लगाई जानी हैं तो आजादी का क्या मतलब?’

‘पॉइंट तो है, 'मैंने कहा। 'तो, आप रसम और सांभर की एक्सपर्ट हैं। क्या आप साउथ इंडियन हैं?'

‘तमिल, प्लीज़ बी प्रिसाइस। इन फेंक, तमिल ब्राह्मण, जो कि तमिलों से बहुत अलग होते हैं। यह हमेशा याद रखना।’ वेटर ने खाना परोसा, तो वह पीछे हट गई। उसने दांतों से चिकन की लेग को काटकर अलग कर दिया।

‘और तमिल ब्राह्मण एग्ज़ैक्टली कितने अलग होते हैं?'

‘वेल, सबसे पहली बात तो यह कि नो मीट एंड नो ड्रिंकिंग,’ उसने चिकन लेग से हवा में क्रॉस का निशान बनाते हुए कहा।
‘बिल्कुल,’ मैंने कहा।
वह हँस पड़ी। मैंने यह नहीं कहा कि मैं एक प्रैक्टिसिंग तमिल ब्राह्मण हूं। लेकिन तुम्हें यह पता होना चाहिए कि मेरा जन्म शुद्धतम और उच्चतम जाति समुदाय में हुआ है। और तुम, कॉमनर? '
‘मैं पंजाबी हूं, हालांकि मैं कभी पंजाब में नहीं रहा। मेरी परवरिश दिल्ली में हुई। और मुझे अपनी जाति के बारे में कुछ नहीं पता है, लेकिन हम चिकन खाते हैं। ख़राब सांभर के लिए मेरी पाचन शक्ति तमिल ब्राह्मणों से बेहतर है,’ मैंने कहा।
‘यू आर फ़नी,’ उसने मेरा हाथ थपथपाते हुए कहा। मुझे वह थपथपाहट अच्छी लगी।
‘तो तुम होस्टल में कहां रहे थे?’ उसने कहा। 'प्लीज़, आईआईटी मत कहना, अभी तक तुमने ज़्यादा ग़लतियाँ नहीं की हैं।'
‘आईआईटी में क्या ग़लत है?'
‘कुछ नहीं, क्या तुम आईआईटी से हो? ‘उसने एक घूंट पानी पीते हुए कहा।
‘हाँ, आईआईटी दिल्ली से। कोई प्रॉब्लम? '
‘नहीं, ‘वह मुस्कुरा दी,’ ‘अभी तक तो नहीं। '
‘एक्सक्यूज़ मी?’ मैंने कहा। उसके श्रेष्ठता बोध से अब मैं असहज महसूस करने लगा था।
‘कुछ नहीं, ‘उसने कहा।
हम चुप रहे।
‘क्या बात है? क्या किसी आईआईटीयन ने तुम्हारा दिल तोड़ दिया है?'
वह हँस पड़ी। 'नहीं, हक़ीकत इससे उलटी है। शायद मैंने ही कुछ आईआईटीयंस के दिल तोड़े हैं अलबत्ता इसमें मेरा कोई क़सूर नहीं '
‘क्या आप मुझे इसका मतलब समझाएंगी।'
‘किसी से कहना मत, लेकिन मुझे यहां आए एक हफ़्ता ही हुआ है और मुझे दस लड़के प्रपोज़ कर चुके हैं। वे सभी आईआईटीयंस थे।'
तो मेरा अनुमान सही था, उस पर बहुत सारे लड़कों की नज़र थी। लेकिन मैं चाह रहा था कि इन लड़कों में मेरे लोग शामिल न हों।
‘किस बात का प्रपोज़ल? '
‘अरे वही, बाहर घूमने जाना, दोस्ती करना, वग़ैरह-वग़ैरह। और हा आईआईटी चेन्नई के एक लड़के ने तो शादी का प्रपोज़ल ही रख दिया।'
‘वाक़ई?’
‘हाँ, उसने कहा कि यह हफ़्ता उसके लिए बहुत ख़ास रहा है। उसने आईआईएमए जॉइन किया और अब उसे उसकी लाइफ़ पार्टनर भी मिल गई। हो सकता है मैं ग़लती कर रही होऊं, लेकिन मेरे ख़्याल से उसने कुछ ज्वेलरी भी पहन रखी थी।'
मैंने अपना सिर पीट लिया। नहीं, मेरे अपने यार-दोस्त ऐसा नहीं कर सकते, चाहे किसी भी तरह के हालात क्यों न हों।
‘अब तुम समझे कि मुझे तुम्हारे आईआईटीयन होने को लेकर इतनी फिक्र क्यों हो रही थी,’ उसने एक चिकन ब्रेस्ट उठाते हुए कहा।
‘ओह, तो यह नेचरल रिएक्शन है। यदि मैं आईआईटी से हूँ, तो मैं तुम्हें दस मिनट के भीतर प्रपोज़ कर ही दूँगा?'
‘मैंने यह तो नहीं कहा।'
‘लेकिन तुम्हारा यही मतलब था।'
‘आई एम सॉरी।'
‘इट्स ओके। मैंने तुम्हारे बारे में कुछ यही उम्मीद की थी। लेट मी गैस–अमीर माता-पिता की इकलौती संतान?'
“ग़लत, ग़लत, मेरा एक छोटा भाई है। और मेरे पापा चेन्नई में बैंक ऑफ़ बड़ौदा में काम करते हैं। सॉरी, तुमने मेरे बारे में क्या उम्मीद की थी?'
‘कुछ लड़कियाँ बहुत ज़्यादा अटेंशन हैंडल नहीं कर पाती हैं। महज़ दो दिन की पॉपुलैरिटी के बाद उन्हें लगता है कि कॉलेज के हर लड़के को उनके सामने अपना सिर झुकाना चाहिए।'
‘यह सच नहीं है। क्या मैं तुम्हारे साथ बाहर नहीं आई?’ उसने बड़े करीने से चिकन की हड्डियां दूसरी प्लेट में रख दीं।
‘ओह, यह तो बहुत बड़ी बात है। मेरे जैसे कॉमनर के साथ घूमने आना। बिल कितना हुआ? मैं अपना हिस्सा चुकाकर चला जाता हूं’ मैं खड़ा हो गया।
‘हे,’ उसने कहा।
‘व्हाट?'
‘आई एम सॉरी। प्लीज़ बैठ जाओ।'
वैसे भी बातचीत में मेरी अब कोई दिलचस्पी नहीं रह गई थी। यदि एक ख़ूबसूरत लड़की से ज़्यादा आकर्षक और कुछ नहीं हो सकता तो एक नकचढ़ी लड़की से ज्यादा बुरा भी कुछ नहीं हो सकता।
मैं बैठ गया और अगले दस मिनट तक खाने और उस नीरस इंस्ट्रुमेंटल म्यूज़िक पर ध्यान केंद्रित करता रहा। मैं उस ब्राह्मण लड़की को नज़रअंदाज़ कर रहा था, जिसने मेरे कॉलेजमेट्स को एक आम श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया था।
‘क्या अब सब ठीक है?’ उसने हिचकिचाहट के साथ मुस्कुराते हुए कहा।
‘तुम मेरे साथ क्यों आई? अपने स्कोर को ग्यारह तक पहुंचाने के लिए?'
‘तुम वाक़ई जानना चाहते हो?'

‘हाँ।'

‘मुझे यहाँ कुछ दोस्तों की ज़रूरत है। तुम मुझे एक सेफ़-ज़ोन लड़के की तरह लगे। एक ऐसे लड़के की तरह, जो किसी लड़की के साथ केवल दोस्ती तक सीमित रह सकता है, राइट?'

बिल्कुल नहीं, मैंने सोचा। आखिर कोई लड़का किसी लड़की के साथ दोस्ती तक ही सीमित क्यों रहना चाहेगा? यह तो किसी चॉकलेट केक के पास रहकर उसे न खाने जैसा होगा। यह तो किसी रेसिंग कार में बैठकर उसे ड्राइव न करने जैसा होगा। ऐसा तो केवल भोंदू ही करते है।

‘आई एम नॉट श्योर,’ मैंने कहा।

‘तुम हैंडल कर सकते हो। मैंने तुम्हें प्रपोज़ल्स के बारे में बताया, क्योंकि तुम देख सकते हो कि वे कितने स्टुपिड हैं।'

‘वे स्टुपिड नहीं हैं। वे आईआईटीयंस हैं। बात केवल इतनी है कि वे अभी तक यह नहीं जानते कि लड़कियों से कैसे बातें की जाती हैं,’ मैंने कहा।

‘जो भी हो। लेकिन तुम्हें पता है लड़कियों से कैसे बातें की जाती हैं। और मैं तुमसे दोस्ती करना चाहूंगी। जस्ट फ्रेंड्स, ओके?’ उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। मैंने अनमने ढंग से उससे हाथ मिलाया।

‘लेट्स शेयर, दोनों साठ-साठ देते हैं,’ बिल आने पर उसने कहा।

ठीक है, ‘जस्ट फ्रेंड्स’ शेयर बिल्स। मैं उसके साथ केवल दोस्ती तक ही सीमित नहीं रहना चाहता था, लेकिन मैं ग्यारहवाँ शहीद भी नहीं होना चाहता था।

मैंने अपना हिस्सा चुकाया और कैम्पस लौट आया। मुझे अपनी जस्ट फ्रेंड से जल्द ही फिर मिलने में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

2

'यू ओके?' मैंने अपनी जस्ट फ्रेंड के पास जाते हुए कहा। वह अपनी सीट पर बैठी थी और उसकी आंखो से फिर आंसू फूट पड़े थे। आखिरी लेक्चर ख़त्म हो चुका था और क्लासरूम ख़ाली था।

पिछले हफ़्ते के लंच के बाद से मेरी अनन्या से ज़्यादा बात नहीं हुई थी। ख़ूबसूरत लड़कियाँ तभी अच्छे-से पेश आती हैं, जब आप उन्हें नज़रअंदाज़ करें। (यक़ीनन, उन्हें यह ज़रूर पता होना चाहिए कि आप उन्हें इग्नोर कर रहे हैं, नहीं तो उन्हें आपके बारे में कुछ पता ही न चलेगा।)

लेकिन आज मुझे उससे बात करनी पड़ी। वह क्लास में रोई थी। हमारे क्लासरूम ऑडिटोरियम की तरह सेमी-सर्कुलर क़तार वाले थे, लिहाज़ा हर कोई हर किसी को देख सकता था। स्टूडेंट्स अल्फ़ाबेटिकल क्रम में बैठते थे। चूंकि अनन्या का नाम ए से शुरू होता था, लिहाज़ा इस अक्षर से शुरू होने वाले हर अभागे स्टूडेंट की तरह उसे भी पहली पंक्ति में बैठना पड़ता था। वह अंकुर और आदित्य के बीच बैठी थी। दोनों आईआईटीयंस थे और उसे प्रपोज़ कर चुके थे, बिना यह सोचे कि किसी लड़की द्वारा रिजेक्ट किए जाने और फिर साल भर उसी के पास बैठने पर कैसी शर्मिंदगी महसूस होती है। मैं तीसरी पंक्ति में बैठा था। मेरे एक तरफ़ थी कन्याश्री, जो किसी मेहनती कोर्ट ट्रांस्क्रिप्टर की तरह नोट्स लेती थी और मेरे दूसरी तरफ़ पाँच मोहित थे, जो देश के अलग-अलग हिस्सों से आए थे। लेकिन न तो अंकुर, न आदित्य, न कन्याश्री और न ही पांच मोहितों का ध्यान अनन्या के आंसुओं पर गया था। केवल मैंने देखा कि उसने एक पीले दुपट्टे से अपनी आंख की कोर पोंछी है। दुपट्टे में छोर पर छोटी-छोटी घंटियाँ बंधी थीं और जब भी वह हिलती, घंटियाँ खनकने लगती थीं।

पिछले हफ़्ते मैंने अनन्या से अपने संपर्क को हर सुबह महज़ एक सरसरे अभिवादन और दिन ख़त्म होने पर एक बेपरवाह वेव तक ही सीमित रखा था। क्लासेस के दौरान हमें टीचर की बातों को ध्यान से सुनना पड़ता था, क्योंकि हमें क्लास पार्टिसिपेशन और एकाध इंटेलीजेंट टिप्पणी करने के भी मार्क्स मिलते थे। अधिकांश आईआईटीयंस कभी कुछ नहीं कहते थे, जबकि ग़ैर साइंस पृष्ठभूमि के स्टूडेंट्स सरपट बोलते थे।

माइक्रो इकोनॉमिक्स क्लास के तेइसवें मिनट में प्रोफ़ेसर ने ब्लैकबोर्ड पर एल के आकार का यूटिलिटी कर्व बनाया। वे दस सेकंड तक अपने कर्व को निहारते रहे और फिर स्टूडेंट्स की ओर मुड़े।

'यहां इकोनॉमिक्स के कितने ग्रेजुएट्स हैं?' आईआईएमए में दो दशक से पढ़ा रहे वरिष्ठ प्रोफ़ेसर चटर्जी ने पूछा।

सेक्शन ए के सत्तर स्टूडेंट्स में से पंद्रह ने हाथ खड़े कर दिए। इनमें अनन्या भी थी। चटर्जी अनन्या से मुख़ातिब हुए। 'आप इस कर्व को पहचानती हैं, मिस स्वामीनाथन? 'उन्होंने उसकी नेमप्लेट पर उसका नाम पढ़ते हुए पूछा।

'द बेसिक मार्जिनल यूटिलिटी कर्व, सर,' अनन्या ने कहा।

'तो, मिस स्वामीनाथन, आप इस कर्व को गणितीय रूप में कैसे प्रस्तुत करेंगी?'

'अनन्या खड़ी हो गई। उसकी आंखो से साफ ज़ाहिर हो रहा था कि उसे इस बारे में कुछ पता नहीं है। शेष चौदह इकोनॉमिक्स ग्रेजुएट्स ने अपने हाथ नीचे कर लिए।

'येस, मिस स्वामीनाथन?' चटर्जी ने कहा।

अनन्या ने अपने दुपट्टे की घंटियों को मुट्ठी में भींच लिया, ताकि वे न खनखनाएँ।

'सर, यह कर्व गुड्स के अलग-अलग बंडल्स को दिखाता है, जिनके प्रति ग्राहक उदासीन है। यानी, कर्व के हर प्वॉइंट पर, ग्राहक के पास एक बंडल के स्थान पर अन्य को चुनने के समान अवसर हैं।'

'लेकिन यह मेरे सवाल का जवाब नहीं है। मेरा सवाल यह है कि गणितीय फ़ॉर्मूला क्या है?'

'मुझे नहीं पता। वैसे भी, वह केवल एक कॉन्सेप्ट ही है।'

'लेकिन क्या आपको वह पता है?'

'नहीं, लेकिन मैं वास्तविक जीवन की एक भी ऐसी स्थिति के बारे में कल्पना नहीं कर सकती, जहां इस तरह का गणितीय फ़ॉर्मूला कारगर साबित होगा,' अनन्या ने कहा। प्रोफ़ेसर ने उसकी बात को काटने के लिए अपना हाथ उठाया। '*श्श्श...*' उनके चेहरे पर एक कुटिल मुस्कुराहट थी। 'पूरी क्लास नोटिस करे। देश में इकोनॉमिक्स की पढ़ाई की यह हालत है। टॉप ग्रेजुएट्स को बेसिक्स भी नहीं पता हैं। और फिर भी यह सवाल पूछा जाता है कि आखिर भारत आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ क्यों है?'

प्रोफ़ेसर ने अपनी बात ख़त्म करने के बाद टेबल पर चॉक गिरा दिया। उन्होंने उस समस्या का समाधान खोज निकाला था, जिसके सामने देश के नीति निर्माता दशकों से लाचार थे। अनन्या स्वामीनाथन देश के पिछड़ेपन के लिए ज़िम्मेदार थी।

अनन्या ने शर्म से सिर झुका लिया। कुछ आईआईटीयंस के चेहरे खिल उठे। आईआईटी में माइक्रोइकोनॉमिक्स एक इलेक्टिव कोर्स था और जिन स्टूडेंट्स ने इसकी पढ़ाई की थी, उन्हें फ़ॉर्मूला पता था। वे अपने ज्ञान का प्रदर्शन करने के लिए बेक़रार हो रहे थे।

'किसी और को फ़ॉर्मूला पता है?' प्रोफ़ेसर ने पूछा तो अंकुर ने हाथ उठा दिया।

'येस, बताओ। मिस स्वामीनाथन, आपको अपने पड़ोसियों के साथ थोड़ी और बोलचाल बढ़ानी चाहिए। और अगली बार जब मैं इकोनॉमिक्स ग्रेजुएट्स के बारे में पूछूँ तो अपना हाथ मत उठाइएगा,' प्रोफ़ेसर ने कहा।

वे बोर्ड की तरफ़ बढ़े और उस पर ख़ूब सारे ग्रीक सिम्बॉल्स और कैलकुलस इक्वेशंस लिख डाले। कोर्स की शुरुआत छोटी-छोटी क्यूट चीज़ों से हुई थी, जैसे लोग चाय और बिस्किट में से किसी एक का चयन कैसे करते हैं। लेकिन इसके बाद डरावने समीकरण सामने आने लगे, जो एग्ज़ाम्स के लिहाज़ से बहुत ज़रूरी थे। क्लास पागलों की तरह नोट्स लेती रही। कन्याश्री तो इतने सख़्त हाथों से लिखती थी कि मुझे उसके पेन की नन्ही-सी निब से भूकंप के झटकों का अहसास होता था।

मैंने नज़र चुराकर अनन्या की ओर देखा। अंकुर किसी आत्मतुष्ट व्यक्ति की तरह बोर्ड पर अपने शब्दों को उतरते हुए देख रहा था, अनन्या के बाँए हाथ की अंगुलियों उसके पीले दुपट्टे को मसल रही थीं। फिर उसने वह हाथ अपने चेहरे की ओर बढ़ाया और

हौले-से अपने आँसुओं को पोंछ लिया। ओहो, तो मिस बेस्ट गर्ल के कलेजे में एक दिल भी है, मैंने सोचा। और शायद अब मुझे अपनी रणनीति बदलकर क्लास के बाद उससे बात कर ही लेनी चाहिए।

'यू ओके?' मैंने फिर पूछा।

उसने आँसू पोंछते हुए सिर हिलाया। उसकी आँखें नीचे की ओर ताक रही थीं।

'मैं टोपाज़ को मिस करता हूं,' मैंने विषय बदलने के लिए कहा।

'मैंने अपने जीवन में कभी इतना अपमानित महसूस नहीं किया,' उसने कहा।

'कोई परवाह नहीं करता। सभी प्रोफ़ेसर्स उल्लू के पट्ठे हैं। यही शाश्वत सत्य है," मैंने कहा। 'कम से कम, जहाँ से मैं आया हूं, वहां तो यही शाश्वत सत्य था।'

'तुम मेरी इकोनॉमिक्स की डिग्री देखना चाहते हो? मैं तुम्हें अपनी ग्रेड्स दिखाऊंगी।'

'नहीं, 'मैंने कहा।

'मैं दिल्ली युनिवर्सिटी में तीसरे नंबर पर आई थी। इंजीनियर बनने की कोशिश करने वाले इन प्रोफ़ेसर्स ने इकोनॉमिक्स को एक बेहतरीन लिबरल आर्ट विषय से बदलकर ग्रीक सिम्बॉल्स की कूड़ेगाह बना डाला है,' उसने बोर्ड पर लिखे फ़ॉर्मूलों की ओर इशारा करते हुए कहा।

मैं चुप रहा।

'तुम आईआईटी से हो। शायद तुम्हें इन इक्वेशंस से प्यार हो,' उसने कहा और फिर मेरी ओर देखा। वह आँसुओं के बावजूद ख़ूबसूरत लग रही थी।

मैंने ब्लैकबोर्ड की ओर देखा। हां, मुझे बीजगणित पसंद है। इसमें शर्म करने की कोई बात नहीं। लेकिन यह बात कहने के लिए यह सही वक़्त नहीं था। 'नहीं, मैं बीजगणित का कोई ख़ास प्रशंसक नहीं हूँ। ग्रीक सिम्बॉल्स हर विषय का मज़ा ख़राब कर देते हैं।

'एग्ज़ैक्टली, लेकिन ये प्रोफ़ेसर्स ऐसा नहीं सोचते। अगले हफ़्ते होने वाले टेस्ट में यही इक्वेशंस होंगी। मैं फ़ेल हो जाऊंगी और वे मुझे शिक्षित लेकिन अज्ञानी भारतीय विद्यार्थियों का एक नमूना बनाकर खड़ा कर देंगे। मुझे पूरा यक़ीन है कि मैं अभी स्टाफ़ रूम डिस्कशन का विषय बनूँगी।'

'ये सभी प्रोफ़ेसर्स फ्रस्टेरटेड हैं,' मैंने कहा। 'हम उम्र में उनसे आधे हैं, लेकिन दो साल बाद हम उनसे दोगुना कमा रहे होंगे। यदि कोई ग्यारह साल का बच्चा तुमसे दोगुनी कमाई कर रहा होता, तो क्या तुम भी उससे नफ़रत नहीं करतीं?'

वह मुस्कुरा दी।

'तुम्हें यह दुपट्टा सुखाने के लिए धूप में टांग देना चहिए,' मैंने कहा। वह थोड़ा और मुस्कराई।

हम क्लास से बाहर चले आए। हमने तय किया था कि आज कैम्पस में लंच नहीं लेंगे और बाहर सड़क के किनारे रामभाई के यहां चाय पिएँगे और ऑमलेट खाएँगे।

'वे माइक्रोइकोनॉमिक्स में मेरी बैंड बजा देंगे। शायद उन्होंने पहले ही मेरे नाम के आगे गोला लगाकर उसके आगे डी लिख दिया है,' उसने कहा। उसने गर्म चाय के ग्लास से अपनी अंगुलियाँ बचाने के लिए उसे दुपट्टे से लपेट रखा था।

'चिंता मत करो। देखो, तुम मेरे साथ पढ़ाई कर सकती हो। मुझे भी ये इक्वेशंस पसंद नहीं हैं, लेकिन मैं इन्हें अच्छे-से कर सकता हूं। हम आईआईटी में चार साल तक यही करते रहे थे।'

वह कुछ पल तक मेरी ओर देखती रही।

'अरे, मेरी नंबर ग्यारह बनने में कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं केवल पढ़ाई के लिए ऐसा कह रहा हूं।'

वह हँस पड़ी। 'एक्चुअली, अब स्कोर तेरह हो गया है।'

'आईआईटीयंस?'

'नहीं, इस बार एनआईटी वाले। अब वे भी आ गए हैं मैदान में।'

'हाँ, मुझे पता है, हम आईआईटीयंस हर मामले में पिछड़ रहे हैं। ख़ैर, मैं नंबर चौदह भी नहीं होना चाहता। मुझे लगा शायद मैं तुम्हें पढ़ा सकता हूं...'

उसने मुझे रोक दिया, 'मैं तुमसे इकोनॉमिक्स नहीं सीख सकती। मैं इकोनॉमिक्स में यूनिवर्सिटी टॉपर हूं, तुम इंजीनियर हो।'

'तो फिर गुड लक,' मैंने कहा और पे करने के लिए खड़ा हो गया।

'तुम समझे नहीं। मैंने कहा कि तुम मुझे पढ़ा नहीं सकते, लेकिन हम साथ-साथ पढ़ ज़रूर सकते हैं।'

मैंने उसकी ओर देखा। वह अच्छी लग रही थी। मैं अपनी क़िस्मत आज़माने की कोशिश करने वाले उन तेरह लड़कों को कुसूरवार नहीं ठहरा सकता था।

'आठ बजे मेरे रूम पर? कभी गर्ल्स डोर्म में आए हो?'

'मैं यहाँ हर चीज़ पहली बार ही कर रहा हूं,' मैंने कहा।

'कूल, अपने साथ ख़ूब सारी किताबें लाना, ताकि यह क्लीयर हो जाए कि तुम वहां क्या करने आए हो,' अनन्या ने क्लियर देते हुए कहा।

3

मैं ठीक आठ बजे डॉर्म पहुंच गया। मेरे साथ छह टेलीफ़ोन डायरेक्टरी जितने केस मटैरियल थे। मैंने उसके दरवाज़े पर दस्तक दी।

'एक सेकेंड, मैं चेंज कर रही हूं,' भीतर से उसकी दबी हुई आवाज़ सुनाई दी।

उसने तीन सौ सेकेंड बाद दरवाज़ा खोला। उसने लाल-सफ़ेद ट्रैकसूट पहन रखा था।

'सॉरी,' उसने अपने बालों को जूड़े की तरह बाँधते हुए कहा। 'भीतर आ जाओ। हमें फ़ौरन शुरू कर देना चाहिए, बहुत काम करना है।'

उसने अपनी स्टडी चेयर मुझे दी और ख़ुद बिस्तर पर बैठ गई। लाल रंगत वाली बेडशीट खूनी ईंटों की दीवारों से मेल खा रही थी। उसने चार्ट पेपर से एक नोटिस बोर्ड बनाया था। और उस पर हर जगह अपने परिवार की तस्वीरें लगा रखी थीं।

'देखो, यह मेरा परिवार है। ये हैं डैड, ही इज़ सो क्यूट,' उसने कहा।

मैंने ग़ौर से देखा। सलीक़े से कंघी किए गए बालों वाला एक अधेड़ व्यक्ति नपे-तुले अंदाज़ में मुस्कुरा रहा था। उन्होंने अधिकांश तस्वीरों में आधी आस्तीन की कमीज़ और धोती पहन रखी थी। वे उन पड़ोसियों की तरह लग रहे थे, जो आपको तेज़ वॉल्युम में म्युज़िक बजाने से रोक देते हैं। नहीं, उनमें ऐसी कोई बात न थी कि उन्हें क्यूट कहा जाए। मैंने त्यौहारों, शादी समारोहों, जन्मदिन आदि अवसरों पर उतारी गई अन्य तस्वीरों पर एक नज़र डाली। एक तस्वीर में अनन्या का पूरा परिवार अटेंशन की मुद्रा में समुद्र तट पर खड़ा था। आप बड़ी आसानी से बैकग्राउंड में राष्ट्रगीत बजने की कल्पना कर सकते थे। 'यह चेन्नई का मरीना बीच है। तुम्हें पता है यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा सिटी बीच है?'

मैंने उसके भाई को देखा। वह कोई चौदह साल का रहा होगा। तेलचुपड़े बाल, गीकनुमा चेहरे और चश्मों के कारण वह कोई आईआईटीयन प्राणी ही लग रहा था। उसके उदासीन एक्सप्रेशंस देखकर मुझे लगा कि एक दिन वह आईआईटीयन ज़रूर बनेगा। 'और ये मॉम हैं?' मैंने पूछा। अनन्या ने सिर हिलाकर हामी भरी।

अनन्या की मॉम की तुलना में उसके पिता और भाई सौम्य ही लग रहे थे। फ़ोटो में भी उनके चेहरे पर ऐसा खिन्न भाव था कि आप उन्हें देखकर सोच में पड़ सकते थे कि कहीं आपने कुछ ग़लत तो नहीं कर दिया। वे मुझे अपने स्कूल की सख़्त से सख़्त टीचर्स की याद दिला रही थीं। मुझे उनकी बेटी के कमरे में होने के कारण फ़ौरन अपराध बोध की अनुभूति हुई। इस विचार से तो मेरे हाथ में झुरझुरी ही पैदा हो गई कि वे अभी फ़ोटो से निकलेंगी और एक रूलर से मेरी मरम्मत कर देंगी।

'मॉम और मैं,' अनन्या ने बिस्तर पर घुटनों के बल बैठकर एक ठंडी सांस लेते हुए कहा। 'व्हाट?' मैं एक शादी समारोह का फ़ोटो देख रहा था, जिसमें उसके सगे-संबंधी नज़र आ रहे थे। उनके गहरे सांवले रंग के कारण उनके दांत कुछ ज़्यादा ही चमक रहे थे। सभी बुज़ुर्ग महिलाओं ने जितना हो सकता था, उतना सोना पहन रखा था और उनकी सिल्क की साड़ियाँ रोड रिफ़्लेक्टर्स की तरह चमकीली थीं।

'कुछ नहीं, काश मैंने अपनी मॉम के साथ और अच्छा समय बिताया होता,' अनन्या ने कहा। 'अरे, तुम्हारे पास अपनी फ़ैमिली की तस्वीरें हैं?'

मैंने सिर हिलाकर ना कहा। मेरा परिवार इतना बिखरा-बिखरा था कि वह कभी एक जगह रुककर एक सही लम्हे के लिए पोज़ नहीं कर पाया। मुझे याद नहीं आता कि हमारे पास कोई कैमरा भी था।

'तुम्हारी फ़ैमिली में कौन-कौन हैं?' उसने इकोनॉमिक्स के नोट्स लेने के लिए केस मटैरियल की छानबीन करते हुए पूछा।

'मॉम डैड और मैं। बस।' मैंने कहा।

'मुझे और बताओ। वे क्या करते हैं? तुम किनके ज़्यादा क़रीब हो?'

'हम यहाँ पढ़ाई करने के लिए साथ बैठे हैं, मैंने कहा और माइक्रोइकोनॉमिक्स की बुकलेट को अंगुलियों से थपथपाने लगा।

'ऑफ़ कोर्स, हम पढ़ाई करेंगे। मैंने तो केवल बात शुरू करने के लिए पूछा था। यदि तुम नहीं बताना चाहते तो मत बताओ,' उसने कहा और अपनी पलकें झुका लीं। इतने डरावने पैरेंट्स इतनी ख़ूबसूरत लड़की को कैसे क्रिएट कर सकते है?

'ठीक है, बताता हूं। लेकिन उसके बाद, हम केवल पढ़ाई करेंगे। एक घंटे तक कोई गपशप नहीं,' मैंने हिदायत भरे लहज़े में कहा।

'श्योर, मैं तो पहले ही किताब खोलकर बैठी हूं,' उसने कहा और बिस्तर पर क्रॉस-लेग बैठ गई।

'ओके, मेरी माँ हाउसवाइफ़ हैं। मैं उनके क़रीब हूं, लेकिन बहुत ज़्यादा नहीं। इसी से मुझे याद आया कि मुझे उन्हें कॉल करना है। ठीक है, इसके बाद मैं एसटीडी बूथ जाऊंगा।'

'और डैड? मैं तो अपने डैड के बहुत क़रीब हूं।'

'चलो पढ़ाई करते है,' मैंने कहा और किताब खोल ली।

'तुम अपने पापा के क्लॉज़ नहीं हो?'

'तुम फ़ेल होना चाहती हो? '

'श्श्श,' उसने मेरी बात मानी और होंठों पर अंगुली रखकर चुप हो जाने का इशारा किया। हम अगले दो घंटे तक चुपचाप पढ़ाई करते रहे। वह कभी-कभी सिर उठाकर ऊपर देखती और पिलो कवर बदलने या अपनी स्टडी लैंप को ठीक जगह रखने जैसी बेमानी चीज़ें करती रहती। मैं यह सब नज़रअंदाज़ करता रहा। मैं पहले ही अपनी ज़िन्दगी के कई शुरुआती साल आईआईटी में गंवा चुका था। शायद किसी सीएटी कंप्यूटेशन एरर के कारण मुझे आईआईएमए में एक मौक़ा मिल गया था और मैं इसका पूरा फ़ायदा उठाना चाहता था।

'वॉव, तुम तो वाक़ई मन लगाकर पढ़ते हो,' उसने एक घंटे बाद कहा। 'दस बज गए हैं, अब एसटीडी कॉल्स के रेट्स कम हो चुके हैं।'

'अरे हाँ, मुझे अब चलना चाहिए, 'मैंने कहा।

'मैं तुम्हारे साथ चलती हूं। मुझे भी घर पर कॉल करना है,' उसने कहा और अपने स्लिपर्स पहनने के लिए बिस्तर से कूदकर बाहर आ गई।

'सेरी, सेरी, सेरी अम्मा... सेरी!' उसका हर सेरी पहले से ऊंची आवाज़ में था और उसके साथ ही मेरी झल्लाहट भी बढ़ रही थी। उसने घर फ़ोन लगाया था। सस्ती दरों के कारण एसटीडी बूथ पर कई स्टूडेंट्स क़तार में खड़े थे। बूथ हमारे कैम्पस से महज़ पांच मिनट की वॉक पर था। कई स्टूडेंट्स अपने साथ अपने माइक्रोइकोनॉमिक्स के नोट्स भी ले आए थे। अनन्या की बात हो जाने के बाद मैंने उसे कुछ चेंज देकर उसकी मदद की।

'क्या वह उसके साथ डेट कर रहा है? 'मैंने एक स्टूडेंट की फुसफुसाहट सुनी। वह अपने दोस्त से बात कर रहा था।

'लगता तो नहीं, वह तो उसे भैया की तरह ट्रीट कर रही है,' उसके दोस्त ने हँसते हुए कहा।

मैंने उनके कमेंट्स को अनसुना कर दिया और बूथ में चला गया।

'हर लड़की एक आईआईटीयन भैया चाहती है, इससे पढ़ाई में आसानी जो हो जाती है,' पहले स्टूडेंट ने कहा तो उसके इर्द-गिर्द खड़े अनेक लड़के हँस दिए।

मैंने उन्हें तमाचा जड़ देने की अपनी इच्छा पर क़ाबू पाया और घर का नंबर घुमा दिया। 'हैलो?' चार रिंग जाने के बाद पापा की आवाज़ सुनाई दी।

मैं चुप रहा। मीटर ने गिनती शुरू कर दी।

'हैलो? हैलो?' पापा लगातार कहते रहे।

मैंने फ़ोन रख दिया। प्रिंटर से बिल बाहर निकला।

'मिस्ड कनेक्शन, आपको भुगतान करना होगा,' शॉपकीपर ने कहा।

मैंने सिर हिलाकर हामी भरी और फिर डायल किया। इस बार मॉम ने फ़ोन उठाया।

'मॉम,' मैं ज़ोर से चीखा। 'मैंने कहा था ना कि दस बजे के बाद फ़ोन के आसपास ही रहना।'

'सॉरी बेटा। मैं किचन में थी। वो तुमसे बात करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने फ़ोन उठाया। पहले उन्हें हैलो कहो और फिर मुझसे बात करो।'

'मेरी उनसे बात करने में कोई दिलचस्पी नहीं है।'

'ठीक है, छोड़ो। तुम कैसे हो? वह जगह कैसी है?'

'ठीक है। लेकिन यहां और ज़्यादा पढ़ाई करनी पड़ती है।'

'खाना कैसा मिलता है?'

बहुत ख़राब। मैं होस्टल में हूं। होस्टल में और कैसा खाना मिलेगा?'

'मैं तुम्हारे लिए अचार भिजवाऊंगी।'

'यहां कुछ अच्छे रेस्टोरेंट्स हैं।'

'वहां चिकन मिलता है?' उन्होंने पूछा। उनकी आवाज़ से ऐसी चिंता झलक रही थी, मानो वे चिकन नहीं, बिजली-पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं के बारे में पूछ रही हों।

'कुछ जगहों पर।'

'एफ़एमएस बेहतर था। पता नहीं तुमने दिल्ली क्यों छोड़ी।'

'मॉम, मैं अपने कैरियर के ऑप्शंस इस बुनियाद पर नहीं तलाश सकता कि कहाँ चिकन मिलता है और कहाँ नहीं,' मैंने कहा और फिर मीटर की ओर देखा। मैं अठारह रुपए ख़र्च कर चुका था। 'अब मैं फ़ोन रखता हूं।'

'कुछ और बताओ ना। तुमने कुछ नए दोस्त बनाए?'

'नॉट रियली, सॉर्ट ऑफ़...' मैंने बूथ के बाहर खड़ी अनन्या के चेहरे को देखा। उसने मेरी ओर देखा और मुस्करा दी।

'कौन हैं तुम्हारे दोस्त? उनके नाम क्या हैं?'

'अन... अनंत।'

'पंजाबी?'

'मॉम!'

'आई एम सॉरी। मैंने सोचा कि शायद तुम्हारा कोई ऐसा दोस्त हो, जिसके खाने की पसंद तुमसे मिलती हो। इट्स ओके। हम बहुत मॉडर्न हैं। तुम तो जानते ही हो न?'

'हां। मैं आपसे बाद में बात करता हूं। कल मेरा एक टेस्ट है।'

'ओह रियली? एग्ज़ाम से पहले प्रार्थना करना, ओके?'

'श्योर, लेकिन पहले मैं पढ़ाई तो कर लूँ।'

मैंने फ़ोन रख दिया और पच्चीस रुपए चुकाए।

'तुमने पहली बार फ़ोन क्यों रख दिया था? तुम्हारे डैड ने फ़ोन उठाया था ना?' जब हम लौटकर जा रहे थे, तब अनन्या ने मुझसे पूछा।

मैं रुक गया। 'तुम्हें कैसे पता?'

'बस यूं ही अंदाज़ा लगा लिया। जब मैं मॉम से गुस्सा हो जाती हूं, तब मैं भी यही करती हूं। लेकिन मैं फ़ोन रखती नहीं हूं। हम लाइन पर बने रहते हैं, लेकिन कुछ कहते नहीं।'

‘और बिल?'

‘हां, यह एक-दूसरे के प्रति अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करने का ख़ासा मंहगा तरीक़ा तो है। लेकिन ऐसा कभी-कभी ही होता है।'

‘मैं कभी अपने पिता से बात नहीं करता,’ मैंने कहा।

‘क्यों?’ अनन्या ने मेरी ओर देखते हुए पूछा।

‘लंबी कहानी है। आज रात को नहीं सुनाऊंगा। या किसी भी रात को नहीं सुनाऊंगा। मैं इसे अपने तक ही रखना चाहूंगा।'

‘श्योर,’ उसने कहा।

हम कुछ देर चुपचाप चलते रहे। फिर बातचीत शुरू कर दी। ‘तो तुम्हारे पैरेंट्स को तुमसे ख़ूब उम्मीदें हैं? तुम कौन-सा जॉब करोगे? फ़ायनेंस? मार्केटिंग? आईटी? '

‘इनमें से कोई नहीं, ‘मैंने कहा। ‘हालाँकि मैं पैसे के लिए पहले कोई एक जॉब कर लूंगा।'

‘तो तुम क्या बनना चाहते हो? लाइक रियली?’ वह सीधे मेरी आँखों में झाँककर देख रही थी।

मैं झूठ न बोल सका। ‘मैं लेखक बनना चाहता हूं,’ मैंने कहा।

मैंने उम्मीद की थी कि वह यह सुनकर ज़ोर से ठहाका लगाएगी, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उसने सिर हिलाया और चहलक़दमी जारी रखी। ‘किस तरह के लेखक?’ उसने पूछा।

‘ऐसा लेखक, जो मज़ेदार कहानियां सुनाता है, लेकिन जो समाज में बदलाव भी लाना चाहता है। क़लम तलवार से भी ज़्यादा ताकतवर होती है, यह बात हमने बहुत पहले सीखी थी ना?'

उसने सिर हिलाकर हामी भरी।

‘लेखक बनने वाली बात सुनकर हँसी आती है?'

‘नहीं तो,’ उसने कहा।

‘हाऊ अबाउट यू? तुम क्या बनना चाहती हो?'

वह हँस पड़ी। ‘वेल, पता नहीं। माँ को तो पहले ही लगता है कि मैं बहुत महत्वाकांक्षी और स्वतंत्र हूँ। इसलिए मैं ज़्यादा दूर तक सोचने की कोशिश नहीं करती हूँ। जहां तक अभी का सवाल है तो मैं बस केवल क्विज़ में अच्छा प्रदर्शन कर माँ को खुशी देना चाहती हूँ। हालांकि ये दोनों ही काम बहुत मुश्किल हैं,’ उसने कहा।

हम उसके रूम पर पहुंचे और अगले दो घंटे तक न्यूमेरिकल्स की प्रैक्टिस करते रहे। ‘मुझे बहुत खुशी है कि तुम यहाँ हो। नहीं तो मैं यह नहीं कर पाती,’ जब मैंने उसके लिए एक मुश्किल न्यूमेरिकल सॉल्व कर दिया तो उसने कहा।

‘तुम मुझे यूज़ तो नहीं कर रही हो ना?'

‘एक्सक्यूज़ मी?’

‘यानी तुम मुझसे इसलिए दोस्ती कर रही हो, क्योंकि मैं आईआईटी से हूँ, ताकि मैं पढ़ाई में तुम्हारी मदद कर सकूँ?'

‘तुम मज़ाक कर रहे हो?’ ऐसा लगा, जैसे उसे झटका पहुंचा हो।

‘मैं आईआईटीयन भैया नहीं बनना चाहता, ‘मैंने कहा।

‘क्या? जो भी हो, तुम आईआईटीयन भैया नहीं हो। हम दोस्त हैं, राइट?'

उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। मैंने उसकी आँखों में देखा। नहीं, वे आँखें किसी का भी इस्तेमाल नहीं कर सकती थीं।

‘गुड नाइट,’ मैंने कहा और उससे हाथ मिलाया।

‘अरे क्रिश,’ जैसे ही मैं मुड़ा, उसने कहा।

‘क्या?’

‘वो जो तुम कह रहे थे, बदलाव लाने वाला लेखक बनना। इट्स रियली कूल। सच्ची,’ उसने कहा।

मैं मुस्कुरा दिया।

‘गुड नाइट,’ उसने कहा और दरवाज़ा लगा दिया। कुछ लड़कियाँ डोर्म में अपने नोट्स के साथ टहल रहीं थीं। उन्होंने मुझे संदेहभरी नज़रों से देखा।

‘मैं केवल पढ़ाई करने ही आया था,’ मैंने कहा और तेज़ क़दमों से डोर्म से बाहर चला गया। पता नहीं, मुझे यह सफ़ाई देने की ज़रूरत क्यों महसूस हुई।

4

वह अपने माइक्रोइकोनॉमिक्स क्विज़ रिज़ल्ट के साथ रिसर्च असिस्टेंट के कमरे से बाहर आई। क़तार में खड़े स्टूडेंट्स को पीछे छोड़ते हुए वह मेरी तरफ़ बढ़ीं। तब तक कैम्पस में सभी को हमारी दोस्ती के बारे में पता चल चुका था। उसने पिंक टी-शर्ट और डेनिम शॉर्ट्स पहन रखे थे। उसका यह पहनावा इंजीनियरिंग कॉलेज के लड़कों का कुछ ज़्यादा ही ध्यान खींच रहा था।

'बी-प्लस, कहते हैं यह एक अच्छी ग्रेड है' , उसने हाथ में अपनी आंसर शीट थामे हुए कहा।

'तुम्हारी शॉर्ट्स बहुत छोटी हैं,' मैंने कहा।

'मुझे अपनी ग्रेड दिखाओ,' उसने मेरे हाथ से पेपर छीनते हुए कहा। 'ए माइनस, वॉव, तुमने ए माइनस क्रेक किया! '

मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। हम अपने डोर्म की ओर चहलक़दमी करने लगे।

'तुम इकोनॉमिक्स में मुझसे ज़्यादा स्कोर कैसे कर सकते हो। मुझे तो यक़ीन ही नहीं हो रहा है,' उसने कहा। 'तुम मैकेनिकल इंजीनियर हो। मैं इस विषय में यूनिवर्सिटी गोल्ड मेडलिस्ट हूं।'

'अपना मेडल प्रोफ़ेसर चटर्जी को दिखाओ,' मैंने गंभीर लहज़े में कहा।

'हे, तुम ठीक तो हो?'

मैं चुप रहा।

'एनीवे। तुम मुझसे एक ट्रीट लेने का हक रखते हो। तुम्हारे न्यूमेरिकल्स ने ही मेरी जान बचाई है। तुम्हें भूख लग रही है?'

मैंने सिर हिला दिया। जो लोग होस्टल में रहते हैं, वे हमेशा भूखे रहते हैं।

'चलो, रामभाई के यहाँ चलें,' उसने कहा।

'तुम इस तरह रामभाई के यहाँ नहीं चल सकतीं,' मैंने कहा।

'इस तरह यानी कैसे?'

'यानी इन शॉर्ट्स में,' मैंने कहा।

'एक्सक्यूज़ मी। यह दिल्ली की बीमारी है या पंजाब की? लड़कियों को क्या पहनना चाहिए और क्या नहीं, ये पाबंदियां?'

'यह कॉमन सेंस की बात है। हमें कैम्पस के बाहर जाना है। लोग घूर-घूरकर देखते हैं,' मैंने कहा।

'कैम्पस के भीतर भी काफ़ी लोग घूरकर देखते हैं। आई एम फ़ाइन। लेट्स गो,' उसने कहा और कैम्पस गेट्स की ओर चल पड़ी।

'मुझे ट्रीट नहीं चाहिए। इट्स फ़ाइन,' मैंने कहा और दूसरी तरफ़ अपने डोर्म की ओर मुड़ गया।

'आर यू सीरियस? तुम नहीं आ रहे हो?' उसने कहा।

मैंने अपना सिर हिला दिया।

'जैसी तुम्हारी मर्ज़ी।'

मैं उसे इग्नोर कर चलता रहा।

'क्या तुम आज रात पढ़ाई के लिए आओगे?'

मैंने कंधे उचका दिए, जिसका मतलब था 'देखते हैं' ।

'मेरे लिए कोई ड्रेस कोड?'

'तुम मेरी गर्लफ्रेंड नहीं हो। जो चाहे पहनो। मुझे क्या परवाह?' मैंने कहा।

शाम को जब मैं उसके रूम पर पहुंचा तो मैंने दोपहर की घटना के बारे में कोई बात नहीं की। अब उसने चेंज करके काले ट्रैक पैंट्स और बड़ी फुल स्लीव काली टी-शर्ट पहन ली थी। वह इतनी ढंकी हुई थी कि अब उसके साथ अफ़गानिस्तान तक की सैर भी की जा सकती थी। मैं उसकी शॉर्ट्स को एक तरह से मिस ही कर रहा था, लेकिन अगर उसने शॉर्ट्स नहीं पहनी थीं, तो इसका ज़िम्मेदार भी मैं ही था। मैंने मार्केटिंग केस खोला, जिसकी हमें अगले दिन के लिए तैयारी करनी थी।

'निर्दोष–निकोटीन-फ्री सिगरेट्स,' मैंने शीर्षक पढ़ा।

'यह किस कमबख़्त को चाहिए? मुझे तो एक रियल स्मोक की ज़रूरत महसूस हो रही है।,' उसने कहा। मैंने उसे एक डर्टी लुक दी।

'व्हाट? क्या मुझे अब इस तरह बोलने की भी इजाज़त नहीं है? या क्या मैंने स्मोक करने की इच्छा जताई है, इसलिए?'

'तुम क्या साबित करना चाहते हो?' कुछ नहीं। मैं बस इतना ही चाहती हूँ कि तुम इस बारे में सोचो कि लड़कियां भी इंटेलीजेंट होती हैं। और इंटेलीजेंट लोग यह पसंद नहीं करते कि उन्हें बताया जाए कि उन्हें क्या पहनना है और क्या करना है, ख़ासतौर पर तब, जब वे वयस्क हों। क्या तुम्हें इसमें कोई तुक नज़र आती है?'

'ओवर-स्मार्ट मत बनो,' मैंने कहा।

'और तुम मेरे डैड बनने की कोशिश मत करो,' उसने कहा।

'लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए छोटे कपड़े पहनने के अलावा और भी कई तरीक़े हैं,' मैंने कहा।

'मैंने लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए ऐसा नहीं किया था। मैं शॉर्ट्स इसलिए पहनती हूँ, क्योंकि मुझे ऐसा करना पसंद है।'

'क्या हम पढ़ाई कर सकते हैं?' मैंने फिर केस खोला।

हम आधे घंटे तक चुप रहे और अपनी किताबों में खोए रहे।

‘मैं लोगों का ध्यान खींचने की कोशिश नहीं कर रही थी,’ उसने ऊपर देखते हुए फिर कहा।

‘मुझे इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता,’ मैंने कहा।

‘क्या तुम चलते हो?'

‘क्या तुम मज़ाक़ कर रही हो?’ मैंने तपाक से किताब बंद करते हुए कहा।

‘नहीं, मैं तो बस चेक कर रही थी। चलो पढ़ते हैं,’ उसने कहा। वह फिर किताब पढ़ने लगी। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट खेल रही थी।

मैंने उस पर पिलो फेंका। वह हँसी और उसे मेरे सिर पर दे मारा। एक-दूसरे से हाथ मिलाने के अलावा यह हमारा पहला कांटैक्ट स्पोर्ट था।

5

हम अगले एक महीने तक साथ-साथ पढ़ाई करते रहे। हालांकि मैं ‘जस्ट फ्रेंड्स’ वाली बात के साथ सहज होने का दिखावा कर रहा था, लेकिन भीतर ही भीतर वह मुझे परेशान कर रही थी। हर बार जब मैं किताब से सिर उठाकर ऊपर देखता, उसका चेहरा मुझे नज़र आता। हर बार मेरा जी करता कि उसके चेहरे को अपने हाथों में थाम लूँ और चूम लूँ। ऐसे में पढ़ाई पर फ़ोकस करने का मेरे सामने एक ही तरीक़ा था: मैं कल्पना करने लगूँ कि प्रोफ़ेसर चटर्जी भी हमारे साथ कमरे में हैं।

बात केवल स्टडी सेशंस तक ही सीमित नहीं थी। जब भी मैं किसी लड़के को उसके साथ बात करते या हँसते देखता, एक आवेग मेरे पेट से उठता और मेरे चेहरे तक पहुंच जाता। कभी-कभी वह मुझे बताती कि सेक्शन ए में फलां लड़का कितना फ़नी है या सेक्शन बी में फलां लड़का कितना क्यूट है और तब मेरा जी करता कि मशीनगन लेकर क्यूट ए और बी में जाऊं और दोनों को शूट कर दूं।

‘व्हाट? उन्हें एडवरटाइजिंग कैम्पेन में पूरा ज़ोर लगा देना चाहिए, है ना?’ उसने मार्केटिंग केस के बारे में कहा।

मैं उसके होंठों को निहार रहा था और उसे चूमने के अलग-अलग तरीक़ों के बारे में सोच रहा था। ‘हुंह? येस, आई एग्री विद यू,’ मैंने कहा।

‘तुम्हारा दिमाग़ कहीं और लगा हुआ है। क्या सोच रहे हो?’ उसने अंगुलियाँ चटकाते हुए कहा।

‘कुछ नहीं, सॉरी। मैं सोच रहा था कि तुम... तुम मार्केटिंग में कितनी इनसाइटफुल हो?'

‘थैंक यू,’ वह मेरी बात पर भरोसा करते हुए मुस्कुरा दी। ‘हाँ, मुझे यह विषय पसंद है। मुझे लगता है मैं मार्केटिंग जॉब में अच्छा परफ़ॉर्म करूँगी। तो, मैं कल तुम्हारी इस तारीफ़ के साथ ही क्लास में जाऊँगी।'

हमने आधी रात को केस पूरा कर लिया। मैं जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

‘चाय?’ उसने पूछा। उसका इशारा था कि हम रामभाई के यहाँ चल सकते हैं।

‘नहीं, चाय पीने के बाद मुझे नींद नहीं आती,’ मैंने कहा।

‘मैगी? ऊपर पैंट्री है, मैं झट से मैगी बना लाऊंगी।'

‘नहीं, मुझे चलना चाहिए।'

वह मुझे छोड़ने दरवाज़े तक आई। ‘तुम इन दिनों बहुत गंभीर-से लगते हो। तुम किस बारे में सोचते रहते हो? ग्रेड्स?'

‘अब मैं तुम्हारे साथ पढ़ाई नहीं कर सकता,’ मैं बिना जाने-बूझे कह गया।

‘क्या?’ उसने हैरान होते हुए कहा।

‘हमने पढ़ाई में अपनी-अपनी रिदम पा ली है। अब हमें साथ-साथ पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं है।'

‘हाँ, लेकिन हमें साथ-साथ पढ़ना अच्छा लगता है। कम से कम मुझे तो... क्या बात है? क्या मुझसे कोई भूल हुई?

‘तुमसे नहीं, मुझसे,’ मैंने कहा।

‘मुझसे ऐसे बात मत करो,’ अनन्या ने चीखते हुए कहा।

उसकी आवाज़ ने अगले कमरे में सो रही एक लड़की को जगा दिया, जो बत्ती बुझाकर सो रही थी।

‘हम डेटिंग नहीं कर रहे हैं, ओके? इस तरह बिहेव मत करो कि हमारा ब्रेक-अप होने जा रहा है,’ मैंने फुसफुसाते हुए कहा। ‘और हां, अब तुम सो जाओ, कल कोई क्विज़ नहीं है।'

अगले दिन क्लास में मैंने उससे बात नहीं की। वह दो बार मेरे पास आई। एक बार मेरा पेन लौटाने के लिए, जिसे मैं उसके कमरे में छोड़ आया था और दूसरी बार मिड-मॉर्निंग ब्रेक के दौरान मुझसे यह पूछने के लिए कि क्या मैं चाय पीना चाहता हूँ। अगर आप किसी को पसंद करने लगते हैं तो महज़ उसकी मौजूदगी ही आपके भीतर गर्माहट पैदा कर देती है। मैं देर तक इस अहसास से लड़ता रहा था, लेकिन आखिर उसने मुझे हरा दिया।

‘मैं अगली क्लास के लिए कुछ पढ़ाई करना चाहूँगा। चाय तुम पी लो,’ मैंने कहा। उसने ज़ोर नहीं दिया और कमरे से बाहर चली गई। उसने एक लंबा कत्थई स्कर्ट और हल्के भूरे रंग का टॉप पहन रखा था। मैं चाहता था कि वह मुड़े और मुझे देखे, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। वह अपनी डोर्म मेट्स के साथ चाय पीने चली गई।

मैं अगले पाँच दिन तक उससे कतराता रहा। मैं क्लास में देरी से आता और जल्दी चला जाता, इसलिए हमारे पास एक-दूसरे को ग्रीट करने का भी कोई समय नहीं होता।

‘तुम उससे बात नहीं कर रहे हो?’ मेरे ऐन पड़ोस में बैठने वाले मोहित ने मुझसे पूछा, जबकि शेष चार मोहित गर्दन आगे बढ़ाए सुनने की कोशिश करते रहे। यहाँ तक कि कन्याश्री ने भी अपनी निरंतर नोट-टेकिंग को विराम दिया और मेरी तरफ़ दस डिग्री घूम गई।

‘तुम्हें ख़ासी फिक्र हो रही है ना?’ मैंने कहा। सभी फिर से अपना-अपना काम करने लगे।

6

रात नौ बजे अनन्या ने मेरे दरवाज़े पर दस्तक दी। मैं डिनर के बाद पढ़ने के लिए बस बैठा ही था। लड़कियाँ ब्वायज़ डॉर्म में कभी-कभार ही आती थीं। वह इससे पहले मेरे रूम पर केवल एक बार आई थी। इससे मेरे डॉर्म मेट्स इतने एक्साइटेड हो गए थे कि उन्होंने ताबड़तोड़ कॉरिडोर में एक फ्रिस्बी मैच रख लिया और तेज़ आवाज़ में म्युज़िक बजाने लगे।

'वह तो बिल्कुल भाग्यश्री जैसी लगती है,' एक लड़की ने मेरे कमरे के बाहर ज़ोर से कहा। इस पर मैं भी अपनी मुस्कुराहट रोक नहीं सका। इसके बाद उस लड़के ने मैंने प्यार किया फिल्म का एक गाना लगा दिया, जिसमें एक लड़की एक कबूतर से यह आग्रह कर रही थी कि वह उसके संदेशवाहक की भूमिका निभाए।

'बहुत हुआ। अब हम फिर कभी तुम्हारे डॉर्म में पढ़ाई नहीं करेंगे,' उसने गुस्से में भुनभुनाते हुए अपनी किताबें समेट लीं। जब उसने दरवाज़ा खोला, तब आठ लड़के कॉरिडोर में फ्रिस्बी खेल रहे थे।

'तुम लोगों की जानकारी के लिए, मैं भाग्यश्री को पसंद नहीं करती,' उसने कहा और तेज़ कदमों से बाहर चली गई।

लेकिन उस दिन वह फिर आई थी। और वह इतनी दृढ़ता के साथ चलकर आई थी कि मेरे डॉर्म मेट्स कोई हरकत करने की हिम्मत नहीं जुटा पाए और अपने-अपने कमरों में गुम हो गए।

मैंने दरवाज़ा खोला। वह वही नीला-सफ़ेद सलवार पहने बाहर खड़ी थी, जो उसने उस दिन पहना था, जब मैंने उसे पहली बार देखा था। जब आप कैम्पस में होते हैं, तो लोगों के कपड़ों के सेलेक्शान में एक पैटर्न तलाश सकते हैं। उसकी उस नीली सलवार कमीज़ का नंबर हर तीसरे हफ़्ते आता था।

वह अपने साथ दो फ्रूटीज़ लेकर आई थी। 'क्या मैं भीतर आ सकती हूँ? क्या मैं पढ़ाई कर रहे स्कॉलर को दस मिनट के लिए डिस्टर्ब कर सकती हूँ?'

उसके रूम के विपरीत मेरे रूम में कोई एस्थेटिक अपील नहीं थी। मैंने लाल ईंटों को खुला छोड़ रखा था और वो क़ैदख़ाने की दीवारों की तरह लगती थीं। आईआईटी होस्टल्स में एसिड में धोए जाने के बाद मेरी सफ़ेद बैड-शीट का रंग मटमैला हो गया था। मेरी डेस्क पर केवल किताबें थीं, जबकि अनन्या की डेस्क पर हमेशा कैम्पस लॉन से तोड़े गए फूल या कलात्मक धूपदान या इसी तरह की अन्य चीज़ें होती थीं, जिन्हें लड़के कभी अपनी शॉपिंग लिस्ट में जगह नहीं देते।

'ज़रा रुको,' मैंने कहा। मैंने कमरे पर जल्दी से एक नज़र डाली। नहीं, कहीं भी कोई अंडरवियर या बदबूदार मोज़े या पोर्न मैगज़ीन या पुरानी ब्लेड नहीं थी। मैंने दरवाज़ा खोल दिया।

'मगिंग अवे?' उसने बिस्तर पर बैठते हुए पूछा।

'नो चॉइस।' 'मैंने अपनी स्टडी चेयर खींचते हुए कहा।

'अब चूंकि तुम मेरे साथ पढ़ाई नहीं कर रहे हो तो तुम्हारी ग्रेड्स तो इंप्रूव होना ही है।'

'ऐसी कोई बात नहीं है मैंने कहा।

'तो फिर कैसी बात है? यह क्या बचपना है? तुम तो आजकल क्लास में मुझे हैलो भी नहीं कहते।'

मैंने उससे नज़रें नहीं मिलाईं।

'आई कॉन्टैक्ट प्लीज़'

मैंने उसकी ओर देखा। मैंने उसे इतना मिस किया था कि मेरा जी कर रहा था कि अपने रूम को लॉक कर दूँ और उसे कभी अपने से दूर नहीं जाने दूँ।

'मैं नहीं कर सकता।'

'क्या नहीं कर सकते?'

'मैं केवल तुम्हारा दोस्त बनकर नहीं रह सकता। मुझे पता है कुछ लड़के ऐसे होते हैं, जो लड़कियों के केवल दोस्त बनकर रह सकते हैं। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता। तुम्हारे साथ तो बिल्कुल नहीं।'

'क्या? 'वह खड़ी हो गई।

'मैं जानता हूँ कि मैं तुम्हारे बराबर नहीं हूँ और मैं तुम्हारे लायक नहीं हूँ और वग़ैरह-वग़ैरह... '

'तुम क्या बातें कर रहे हो? 'वह कंफ्यूज़-सी लगी।

'फ़ारगेट इट। फ्रूटी के लिए शुक्रिया,' मैंने कहा। मैंने एक लंबा गड़गड़ाहट भरा सिप लिया और एक ही सांस में फ्रूटी को पूरा पी गया। फिर मैंने उसके ख़ाली डिब्बे को टेबल पर इस तरह पटका, जैसे हिंदी फिल्मों का कोई बांका हीरो वीएटी69 की आखिरी घूंट पीने के बाद बोतल फेंकता है। हाँ, मुझे अकेला छोड़ दो और मैं अपनी तन्हाई को मैंगो जूस में डुबो दूंगा, मैंने सोचा।

'हे।' उसने मेरे कंधे को छुआ।

'मेरे कंधे पर अपना हाथ मत रखो,' मैंने कहा। उसकी छुअन ने मेरे शरीर में सिहरन पैदा कर दी थी।

'ओके, पीस।' उसने अपना हाथ खींच लिया। 'लेकिन यह ठीक नहीं है। हमारी डील हुई थी।'

'डील की ऐसी-तैसी,' मैंने कहा और फ्रूटी के डिब्बे को तोड़-मरोड़कर डस्टबिन में फेंक दिया।

हमारी नज़रें मिलीं। एक मिनट तक चुप्पी छाई रही।

'तुम क्या चाहते हो? उसने पूछा।'

'आई वांट अस टु बी अ कपल,' मैंने कहा। 'और यह कोई प्रपोज़ल नहीं है। मैं मिस्टर नंबर फ़ॉर्टिन नहीं होना चाहता।'

वह आँखें फाड़कर मुझे देखती रही। मैं भी आँखें फाड़कर उसे देखता रहा, यह जताने के लिए कि मुझ पर उसके इस तरह देखने का कोई असर नहीं पड़ा है। 'यह प्रपोज़ल नहीं तो और क्या है?'

'तुम मेरे कमरे पर आई। तुमने मुझसे पूछा कि मैं क्या चाहता हूँ। यह अलग बात है।'

‘लेकिन तुम चाहते हो कि हम कपल बनें। उसकी आवाज़ अब भी निडर थी।

मैंने सिर हिलाकर हामी भरी।

‘हम प्रैक्टिकली कपल ही थे। हम साथ-साथ पढ़ते थे, साथ-साथ एसटीडी बूथ पर जाते थे, मेस में साथ-साथ खाना खाते थे।'

‘वह तो किसी के भी साथ किया जा सकता है,’ मैंने कहा।

‘तुम बेतुकी बातें कर रहे हो,’ उसने कहा।

‘ओके, मैं एक्सप्लेन करता हूँ,’ ‘मैंने कहा और उठ खड़ा हुआ। ‘मैं इस तरह एक्सप्लेन करता हूं कि मेरी बातें बेतुकी न लगें। तुम्हारे साथ बैठकर पढ़ने का मतलब है सेल्फ़ कंट्रोल की डबल एक्सरसाइज़। एक तो मुझे इन बोरिंग केसेस पर ध्यान केंद्रित करना पड़ता है, दूसरे मुझे हर संभव यह कोशिश करनी पड़ती है कि मेरी नज़र तुम्हारे चेहरे पर न जाए, क्योंकि जब भी मेरी नज़र तुम्हारे चेहरे पर पड़ती है, मेरा जी करता है कि तुम्हें किस कर लूं। लेकिन हमारे बीच यह स्टुपिड ‘जस्ट फ्रेंड्स’ डील हुई है और तुम तो इसको लेकर कूल हो, लेकिन मुझे अपने दिमाग़ को यह समझाने के लिए ख़ूब मशक्क़त करनी पड़ती है कि मैं निकोटिन-फ्री सिगरेटों के बारे में पढ़ाई करूँ और तुम्हारे होंठों और उस छोटे-से तिल के बारे में न सोचूँ, जो तुम्हारे निचले होंठ के ठीक नीचे है।'

‘तुम्हारा ध्यान इस तिल पर चला गया? यह तो बहुत छोटा है।‘ उसने उस तिल को छूते हुए कहा।

‘यह तिल छोटा ज़रूर हो सकता है, लेकिन मेरे माइंड के स्पेस में इसका फ़िफ़्टी परसेंट मार्केट शेयर है। लेकिन मैं तो केवल दोस्त हूँ। मुझे वह तिल कहाँ मिलने वाला है, मुझे तो केवल फुल स्टॉप्स मिलेंगे।'

वह हँस पडी।

‘मैं कोई मज़ाक़ नहीं कर रहा हूँ। तुम लड़कियों को क्या पता कि लड़कों पर क्या बीतती है।'

‘तुम्हारे होंठ बहुत बक-बक करते हैं ना,’ उसने कहा।

मुझे जैसे पाला मार गया हो। लेकिन मिस स्वामीनाथन को पाला नहीं मारा। वह मेरे पास आई और पलभर बाद ही फ्रूटी से सने उसके होंठ मेरे होंठों पर थे। हमने तीन सेकंड लंबा किस किया।

‘और अब, इससे पहले कि मैंने जो अभी- अभी किया है उसकी स्टुपिडिटी को रियलाइज़ करूं मुझे यहां से रफ़ूचक्कर हो जाना चाहिए,’ उसने कहा और दरवाज़ा खोल दिया। मैं काठ की मूरत की तरह अपनी जगह खड़ा रहा।

अनन्या ने जैसे ही दरवाज़ा खोला, मेरे डॉर्म के चार लड़कों ने दरवाज़े से अपने कान हटा लिए।

‘हम तो बस अपनी फ्रिस्बी ढूंढ रहे थे,’ उनमें से एक ने कहा।

‘तब तो वह इस रूम में नहीं मिलने वाली, यह लड़का केवल पढ़ाई में ही मन लगाना चाहता है,’ उसने कहा और डॉर्म से बाहर चली गई।

मैं पाँच मिनट तक अपनी जगह से टस से मस न हुआ। उसके होंठों का अहसास दो मिनट तक मेरे होंठों पर रहा। बाक़ी तीन मिनट यह रियलाइज़ करने में बीत गए कि कैम्पस की सबसे हॉट लड़की ने अभी-अभी मुझे किस किया था। मुझे नहीं पता मैंने क्या सही किया था। लेकिन मुझे इसकी परवाह भी न थी। शायद वह भी मुझे मिस कर रही थी। शायद उसके लिए यह इतनी बड़ी बात न थी। या शायद यह सब मेरी कल्पना में हुआ था और वास्तव में ऐसा कुछ हुआ ही न था। शायद मुझे किसी स्टुपिड की तरह सपने देखना छोड़कर दौड़ते हुए उसके रूम पर जाना चाहिए। या शायद मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि मुझे बिल्कुल नहीं पता था कि जब मैं उससे मिलूंगा, तब मुझे क्या करना चाहिए। शायद मुझे आज की रात गुज़र जाने देनी चाहिए और कल उससे क्लास में बात करनी चाहिए।

‘अब बार-बार उस बात का ज़िक्र मत करो,’ उसने कहा। तेरह घंटे और बाईस मिनट पहले जो होंठ मेरे होंठों पर थे, वे अभी क्लास ब्रेक के दौरान चाय की चुस्कियां ले रहे थे।

‘येस, श्योर, ओके...’ मैं उसे अब तक सात बार थैंक कर चुका था। मैंने विषय बदल दिया। ‘नॉर्मल डिस्ट्रिब्यूशन पूरी तरह ओवररेटेड है,’ मैंने स्टेटिस्टिक्स की क्लास के बारे में कहा, जिसे हमने अभी-अभी अटेंड किया था।

‘और इससे ज़्यादा की उम्मीद मत करना,’ अनन्या ने कहा।

‘ज़्यादा क्या?’ मैंने कहा। अब उसने वह विषय छेड़ दिया था।

‘ज़्यादा का मतलब अब और नहीं। तुम अभी- अभी नॉर्मल कर्व के बारे में क्या कह रहे थे?’ उसने कहा।

‘सॉरी, बस एक क्लैरिफिकेशन। अब और नहीं से तुम्हारा क्या मतलब है: अब और किसेस नहीं या किसिंग से ज़्यादा और कुछ नहीं?'

‘तुम चुप करोगे? अभी हमारी क्लास ख़त्म नहीं हुई है। '

‘लेकिन यह मेरे लिए ज़िन्दगी और मौत का सवाल है। प्लीज़, बताओ ना।'

‘क्या तुम लड़के लोग यही सब सोचते रहते हो? हमें आज रात को इन सभी नॉर्मल कर्व प्रॉब्लम्स के बारे में पढ़ाई करनी है।'

मैंने उसकी ओर देखा और मुस्कुरा दिया।

‘अगर तुमने कर्ब्स के बारे में और कोई जोक किया तो मैं तुम्हारी जान ले लूंगी,’ क्लास की घंटी बजते ही उसने कहा।

7

कहने की ज़रूरत नहीं, एक चीज़ के बाद दूसरी चीज़ होती चली गई और दो हफ़्ते बाद ही हमारे बीच सेक्स हो चुका था। यदि एक लड़का और एक लड़की एक ही रूम में हों और उनके साथ ढेर सारी बोरिंग किताबें हों, तो यह तो होना ही है।

'ये मेरा फ़र्स्ट टाइम है,' हमारे बीच सेक्स होने के बाद उसने कहा और फिर दरवाज़े पर अपनी माँ की तस्वीर की ओर इशारा करते हुए, 'अगर उन्हें यह पता चल जाए तो शामत ही आ जाए।'

'हमें यह करने के दौरान इन तस्वीरों को ढंक देना चाहिए। दे फ्रीक मी आउट,' मैंने उसके परिजनों की तस्वीरों पर नज़र दौड़ाते हुए कहा।

वह हँस पड़ी। 'क्या तुम्हारा भी यह फ़र्स्ट टाइम था?'

'मैं इस बारे में कुछ भी नहीं कहूँगा,' मैंने कहा।

'क्या आईआईटी में तुम्हारी कोई गर्लफ्रेंड थी? 'वह अपना टॉप पहनने के लिए उठ बैठी। मैं चुप रहा।

'क्या तुम्हारा कोई बॉयफ्रेंड था? 'अनन्या ने अपनी भौंहें तानते हुए पूछा।

'नहीं,' मैं ज़ोर से चीखा और उठ कर खड़ा हो गया। 'तुम स्टुपिड हो? तुम मुझसे पूछ रही हो कि क्या मैं गे हूँ।'

'मैंने सुना है रैगिंग में हर तरह की चीज़ें करवाई जाती हैं।'

'नहीं, इतना बुरा भी नहीं होता है। मेरी गर्लफ्रेंड थी।'

'रियली?' उसने पलकें झपकाते हुए पूछा। 'तुमने मुझे कभी बताया क्यों नहीं!

''मैं उस बारे में बात नहीं करना चाहता। दो साल पहले जब मैंने कॉलेज छोड़ा था, तभी वह अफ़ेयर ख़त्म हो गया था।'

'क्यों? कौन-थी वह? स्टूडेंट?'

'प्रोफ़ेसर की बेटी।'

'माय, माय, माय! वी हैव अ स्टड हियर।' फिर उसने कहा, 'वह ख़ूबसूरत थी? मुझसे भी ज़्यादा?'

मैंने अनन्या की ओर देखा। आखिर लड़कियाँ लुक्स के आधार पर एक-दूसरे का इतना आकलन क्यों करती हैं?

'तुम्हारे जैसी ही थी, अलबत्ता तुम ज़्यादा स्मार्ट हो? 'मैंने कहा।

'मेरे जैसी?'

'ओके, तुम उससे ज़्यादा ख़ूबसूरत हो,' मैंने कहा। जो लड़की यह पूछती है, कि क्या वह सबसे ख़ूबसूरत है, वही हमेशा सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत होती है।

'थैंक यू' उसने अपने ट्रैक पेंट्स पहनने के लिए बिस्तर से उतरते हुए कहा। 'वह कहानी कैसे ख़त्म हुई थी?'

'मेरी उसके पिता से एक तरह की डील हुई थी।'

'उसके पिता से? क्या उन्होंने तुम्हें फिल्मी स्टाइल में ब्लैक चेक देकर अपनी बेटी की ज़िन्दगी से दूर चले जाने को कहा था?' उसने हँसते हुए कहा।

'नहीं, उन्होंने मुझे अपनी डिग्री सही वक़्त पर हासिल करने दी थी। इसी वजह से आज मैं यहाँ हूँ। लेकिन इस डील का असल मतलब यह था कि मैं ज़्यादा दूर के सपने न देखूँ, उनके परिवार का हिस्सा बनने के बारे में न सोचूँ।'

अपनी पिछली गर्लफ्रेंड के बारे में सोचते हुए मेरा गला सूख आया। वास्तव में अपनी एक्स गर्लफ्रेंड से आपका रिश्ता कभी पूरी तरह ख़त्म नहीं हो पाता। आप बस उसके विचारों को यहाँ-वहाँ धकेलना सीख जाते हैं, बशर्ते कोई आपको फिर उसे याद करने के लिए न उकसाने लगे। 'क्या अब हम इस विषय को यहीं छोड़ सकते हैं?'

'अभी वह कहाँ है? कैम्पस में?'

'नहीं, उसके पिता एमआईटी में सीनियर फ़ैकल्टी पोस्ट के लिए अमेरिका चले गए थे। उसे वहाँ अपनी ही कम्मुनिटी का एक गीकनुमा लड़का मिल गया। छह माह में सगाई सालभर में शादी। इसके बाद क्या हुआ, मैं नहीं जानता। अब, इसके बावजूद कि हम दोनों चंद लम्हों पहले नेकेड थे, मुझे लगता है कि मैं तुम पर अपनी प्राइवेसी के उल्लघंन का केस लगा सकता हूँ।'

'वेल, इस कहानी से मेरा भी नाता है। इन केस, यदि तुम अब भी उसके साथ इनवॉल्व हो तो।'

'नहीं, ऐसा नहीं है। मुझे उस सबसे बाहर आने में लंबा वक़्त लगा, लेकिन अब मैं बिल्कुल भी इन्वॉल्व्ड नहीं हूँ।'

'क्या तुम उसे चाहते थे'

'हाँ। और मुझे बुरा लगता है कि मुझमें इतना साहस न था कि उसके पिता से लड़ाई लड़ सकूँ। और अब प्लीज़, उस बारे में बिल्कुल बात नहीं,' मैंने कहा। मेरी एक्स गर्लफ्रेंड और मेरे पिता, ये दो ऐसे विषय थे, जो मेरा मूड ख़राब कर सकते थे।

'आखिरी सवाल। क्या वह साउथ इंडियन है?'

'तुम्हें कैसे पता? '

'तुमने आईआईटी, एमआईटी, गीकनुमा सॉफ़्टवेयर प्रोग्रामर का जिक्र किया, अंदाज़ा लगाना कठिन नहीं था।'

मैं हँस पड़ा।

'मेरे पैरेंट्स भी ज़रा कंज़र्वेटिव हैं,' उसने अपनी इलेक्ट्रिक केटल चालू करते हुए कहा।

'हमने अभी तक शादी की प्लानिंग नहीं की है।'

उसने मुझे घूरकर देखा। मैंने सोचा कि क्या मैंने कोई ग़लत बात कह दी है। मैं तो एक फ़ैक्चुअल बात ही कर रहा था।

'तुम सही हो। हम थोड़े बेनेफ़िट्स के साथ केवल दोस्त हैं राइट? या फिर शायद फ़क बडीज़?'

वह अपसेट नज़र आई। बड़ी अजीब बात है कि सेक्स होने के बाद लड़कियाँ रिश्तों को लेकर कितनी संवेदनशील हो जाती हैं।

'अरे, हम तो... '

लेकिन उसने मुझे रोक दिया, 'सॉरी, आई एम फ़्रीकिंग आउट। चाय लोगे?' उसने चाय की एक प्याली मेरी तरफ़ बढ़ाई। मैं दो मिनट तक उसके हैंडल के साथ खेलता रहा। सेक्स की गुंजाइश के बावजूद हमें पढ़ाई करनी थी।

'क्या हमें एचआर केस खोलना चाहिए? यह एक होटल में हड़ताल के बारे में है।' मैंने अपना फ़ोल्डर खोलते हुए कहा।

उसने मुझसे नज़रें मिलाए बिना सहमति में सिर हिलाया। मैंने दिमाग़ पर ज़ोर डालते हुए सोचा कि आखिर मैं उससे ऐसा क्या कहूँ कि वह अच्छा महसूस करने लगे। 'आई लव यू,' मैंने कहा।

उसने ऐहतियात से केस मटेरियल बंद किए और मेरी तरफ़ देखा। 'क्या वाक़ई?' उसने कहा। उसकी आँखें नम थीं।

'हां,' मैंने कहा।

'तुम यह केवल इसीलिए तो नहीं कह रहे हो कि तुम एक बार फिर मेरे साथ सेक्स कर सको?'

'नहीं। लेकिन क्या तुम यह कहना चाह रही हो कि... '

'मैं कुछ भी नहीं कहना चाह रही हूँ। क्या तुम केवल यहीं तक सोच सकते हो?'

'हम साथ-साथ पढ़ते हैं, साथ-साथ खाना खाते हैं, साथ-साथ घूमने जाते हैं, दिनभर क्लास में बैठकर एक-दूसरे को ताकते रहते हैं, हम एक-दूसरे से केवल तभी अलग होते हैं जब मैं सोने जाता हूँ, या जब मुझे टॉयलेट यूज़ करना होता है। तो,' मैं रुक गया।

'तो क्या?'

'आई लव यू, डैम इट! तुम्हें इतनी-सी बात समझ नहीं आती? 'मैंने चिल्लाते हुए कहा।

'दैट्स बेटर। अब तुम थोड़े कंविंसिंग लग रहे हो, 'वह मुस्कुरा दी।

'और तुम?' मैंने पूछा।

'मैं इस बारे में सोचूंगी।'

'एक्सक्यूज़ मी?'

'वेल, हो सकता है कि मैं केवल सेक्स के लिए तुम्हारा इस्तेमाल कर रही हूँ,' उसने कहा।

'एक्सक्यूज़ मी?' मैंने इस बार और ऊँची आवाज़ में कहा।

वह हँस पड़ी। मैंने उस पर एक पिलो फेंका।

'मैंने तुम्हें कहा था ना, मुझे इस बारे में सोचना पड़ेगा।'

मिस स्वामीनाथन ने मुझसे कभी 'आई लव यू' नहीं कहा था, फिर भी वह मेरे साथ रहने आ गई। जब वह रात के कपडों का एक बैकपैक लेकर मेरे रूम पर चली आई तो मैं हैरान रह गया था। मैं उसके यहाँ रहना ज़्यादा पसंद करता। मैं नहीं चाहता था कि वह पुरुष यौन हार्मोन से लबालब भरे बीस लड़कों के डॉर्म में अकेली लड़की हो।

फिर भी, उसके साथ होना अच्छा था। वह अपने साथ अपनी इलेक्ट्रिक केटल, मीठी मुस्कान और मैगी बनाने का हुनर भी ले आई थी। हम पहले भी साथ-साथ पढ़ाई किया करते थे, लेकिन अब उसमें और अनुशासन आ गया। जब आपकी ज़िंदगी में कोई लड़की आती है तो चीज़ें अपने आप व्यवस्थित होने लगती हैं।

हम सुबह-सवेरे उठ जाते थे। वह मुझसे आधा घंटा पहले जाग जाती थी। वह नहाने के लिए सौ मीटर दूर अपने डॉर्म जाती थी। इस दौरान मैं तैयार होकर उसके साथ मेस में ब्रेकफास्ट करने पहुंच जाता था।

'यह तुम्हारा असाइनमेंट है और यह मेरी क्वैंट वर्कशीट है।' वह रात को हमारे द्वारा किए गए काम के ढेर को निकाल लेती और मेस में बैठकर हम उसे आपस में बाँट लेते। हम साथ-साथ क्लास जाते और यदि कन्याश्री अच्छे मूड में होती तो वह दिनभर के लिए अनन्या के साथ अपनी जगह की अदला-बदली कर लेती। नहीं तो, हम अपनी रोज़ाना की ही जगहों पर बैठ जाते और पूरी क्लास के दौरान एक-दूसरे को ताकते रहते। पाँच मोहित पहले-पहले इस स्थिति से बहुत रोमांचित हुए थे, लेकिन बाद में उन्होंने इससे एडजस्ट कर लिया। हाँ, यदि लेक्चर बोरिंग हो जाता तो वे मुडकर हमें देख लेते। वास्तव में उसका मेरे यहाँ रहने चले आना कैम्पस में एक छोटे-मोटे स्कैंडल की ही तरह था। जैसा कि हमेशा होता है, मुझे 'स्टड' का तमगा मिला और उसे 'स्टुपिडली-इन-लव' से लेकर 'स्लट' तक पुकारा गया। लेकिन इससे उसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता था, क्योंकि शायद वह वास्तव में 'स्टुपिडली-इन-लव' थी। रोज़ क्लास में वह मेरे लिए एक नोट पास करती। 'आई मिस यू। क्लास जाने कब ख़त्म होगी और हम एक-दूसरे की बांहों में होंगे, 'नोट में लिखा होता और वह नोट अंकुर, अनूप, बिपिन, भूपिन, भानु, दस अन्य स्टूडेंट्स और कन्याश्री से होता हुआ मुझ तक पहुंचता था। हम साथ-साथ रहते थे, फिर भी वह क्लास में मुझसे छह क़तार दूर बैठी मुझे मिस किया करती थी।

'क्लास में ऐसे नोट्स मत भेजा करो। लोग उन्हें खोलकर पढ़ लेंगे,' मैंने उसे सतर्क करते हुए कहा।

'तुम बड़े बोरिंग हो,' उसने ढेर सारी सैड स्माइलीज़ के साथ जवाब भिजवाया। नोट पास करते समय बिपिन मुस्कुरा दिया। ओके, तो क्लास का मनोरंजन हो रहा था।

'तुम टॉप टेन में आने से थोड़ी ही दूर हो। स्टेटिस्टिक्स फ़ाइनल एग्ज़ाम में एक और 'ए 'और तुम टॉप टेन में होगे,' मेरे साथ तीन माह रहने के बाद एक रात उसने कहा। 'मुझे तो यक़ीन ही नहीं हो रहा है कि मैं इतनी पढ़ाई कर रहा हूँ। आईआईटी में तो हम रातभर गपशप ही करते रहते थे। 'मैंने बत्ती बुझा दी।

'हम भी रातभर गपशप कर सकते हैं,' उसने कहा। हम रज़ाई के भीतर सरक गए। 'किस बारे में? और क्यों? हम हमेशा साथ-साथ ही तो रहते हैं। अपनी नींद क्यों कुर्बान करें?'

'फिर भी, हम बातें कर सकते हैं। फ़्यूचर प्लान्स वग़ैरह-वग़ैरह।'

'फ़्यूचर' और 'फ़ीमेल्स' का कांबिनेशन बड़ा ख़तरनाक होता है। फिर भी एक बिज़नेस स्कूल में फ़्यूचर का मतलब केवल प्लेसमेंट ही हो सकता है। 'हमारी ग्रेड्स अच्छी हैं। तुम आसानी से एचएलएल में सेलेक्ट हो जाओगी। वह सबसे अच्छा मार्केटिंग जॉब है। है ना? और मैं डब्लूपीएम के लिए कोशिश करूंगा।'

‘डब्लूपीएम?’

‘ह्वेवर पेज़ मोर, ताकि मैं जल्दी से जल्दी ख़ूब सारे पैसे बचा सकूँ,’ मैंने खीसें निपोरते हुए कहा।

‘तुम अब भी लेखक बनने को लेकर सीरियस हो, है ना?’ उसने मेरे बालों में अपनी अंगुलियां घुमाईं।

‘हां, लेकिन मैं अब भी सोच रहा हूं कि आखिर मैं लिखूँगा किस बारे में,’ मैंने जमुहाई ली।

‘किसी भी चीज़ के बारे में लिखो। जैसे तुम्हारी वह गर्लफ्रेंड।'

‘अनन्या, हमने तय किया था कि हम अब उस बारे में बात नहीं करेंगे।'

‘सॉरी, सॉरी, तुमने कहा था कि तुमने ग्रेड्स के लिए प्रोफ़ेसर से डील की थी तो मुझे लगा कि शायद यह एक दिलचस्प कहानी साबित हो।'

‘गुड नाइट, माय स्ट्रेटेजिस्ट।‘ मैंने उसे चूमा और लेट गया।

‘आई लव यू,’ उसने कहा।

‘क्या वाक़ई?’

‘हां।'

‘तुमने यह अब जाकर ही क्यों कहा?'

‘मैंने इस बारे में बहुत सोचा। मैंने यह अब कहा है, लेकिन यह मेरे मन में जाने कब से था। गुड नाइट,’ उसने कहा।

डेढ साल बाद

‘क्या सोच रहे हो? क्या तुम लव मेकिंग के बाद बातें करना पसंद नहीं करते?’ वास्तव में मैं ऊपर घूमते पंखे को देखना पसंद करता हूं। या छोटी-सी एक झपकी ले लेना चाहता हूं। आखिर लड़कियाँ हर वक़्त बातें क्यों करना चाहती हैं? हम मेरे कमरे में थे। सर्दियों की बादलों भरी दोपहर थी और हम गर्म कपड़ों से लदे हुए थे।

‘मुझे बातें करना अच्छा लगता है,’ मैंने ऐहतियात से कहा। ‘क्या तुम्हारे मन में कुछ है?'

‘प्लेसमेंट में एक हफ़्ता है और मैं नर्वस हो रही हूँ,’ उसने कहा।

‘चिंता मत करो, हर कंपनी ने तुम्हें शॉर्ट-लिस्ट कर रखा है। यू विल हिट द जैकपॉट।'

‘मैं जॉब ऑफ़र को लेकर नर्वस नहीं हो रही हूँ। मैं सोच रही हूँ उसके बाद क्या होगा?'

‘उसके बाद? फ़ायनली, हमारे बैंक में पैसा होगा। फिर हमें रेस्टोरेंट्स में ऑर्डर करते समय अपनी जेब नहीं देखनी पड़ेगी, थिएटरों में आगे की सीट्स पर नहीं बैठना पड़ेगा, ट्रेनों में सेकंड क्लास में सफ़र नहीं करना पड़ेगा। कॉलेज लाइफ़ मज़ेदार ज़रूर होती है, बट सॉरी, मैंने अपने हिस्से की कॉलेज लाइफ़ पूरी कर ली है। ज़रा सोचो, तुम हर महीने शॉपिंग कर सकती हो!'

‘मुझे शॉपिंग पसंद नहीं।'

‘फ़ाइन, तब तो तुम ख़ूब सारी बचत कर सकती हो। या एग्जॉटिक ज़गहों पर घूमने जा सकती हो।'

वह और सोच में डूब गई।

‘तुम ठीक तो हो?’ मैंने पूछा।

‘क्या तुम्हें अंदाज़ा है कि चार हफ़्तों बाद हमारा कैम्पस है?'

‘निजात मिलने वाली है। नो मोर मर्गिंग एंड ग्रेड्स। उम्मीद करता हूँ इनसे जीवनभर के लिए छुटकारा मिल जाएगा,’ मैंने कहा।

उसकी आवाज़ मंद पड़ गई। ‘हमारे बारे में क्या?'

‘हमारे बारे में?’ मैंने पुरुषों के उस मूर्खतापूर्ण, कंफ्यूज़्ड एक्सप्रेशन के साथ कहा, जिसका उपयोग वे तब करते हैं, जब उन्हें महिलाओं के सामने समझदारी भरा व्यवहार करना पड़ता है।

वह उठकर बैठ गई और टॉप पहन लिया। बाक़ी कपडे पहनने के लिए उसे बिस्तर से उठना पड़ा। सीरियस मूड के बावजूद मैं ख़ुद को यह नोटिस करने से नहीं रोक पाया कि जब लड़कियाँ चेंज करती हैं तो कितनी ख़ूबसूरत लगती हैं। ‘मैं अपने रूम में जा रही हूँ, तुम अपनी झपकियों का मज़ा लो,’ उसने कहा।

‘हे,’ मैंने हाथ बढ़ाकर उसे रोक लिया। ‘क्या बात है? मैं तुमसे बात कर रहा हूँ ना?’

‘हां, तुम बात कर रहे हो, लेकिन बेवकूफ़ों की तरह। चार हफ़्तों बाद हम अलग-अलग शहरों में होंगे। ज़िन्दगी फिर कभी ऐसी नहीं हो पाएगी।'

‘कभी नहीं से तुम्हारा क्या मतलब है?’ मैंने कहा। मेरा मुँह खुला हुआ था।

‘पहले कपड़े पहनो। मुझे तुमसे सीरियस डिस्कशन करनी है।'

कपड़े पहनने तक वह चुप रही। फिर हम बिस्तर पर क्रॉस लेग बैठ गए।

‘तो डील यह है,’ मैंने अपने विचारों को एकजुट करते हुए कहा, ‘तुम्हारा फ़ोकस कैरियर पर है, लेकिन मैं यह पैसों के लिए कर रहा हूँ। तो मैं उसी शहर में जॉब पाने की कोशिश करूंगा, जहां तुम जॉब करती हो। लेकिन प्रॉब्लम यह है कि हम अभी तक यह नहीं जानते कि तुम किस शहर में होगी। तो मैं उस बारे में अभी कुछ कैसे कर सकता हूँ?'

‘और तुम अगले हफ़्ते भी क्या करोगे? हम सभी एक ही समय प्लेस्ड होंगे। तुम मेरे जॉब पाने तक इंतज़ार नहीं कर सकते।'

‘तब तो सब कुछ क़िस्मत के हाथ में है,’ मैंने कहा।

‘और हमारे फ़्यूचर के बारे में क्या? या सॉरी, मुझे पूछना चाहिए कि क्या हमारा कोई फ़्यूचर है भी? '

‘मैं अभी उस बारे में कोई बात नहीं कर सकता,’ मैंने कहा।

‘ओह रियली, क्या तुम मुझे फ़्यूचर में कोई ऐसा टाइम दे सकते हो, जब हम फ़्यूचर के बारे में बातें कर सकेंगे?'

मैं चुप रहा।

'छोड़ों, मैं जा रही हूँ,' उसने कहा और दरवाज़े की ओर बढ़ी।

'मुझे सोचने के लिए समय चाहिए,' मैंने कहा।

'दो साल काफ़ी नहीं थे? '

मैं चुप रहा।

'यू नो, मुझे यह बात हैरान कर देती है,' अनन्या ने कहा, 'कि तुम लड़कों को किसी कमिटमेंट के बारे में सोचने के लिए कितने समय की ज़रूरत होती है, लेकिन किसी लड़की के साथ सोने से पहले तुम बिल्कुल नहीं सोचते।

'अनन्या,' मैंने केवल दरवाज़ा ज़ोर से बंद होने की आवाज़ सुनी।

'सब ठीक हो जाएगा,' उसने मुझे पाँचवी बार कहा। हमने कैम्पस से नवरंगपुरा तक का चार किलोमीटर का सफ़र पैदल तय किया। मैं उस पागलपन से बहुत दूर हो जाना चाहता था। डे ज़ीरो या प्लेसमेंट का पहला दिन ख़त्म हो चुका था और मुझे कोई जॉब नहीं मिला था।

'मुझे लगा था कि जैसी मेरी ग्रेड्स हैं, उस हिसाब से तो मैं पहले ही दिन कामयाबी हासिल कर लूंगा,' मैंने कहा।

'कोई बात नहीं? प्लेसमेंट के लिए अभी छह दिन और हैं,' उसने कहा।

हम एक चाटवाले के पास पाव-भाजी खाने रुके। उसने कम बटर वाली दो प्लेट ऑर्डर की। 'सब ठीक हो जाएगा। देखो, मार्केटिंग कंपनियाँ तो कल ही शुरू करेंगी। मेरा एचएलएल का बिग इंटरव्यू है, लेकिन मैं बिल्कुल तनाव में नहीं हूँ।'

'यू विल गेट इन। मैं एक भी ऐसी कंपनी के बारे में नहीं सोच सकता, जो तुम्हें ना कह सकती हो,' मैंने कहा।

उसने मेरी ओर देखा और मुस्करा दी। 'हर कोई मुझे तुम्हारी तरह प्यार नहीं करता।'

'तुम्हारी ग्रेड्स अच्छी हैं और तुममें मार्केटिंग के लिए पैशन है। यू आर सो एचएलएल कि मैं इसे तुम्हारे चेहरे पर देख सकता हूं।'

'कल तुम्हारे लिए दो और बैंके हैं।'

'आई वोंट सिटीबैंक,' मैंने कहा। 'मेरे पास "आई लाइक द मनी" से बेहतर जवाब होने चाहिए। मुझे इंटरव्यूज़ में और बेहतर तरीक़े से झूठ बोलना चाहिए।'

वेटर ने पाव भाजी सर्व की। उसने पाव का एक और टुकड़ा मुझे खिलाया। 'लेकिन पैसा ही तो इकलौती ऐसी वजह है जिसके लिए कोई भी बैंक में काम करना चाहेगा, है ना?'

'हां, लेकिन इंटरव्यू लेने वाले यह महसूस करना पसंद करते हैं कि वे कुछ मीनिंगफ़ुल काम कर रहे हैं। जैसे कि वे मदर टेरेसा फाउंडेशन या ऐसी ही किसी संस्था के लिए काम कर रहे हों।'

'वेल, तुम्हें इस तरह कहना चाहिए–आई वांट सिटीबैंक, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि भारतीयों को विश्वस्तरीय फ़ाइनेंशियल सेवाएँ मिलें। और साथ ही ''एनॉर्मस ग्रोथ" और ''स्ट्रेटेजिक पोटेंशियल" जैसे शब्दों का इस्तेमाल करना मत भूलना,' उसने कहा।

'मुझे यह सब कहना पड़ेगा?'

'और हाँ, याद रखना, द सिआंटी नेवर स्लीप्स। तो कहना कि तुम खूब मेहनत करोगे,' उसने कहा।

'मैं इतना झूठ नहीं बोल सकता,' मैंने कहा।

वह मेरे मुंह के कोने पर लगी भाजी साफ़ करते हुए हँस पड़ी। मैंने सोचा कि मैं कितना लकी हूँ, जो वह मेरे साथ हैं। शायद कुछ हां सालों में एचएलएल की कमांन उसके हाथ में होगी, लेकिन आज उसकी प्राथमिकता यह थी कि वह मेरे स्टुपिड चेहरे से भाजी साफ़ करे। मुझे अपराध बोध महसूस हुआ। उसे फ़्यूचर के बारे में मुझसे एक सीधा जवाब पाने का हक़ हैं। डू इट, लूज़र, मैंने ख़ुद से कहा। डू इट नाऊ। फिर भले हां तुम्हें यह नवरंगपुरा के एक कामचलाऊ पाव कॉर्नर में हां क्यों न कहना पड़ रहा हो। मैंने बोलने का साहस जुटाया।

'क्या? तुम कुछ कहना चाहते हो?'

'तुम्हें और पाव चाहिए? 'मैंने कहा।

'तीसरा नंबर तुम्हारा हैं,' प्लेसमेंट में सहयोग करने वाले फ़र्स्ट ईयर के एक वालंटियर स्टूडेंट ने मुझसे कहा। मैं इंटरव्यू रूम के बाहर सात अन्य कैंडिडेट्स के साथ स्टूल पर बैठ गया। हम किसी डेंटिस्ट के क्लीनिक के बाहर बैठे मरीज़ों की तरह लग रहे थे, लेकिन हम उनसे भी ज़्यादा तनाव से भरे हुए थे।

पास हां के एक रूम में एचएलएल के इंटरव्यूज़ चल रहे थे। अनन्या के सभी राउंड हो गए थे और वह आखिरी कॉल का इंतज़ार कर रही थी। मैं सोचने लगा कि पहले दिन मुझसे क्या ग़लती हुई थी। ओके, मैं केवल पैसे के लिए जॉब चाहता था, लेकिन जब उन्होंने मुझसे पूछा तो मैं यह बात छुपा गया। तो फिर क्यों मैं कल पाँच बैंकों में जॉब पाने कि लिए मशक़्क़त करता रहा? क्या होगा यदि सिआंटी भी मुझे सेलेक्ट न करे? मैंने सोचा। मेरे मांथे पर पसीने की बूंदें छलक आईं। क्या भगवान मेरे साथ नहीं हैं? फिर मैंने सोचा कि क्या मैंने इस बात के लिए कोई तर्क दिए हैं कि भगवान मेरे साथ क्यों नहीं हैं। मैंने दूर से एचएलएल रूम देखा। अनन्या उसके बाहर खड़ी थी मोरपंखिया रंगत वाली नीली साड़ी में वह ख़ूबसूरत लग रही थी। शायद भगवान तब तक मेरे भविष्य का कोई फ़ैसला नहीं करेगा, जब तक कि मैं उसे उसके भविष्य के बारे में कोई स्पष्ट जवाब न दे दूँ।

'क्रिश मलहोत्रा,' स्टूडेंट वालंटियर ने मेरा नाम पुकारा।

मैं मन हां मन प्रार्थनाएं पढ़ते हुए उठ खड़ा हुआ। मैंने अपनी टाई की गांठ और क़मीज़ की कॉलर चेक की। याद रखो, तुम्हें इस

जॉब की ज़रूरत हैं, मैंने ख़ुद से कहा। बैंकें दोगुना पे करती हैं। मैं अपने मन का कैरियर चुनने के लिए इतनी देर में दो बार कॉर्पोरेट कैरियर छोड़ सकता हूं। मैंने गहरी सांस ली और छोड़ी।

'वेलकम, टेक योर सीट,' शानदार कोला सूट पहने एक व्यक्ति अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे बोला। वह रोलेक्स वॉच पहनना अफ़ोर्ड कर सकता था। और मुझसे बात करते समय मेरी तरफ़ नहीं देखना भी। उसने एक ढेर में से मेरा रेज़्यूमे छाँटकर निकाला।

'गुड आफ़्टरनून,' मैंने अपना हाथ आगे बढ़ाया। मैंने अपनी बांहों की मांसपेशियों को कस लिया, क्योंकि लोग कहते हैं कि मज़बूती से हाथ मिलाना आत्मविश्वास का प्रतीक होता हैं और इस बात का भी कि आपमें दुनिया पर छा जाने की काबिलियत हैं।

'राहुल आहूजा, मैनेजिंग डायरेक्टर, कॉर्पोरेट फ़ाइनेंस,' उसने कहा और मुझसे हाथ मिलाया। फिर उसने दांई ओर बैठे अपने सहयोगी की ओर इशारा करते हुए कहा,' और ये हैं देवेश शर्मा, वाइस प्रेसिडेंट इन एचआर।'

मैंने देवेश की ओर देखा। तीसेक साल का एक्ज़ेलूज़टिव जो इस क़दर सहमां हुआ-सा था, मानो तीन साल का बच्चा हो। मुझे लगा वह उन लोगों में से हैं, जिन्हें वाइस प्रेसिडेंट कहा जाने के बावजूद लतियाया जाता रहता हैं। ख़ैर, मैंने सुना था कि सिटीबैंक में चार सौ वाइस प्रेसिडेंट हैं, जो हर साल उसे जॉइन करने वाले सैंकड़ों एमबीए के कैरियर और इगो का ध्यान रखते हैं। ज़ाहिर हैं, इससे इस टाइटिल का रुतबा ज़रूर ख़त्म हो जाता हैं, लेकिन कम से कम इतना तो हैं हां कि यदि आपको वाइस प्रेसिडेंट के रूप में इंट्रोड्यूस कराया जाए, तो उसका ज़्यादा प्रभाव पड़ता हैं। राहुल ने देवेश को शुरू हो जाने का इशारा किया।

'सो क्रिश, मैंने नोटिस किया हैं कि अंडरग्रेजुएट्स में आपकी ग्रेड्स ख़राब हैं,' देवेश ने कुछ ऐसी ज़नाना आवाज़ में कहा कि कॉलेज में होने वाले ड्रामें में हांरोइन के रोल के लिए उसे आसानी से चुना जा सकता था।

'आपने काफ़ी ग़ौर से देखा हैं,' मैंने कहा।

'एक्सक्यूज़ मी?' देवेश ने ज़रा हैंरान होते हुए कहा।

अपनी ज़बान पर लगाम लगाओ, मैंने ख़ुद से कहा।' नथिंग,' मैंने गला खंखारा।

'तो, क्या हो गया था?'

गर्लफ्रेंड, मौज-मस्ती करने वाले दोस्त, अल्कोहल, चरस और सड़ियल प्रोफ़ेसर्स, मैं कहना चाहता था। लेकिन अनन्या ने मुझे बिल्कुल सहां जवाब बताया था।' एक्चुअली, मिस्टर शर्मा,' मैंने उसके नाम पर ज़ोर देते हुए कहा, ताकि वह अपने बारे में अच्छा महसूस करे,' जब मैं आईआईआंटी पहुँचा, तब मैं इस बात को समझ नहीं पाया था कि वहाँ के सिस्टम द्वारा कितनी सख़्ती बरती जाती हैं। और अगर एक बार ग्रेडिंग में आपकी शुरुआत ख़राब हो जाए, तो वापसी करना ज़रा मुश्किल हो जाता हैं। पिछले सेमेस्टर में मुझे अच्छी ग्रेड्स मिली थीं और मेरी आईआईएमए ग्रेड्स भी अच्छी हैं। तो, जैसा कि आप देख सकते हैं, बाद में मैंने हिसाब बराबर कर दिया।'

इसके बाद बीस मिनटों तक स्टुपिड सवालों का दौर चलता रहा, जैसे 'क्या भारत में क्रेडिट कार्ड्स बेहतर प्रदर्शन कर पाएंगे?' या 'क्या भारत अपनी बैंकिंग सेवाओं में सुधार ला सकता हैं?' , जिनके जवाब में आप बड़ी आसानी से वे बातें कह सकते हैं, जो वे सुनना चाहते हैं, जैसे कि जी हां, क्रेडिट कार्ड्स का भविष्य उज्ज्वल हैं और बैंकिंग सेवाओं में बड़े पैमांने पर सुधार आ सकता हैं। अंतत : उन्होंने सबसे बड़ा सवाल पूछा,' सिटीबैंक हां क्यों?'

सिटीबैंक इसलिए क्यों कि बाक़ी पाँचों बैक मेरे लिए बेकार साबित हुए। मैंने अपने स्टुपिड विचारों को एक गहरी सांस के साथ निगल लिया। बीएस टाइम, बडी, मैंने सोचा, तुम्हारे कैरियर की दिशा तय करने वाले दस सेकेंड शुरू होते हैं अब...

'मिस्टर आहूजा, सवाल यह नहीं हैं कि सिआंटी क्यों। असल सवाल यह हैं कि एक युवा महत्वाकांक्षी व्यक्ति कहीं और क्यों जाना चाहेगा? यह दुनिया की सबसे बड़ी प्राइवेट बैंक हैं, इसकी एक प्रतिष्ठा हैं, यह भारत के प्रति प्रतिबद्ध हैं और बैंक के लगभग हर क्षेत्र में अच्छे मौके हैं। यह बैंक नहीं, विकास की मशीन हैं।'

मैं थोड़ी देर को रुका। मैं देखना चाहता था कि कहीं मेरी बातें उनके सिर के ऊपर से तो नहीं निकल गईं। लेकिन राहुल ग़ौर से सुन रहा था और देवेश सहमति में सिर हिला रहा था। येस, मेरी बातें असर कर रही थीं।

'और अल्टिमेटली, सबसे बड़ी वजह तो यही हैं, राहुल,' मैंने उससे अपनी नज़दीकी जताने के लिए उसका नाम लेते हुए कहा,' मैं वास्तव में उन लोगों के साथ काम करना चाहता हूँ, जो मुझे प्रेरित करते हैं। जब मैं तुम्हें देखता हूं, तो मैं तुम्हारी तरह बनना चाहता हूं। और सिआंटी मुझे इसका एक बेहतरीन मौका देती हैं।'

राहुल गर्व की भावना से भर गया।' तुम... मेरा मतलब हैं कि तुम्हें यह कैसे पता चलता हैं कि तुम मेरे जैसा होना चाहते हो?'

लोग चाहे जितने हां नपे-तुले क्यों न हो जाएं, वे कभी अपनी तारीफ़ सुनने का मौका नहीं गंवाना चाहते।' मैंने तुम्हें प्री-प्लेसमेंट टॉक में देखा था। मैंने दर्जनों टॉक्स अटेंड की हैं, लेकिन जिस तरह से तुमने ख़ुद को प्रेज़ेंट किया, उसमें किसी भी अन्य की तुलना में विचारों की क्लैरिआंटी ज़्यादा थी। मुझे लगता हैं यह सिटीबैंक से जुड़ी कोई बात हैं। तुम लोगों में एक अलग हां कांफिडेंस होता हैं। हैं ना, देवेश?'

देवेश ने मेरी ओर कुछ हैंरानी के साथ देखा।' एक्चुअली, हम ह्यूमन रिसोर्सेस वाले बेस्ट टैलेंट चुनने की कोशिश करते हैं,' उसने शायद किसी नियम पुस्तिका का एक वाक्य तोतों की तरह दोहरा दिया।

'एचआर कुछ भी नहीं करता। मैं जॉब के लिए पर्सनली सभी का चयन करता हूं,' राहुल ने कहा। अब वे दोनों मेरा ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहे थे।

'वह तो ज़ाहिर हैं,' मैंने कहा।

राहुल ने अपनी कुर्सी पीछे धकेल दी और खड़ा हो गया।' लिसन क्रिश, आई लाइक यू। तो मैं तुमसे ईमांनदारी से बात करना चाहूँगा। रिक्रूटमेंट का काम लगभग पूरा हो चुका हैं और अब केवल एक हां जगह बची हैं। लेकिन हमांरा अंदरूनी मांपदंड यह हैं कि नए रिक्रूटमेंट करने के लिए हमें अंडरग्रेजुएट में सेवन-प्वाँइंट ग्रेड चाहिए।'

बेड़ा ग़र्क। मेरे पुराने पाप मेरा पीछा नहीं छोड़ने वाले। शायद इसीलिए उन पाँच बैंकों ने मुझे रिजेक्ट कर दिया था।

'और यह मिस्ड सेमेस्टर...?' उसने मेरी अंडरग्रेजुएट ग्रेड शीट को थपथपाते हुए कहा।

‘रिसर्च सेमेस्टर, सर,’ ‘मैंने सुधार करते हुए कहा।
‘मुझे इस बारे में कुछ पता नहीं। देवेश?'
एचआर में काम करने वाले हर व्यक्ति की तरह देवेश ने भी अपने जीवन में कभी कोई वास्तविक निर्णय नहीं लिया था।’ यह एक बिज़नेल कॉल हैं, सर,’ उसने कहा।
‘बिज़नेस का हेड मैं हूं,’ राहुल ने कहा।
‘हाँ, लेकिन शायद तुम्हें कंट्री मैनेजर से बात करनी चाहिए,’ देवेश ने कहा। वह सुझाव देने से डर रहा था।
‘मैं उससे सीनियर हूं। मैं न्यूयॉर्क से आया हूं। वह अभी-अभी आया हैं। इसीलिए वह कंट्री मैनेजर हैं। तुम जानते हो ना?'
‘सर, लेकिन ग्रेड के हिसाब से...’ देवेश कहते-कहते रुक गया और दोनों मेरी ओर देखने लगे।
‘क्या तुम हमें पाँच मिनट का समय दे सकते हो?’ राहुल ने कहा।
‘श्योर, मैं बाहर वेट करता हूं,’ मैंने खीसें, निपोरते हुए कहा।
‘थैंक्स, हम तुम्हें बुलाते हैं। सो, अब अगला कैंडिडेट मत भेजना।’

8

मैं सिटी इंटरव्यू रूम से बाहर निकला। मैंने नोटिस बोर्ड पर बाक़ी कंपनियों के नाम पर नज़र डाली। वे सभी सिटीबैंक से आधा ही पे करती थीं। मैं एक ख़ाली स्टूल पर बैठ गया और आँखें बंद कर प्रार्थना करने लगा। मेरे सामने भगवान प्रकट हुए।

‘हैलो भगवान,’ मैंने कहा,’ आज मैंने उस इंटरव्यू में एक भी सच्ची बात नहीं कही। लेकिन प्लीज़ मुझे वह जॉब चाहिए।'

‘वे लोग सच सुनना चाहते भी नहीं। इसलिए कोई बात नहीं,’ भगवान ने कहा।’ लेकिन तुम्हें किसी और चीज़ के बारे में फ़िक्र करनी चाहिए।'

‘कौन-सी?'

‘तुम दो साल से एक लड़की के साथ रह रहे हो।'

‘मैं उससे प्यार करता हूं, भगवान,’ मैंने कहा।

‘प्यार करना ही काफ़ी नहीं। तुम जानते हो तुम्हें क्या करना चाहिए।'

‘मैं करूंगा, मुझे केवल समय चाहिए।'

‘तुम अपना समय पूरा कर चुके हो। चार मिनट बाद तुम बैंक जॉब पाने का आखिरी मौका भी गंवा सकते हो,’ भगवान ने कहा।

‘नहीं भगवान, मुझे सिटीबैंक चाहिए।'

‘लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम पहले सही काम करो।'

‘कैसे?'

मैंने अपनी आखें खोलीं और एचएलएल रूम की ओर देखा। अनन्या रूम के भीतर जा चुकी थी। मैंने अपनी आँखें फिर बंद कर लीं।’ कैसे?’ मैंने दोहराया।’ अभी उसका इंटरव्यू चल रहा हैं। मैं वादा करता हूँ कि सिटीबैंक जॉब मिलने के बाद मैं वह सही काम कर दूंगा।'

मैंने अपनी आखें खोलीं और एचएलएल रूम की ओर देखा। अनन्या रूम के भीतर जा चुकी थी। मैंने अपनी आँखें फिर बंद कर लीं।’ कैसे?’ मैंने दोहराया।’ अभी उसका इंटरव्यू चल रहा हैं। मैं वादा करता हूँ कि सिटीबैंक जॉब मिलने के बाद मैं वह सही काम कर दूंगा।'

‘मैं तुम पर भरोसा नहीं करता। अब फ़ैसला तुम्हारे हाथ में हैं। यदि तुम मेरी बात नहीं मानोगे, तो मैं भी तुम्हारी नहीं सुनूंगा,’ भगवान ने कहा।

मैंने अपनी आँखें खोलीं। मेरे पास तीन मिनट थे। यदि मैं उस रूम में चला जाता तो अनन्या मेरी जान ले लेती। लेकिन मेरे भीतर की किसी आवाज़ ने मुझे बताया कि यदि मैंने ऐसा नहीं किया तो सिआंटी कंट्री मैनेजर या राहुल या देवेश ऐसा फ़ैसला ले सकते हैं, जो मेरे लिए नुकसानदेह हो। यक़ीनन, मेरा दिमांग मुझसे कह रहा था कि मैं बेवक़ूफ़ों जैसी बात सोच रहा हूं। इन दोनों बातों का आपस में कोई नाता न था। लेकिन यही हमारे दिमांग की सीमां भी हैं। शायद, घटनाओं और कर्मों का आपस में कोई नाता हो। मैं एचएलएल रूम की ओर दौड़ा।

‘एक्सक्यूज़ मी,’ दरवाज़े पर खड़ी वालंटियर ने मेरा रास्ता रोकते हुए कहा।

‘मुझे भीतर जाना हैं,’ मैंने कहा,’ अर्जेंट।'

‘अंदर इंटरव्यू... '

लेकिन मैं जबरन भीतर घुस गया। क्लासरूम में एचएलएल इंटरव्यूज़ का आखिरी दौर चल रहा था। क्लास की आगे की पंक्ति में कंपनी स्टाफ़ बैठा था, जबकि कैंडिडेट को प्रोफ़ेसर की कुर्सी पर बैठाया गया था।

अनन्या पाँच बुजुर्गों की पेनल के सामने बैठी थी। वह अपने हाथों को उत्साह से हिलाते हुए कुछ बोल रही थी ‘रूरल मार्केट को नए उत्पाद नहीं चाहिए। उन्हें अफोर्डेबिलिआंटी की ज़रूरत हैं...’ मुझे देखकर वह बीच में ही रुक गई। उसकी भौंहें हैंरत से तन गईं।

‘येस?’ तक़रीबन साठ साल के एक बुज़ुर्ग सज्जन मेरी ओर मुड़े।

अनन्या के चेहरे की रंगत पहले गुलाबी और फिर लाल हो गई। यह कलर कांबिनेशन पहले शर्म और फिर ग़ुस्से के कारण बना था।

‘मुझे अनन्या से बात करनी हैं,’ मैंने कमरे में मौजूद सभी लोगों के चेहरे पर एक नज़र डालते हुए मद्धम आवाज़ में कहा।

‘क्या आप कुछ देर इंतज़ार कर सकते हैं?’ बुज़ुर्ग सज्जन ने कहा,’ अनन्या का आखिरी इंटरव्यू चल रहा हैं। हमांरा पूरा सीनियर मैनेजमेंट यहाँ मौजूद हैं।'

‘एक्चुअली, मुझे अभी बात करनी हैं,’ मैंने कहा।

‘सब ठीक तो हैं?’ दूसरे पैनलिस्ट ने पूछा।

‘जी, मुझे केवल एक मिनट चाहिए,’ मैंने कहा और अनन्या को बाहर आने का इशारा किया।

‘क्या बात हैं? जो कहना हैं यहीं कहो,’ उसने मुझे एक डर्टी लुक देते हुए कहा।

मुझे पेनलिस्टों के कन्फ़्यूज़ चेहरे नज़र आए। मैं अनन्या की ओर बढ़ा।

‘व्हाट?’ उसने धीमे से फुसफुसाते हुए कहा,’ पागल हो गए हो क्या?'

मैं उसके क़रीब घुटनों के बल बैठ गया। मेरा मुँह उसके कान के क़रीब था।’ सॉरी, इंटरव्यू कैसा चल रहा हैं?’ मैंने भी धीमे से फुसफुसाते हुए कहा।

‘क्रिश मलहोत्रा, यह बहुत इंपोर्टेंट इंटरव्यू हैं। बात क्या हैं?’ फुसफुसाहट के बावजूद उसकी आवाज़ इतनी तेज़ थी कि पेनलिस्ट उसकी बात सुन सकते थे।

‘अनन्या स्वामीनाथन, मैं, क्रिश मलहोत्रा, तुमसे दिलो-जान से प्यार करता हूँ और मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहना चाहता हूं, ऑफ़ कोर्स, ऑफिस के टाइम को छोड़कर। तुम मुझसे शादी करोगी?'

अनन्या का मुँह खुला का खुला रह गया। उसकी नज़रें पेनलिस्टों और मेरे बीच ठहरी हुई थीं।’ क्रिश,’ उसने कहा। उसने बोलने की कोशिश की, लेकिन वह कुछ कह नहीं पाई।

करीने से आई-लाइन की हुई उसकी आंखों से आंसू की एक बूंद ढुलक पड़ी।’

एवरीथिंग ओके?’ अनन्या को ऐसी स्थिति में देखकर एक पैनेल मेंबर ने पूछा।’ आई होप, कोई बुरी ख़बर नहीं हैं।'

अनन्या ने उसके सामने रखे गिलास से एक घूंट पानी पीते हुए अपना सिर हिलाया।

‘नहीं, क़तई बुरी ख़बर नहीं हैं।’ अच्छी ख़बर हैं।'

‘अनन्या,’ मैंने फिर धीमे-से कहा। क्लासरूम के सख़्त फ़्लोर के कारण मेरे घुटने दर्द करने लगे थे।

‘अब क्या हैं?'

‘क्या तुम्हारा जवाब हां हैं? क्या तुम हमेशा मेरे साथ रहोगी?’ मैंने पूछा।

उसने हँसी छुपाने के लिए अपने होंठों को कसकर भींच लिया।’ हाँ, यू इडियट। मैं हमेशा तुम्हारे साथ ही रहूंगी। लेकिन अभी नहीं। अभी जाओ यही से!'

9

'वॉव, दिस फ़ील्स स्पेशल,' अनन्या ने कहा।

उसने रामभाई के यहाँ अपने एचएलएल ऑफ़र लेटर को तीसरी बार खोला। मुझे एक दिन पहले हां अपना सिटीबैंक ऑफ़र लेटर मिल गया था और सेलेरी कंफ़र्म करने के बाद मैंने उसे अपनी कबर्ड में फेंक दिया था।

'यह नौकर बनने का न्योता हैं, इतना एक्साइटेड होने की ज़रूरत नहीं,' मैंने समोसा सैंडविच ऑफ़र करते हुए कहा।

'ऊंह, इस तरह सोचने की कोई ज़रूरत नहीं हैं। वे मुझे हायर करके रोमांचित हैं। एचएलएल की एक गंभीर साउथ इंडियन नीति हैं।'

रामभाई के यही काम करने वाले एक लड़के ने हमें चाय सर्व की। प्लेसमेंट के दौरान उसे खूब ब़ख्शीश मिली थी।

'तुम स्कूल जाते हो?' अनन्या ने हमें चाय परोसने वाले उस तेरह साल के लड़के से पूछा।' हाँ, रामभाई हमें स्कूल भेजते हैं,' लड़के ने कहा।

'गुड, अगर वे तुम्हें स्कूल न भेजें तो पुलिस में उनकी रिपोर्ट कर दो,' अनन्या ने कहा और लड़के को पचास रुपए का नोट थमां दिया।

'वे तुम्हारी पोस्टिंग साउथ इंडिया में किसी ऐसी जगह पर करेंगे, जिसका नाम भी नहीं लिया जा सकता और जहाँ कोई एसआंटीडी कोड भी न हो,' मैंने कहा।

'नहीं, वे ऐसा नहीं करेंगे। और यदि वे ऐसा करते भी हैं तो मेरे पतिदेव आकर मुझे वहाँ से ले जाएंगे,' उसने अखि मांरते हुए कहा।

'अनन्या, तुम मेरी बात समझी नहीं। शादी करने का फ़ैसला हमने लिया हैं, लेकिन हमारे पैरेंट्स ने अभी तक मंजूरी नहीं दी हैं,' मैंने उसे याद दिलाया।

'कमऑन, मेरे पैरेंट्स ज़रा कंज़र्वेटिव ज़रूर हैं, लेकिन हम उनका नाम रोशन करने वाले बच्चे हैं, द अल्टीमेट मिडिल क्लास फैंटेसी किड्स। उन्हें कोई ऐतराज़ क्यों होगा?

'क्योंकि वे पैरेंट्स हैं। बच्चे बिस्किट से लेकर शादी तक कुछ भी चाहें, पैरेंट्स को प्रॉब्लम होती हैं,' मैंने कहा।

'तुम्हारे पैरेंट्स को मुझसे प्रॉब्लम होगी?' अनन्या ने अपने बालों को पीछे करते हुए उनका एक ढीला-सा जुड़ा बना लिया। उसने एक पिन दांतों में दबाकर रखी थी।

'उन्हें हर उस लड़की से प्रॉब्लम होगी, जिसे मैं अपने लिए चुनूंगा। और तुम साउथ इंडियन हो, यह भी एक प्रॉब्लम होगी। ठीक हैं, यह दूसरे धर्म की लड़की से शादी करने जितना बुरा नहीं हैं, फिर भी यह तक़रीबन वैसी हां बात हैं।'

'लेकिन मैंने अच्छी पढ़ाई की हैं। मैंने आईआईएमए में एमबीए किया हैं और मैं एचएलएल के लिए जॉब करती हूँ। और हाँ, डींगें हाँकने के लिए सॉरी, लेकिन मैं दिखने में भी ठीक-ठाक हूँ।'

'इन सब बातों से कोई फ़र्क नहीं पड़ता। तुम तमिल हो। मैं पंजाबी।'

अनन्या ने ऑफ़र लेटर को फ़ोल्ड कर बैग में रख लिया और बैग को फिर जमांने लगी।

'कुछ कहो ना।'

'मैं इस बैकवर्ड बातचीत का हिस्सा नहीं बन सकती,' उसने कहा।' प्लीज़, अपने पंजाबी बिरादरों से इस बारे में बात करो।'

वह जाने के लिए उठ खड़ी हुई। मैंने उसका हाथ पकड़कर उसे अपनी ओर खींच लिया।' कमऑन अनन्या, जब तुम्हारे पैरेंट्स को पता चलेगा कि तुम्हारा एक पंजाबी बॉयफ्रेंड हैं तो क्या वे भी नाराज़ नहीं होंगे?'

'नहीं। मुझे तो ऐसा नहीं लगता।'

'तुमने उन्हें इस बारे में बताया हैं?'

'नहीं।'

'क्यों?'

'मैं सहां वक़्त का इंतज़ार कर रही हूं। कंवोकेशन दो हफ़्ते बाद है। वे लोग यहाँ आएँगे। मैं तुम्हें उनके सामने इंट्रोड्यूस करूंगी। उन्हें यह बताने के बजाय कि तुम्हारे पूर्वज कहाँ जन्मे थे, तुम यह बताना कि तुमने ज़िन्दगी में क्या किया हैं? वे तुम्हारे पैरेंट्स से भी मिल सकते हैं। वे आ रहे हैं ना?'

'माँ आ रही हैं। पिताजी के बारे में नहीं पता।'

'क्या बात हैं?'

'इस बारे में बात न करें, तो हां अच्छा हैं।'

'तुम अपनी होने वाली पत्नी को भी नहीं बताओगे? तुमने उन्हें इनवाइट किया हैं?'

'नहीं।'

वह उठ खड़ी हुई। मैं भी उठ गया।' चलो, एसआंटीडी बूथ पर चलते हैं,' उसने कहा।

'अभी?'

'तुम्हारी अपने पापा से लड़ाई अब बहुत आगे बढ़ रही हैं।'

'अभी पीक ऑवर रेट्स हैं।'

'आई डोंट केयर।'

हम विजय चार रास्ता के क़रीब एसआंटीडी बूथ तक पहुंचे। मैंने घर का नंबर मिलाया।

'हाय मॉम, मैं बोल रहा हूं।'

‘क्रिश, हमें टिकट बुक करा लेने चाहिए। मैं आ रही हूं। शिप्रा मांसी आना चाहती हैं। रज्जी मांमां और कमला आंआंटी भी।'
‘मॉम, डैड आ रहे हैं?'
‘नहीं,’ उन्होंने कहा और चुप हो गईं।
‘यह मेरा कंवोकेशन हैं,’ मैंने कहा।
‘वे कह रहे हैं कि उन्हें कुछ काम हैं।'
‘वे रिटायर हो चुके हैं। कैसा काम?’ मीटर बढ़कर बीस रुपए तक पहुंच गया।’ तुम उनसे बात करो, शायद वे पर्सनल इन्विटेशन चाहते हों,’ माँ ने कहा।
‘मैं उनसे बात नहीं करूँगा। वे ख़ुद नहीं आना चाहते?'
‘नहीं, तुम उनसे आने को क्यों नहीं कहते?’ उन्होंने ज़ोर देते हुए कहा।
‘मॉम, नहीं। अगर वे नहीं आना चाहते तो मैं उनसे बात नहीं करना चाहता।'
‘ठीक हैं। मांसी और मांमां तो आ सकते हैं ना?'
‘रिश्तेदारों को साथ लेकर मत आओ,’ मैंने अनुरोध करते हुए कहा।
‘क्यों? वे तुम्हें कितना चाहते हैं। वे तुम्हें देखना चाहते हैं... '
‘मॉम, मैं आपको किसी से मिलाना चाहता हूं।'
‘कौन?'
‘आप ख़ुद देख लेंगी,’ मैंने कहा।
मैं बूथ से बाहर चला आया और अनन्या के साथ वापस लौट आया। आखिर ऐसा कौन-सा बाप होगा, जिसे अपने बेटे के कंवोकेशन पर आने के लिए उससे इंविटेशन चाहिए? मैंने ख़ुद से कहा।
‘तुमने उन्हें इनवाइट किया?’ अनन्या ने पूछा।
‘डैड नहीं आ रहे हैं,’ मैंने कहा।
‘क्यों?'
‘अनन्या, हमारे बीच किसी तरह का कोई संबंध नहीं हैं। इसे कभी फ़िक्स करने की कोशिश मत करना, ओके?’
‘लेकिन हुआ क्या?'
‘मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहता।'
‘फिर वहां जवाब।'
‘तुमने भी तो फिर वहां सवाल पूछा था।'
‘तुम्हें उनकी फ़िक्र हैं। तुम अपसेट हो।'
‘मैं पीक ऑवर रेट्स का बिल चुकाने को लेकर अपसेट हूं। अब सुनो, मैंने जैसे-तैसे अपनी मांसी और आंटी को आने से रोका हैं। केवल माँ आ रही हैं। तुमने कुछ सोच रखा हैं ना?'
वह आगे बढ़ गई।’ यह दोनों परिवारों की बेहतरीन पहली मुलाक़ात होगी। हमें कुछ ख़ास करना चाहिए।'
‘जैसे कि एक-दूसरे को शूट कर देना?'
‘शट अप। सब कुछ ठीक-ठीक रहेगा। उन्हें यह जानकर बहुत अच्छा लगेगा कि मेरा बॉयफ्रेंड आईआईआंटी से हैं।'
‘वे मेरी ग्रेड्स तो नहीं पूछेंगे ना?'
‘पूछ सकते हैं। बट हू केयर्स। तुम जल्द हां सिटीबैंक जॉइन करने वाले हो। सुनो, क्या हमें उनके साथ कहीं बाहर घूमने चलने का प्रोग्राम बनाना चाहिए?'
‘मैं श्योर नहीं हूँ कि हमारे परिवार एक-दूसरे के साथ इतना समय बिताना चाहेंगे।'
‘ऑफ़ कोर्स, दे वुड। तुम बस मुझ पर छोड़ दो। इस मुलाक़ात के बाद तुम्हारी मॉम मुझे तुमसे भी ज़्यादा प्यार करने लगेंगी,’ उसने कहा। हम कैम्पस के गेट्स तक पहुंच चुके थे।

कन्वोकेशन से एक दिन पहले मैंने माँ को अहमदाबाद रेल्वे स्टेशन पर रिसीव किया। अनन्या के पैरेंट्स फ़्लाइट से आए थे। उसके पिता ने एलटीसी का इस्तेमांल किया था, जिसके कारण उन्हें हर चार साल में एक बार फ़्लाइट का उपयोग करने की सुविधा मिलती हैं। माँ दो सूटकेस लेकर आई थीं। एक में उनके कपड़े थे तो दूसरे में दिल्ली की अलग-अलग दुकानों की मिठाइयां।
‘मुझे कॉलेज में पाँच दिन और बिताने हैं। इतनी मिठाइयां क्यों?’ मैंने उनसे पूछा। हम एक ऑटो में बैठकर कैम्पस आ रहे थे।
‘मिठाइयां हमारे लिए। और उन लोगों के लिए, जो हमसे मिलेंगे। लोग कहेंगे कि मेरा बेटा ग्रेजुएट हो रहा हैं तो क्या मैं उनका मुंह मीठा न कराऊंगी? मैं तो खाना भी पैक करा लाती। मैं मीठी गुजराती दाल नहीं खाना चाहती। क्या गुजराती दाल वाक़ई बहुत मीठी होती हैं?'
‘इतनी मीठी भी नहीं होती। ख़ैर, मैं तुम्हें किसी से मिलाना चाहता हूं मॉम,’ मैंने कहा। हमांरा ऑटो रेल्वे स्टेशन के क़रीब संकरी गलियों से निकलने की जद्दोजहद कर रहा था।’ किससे?'
‘एक लड़की हैं,’ मैंने कहा।
‘तुम्हारी गर्लफ्रेंड हैं? गर्लफ्रेंड?’ उन्होंने कुछ इस तरह कहा, जैसे कि मैंने एड्स के साथ कोई कांट्रैक्ट कर लिया हो।
‘एक बहुत अच्छी दोस्त,’ मैंने उन्हें थोड़ा शांत करने के लिए कहा।
‘अच्छी दोस्त? क्या तुम्हारे बुरे दोस्त भी हैं?'
‘नहीं मॉम। हम साथ-साथ पढ़ते थे। हमने कई प्रोजेक्ट्स साथ-साथ किए।'

'ओके। क्या उसे अच्छा जॉब मिला?'

'एचएलएल। वहां कंपनी, जो सर्फ़ बनाती हैं। और रिन और लाइफ़बॉय और किसान सॉस भी।' मैं इस उम्मीद में एचएलएल के प्रोडक्ट्स के नाम लेता गया कि शायद उनमें से किसी से वे प्रभावित हो सकें।

'और किसान जैम भी?' उन्होंने तीस सेकंड सोचने के बाद कहा।

'येस, वह मार्केटिंग में हैं। यह मार्केटिंग का सबसे महत्वपूर्ण जॉब हैं।'

'तो क्या उसे फ्री जैम मिलेंगे?'

'शायद,' मैंने यह सोचते हुए कहा कि आखिर बातचीत को वापस पटरी पर कैसे लाया जाए।' लेकिन पॉइंट यह नहीं हैं।'

'हां, यह तो हैं। तो, क्या हमें तुम्हारे कॉलेज जाने से पहले कहीं रास्ते में लंच करना होगा या खाना वहीं मिलेगा? भैया, यही कोई अच्छे रेस्टोरेंट हैं?' उन्होंने ऑटो ड्राइवर से पूछा।

'मॉम, स्टॉप इट। मैं एक ज़रूरी बात कर रहा हूं।'

लेकिन मां ने कहा,'ऑटो ड्राइवरों को हमेशा अच्छी जगहें पता होती हैं।'

'कहीं रुकने पर एक्स्ट्रा चार्ज लगेगा, मैडम,' ऑटो ड्राइवर ने सड़क के हर स्पीड ब्रेकर की हां तरह मुझे भी इग्नोर करते हुए कहा।

मैं मां का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए उन्हें टकटकी लगाकर देखने लगा। उन्होंने मुझे देखकर कहा,' क्या?'

'उसका नाम अनन्या हैं। उसके पैरेंट्स भी आए हैं। मैं चाहता हूं कि आप उनसे मिलें और उनसे अच्छी तरह पेश आएं।'

'तुम जिससे कहोगे, मैं उसी से मिलूंगी। और ये बताओ कि मैं भला कब किसी से अच्छी तरह पेश नहीं आती हूं?'

'मॉम...' मैंने कहा, लेकिन उन्होंने मुझे बीच में हां रोक दिया।

'रास्ते से कुछ बिस्किट लेते चलते हैं। चाय के साथ बिस्किट अच्छे लगते हैं।' 'मॉम,' 'मैंने चिल्लाते हुए कहा।' मैं यही तो नहीं चाहता। मैं चाहता हूं कि आप उनसे इत्मीनान से मिलें और खाने या स्नैक्स या चाय को लेकर ज़्यादा ऑब्सेस्ड न रहें। उन पर अच्छा इंप्रेशन पड़ना चाहिए।'

मां ने मुझे एक डर्टी लुक दी। मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं की।

'भैया, ऑटो घुमाओ। मैं वापस जा रही हूं, मां ने कहा।' मैं दिल्ली से यही तुम्हारा कंवोकेशन अटेंड करने आई हूं और अपने साथ चार अलग-अलग दुकानों की

मिठाइयां लाई हूं और तुम कह रहे हो कि मेरा अच्छा इंप्रेशन नहीं पड़ेगा। ठीक हैं, यदि मेरे होने से अच्छा इंप्रेशन नहीं पड़ता तो मैं जाऊंगी हां नहीं।'

मां धीमे-धीमे बड़बड़ाती रहीं। वे ऑफिशियली अपने ड्रामा मोड में आ गई थीं। ड्राइवर ने ऑटो रोक दिया।

'क्या हुआ? तुमने ऑटो क्यों रोक दिया?' मैंने तैश में आकर पूछा।

'मैडम वापस जाने को कह रही हैं।'

'मॉम,' मैंने खीझभरे लहज़े में कहा।

'अच्छा, तो तुम्हें यह याद हैं कि मैं तुम्हारी मां हूं? मैं तो समझी थी कि तुम्हें केवल अपनी दोस्त के पैरेंट्स की चिंता हैं।'

मां की आवाज़ में गुस्सा भरा हुआ था। मुझे आपातकालीन क़दम उठाने थे।

'यही पास में हां एक जगह बहुत अच्छी पाव-भाजी मिलती हैं। भैया, हमें लॉ गार्डन ले चलो।'

'मुझे भूख नहीं हैं,' मां ने कहा।

'केवल टेस्ट करने के लिए,' 'मैंने कहा। मैंने ऑटोवाले का कंधा थपथपाया। वह लॉ गार्डन की ओर मुड़ गया।

मैंने एक्स्ट्रा बटर वाली पाव-भाजी और लस्सी ऑर्डर की।

किसी भी पंजाबी का गुस्सा शांत करने के लिए डेयरी प्रोडक्ट्स से बेहतर कुछ और नहीं हो सकता।

'ये लड़की कौन हैं?' उन्होंने लस्सी पीने के बाद कहा।

'कोई ख़ास नहीं। जब मैंने उसे बताया कि आपने मुझे कितनी मुश्किलों से बड़ा किया हैं, तो उसने कहा कि वह आपसे मिलना चाहती हैं,' मैंने झूठ बोलते हुए कहा।

एक्स्ट्रा बटर शायद मेरी बातों में था। मां शांत हो गईं।' तुमने उसे सब कुछ बता दिया?' उन्होंने पूछा।

'नहीं, सब नहीं। बस थोड़ा-बहुत। हां, उसके पैरेंट्स थोड़े फ़ॉर्मल ज़रूर हो सकते हैं। इसीलिए मैंने अच्छे इंप्रेशन वाली बात कहां थी। नहीं तो, आपसे मिलकर किसे खुशी नहीं होगी?'

'गुजराती मीठे में क्या लेते हैं? या वे सारी शक्कर खाने में हां डाल देते हैं?' मां ने फिर अपना वहां राग अलापना शुरू कर दिया था।

10

अगली सुबह दो सौ फ्रेश एमबीए ग्रेजुएट्स और उनके हद से ज़्यादा गौरवान्वित पैरेंट्स लुई कान प्लाज़ा लॉन्स में कॉन्वोकेशन के लिए बैठे थे। मुख्य अतिथि चांदी का चम्मच मुंह में लेकर पैदा होने वाला एक युवा उद्योगपति था, जिसने स्टूडेंट्स से कड़ी मेहनत करने और टॉप पर आने का आह्वान किया। डिग्री बांटने और दो सौ स्टूडेंट्स के साथ फ़ोटो खिंचवाने का मुश्किल जिम्मा भी उसे हां सौंपा गया था। हमें मैनेजमेंट में अपना पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा लेना था, जो कि ताउम्र मोटी तनख़्वाह पाने का टिकट था। अनन्या चाहती थी कि हर चीज़ परफ़ेक्ट हो। वह लॉन में आधा घंटा पहले हां पहुंच गई थी ताकि अपने और मेरे परिवार के लिए छह सीटें रोक सके।

मां ने अपनी सबसे बेहतरीन साड़ी पहनी। मैंने ग्रेजुएशन रोब पहना, जिसे मैं तीस रुपए में किराये पर लाया था।

'मॉम, ये अनन्या हैं। अनन्या, ये मेरी मॉम,' कार्यक्रम में पहुंचने पर मैंने कहा।

अनन्या ने मां से हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। ऐसा लगा जैसे मां शॉक्ड रह गई हों। अनन्या मां के पैर छूती तो बहुत हां अच्छा होता, लेकिन कम से कम उसे नमस्ते तो करना हां चाहिए था। हाथ मिलाने जैसी मॉडर्न चीज़ें पैरेंट्स को बहुत नहीं जंचतीं।

'हैंलो आंटी। मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुना हैं,' अनन्या ने कहा।

'एक्चुअली, जब से मैं आई हूं, तब से मैं भी तुम्हारे बारे में हां सुन रही हूं।' मां ने मुस्कराते हुए कहा, जिससे उनके लहज़े में छुपा कटाक्ष छुप गया।

'चलो बैठ जाते हैं। अनन्या, तुम्हारी फ़ैमिली कहां हैं।?' मैंने कहा। हम सभी बैठ गए।' मां को साड़ी पहनने में बहुत समय लगता हैं। इसलिए मैं पहले यही चली आई ताकि अच्छी सीटें रोक सकूं।'

अनन्या ने वहां मोरपंखिया साड़ी पहनी थी, जो उसने एचएलएल इंटरव्यू वाले दिन पहनी थी। उसने मुझे अपनी ओर देखते पाकर एक फ़्लाइंग किस दिया। ग़नीमत थी कि इस पर मां का ध्यान नहीं गया। मैंने सिर हिलाकर अनन्या से अनुरोध किया कि वह डेकोरम का ध्यान रखे।

अनन्या के पैरेंट्स दस मिनट बाद आए। उसके पिता ने झक सफ़ेद क़मीज़ पहनी थी, जैसी कि डिटर्जेंट के विज्ञापनों में दिखाई जाती है। उसकी मां की मैजेंटा-गोल्डन कांजीवरम साड़ी लॉन के किसी भी कोने से देखी जा सकती थी। उन्हें देखकर लगता था कि वे गोल्डन पेंट के किसी ड्रम में गिर गई थीं। उनके पीछे चौदह साल का

एक चश्मीश लड़का चल रहा था, मानो वह इस शाम डिग्री पाने वाले किसी एमबीए का मिनिएचर हो।

'हैंलो मॉम,' अनन्या ने कहा और खड़ी हो गई। उसकी आवाज़ पुलक से भरी हुई थी।

'सेफ़्टी पिन इल्ला समथिंग समथिंग,' उसकी मां ने जवाब दिया। मां और बेटी तमिल में बतियाने लगे। अनन्या के पिता ने कैमरा निकाला और हमारे इर्द-गिर्द मौजूद हर चीज़ जैसे लॉन, स्टेज, कुर्सियां, माइक वग़ैरह की तस्वीरें लेने लगे। उसके छोटे भाई के पास करने को कुछ न था, सिवाय अपने नए बटन-डाउन कॉलर शर्ट में असहज नज़र आने के। मां ने उनकी बातें सुनीं तो उनका मुंह खुला का खुला रह गया।

मैंने धीमे-से कहा,' चलो हम अपने को इंट्रोड्यूस करते हैं।'

'ये लोग मद्रासी हैं?' मां ने पूछा। वे शॉक्ड थीं।

'श्श्श, तमिल,' मैंने कहा।

'तमिल?' मां ने मेरे शब्दों को दोहराते हुए कहा। अनन्या हमें इंट्रोड्यूस कराने लगी।

'मां, ये क्रिश हैं, और ये हैं क्रिश की मां।'

'हैंलो,' अनन्या की मां ने कहा। वे भी उतनी हां स्तब्ध नज़र आ रही थीं, जितनी मेरी मां थीं।

'इज़ंट दिस कूल? हमारे परिवार पहली बार एक-दूसरे से मिल रहे हैं,' अनन्या ने चहकते हुए कहा, लेकिन सभी ने उसकी इस बात को इग्नोर कर दिया।

'क्रिश के पिता नहीं आए हैं?' अनन्या के पिता ने पूछा।

'उनकी तबियत ठीक नहीं हैं,' मां ने बहुत कोमल स्वर में कहा।' वे हार्ट पेशेंट हैं। उन्हें डॉक्टरों ने ज़्यादा सफ़र नहीं करने की हिदायत दी हैं।'

मां ने इतनी सफ़ाई से झूठ बोला कि मैं भी उनके लिए सहानुभूति महसूस करने लगा। अनन्या के पैरेंट्स ने सहमति में सिर हिलाया। उन्होंने एक-दूसरे से तमिल में धीमे से कुछ कहा और फिर अपनी-अपनी जगह बैठ गए।

'मुझे जाना चाहिए, मेरा नाम पहले आएगा,' अनन्या ने खिलखिलाते हुए कहा और स्टूडेंट्स की क़तार में शामिल होने चली गई।

मैं अपनी मां और अनन्या की मां के बीच सैंडविच की तरह बैठा रहा।

'आप अनन्या की मां के क़रीब बैठना चाहेंगी?' मैंने अपनी मां से पूछा।

'क्यों? ये लोग कौन हैं?' उन्होंने मुझे घुड़कते हुए कहा।

'नाराज़ मत होओ, मॉम। मैं तो केवल इसलिए पूछ रहा था, क्योंकि मुझे भी जल्द हां उस क़तार में शामिल होना हैं।'

'तो जाओ। मैं यही तुम्हें देखने आई हूं, मद्रासियों के पास बैठने के लिए नहीं। और अब मुझे चुपचाप देखने दो,' उन्होंने कहा।

मुख्य अतिथि ने डिप्लोमा डिस्ट्रिब्यूशन शुरू कर दिया था। लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ स्टूडेंट्स का अभिनंदन किया। लेकिन शुरुआती स्टूडेंट्स के बाद वे ऊब गए और कॉन्वोकेशन ब्रोशर्स से ख़ुद को पंखा झलने लगे।

'हमें उनसे जान-पहचान बढ़ानी चाहिए। शायद हम साथ-साथ लंच करने जाएंगे,' मैंने कहा।

‘तुम जाओ उनके साथ लंच करने, मैं अकेले हां लंच कर सकती हूं,’ मां ने कहा।

‘मॉम...’ मैंने बोलना शुरू हां किया था कि अनाउंसर ने अनन्या का नाम पढ़ा। अनन्या स्टेज पर पहुंची। शायद वह इकलौती ऐसी स्टूडेंट थी, जो फ़ोटो खींचने लायक़ थी। मैं खड़ा हो गया और तालियां बजाने लगा।

मां ने मुझे एक डर्टी लुक दी।’ बैठ जाओ, उसके पैरेंट्स तक खड़े नहीं हुए हैं।‘ मैं मैंने नहीं कहा। मैं बैठ गया। अनन्या के पैरेंट्स इत्मीनान से तालियां बजाते रहे और अच्छी तरह देख पाने के लिए गर्दन उचकाकर देखते रहे। अनन्या की मां ने मुझे संदेहभरी नज़रों से देखा। मैंने रियलाइज़ किया कि मैंने अभी तक उनसे बात नहीं की थी। बातचीत शुरू करो, इडियट, मैंने ख़ुद से कहा।

‘आपकी बेटी तो स्टार हैं। आपको बहुत गर्व का अनुभव हो रहा होगा,’ मैंने कहा।’ हमें इसकी आदत हैं। वह स्कूल के दिनों से हां पढ़ाई में बहुत अच्छी रही हैं,’ उन्होंने जवाब दिया।

फिर मैंने उसके पिता से बात करने की कोशिश की।’ आप यही कितने समय के लिए हैं, अंकल?'

अंकल ने मुझे ऊपर से नीचे तक कुछ इस तरह देखा, जैसे मैंने उनकी सीक्रेट पर्सनल फैंटसियों के बारे में कुछ पूछ लिया हो।

‘हम परसों चले जाएंगे, क्यों?’ उन्होंने कहा।

कुछ ‘क्यों’ ऐसे होते हैं, जिनका कोई जवाब नहीं हो सकता, सिवाय इस तथ्य के कि मैं तो महज़ बातचीत करने की कोशिश कर रहा था।’ नथिंग, अनन्या और

मैं सोच रहे थे कि क्या आप शहर घूमना चाहेंगे? हम एक कार शेयर कर सकते हैं,’ मैंने कहा।

अनन्या की मां हमारे बीच बैठी थीं और वे मेरे एक-एक शब्द को सुन रही थीं। उन्होंने अपने पति से तमिल में कुछ कहा।’ समथिंग समथिंग गांधी आश्रम समथिंग रिकमेंड समथिंग।'

‘गाधी आश्रम बहुत अच्छी जगह हैं। मेरी मां भी उसे देखना चाहती हैं।‘ मैंने कहा।

‘क्या?’ मां ने अपनी सीट से कहा।’ तुम्हें स्टेज पर नहीं जाना हैं क्रिश? तुम्हारी बारी आने वाली हैं।'

‘हां,’ मैंने कहा और खड़ा हो गया। गांधी आश्रम दोनों परिवारों के लिए अच्छी शुरुआत हो सकता हैं। गांधीजी शांति और राष्ट्रीय अखंडता के प्रतीक थे, शायद इससे हम सभी को कुछ प्रेरणा मिल सके।

‘तो जाओ,’ मां ने कहा।

‘रुको,’ मैंने कहा और उनके पैर छूने के लिए झुका।

‘थैंक गॉड कि तुम्हें यह याद था। मुझे तो लगा था कि तुम अनन्या की मां के पैर छुओगे,’ उन्होंने कहा।

मां की आवाज़ अनन्या की मां के कानों तक पहुंचने के लिए काफ़ी थी। उन्होंने एक-दूसरे को कुछ इस तरह देखा कि बैकग्राउंड में एके-47 बुलेट्स की ठांय-ठांय सेट की जा सकती थी। यक़ीनन, कोई मोहनदास करमचंद गांधी ही उनमें मेल-मिलाप करवा सकता था।

‘मॉम, कंट्रोल,’ मैंने धीमे-से कहा।

‘मैं तो कंट्रोल में ही हूं। लेकिन ये साउथ इंडियंस नहीं जानते कि अपनी बेटियों को कैसे कंट्रोल में रखा जाए। हेमा मालिनी से लेकर श्रीदेवी तक, सभी की सभी पंजाबी मर्दों के पीछे पड़ी हुई हैं।'

मेरी मां ने यह बात इतने ज़ोर से कही थी कि पूरी क़तार ने यह सुन लिया। चंद लम्हों के लिए लोगों का ध्यान कॉन्वोकेशन सेरेमनी से हटकर हमांरी ओर केंद्रित हो गया। अनन्या की मां ने अपने पति को हल्के से कोहनी मारी। वे खड़े हो गए अनन्या के मरियल-से भाई को बीच में खींचा और पाँच क़तार दूर एक ख़ाली जगह पर जाकर बैठ गए।

‘मॉम, ये आप क्या कर रही हैं?’ मैंने सिर पर ग्रेजुएशन कैप को संभालते हुए कहा।

‘कन्याश्री बैनर्जी,’ अनाउंसर ने माइक पर कहा और मैं समझ गया कि मैं बहुत लेट हो चुका हूं। मैं अपना पिछला कॉन्वोकेशन इसलिए मिस कर गया था, क्योंकि उस सुबह मेरी नींद देरी से खुली थी। मैं यह कॉन्वोकेशन मिस नहीं करना चाहता था।

‘आखिर मैंने ऐसा क्या कह दिया? यह तो फ़ैक्ट हैं,’ ‘मां ने कहा। वे बात तो मुझसे कर रही थीं, लेकिन वे मानो हर उस व्यक्ति को संबोधित कर रही थीं, जिसका ध्यान हमांरी बातचीत पर था। हमांरी बातचीत किसी भी उबाऊ डिग्री डिस्ट्रिब्यूशन सेरेमनी पर भारी पड़ सकती थी।

‘क्रिश...’ ‘अपना नाम सुनते ही मैंने दौड़ लगा दी। पाँच मोहित स्टेज के नज़दीक मेरा इंतज़ार कर रहे थे। मैं स्टेज चढ़ते समय उन्हें देखकर मुस्करा दिया। मुख्य अतिथि ने मुझे मेरा डिप्लोमा दिया।

मां खड़े होकर तालियां बजा रही थीं।’ आई लव यू,’ उन्होंने चीखते हुए कहा। मैं उनकी ओर देखकर मुस्करा दिया। पिछले दस सालों से मेरे पिता उन्हें कह रहे थे कि उनका बेटा ज़िन्दगी में कुछ भी हासिल नहीं कर पाएगा। मैंने अपना डिप्लोमा उठाया और ऊपर देखकर भगवान का शुक्रिया अदा किया।

‘मूव, अगले स्टूडेंट की भी बारी आने दो,’ अनाउंसर ने कहा, क्योंकि मैं भावुक होकर बार-बार मुख्य अतिथि को धन्यवाद दिए जा रहा था। जैसे ही मैं नीचे पहुंचा, मुझे अनन्या के पैरेंट्स दिखाई दिए। मेरे लिए तालियां बजाना तो दूर, उन्होंने मेरे स्टेज पर पहुंचने पर कोई प्रतिक्रिया तक नहीं की थी। मैं अपनी सीट पर लौट आया। अनन्या हमांरी क़तार के एंट्रेंस पर खड़ी थी और वह बहुत परेशान लग रही थी।’ मैं दोस्तों के साथ कुछ फ़ोटो खिंचवाने में पीछे रह गई थी। मेरे पैरेंट्स कहा हैं?'

‘पाँच क़तार पीछे,’ मैंने कहा।

‘क्यों? क्या हुआ?'

‘कुछ नहीं। वे सेरेमनी को ज़्यादा क़रीब से देखना चाहते थे,’ मैंने कहा।

‘मैंने कार बुक कर ली हैं। सेरेमनी ख़त्म होने के बाद हम सभी घूमने जा रहे हैं, राइट?’ '

‘अनन्या, अपने पैरेंट्स के पास जाओ,’ मां को अपनी तरफ़ ताकते देखकर मैंने दृढ़ता के साथ उससे कहा।

11

'हम पहले ही टैक्सी के लिए पैसे दे चुके हैं,' मैंने कहा।' तो, आप हमारे साथ चल सकती हैं। यह एक बजट एक्सरसाइज़ हैं।'

मैं और मां कैम्पस के बाहर टैक्सी स्टैंड की ओर चले जा रहे थे। मां की क़तई मंशा नहीं थी कि मिस्टर गांधी के रहने की जगह देखें। शहर के बाहर स्थित साबरमती आश्रम हमेशा पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहता था। अनन्या ने टोपाज़ से छोटे-छोटे पैकेट में लंच पैक करवा लिया था। उसके अनुसार साबरमती नदी के क़रीब कहीं पिकनिक मनाना एक बेहतरीन कोडाक मोमेंट था। निश्चित ही, उसे उस मिस्ड कोडाक मोमेंट के बारे में कुछ नहीं पता था, जब मेरी मां ने कुछ साउथ इंडियन अभिनेत्रियों के बारे में कुछ इनसाइटफुल कमेंट्स किए थे।

'हमने एक क्वालिस बुक कराई थी,' मैंने ड्राइवर से कहा, जो एक इंडिका के क़रीब खड़ा था। अनन्या और उसका परिवार पहले ही टैक्सी स्टैंड पर पहुंच चुका था उसकी मां को देखकर लग रहा था, जैसे उन्होंने अभी-अभी किसी पर भुनभुनाते हुए अपनी भड़ास निकाली हो, लेकिन शायद यह उनका नेचरल एक्सप्रेशन था।

'क्वालिस इलेक्शन ड्यूटी पर गई है। हमारे पास केवल यही हैं,' ड्राइवर ने हथेली पर खैनी रगड़ते हुए कहा।

'इसमें हम सब कैसे आ सकते हैं?' मैंने पूछा।

'हम इससे दोगुने पैसेंजर भी इसी में ले जाते हैं,' ड्राइवर ने कहा।

'चलो ऑटो कर लेते हैं,' मैंने कहा।

'मैं किसी ऑटो-वॉटो में नहीं जा रही हूं,' मां ने बेकसीट पर बैठते हुए कहा।' आप आगे बैठ सकते हैं और मैडम को अपने पास बैठा सकते हैं,' ड्राइवर ने अनन्या की ओर इशारा करते हुए कहा। अनन्या की मां ने ड्राइवर को कुछ यूं घूरकर देखा कि यह उसे दिनभर चुप कराने के लिए काफ़ी था।

'मॉम, क्या आप ऑटो से आ सकती हैं?' अनन्या ने अपनी मां से अनुरोध भरे स्वर में कहा।

'क्यों, हमने भी इसके लिए पैसा दिया हैं,' उन्होंने कहा।' समथिंग समथिंग इल्ला इल्ला!'

'सेरी, सेरी, अम्मा,' अनन्या ने कहा।

आखिर हम किसी नतीजे पर पहुंचे। अनन्या के पिता आगे बैठे और अनन्या उनके पास बैठी। अनन्या की मां पीछे बैठीं और अपने बेटे को गोद में बैठा लिया। मेरी मां पहले ही ड्राइवर के पीछे एक विंडो सीट ले चुकी थीं। मैं दोनों महिलाओं के बीच जैसे-तैसे अपनी जगह बनाकर बैठ गया।

साबरमती आश्रम कैम्पस से आठ किलोमीटर दूर था। रास्ते में सभी चुप्पी साधे रहे और इस वजह से बीस मिनट की ड्राइव भी एक घंटे की लगी। अनन्या ने अपने पैरेंट्स से बात करने की कोशिश की, लेकिन वे उसकी बातों को अनसुनी करने का दिखावा करते रहे और खिड़की से बाहर सिर निकालकर बैठे रहे। मेरी मां ने नाइस बिस्किट्स का एक पैकेट निकाला और किसी को भी ऑफ़र किए बिना उन्हें खाना शुरू कर दिया। अलबत्ता उन्होंने मां का हक जताते हुए मेरे मुंह में ज़रूर एक बिस्किट ठूंस दिया। ज़ाहिर हैं, मैं मना नहीं कर सकता था।

'सब लोग इतने चुप क्यों हैं,' अनन्या ने मुझसे पूछा। हम आश्रम के टिकट काउंटर पर जा रहे थे।

'मेरी मां ने कंवोकेशन के दौरान एक सिली कमेंट किया था,' मैंने कहा। मैं उम्मीद कर रहा था कि अनन्या ज़्यादा डिटेल में नहीं पूछेगी।

'क्या कहा था उन्होंने?' अनन्या ने छह टिकटों के लिए पैसे निकालते हुए कहा।' उन्होंने क्या कहा, यह ज़रूरी नहीं हैं, लेकिन उसी के बाद तुम्हारे पैरेंट्स वहां से चले गए थे।'

'उन्होंने एग्ज़ैक्टली क्या कहा था?' अनन्या ने ज़ोर देते हुए पूछा।

'कुछ नहीं, बस यही कि साउथ इंडियन औरतें कुछ लूज़ होती हैं वग़ैरह-वग़ैरह। कोई ख़ास बात नहीं।'

'क्या?' अनन्या ने मेरी ओर देखा। वह शॉक्ड थी।

'यह मैंने नहीं कहा, यह उन्होंने कहा। सिली कमेंट था। इग्नोर कर दो।'

'मुझे समझ नहीं आ रहा हैं कि क्या कहूं,' अनन्या ने कहा।

'कुछ नहीं। बस कुछ ऐसा करो कि सभी में फिर से बातचीत शुरू हो जाए,' मैंने कहा। अब हम मेन एंट्रेंस की ओर बढ़ रहे थे।

हम आश्रम के भीतर चले आए। गांधीजी यही 1915 से 1930 तक रहे थे। उनकी मशहूर डांडी यात्रा भी इसी आश्रम से शुरू हुई थी। अनन्या ने एक गाइड को अपॉइंट किया। इसकी एकमात्र वजह यही थी कि उसकी बातें सुनने के लिए ही सही, लेकिन सभी एक साथ चलते रहें। हम प्रदर्शनी से होकर गुज़रे, जहां गांधीजी की कई तस्वीरें, पेंटिंग्स, पत्र और लेख प्रदर्शित थे।

'और जब मिस्टर गौधी ने 1930 में डांडी यात्रा शुरू की, तो उन्होंने कसम खाई कि वे तब तक इस आश्रम में लौटकर नहीं आएंगे, जब तक भारत को स्वतंत्रता नहीं मिल जाती,' गाइड ने सुप्रशिक्षित नाटकीय स्वर में कहा।' और उस दिन के बाद वे कभी लौटकर नहीं आए।'

'क्या देश को आज़ादी मिलने के बाद वे यही आए थे?' अनन्या की मां ने पूछा।

'आह,' गाइड ने आह भरी,' नहीं, वे नहीं आ सके। देश को आज़ादी मिलने के छह माह के भीतर ही उन्हें गोली मार दी गई।'

मेरी मां सवाल पूछने में किसी से पीछे नहीं रहना चाहती थीं। उन्होंने गाइड से पूछा,' डांडी यात्रा का यह नाम क्या इसलिए पड़ा कि वे अपने हाथ में एक डांडी लेकर चलते थे? '

गाइड हँस पड़ा। उसकी तमांम हरकतों की तरह उसकी हँसी भी नाटकीय थी।' भारत के महानतम व्यक्ति के बारे में हम

कितना कम जानते हैं। नहीं मैडम, डांडी एक जगह का नाम हैं। वह यही से पाँच सौ किलोमीटर दूर हैं,' गाइड हमें एक नक़्शे के पास ले गया और एक समुद्रतटीय कस्बे की ओर इशारा किया।

अनन्या की मां अपने पति की ओर मुड़ी और तमिल में कुछ कहा।' समथिंग समथिंग इल्ला नॉलेज पंजाबी पीपुल समथिंग।'

'सेरी, सेरी,' अनन्या के पिता ने सरसरी तौर पर कहा। वे नक़्शे को ग़ौर से देख रहे थे।

अनन्या की मां ने अपनी बात जारी रखी,' इंटेलेक्चुअली, कल्चरली ज़ीरो। समथिंग समथिंग क्रास अनएजुकेटेड समथिंग।'

मुझे नहीं पता कि अनन्या की मां को यह पता था या नहीं कि वे बीच में कुछ अंग्रेज़ी के शब्द भी बोल रही थीं या शायद उन्होंने जानबूझकर उन शब्दों का इस्तेमाल किया था। उन्होंने वापसी कर ली थी। मेरी मां ने उनकी बातें सुनीं और मेरी ओर देखा। गाइड के चेहरे पर चिंता की लकीरें नज़र आने लगीं। उसकी बख़्शीश ख़तरे में थी।

'सो यू सी, गांधीजी को यह दृढ़ विश्वास था कि देश के सभी लोग एक हैं। ख़ैर, चलिए अब गांधीजी की निजी चीज़ें देखते हैं। इधर आइए, प्लीज़,' गाइड ने बीच में दख़ल देते हुए कहा। दोनों मांएं एक-दूसरे को सर्द निगाहों से देख रही थीं।

हम आश्रम परिसर में एक पेड़ के नीचे लंच करने बैठे, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे सभी को पाला मार गया हो। सभी चुपचाप खा रहे थे कि अनन्या ने यह ख़बर सुनाई : 'हम एक-दूसरे को पसंद करते हैं।'

सभी ने एक-दूसरे की ओर कंफ़्यूज़न में देखा। इस ग्रुप में अधिकांश लोग ऐसे थे, जो एक-दूसरे को पसंद नहीं करते थे।

'क्रिश और मैं, हम एक-दूसरे को पसंद करते हैं,' अनन्या ने मुस्कराते हुए कहा।

'मैंने कहा था ना। मुझे लग रहा था कि कोई खिचड़ी पक रही हैं...' मां ने अपनी चपाती तोड़ते हुए कहा।

'चिंता करने की कोई बात नहीं हैं। हम तो अपनी खुशिया आपसे बांटना चाहते थे। हम एक-दूसरे से प्यार करते हैं,' अनन्या ने कहा।

'शट अप, अनन्या!' अनन्या की मां ने उसे ग़ुस्से से घूरते हुए कहा। मुझे लगा कहीं वे उसे तमांचा न जड़ दें। मुझे यह भी लगा कि कहीं अनन्या अपना दूसरा गाल न आगे कर दे। आखिर हम गांधी आश्रम में जो बैठे थे।

'मैं साउथ इंडियन लड़कियों के बारे में ठीक यही कहना चाह रही थी। अकेले दिल्ली में ही इस तरह के कई मामले देखे जा सकते हैं,' मेरी मां ने कहा। वे फिर से अनन्या की मां पर हावी होने के लिए बेताब थीं।

'मॉम, चिल,' मैंने कहा।

'क्या मैंने कुछ कहा?' मां ने पूछा।

'उठ जाओ' अनन्या की मां ने अपने पति से कहा और वह रिमोट से चलने वाली टीवी की तरह उनका आदेश मानकर खड़े हो गए। उन्हें देखकर अनन्या का भाई भी उठ गया।

'हम ऑटो से वापस लौट जाएंगे,' अनन्या की मां ने कहा।

अनन्या हैरान–सी पेड़ के नीचे बैठी रही।

'तुम चलोगी या इन लोगों के ही साथ रहोगी?' अनन्या की मां ने पूछा।

'मॉम, प्लीज़!' अनन्या की आवाज़ सुनकर लगा जैसे वह अभी रो पड़ेगी।

अनन्या की मां उसे अपने साथ खींचकर ले गईं। गाइड ने उन्हें जाते हुए देखा लेकिन उसे माजरा समझ नहीं आया। मैंने उसे पे किया और मां के पास चला आया। उन्होंने टोपाज़ का बचा-खुचा पनीर टिक्का मसाला ख़त्म किया।

'वे लोग चले गए,' मैंने कहा।

'गुड। अब कार में ज़्यादा जगह मिलेगी,' 'उन्होंने कहा।

अंक 2: दिल्ली

12

‘इतने ध्यान से क्या पढ़ रहे हो?’ मां ने डाइनिंग टेबल पर भिंडी कतरते हुए पूछा।’ सिटीबैंक का एप्लाई फ़ार्म। मुझे पचास पेज भरने होंगे। वे सबकुछ जानना चाहते हैं, जैसे तुम्हारी मां का जन्म कहां हुआ था।'

‘लाहौर से दिल्ली के रास्ते पर। तुम्हारी दादीमां ने मेरी डिलिवरी पंजाबी बाग के करीब एक कामचलाऊ टेंट में कराई थी।'

‘मैं दिल्ली लिख देता हूं,’ मैंने कहा।

सिटीबैंक जॉइन करने से पहले मैं दो महीने की छुट्टी पर घर आया था। अभी अप्रैल ही चल रहा था, लेकिन दिल्ली का तापमान अभी से चालीस डिग्री सेंटीग्रेड पार कर चुका था। मेरे पास करने को कोई ख़ास काम न था, सिवाय अनन्या को दिन में एक बार कॉल करने या उसके कॉल का इंतज़ार करने के। मैं मां के पास बैठा था। वे खाना पका रही थीं। पापा अभी तक घर नहीं लौटे थे और किसी को भी ठीक से पता नहीं था कि वे कहा हैं, या शायद किसी को परवाह भी न थी।

‘क्या इसी फ़ार्म में लोकेशन की चॉइस भी भरनी हैं?’ मां ने पूछा।

मैंने उनके हाथों को देखा। जब मैंने कॉलेज जॉइन करने के लिए घर छोड़ा था, तब की तुलना में अभी उनके हाथ ज़्यादा झुर्रीदार थे। उन्होंने एक भिंडी की टोपी और पूंछ आंटी और उसे बीच से चीर दिया।

‘हां,’ मैंने कहा।

‘तुमने दिल्ली को ही चुना हैं ना? '

मैं चुप रहा।

‘क्या?’

‘हां, मैं दिल्ली को ही चुनूंगा,’ मैंने कहा।

फ़ोन की घंटी घनघनाई। मैं दौड़कर फ़ोन उठाने पहुंचा। रविवार का दिन था और सस्ते एसटीडी रेट्स के कारण तय था कि अनन्या दोपहर को ही कॉल करेगी।

‘हाय, मेरे हनी बंच,’ अनन्या ने कहा।

‘ज़ाहिर हैं, अभी तुम्हारी मम्मी तुम्हारे इर्द-गिर्द नहीं हैं,’ मैंने कहा। मैं धीमी आवाज़ में फुसफुसा रहा था, क्योंकि मेरी मां की आंखे भले ही भिंडी पर थीं, लेकिन उनके कान मेरी आवाज़ पर लगे हुए थे।

‘यक़ीनन नहीं। कल वर्षा पोरुपु पूजा हैं और मां उसके लिए सामान ख़रीदने गई हैं।’

‘वर्षा क्या? '

‘वर्षा पोरूपु, तमिल न्यू ईयर। तुम्हें नहीं पता?'

‘ऊंह, पता क्यों न होगा। हैंप्पी न्यू ईयर,’ मैंने कहा।

‘और तुमने अपना सिटीबैंक फ़ार्म भरकर भेज दिया हैं ना?'

‘नहीं, फ़ार्म में अभी कुछ और आइटम भरने हैं,’ मैंने कहा।

‘तुमने चेन्नई को ही अपनी टॉप लोकेशन चॉइस लिखा हैं ना?'

‘मैं चेन्नई ही लिखूंगा... वेट।'

मैंने फ़ोन उठाया और मां से उतनी दूर चला गया, जितनी दूर लैंडलाइन का घुमांवदार तार मुझे जाने दे सकता था।’ मां को उम्मीद हैं कि मैं दिल्ली लिखूंगा,’ मैंने फुसफुसाते हुए कहा।

‘और तुम क्या चाहते हो? एचएलएल ने मुझे चेन्नई में प्लेस किया हैं। मैंने तुम्हें कई हफ़्तों पहले ही बता दिया था। इस तरह कैसे होगा?'

‘हो जाएगा। लेकिन यदि मैं चेन्नई गया तो वे जान जाएंगी कि मैं तुम्हारी वजह से वहां जा रहा हूं।'

‘फ़ाइन, तो उन्हें बता दो।'

‘कैसे?'

‘मुझे नहीं पता। उन्होंने मुझे कोई चॉइस नहीं दी, नहीं तो मैं ही दिल्ली चली आती। आई मिस यू स्वीट्स, अ लॉट। प्लीज़, बेबी, जल्दी आ जाओ।'

‘मैं किसी और का भी बेबी हूं। और वे मुझे देख रही हैं तो अब मुझे फ़ोन रख देना चाहिए।'

‘आई लव यू कहो ना प्लीज़।’

‘आई डू।’

‘नहीं, प्यार से कहो ना।’

‘अनन्या!'

‘बस एक बार। तीनों शब्द, एक साथ।'

मैंने मां की ओर देखा। उन्होंने भिंडियों का आखिरी ढेर उठाया और उन्हें एक गीले कपड़े से पोंछ दिया। उनके हाथ में चमकीला चाकू, जो कि मेरी लव स्टोरी में उनकी मौजूदा स्थिति का प्रतीक था, शाम की रोशनी में चमक उठा।

‘मूवीज़ आई लव। तुम्हें भी देखनी चाहिए।'

‘आ आ, दैट्स नॉट फ़ेयर,’ दूसरे छोर पर अनन्या ने झूठ-झूठ की रोनी आवाज़ निकालते हुए कहा।

‘बाय,’ मैंने कहा।

‘ओके लव यू। बाय,’ उसने फ़ोन काट दिया।

मैं डायनिंग टेबल पर लौट आया। मैंने अपराध बोध से भरकर कुछ भिंडियां उठाईं और उन्हें गीले कपड़ों से पोंछने लगा।

'मद्रासी लड़की?'

'अनन्या,' मैंने कहा।

'उससे दूर रहो। वे लोग ब्रेनवॉश करना बहुत अच्छी तरह जानते हैं।'

'मॉम, मैं उसे पसंद करता हूं। इन फ़ैक्ट, मैं उससे प्यार करता हूं।'

'देखो, मैंने तुम्हें पहले ही कह दिया हैं। वे तुम्हें अपने जाल में फंसा रहे हैं,' मां ने घोषणा करते हुए कहा।

'मुझे किसी ने नहीं फंसाया हैं, मॉम,' मैंने एक भिंडी को टेबल पर पटकते हुए कहा।' वह बहुत अच्छी लड़की हैं। वह स्मार्ट हैं, इंटेलीजेंट हैं, गुड-लुकिंग हैं। उसके पास बहुत अच्छा जॉब हैं। उसे किसी को भी फंसाने की ज़रूरत भला क्यों होगी?

'उन्हें नॉर्थ इंडियन पुरुष अच्छे लगते हैं।'

'क्यों? भला नॉर्थ इंडियन पुरुषों में ऐसा क्या ख़ास हैं?'

'क्योंकि वे गोरे-चिट्टे होते हैं। यह तमिलों का कॉम्प्लेक्स हैं।'

'अ कॉम्प्लेक्शन कॉम्प्लेक्स?' मैंने धीरे-से हँसते हुए कहा।

'हां, बहुत ज़्यादा,' मां ने कहा।

'मॉम, उसने आईआईएमए में पढ़ाई की हैं, वह भारत की सबसे स्मार्ट लड़कियों में से एक हैं। आप क्या बातें कर रही हैं? और आपने तो उसे देखा हैं, उसका रंग तो मुझसे भी साफ़ हैं।'

'गोरी साउथ इंडियन लड़कियां ही सबसे ज़्यादा ख़तरनाक होती हैं। श्रीदेवी और हेमा मालिनी।'

'मॉम, अनन्या की तुलना श्रीदेवी और हेमा मालिनी से करना बंद करो,' मैंने ज़ोर से कहा और टेबल पर रखे भिंडी से भरे प्याले को अपनी बांह से आगे सरका दिया। प्याले की ठोकर से उसके पास रखा चाकू मां की अंगुली से जा टकराया। दर्द के कारण उनके चेहरे पर शिक़नें आ गईं और उनके दाएं हाथ की अंगुलियों से ख़ून के क़तरे बहने लगे।

'मॉम, आई एम सॉरी,' मैंने कहा।' आई एम सो सॉरी।'

'ठीक हैं। मुझे मार डालो। उस लड़की के लिए मुझे मार डालो,' उन्होंने अपना रोना-धोना शुरू करते हुए कहा।

'मॉम, मैं...' ख़ून की एक बूंद मेरे सिटीबैंक फ़ार्म पर गिर पड़ी। क्या यह अपनी मां के साथ विश्वासघात करने का समय है, यू इडियट, मैंने सोचा।

'मैं फ़ार्म में दिल्ली लिखने जा रहा हूं,' मैंने कहा।

'क्या?'

'कुछ नहीं। बैंड-एड्स कहां हैं? चिंता मत करो, भिंडी मैं बना दूंगा। मुझे मसाला दे दो।'

मैंने मां को बैंडेज लगाई और उन्हें एक सोफे पर बैठा दिया। फिर मैंने टीवी चालू कर दी। मैं किसी चैनल पर एक ऐसा सीरियल ढूंढना चाहता था, जिसमें बच्चों को अपने मांता-पिता के साथ बदतमीज़ी करते हुए नहीं दिखाया जा रहा हो। इसके बाद एक घंटे तक मैं भिंडियों में मसाला भरता रहा।

'तुम्हें पता है गैस कैसे स्विच ऑन की जाती है?' लिविंग रूम से मां की आवाज़ आई। मैं किचन में माचिस खोज रहा था।

'मुझे पता हैं, चिंता मत करो।'

'मैं तुम्हें दूध की तरह गोरी पंजाबी लड़कियां दिखा सकती हूं,' 'उन्होंने कहा। उनका वॉल्युम टीवी से भी तेज़ था। मैंने नज़रअंदाज़ कर दिया और कबर्ड में एक बर्तन ढूंढने लगा।' क्या हमें मैट्रिमोनियल विज्ञापन देना चाहिए? नीचे रहने वाली वर्मा आंटी ने विज्ञापन दिया था। उन्हें पचास रिस्पांस मिले, जबकि उनका बेटा डोनेशन कॉलेज से हैं। तुम्हें तो पाँच सौ रिस्पांस मिलेंगे,' मां ने कहा।

'रहने भी दो, मॉम,' मैंने कहा।

मैंने गैस स्टोव जलाया और उस पर पैन रख दिया। फिर उसमें थोड़ा-सा खाने का तेल डाला और जीरा ढूंढने के लिए ड्राअर खोला। जीरा वहीं था। सात साल पहले जब मैंने कॉलज के लिए घर छोड़ा था, तब भी जीरा वहीं हुआ करता था।

'एक्चुअली, एक लड़की हैं मेरे मन में। तुमने पम्मी आंटी की बेटी को देखा हैं?'

'नहीं, और मैं देखना भी नहीं चाहता,' मैंने कहा।

'रुको,' मां ने कहा। अचानक वे हरकत में आ गई थीं। मैंने उन्हें अपने बेडरूम में गोदरेज कबर्ड खोलते सुना। वे किचन में एक वेडिंग एल्बम ले आईं।' फ़्लेम कम करो, तुम उसे जला डालोगे। और तुमने एग्ज़ॉस्ट चालू क्यों नहीं किया?' उन्होंने मेरे हाथ से चमचा छीना और काम में जुट गईं। वे सख़्त हाथों से भिंडी चलाने लगीं और

फिर उन्होंने कहा 'यह एल्बम खोलो। बारात में घोड़े के पास नाच रही इस लड़की को देखो। वह जिसने गुलाबी लहंगा पहना हैं।'

'मॉम,' मैंने विरोध भरे स्वर में कहा।

'कभी-कभी मेरी भी सुन लिया करो। क्या मैं तुम्हारी रिक्वेस्ट पर जयललिता के परिवार से नहीं मिली थी?'

'क्या?'

'कुछ नहीं। फ़ोटो देखो।'

मैंने एल्बम खोला। वह मेरी कज़िन डिंकी की शादी का एल्बम था। एल्बम के शुरुआती पाँच पेज दूल्हा-दुल्हन के चेहरे के शॉट्स से भरे पड़े थे, जिन्हें तरह-तरह के कैलाइडोस्कोपिक कांबिनेशन में और दिल के आकार की फ्रेम्स में दिखाया गया था। मैं एल्बम के पन्ने पलटता गया और वहां पहुंच गया, जहां घोड़े के साथ वाली तस्वीरें थीं। मैंने गुलाबी लहंगे वाली लड़की को देखा। उसके छितराए बालों के कारण उसका चेहरा बमुश्किल ही नज़र आ रहा था। वह कोई डांस स्टेप कर रही थी। उसके हाथ ऊपर उठे थे और उसकी तर्जनी आकाश की ओर तनी हुई थी।

'हैं ना सुंदर?' मां ने दूसरा गैस स्टोव जलाया और रोटियां बनाने के लिए उस पर तवा रख दिया। फिर वे आटा गूंथने लगीं।

'मैं ठीक से देख नहीं पा रहा हूं,' मैंने कहा।

'तुम्हें उससे मिलना चाहिए। और हां, जब तक मैं रोटी बनाऊं, तुम भिंडियों को चलाते रहना,' उन्होंने मेरे हाथ में चमचा थमाते हुए कहा।

'मैं किसी से मिलना नहीं चाहता।'

'बस एक बार।'

'उसमें ऐसा क्या ख़ास हैं?'

'उनके छह पेट्रोल पम्प हैं।'

'क्या?'

'उसके पिता। उनके छह पेट्रोल पम्प हैं। और सबसे अच्छी बात यह हैं कि उनकी केवल दो बेटियां हैं। यानी हर दामांद को तीन-तीन मिलेंगे। ज़रा सोचो तो।'

'क्या?' मैंने कल्पना की कि मैं गैस स्टेशन में बैठा हूं।

'हां, वे लोग बहुत पैसेवाले हैं। पेट्रोल पम्प नगद बिकते हैं। ख़ूब सारा काला धन।'

'और लडकी क्या करती हैं? क्या वो पढ़ी-लिखी हैं?'

'लड़की कुछ कर रही हैं। आजकल तो पत्राचार से भी ग्रेजुएशन किया जा सकता हैं।'

'ओह, तो वह कॉलेज भी नहीं जाती हैं? '

'कॉलेज की डिग्रियों तो बड़ी आसानी से मिल जाती हैं। उनके पास पैसे की कोई कमी नहीं हैं।'

'मॉम, पॉइंट यह नहीं हैं। मैं तो विश्वास भी नहीं कर सकता कि आप मेरी शादी किसी बारहवीं पास से करवाना चाहती हैं... फ़ारगेट इट। एल्बम रख दो। और रोटियां बन गई हैं क्या? मुझे भूख लग रही हैं।'

'हम एजुकेटेड पंजाबी लड़कियां भी देख सकते हैं। तुम्हें डॉक्टर्स पसंद हैं?'

'नहीं, मुझे कोई भी पंजाबी लड़की पसंद नहीं हैं।'

'तुम्हारी मां भी पंजाबी हैं,' मां ने अपसेट होते हुए कहा।

'ये बात नहीं हैं, मॉम,' मैंने कहा और दही निकालने के लिए फ्रिज़ खोला। 'मैं कोई भी लड़की नहीं देखना चाहता। मेरी पहले ही एक गर्लफ्रेंड हैं।'

'तुम उस मद्रासी लड़की से शादी करोगे?' मां ने पूछा। अनन्या के बारे में जानने के बाद से वह पहली बार इतनी ज़्यादा शॉक्ड लग रही थीं।

'मैं उससे शादी करना चाहता हूं। समय आने पर, ऑफ़ कोर्स।'

मां ने तवे पर रोटी पटकी और अपना माथा पीट लिया।

'चलो, खाना खा लेते हैं,' मैंने निराशा के इस प्रदर्शन को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा। हमने लिविंग रूम में कॉफी टेबल पर खाना रखा और टीवी के सामने खाने बैठ गए। दरवाज़े की घंटी दो बार बजी।

'ओह नो, तुम्हारे पापा आ गए,' मां ने कहा। 'टीवी बंद कर दो।'

'इट्स ओके,' मैंने कहा।

मां ने मुझे सख़्त नज़रों से देखा। मैंने अनमने ढंग से टीवी बंद कर दी। मां ने दरवाज़ा खोला। पापा भीतर आए और मुझे देखा। मैं मुड़ा और टेबल की ओर चला आया।

' लंच?' मां ने पूछा।

पापा ने कोई जवाब नहीं दिया। वे डाइनिंग टेबल तक आए और खाने का मुआयना किया। 'तुम इसे खाना कहती हो?' उन्होंने कहा।

मैंने उन्हें घूरकर देखा। 'मां को यह बनाने में तीन घंटे लगे हैं,' मैंने कहा।

मां ने उनके लिए एक प्लेट निकाली।

'मैं यह खाना नहीं खाना चाहता,' पापा ने कहा।

'आप यह क्यों नहीं कहते कि आप पहले ही कहीं और खा चुके हैं?' मैंने फिर दख़ल दिया।

अब पापा ने मुझे घूरकर देखा और फिर वे मां की ओर मुड़े। 'यह तुम्हारी परवरिश का नतीजा हैं। सभी डिग्रियों जाएं भाड़ में आखिर में तुम्हें बस यही मिलना हैं।

'यही, और साथ में सिटीबैंक में जॉब भी, जिसकी बदौलत मुझे शुरुआत में ही आपसे तीन गुना तनख़्वाह मिल रही हैं, मैं यह कहना चाहता था, लेकिन कहा नहीं। मैंने अपना सिटीबैंक फ़ार्म अपनी तरफ़ खींच लिया।

पापा ने टीवी के ऊपरी हिस्से को छूकर देखा। 'यह गर्म हैं। टीवी कौन देख रहा था?'

'मैं देख रहा था। कोई प्रॉब्लम?' मैंने कहा।

'मैं उम्मीद करता हूं कि तुम जल्द हां घर से चले जाओगे,' पापा ने कहा।

और मैं उम्मीद करता हूं कि आप जल्द ही दुनिया से चले जाएंगे, मैंने मन ही मन कहा और अपनी प्लेट उठाकर कमरे से बाहर चला आया।

रात को मैं अपने बिस्तर पर लेटा नींद का इंतज़ार कर रहा था। मेरा मन भटक रहा था। एक तरफ़ मुझे कैम्पस के वह ख़ूबसूरत दिन याद आ रहे थे, जब मैं अनन्या के साथ होता था। और उसके बाल मेरे चेहरे को सहलाते रहते थे। दूसरी तरफ़ मुझे शाम को पापा से हुई बहस याद आ रही थी। मां कमरे में आईं और उन्होंने लाइट जला दी।

‘मैंने बात कर ली हैं। परसों हम पम्मी आंटी के यही जाएंगे।’

‘मॉम मैं नहीं... '

‘चिंता मत करो, मैंने उन्हें केवल यही कहा हैं कि हम चाय पर आ रहे हैं। देखना, तुम्हें देखने के बाद वे ही पहले बात चलाएंगे।’

‘मेरी कोई दिलचस्पी नहीं हैं,’ मैं अपने बिस्तर पर उठ बैठा।

‘अरे केवल स्नैक्स के लिए ही चलो। वे लोग बहुत पैसे वाले हैं। मामूली मेहमानों को भी काजू-किशमिश परोसते हैं।’

‘मॉम, मुझे वहां जाने की ज़रूरत ही क्या हैं? '

‘क्योंकि इससे मुझे अच्छा लगेगा। क्या यह वजह काफ़ी नहीं?’ उन्होंने कहा। मैंने उनके झुर्रीदार हाथों को देखा, जिस पर बैंडेज बंधी थी।

‘ओके,’ मैंने कंधे उचकाते हुए कहा और बिस्तर में पसर गया। ‘अब मुझे सोने दो।’

‘बहुत अच्छे,’ उन्होंने कहा और बत्ती बुझाकर कमरे से बाहर चली गईं। मैं फिर अपनी साउथ इंडियन लडकी के ख़्यालों में खो गया।

13

पम्मी आंटी पीतमपुरा में रहती थीं, जहां अच्छी-ख़ासी तादाद में पंजाबियों का डेरा था। इस इलाक़े की हर गली में ताजमहल से ज़्यादा संगमरमर था। हर कूचे से टमाटर के साथ पकाए जा रहे पनीर की महक आती थी। हमने ऑटो बुलवा लिया, क्योंकि पापा ने हमें कार ले जाने की इजाज़त नहीं दी थी। मां ने ऑटो ड्राइवर से कुछ घर आगे ही रुक जाने को कहा। हम पम्मी आंटी को यह नहीं बता सकते थे कि हम कार से नहीं आए हैं।

'उनकी एक मीटिंग थी। उन्होंने हमें बाहर ड्रॉप किया और चले गए,' जब पम्मी आंटी दरवाज़े पर हमें लेने आईं तो मां ने उनसे कहा।

'उन्हें थोड़ी देर के लिए तो आना था। एक कोल्डड्रिंक पीकर ही चले जाते,' पम्मी आंटी ने कहा और हमें भीतर ले गईं। पम्मी आंटी का वजन अमूमन उनके दशक के अनुरूप रहता आया था और यह सिलसिला नब्बे के मौजूदा दशक तक चला आया था। सैंतीस साल पहले वे मिस चंडीगढ़ रह चुकी थीं। यह खिताब जीतने के फ़ौरन बाद एक अमीर कारोबारी ने उनसे शादी कर ली और उन्हें एक्स्ट्रा शान-शौक़त और एक्स्ट्रा कैलोरीज़ वाली एक ज़िन्दगी मिली। आज उनका वज़न सैंतीस साल पुरानी मिस चंडीगढ़ स्पर्धा की तीनो फ़ायनलिस्टों के कुल वज़न से भी ज़्यादा था।

हम पांच सीढ़ियां चढ़कर उनके लिविंग रूम पहुंचे। पम्मी आंटी को सीढ़ियां चढ़ते समय परेशानी हुई थी। आखिरी क़दम उठाते समय उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा: 'आह, मेरे घुटने।'

'तुम आजकल मॉर्निंग वॉक के लिए जा रही हो या नहीं?,' मां ने पूछा।

'कहां कविता-जी, गर्मी कितनी हैं। फिर सुबह सत्संग भी तो होते हैं। बैठो,' पम्मी आंटी ने हमसे कहा और अपनी नौकरानी को खास शरबत लाने को कहा।

हम लाल मखमली सोफ़े में धस गए। उसका स्पंज बेस दो फिट गहरा रहा होगा।'

'एक्चुअली, यदि तुम सत्संग तक भी पैदल जाओ तो यह अच्छी एक्सरसाइज़ हो सकती हैं,' मां ने कहा।

'छह कारें हैं, कविता-जी। ड्राइवर फ़ालतू बैठे रहते हैं। ऐसे में पैदल चलना भला कैसे होगा?' पम्मी आंटी ने कहा। वे एक बेहतरीन पंजाबी हुनर का प्रदर्शन कर रही थीं–बातों-बातों में अपनी धन-दौलत का बखान कर देना।

मां ने मेरी ओर मुड़कर उनके शब्दों को दोहराया।' छह कारें? क्रिश, सुना तुमने, इनके पास छह कारें हैं?'

मुझे कुछ समझ नहीं आया कि क्या कहूं। शायद मुझे यहां उनके पास छह कार होने की सराहना करनी चाहिए थी। लेकिन चूंकि वे लगातार मेरी तरफ़ देखे जा रही थीं, इसलिए मैं केवल इतना हां कह पाया, ' कौन सी कारें?'

'मुझे तो पता नहीं। मेरे हसबैंड को पता हैं। पिछले हफ़्ते ही उन्होंने एक होंडा ख़रीदी हैं।'

'कितने में?' मां ने पूछा। पंजाबियों के लिए यह भी लगभग एक शिष्टाचार हैं कि अपनी धन-दौलत की डींगे हांक रहे किसी व्यक्ति को और डींगे हांकने के लिए प्रेरित किया जाए।

'सात लाख। प्लस तीस हज़ार रुपए स्टीरियो चेंज करवाने,' के पम्मी आंआंटी ने कहा।

'वॉव! मां ने कहा। 'इसका भी सिटीबैंक में जॉब हैं, चार लाख रुपया सालाना तनख़्वाह हैं।'

किसी भी ग़ैर-पंजाबी को मां की यह बात बेतुकी लग सकती थी। लेकिन किसी पंजाबी के लिए यह बिलकुल तर्कसंगत बात हैं। आखिर लाखों में बात जो हो रही थी।

'गुड। तुम्हारा बेटा तो बहुत लायक़ निकला हैं,' उन्होंने कहा।

मुझे लगा कि पैसे कमा लेना ही लायक़ी का पैमाना हैं, क्योंकि उन्होंने मेरे आईक्यू के बारे में कुछ नहीं पूछा था।

'सब आपका आशीर्वाद हैं, पम्मी-जी,' मां ने कहा।

'ना, ना,' पम्मी आंटी ने कहा, मानो मेरे द्वारा जॉब पाने में अपनी संभावित भूमिका पर कुप्पा हो रही हों।

हम अगले एक मिनट तक एक-दूसरे को देखकर मुस्काते रहे। फिर पम्मी आंटी ने पूछा, 'ड्रायफ्रूट्स? '

'अरे नहीं नहीं, पम्मी-जी। आप भी क्या तक़ल्लुफ़ करने लगीं?' मां ने आनाकानी करते हुए कहा।

'रानी, ज़रा काजू और दुबई वाले पिंडू खजूर ले आना,' पम्मी-जी ने चिल्लाते हुए कहा। मेरी मां ने अंतरराष्ट्रीय मेवों की सराहना में अपना सिर हिलाया। 'हमांरी डॉली कहां हैं?'

मां ने पूछा। तीन गैस स्टेशन की मालकिन पर अपना हक़ जताने से वे ज़रा भी नहीं झिझकीं।

'और कहां होगी? यहीं हैं। डॉली!' पम्मी आंटी इतनी ज़ोर से चीखीं कि उनकी आवाज़ बड़ी आसानी से हाइड्रोकॉर्बन-फंडेड मैंशन की ऊपरी मंजिलों पर पहुंच गई होगी। नौकरों को हुक्म दिया गया कि वे डॉली को नीचे बुला लाएं।

'उसे नहाकर तैयार होने में एक मुद्दत लग जाती हैं,' पम्मी आंटी ने झूठ-मूठ का गुस्सा जताते हुए कहा। उन्होंने मुट्ठी भर काजू उठाए और मेरे हाथों में ज़बर्दस्ती थमा दिए।

'पम्मी-जी, अगर हमांरी बेटी सजना-संवरना पसंद करती हैं तो उसे ऐसा करने से रोकिए नहीं,' मां ने कहा। जी हां, डॉली ऑलरेडी हमारी हो चुकी थी।

'कौन जानता हैं कि वह किसका घर रोशन करेगी? हमांरी तो बस दो ही बेटियां हैं। हमांरा सब कुछ उन्हीं का हैं,' पम्मी-जी ने कहा। 'सब कुछ' कहते समय उन्होंने अपनी बांहें फैला दी थीं। हां, सोफ़े मांर्बल कॉफ़ी टेबल, कलाकृतियां, पंखे, एयर कंडीशनर्स–यह सब उनकी बेटियों के भावी पतियों का ही तो था। मुझे मानना पड़ेगा कि पलभर को मुझे भी लगा कि मुझे इस पूरे घर के आधे हिस्से का मालिक बनाने का मां का विचार कहीं सही ही तो नहीं। लेकिन अगले ही पल अनन्या को गंवा देने का विचार मेरे मन में आया। नहीं, मैं दुनियापर के काजुओं और नगद रकम की क़ीमत पर भी अनन्या को नहीं गंवा सकता। काश, पम्मी आंटी मुझे अनन्या के साथ इसी घर में रहने की इजाज़त दे दें।

डॉली तेज़ कदमों से नीचे उतरी। उसके आने के तीन सेकंड पहले ही उसके परफ़्यूम की खुशबू हम तक पहुंची थी। 'हैंलो आंटी-जी,' डॉली ने कहा और मेरी मां को कसकर गले लगा लिया।

'हमांरी बिटिया कितनी ख़ूबसूरत हो गई हैं!' मां ने अचरज जताते हुए कहा।

डॉली और मैंने हल्के से सिर हिलाकर एक-दूसरे का अभिवादन किया। उसने वाइन-रेड सलवार कमीज़ पहन रखी थी, जिस पर खड़ी सुनहरी धारियां थीं। वह बेहद गोरी थी और मेरी मां सही थी, क्योंकि उसे देखकर मुझे दूध का ख़्याल आया। वह भरे-पूरे बदन वाली लड़की थी, अलबत्ता उसे मोटी नहीं कहा जा सकता था। उसकी भारी छातियां पम्मी आंटी की ही तरह थीं और उसे देखकर मैं सोचने लगा कि ये महिलाएं आखिर किस तरह अपने बच्चों का दम घोंटे बिना उनका दूध छुड़ा पाती होंगी।

'डॉली, आजकल तुम क्या कर रही हो?' मां ने पूछा।

'बीए पास कर लिया हैं आंटी, पत्राचार से।'

'यह भी बताओ ना कि तुम कंप्यूटर कोर्स भी कर रही हो,' पम्मी आंटी ने कहा और फिर मेरी मां की ओर मुड़ते हुए कहा,' और स्नैक्स चाहिए?'

डॉली कुछ कहना चाहती थी, लेकिन उसे नज़रअंदाज़ कर दिया गया, क्योंकि बात अब एक ज़्यादा दिलचस्प विषय पर केंद्रित हो चुकी थी और वह था खान-पान।

'नहीं, पम्मी-जी। इतना काफ़ी हैं,' मां ने कहा। ज़ाहिर हैं कि वे एक तरह से हमें और स्नैक्स परोसे जाने की चुनौती दे रही थीं।

'क्या कह रही हैं आप? आप लोग खाने के समय नहीं आए थे इसलिए मैंने ज़रा हैंवी नाश्ते का इंतजाम करवा दिया हैं। राजू, नाश्ता ले आओ। और हां, लाल और हरी दोनों तरह की चटनियां लाना मत भूलना!' उन्होंने ऊंची आवाज़ में अपने नौकर को हुक्म सुनाया।

राजू और दूसरे नौकर एक विशालकाय ट्रे लेकर आए, जिसमें समोसे, चलेबियां, छोले-भटूरे, मिल्क केक, कचौरियां और यक़ीनन लाल और हरी चटनियां भी थीं। टेबल पर बीस हज़ार कैलोरीज़ पसरी हुई थीं।

'अरे, आपको इतना तक़ल्लुफ़ नहीं करना चाहिए था!' मां ने कहा। साथ हां उन्होंने नौकर को उनकी तरफ़ जलेबियां बढ़ाने को भी कहा।

'कुछ नहीं जी, यह सब तो केवल चखने के लिए हैं। आपको तो डिनर के वक़्त आना चाहिए था।'

मुझे लगा कि यदि मैंने अब भी डॉली से बातचीत नहीं की तो मुझे लल्लू समझा जाएगा। 'आप कौन-सा कंप्यूटर कोर्स कर रही हैं?'

'माइक्रोसॉफ़्ट वर्ड, पॉवर पॉइंट, ईमेल, पता नहीं, अभी तो बस शुरू हां किया हैं। सब कुछ बहुत हाई-फ़ाई लगता हैं।'

'निश्चित ही, ये सारे प्रोग्राम तो बहुत चैलेंजिंग जान पड़ते हैं,' मैंने कहा और यह कहते ही मुझे अपने शब्दों के पीछे छिपे कटाक्ष के लिए खेद का अनुभव हुआ।

'मेरे सभी दोस्त कर रहे थे, तो मैंने सोचा मैं भी कर लेती हूं। यदि बहुत मुश्किल लगा तो छोड़ दूंगी। आप तो ये सारी चीज़ें जानते हैं ना?'

'थोड़ी-बहुत,' मैंने कहा।

डॉली और मेरी बात शुरू होते ही मां और पम्मी आंटी की बातचीत रुक गई थी। लेकिन जैसे ही डॉली और मुझे महसूस हुआ कि उन दोनों की नज़रें हम पर ही जमी हुई हैं, हम चुप हो गए।

'अरे भई, तुम दोनों तो अपनी बातें जारी रखो,' मां ने मुस्कराते हुए कहा और पम्मी-जी की ओर देखा। दोनों एक-दूसरे को देखकर कुटिल ढंग से मुस्कराईं। फिर उन्होंने एक-दूसरे को कुछ इशारा किया, हाथ बांधे और ईश्वर का शुक्रिया अदा करने के लिए ऊपर देखने लगीं।

डॉली ने मेरी मां को देखा और मुस्करा दी। 'आंटी-जी, आप चाय लेंगी? 'उसने पूछा। 'नहीं जी, हम तो अपनी बिटिया से कोई काम नहीं करवाएंगे,' मेरी मां ने कहा। यहां काम से उनका आशय था गला फाड़कर नौकरों को हुक्म देना।

'राजू, चाय लाना,' डॉली ने ज़ोर लगाकर कहा। मेरी मां ने उसे स्नेहभरी नज़रों से निहारा। मां आखिर अनन्या को एक बार भी ऐसी नज़रों से क्यों नहीं निहार पाई थीं? बेटा, चाय लोगे?' पम्मी आंटी ने मुझसे पूछा। मैंने सिर हिला दिया। 'मैं जानती हूं आजकल के लड़के-लड़कियां चाय के बजाय कॉफ़ी ज़्यादा पसंद करते हैं। कॉफ़ी बुलवाऊं? एक मिनट, अरे डॉली डिस्ट्रिक्ट सेंटर पर वह जो नई कॉफ़ी शॉप खुली हैं, उसका क्या नाम हैं? अरे वहीं, जहां बहुत महंगी कॉफ़ी मिलती हैं? बरसात?'

'बरिस्ता, मॉम।' डॉली ने बड़े अंग्रेज़ीदां अंदाज़ में कहा। आखिर उसे किसी ट्रेंडी चीज़ के बारे में बताने का मौक़ा जो मिल रहा था।

'हां वहां। ज़रा इन्हें अपनी होंडा से वहां ले जाओ। देखो जी, एक्चुअली, हम लोग ज़रा मॉडर्न हैं,' उन्होंने कहा।

'मॉडर्न होना तो बड़ी अच्छी बात हैं, जी। हम कौन-से ओल्ड फ़ैशंड हैं। जाओ क्रिश, एंजॉय,' मां ने कहा। यक़ीनन, तमिलों से नफ़रत करना तो बिल्कुल ओल्ड फ़ैशंड नहीं था।

मैं उठ गया। इसकी बड़ी वजह तो यही थी कि मैं यहां से पीछा छुड़ाकर नई होंडा की सवारी करना चाहता था।

'डॉली, यही आओ,' पम्मी-जी ने डॉली को अपने पास बुलाया और वह किया, जिसके बारे में मैंने सोचा भी नहीं था। उन्होंने अपने ब्लाउज में हाथ डाला, मानो वह एटीएम हो और नोटों की एक गड्डी बाहर निकाली। मैं सोचने लगा कि क्या उन्होंने वहां क्रेडिट काड्र्स भी रखे होंगे।

डॉली ने गड्डी ले ली और उसे बिना गिने अपने गोल्डन हैंडबैग में रख लिया। उसने नौकर पर चिल्लाते हुए कहा कि वह ड्राइवर से चिल्लाते हुए कहे कि वह सिक्योरिटी गार्ड पर चिल्लाते हुए उसे दरवाज़ा खोलने की हिदायत दे, ताकि होंडा को बाहर ले जाया जा सके।

हम डिस्ट्रिक्ट सेंटर पहुंचे, जहां हर तरफ़ सलवार-कमीज़ की दुकानें, ब्यूटी पार्लर और एसटीडी बूथ थे। डॉली अपने फ़ेवरेट

बूटिक पर जाने की जिद करती रही। वह आधे घंटे तक अपने लिए कपड़े पसंद करती रही। मैंने सोचा कि किसी एसटीडी बूथ से अनन्या को कॉल करना ठीक रहेगा या नहीं। फिर मैंने यह विचार त्याग दिया। मैं दुकान में ही टहलता रहा और पंजाबी मांओं को अपनी बेटियों के साथ दर्जनों सलवार-कमीज़ ख़रीदते देखता रहा। सभी बेटियां छरहरी और सभी मांएं थुलथुल थीं। इस बूटिक की ख़ासियत यही थी कि यहां हर साइज़ के कपड़े मिल जाते थे।

'हेल्दी फिगर की रेंज इधर है,' एक सेल्समैन ने एक मां को सही दिशा की ओर इशारा करते हुए कहा।

डॉली ने तीन सूट लिए और अपनी नोटों की गड्डी में से भुगतान किया।

'अच्छे सूट हैं ना?' उसने अपना बैग खोलकर दिखाते हुए कहा।

'नाइस,' मैंने कहा। हम बरिस्ता पहुंचे। बाहर सूर्य तमतमा रहा था और तापमान चालीस डिग्री सेंटीग्रेड के आंकड़े को छू रहा था। बरिस्ता की एयर कंडीशनिंग और सुकूनदेह म्यूज़िक से राहत मिली।

'एक कोल्ड कॉफ़ी विद आइस्कीम,' डॉली ने ऑर्डर किया। 'आप क्या लेंगे?'

मैंने भी यही ऑर्डर कर दिया। हम एक काउच पर बैठे हुए थे, लेकिन हम कोशिश कर रहे थे कि हमारे बीच ज़्यादा से ज़्यादा दूरी रहे। हमारे सामने टीवी पर कोई म्यूज़िक चैनल चल रहा था। हम चुपचाप उसे देखते रहे।

'मैंने इससे पहले कभी किसी आईआईटीयन से बात नहीं की,' कुछ देर बाद उसने कहा।

'इसमें अफ़सोस करने वाली कोई बात नहीं,' मैंने कहा।

उसने अपनी बैठने की जगह बदली तो कपड़ों का बैग नीचे गिर गया। उसने उसे उठा लिया।

'सॉरी, मैं हाई-फ़ाई लोगों के सामने नर्वस हो जाती हूं,' उसने कहा।

'नर्वस मत होओ,' मैंने कहा। 'अपनी कॉफ़ी का मज़ा लो। '

'तुम्हारी एक गर्लफ्रेंड है ना? साउथ इंडियन?'

'क्या?' मैं अपनी सीट से उछल पड़ा। 'तुम्हें किसने बताया?'

'किट्टू ने,' उसने कहा।

किट्टू मेरी फ़र्स्ट कज़िन और शिप्रा मासी की बेटी थी। किट्टू के पिता पम्मी आंटी के कज़िन थे। इन मायनों में, डॉली मेरी तीसरी या चौथी कज़िन थी, हालांकि हमारा ख़ून का नाता नहीं था।

'किट्टू? उसे कैसे पता चला?'

'उसे शिप्रा मासी ने बताया होगा। और शिप्रा मासी को तुम्हारी मम्मी ने बताया होगा।'

'और अब पूरा ख़ानदान यह जानता होगा,' मैंने अनुमान लगाते हुए कहा।

'शायद।'

'तुम उसके बारे में और क्या जानती हो? '

'कुछ नहीं,' डॉली ने कहा और अपनी आंखें दूसरी तरफ़ घुमा लीं।

'बताओ ना? '

'अरे, थोड़ा-बहुत। यह कि वह बहुत लड़ाकू और होशियार है और तुम पूरी तरह उसके कब्ज़े में हो। लेकिन साउथ इंडियन लड़कियां तो ऐसी ही होती हैं। है ना?'

'तुम किसी साउथ इंडियन लड़की को जानती हो?'

'नहीं।' डॉली ने अपनी स्ट्रॉ को घुमाते हुए कहा। 'सॉरी, मैं तुम्हें यह बताना नहीं चाहती थी। वैसे तुम लोग सीरियस हो या बस टाइम-पास?'

मैंने अपने गुस्से पर काबू पाने की कोशिश की। 'हाऊ अबाउट यू? आपका कोई बॉयफ्रेंड है?'

'अरे नहीं। कभी नहीं, 'उसने लगभग सौगंध खाते हुए कहा।

'टाइम-पास भी नहीं?'

उसने मेरी ओर देखा। मैं फ्रेंडलीनेस दिखाने के लिए उसे देखकर मुस्कुरा दिया।

'बस कॉलोनी का एक लड़का है। लेकिन प्लीज़ मॉम को मत बताना। अपनी मम्मी या किट्टू को भी मत बताना। '

'मैं नहीं बताऊंगा।'

'उसने वैलेंटाइन डे पर मुझे एक टेडी बियर दिया था।'

'क्यूट,' मैंने कहा।

'क्या तुमने कभी किसी को किस किया है?' उसने पूछा। 'जैसे कि उस साउथ इंडियन लड़की को? '

मैंने ख़ूब सोचा कि मैं बिना उसके सवाल का जवाब दिए यह सच कैसे बता दूं कि मैं अनन्या के साथ होस्टल के एक छोटे-से कमरे में दो साल तक रहा हूं।

'नहीं,' मैंने कहा।

'ओके, क्योंकि यह लड़का बार-बार मुझसे उसे किस करने को कह रहा है। लेकिन मैं प्रैगनेंट नहीं होना चाहती।'

'तुम उससे कैसे मिलीं?'

'यह एक बहुत स्वीट कहानी हैं। एक बार उसका हमारे यहाँ रॉंग नंबर लग गया था और फिर हम बातें करने लगे। मैं उससे केवल एक बार हां मिली हूं।'

'तुम्हारा एक ऐसे लड़के से अफ़ेयर चल रहा हैं, जिसका तुम्हारे यहां रॉंग नंबर लग गया था?'

'मैंने उसे अभी तक अपना बॉयफ्रेंड नहीं बनाया हैं। लेकिन यू नो, लुधियाना में हमारी एक दीदी हैं, जिनकी शादी ऐसे ही एक लड़के से हुई हैं, जिसका उनके यहां रॉंग नंबर लग गया था। अब उनके दो बच्चे हैं।'

'वॉव,' मैंने कहा। मैंने सोचा कि क्या मुझे अपनी कॉफ़ी जल्दी से गटक जानी चाहिए, ताकि हम यहां से जल्दी से निकल सकें।

‘क्या मैं तुम्हें अच्छी लगती हूं?’ डॉली ने पूछा।
क्या?
‘तुम्हें पता हैं हमें क्यों यहां भेजा गया हैं? मैच मेकिंग के लिए।’
‘डॉली, मैं अनन्या के अलावा किसी और से शादी नहीं कर सकता।’
‘अच्छा तो ये हैं उसका नाम। प्यारा नाम हैं।’
‘थैंक्स, और वह भी बहुत प्यारी हैं। मैं उसके साथ इन्वॉल्व हूं। सॉरी, मेरी मम्मी मुझे तुम्हारे यहां खींच लाई थी।’
‘लेकिन तुमने तो कहा था कि तुमने उसे किस नहीं किया हैं।’
‘मैंने झूठ कहा था। हम दो साल तक साथ-साथ रहे हैं। लेकिन प्लीज़ यह किसी को मत बताना।’
‘साथ में रहे थे?’ उसकी भौंहें तन गईं। ‘मतलब साथ में? तुम्हारा मतलब हैं कि तुम सब कुछ कर चुके हो?'
‘इस बारे में बात करना ज़रूरी नहीं हैं। मैंने तुम्हें यह केवल इसीलिए बताया ताकि मेरे द्वारा तुममें दिलचस्पी नहीं लेने पर तुम बुरा महसूस न करो।’
‘दो साल? वह प्रैगनेंट नहीं हुई?'
‘डॉली, स्टॉप। कॉफ़ी के लिए थैंक्स।’
‘लेकिन मैं उसे भूलने में तुम्हारी मदद कर सकती हूं’ डॉली ने अपने बाल खोलते हुए कहा, जो कि उसकी कमर तक आते थे।
‘क्या?’
‘मुझे पता हैं कि लड़के क्या चाहते हैं।
‘नहीं, तुम्हें नहीं पता हैं। और रॉन्ग नंबर्स से हमेशा दूर रहने की कोशिश करना।’ हम बरिस्ता से निकले और उसकी लंबी-चौडी होंडा में सवार हो गए। मैंने सोचा
कि यह होंडा मेरी हो सकती थी, बशर्ते प्यार जैसी स्टुपिड चीज़ में मेरा भरोसा नहीं होता।
‘मैं अपनी मां से क्या कहूं?’ डॉली ने पूछा।
‘कह देना कि मैं तुम्हें पसंद नहीं आया।’
‘वे पूछेगी क्यों? '
‘किसी आईआईआंटीयन में मीन-मेख निकालना बड़ा आसान हैं। कह देना कि मैं गीक, बोरिंग, लेचरस वग़ैरह-वग़ैरह हूं’ मैंने कहा।
‘वे यह सब नहीं समझतीं,’ डॉली ने कहा।
‘ओके, तो उन्हें यह कह दो कि क्रिश बैंक में जॉब नहीं करना चाहता। वह कुछ ही सालों बाद लेखक बनने के लिए जॉब छोड़ देगा।’
‘लेखक? '
‘हां।’
‘तुम तो मेरे लिए बहुत ही हाई-फ़ाई हो,’ जैसे ही हम घर पहुंचे, उसने कहा।

14

'मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा हैं कि तुमने डॉली को ना कह दिया,' मां ने कहा। इसकी कोई वजह तो होनी चाहिए? '

वे तीन दिन में बीस बार यह बात कह चुकी थीं। पापा देर से घर आने वाले थे, इसलिए मां ने अपनी बहन को लंच पर बुलाने का जोखिम उठा लिया था। कुछ भारतीय पुरुष ऐसे होते हैं, जो अपनी पत्नी को खुश नहीं देख सकते, फिर भले ही उसे यह खुशी अपने भाई-बहनों से मिलकर ही क्यों न मिल रही हो।

'पम्मी अगली गली में एक और घर ख़रीद रही हैं। उसने मुझे बताया कि यह उसकी बेटी के लिए हैं,' शिप्रा मासी ने मां के ज़ख़्मों पर नमक छिड़कते हुए कहा। मां ने निराशा से सिर झुका लिया।

'तुम फिर से वहां गलती दोहरा रही हो। तुमने शादी के लिए आर्मी के एक व्यक्ति को चुना था। तुम्हारा कहना था कि आर्मी वाले कुर्बानी देना जानते हैं। लेकिन हम देख चुके हैं कि वे कितनी कुर्बानी दे सकते हैं। तुमने अपनी पूरी ज़िन्दगी दु:ख और ग़रीबी में गुज़ारी हैं।'

मां ने अपनी बड़ी बहन की बातें सुनकर सिर हिला दिया। शिप्रा मासी की शादी एक समृद्ध व्यक्ति से हुई थी। उनके पति सेनिटरी-फ़िटिंग का बिज़नेस करते थे और टॉयलेट्स बना-बनाकर उन्होंने ख़ूब पैसा कमांया। मेरी मां ने गुण, शिक्षा, काम की प्रकृति जैसी स्टुपिड बातों को प्राथमिकता देते हुए पापा से विवाह किया था और नतीजे में उन्हें दुख ही मिला। शिप्रा मासी का मानना था कि मैं भी ऐसी ही भूल करने जा रहा हूं।

'वह मद्रासन कितना कमांती हैं?' शिप्रा मासी ने पूछा। ' डॉली आती तो तुम्हारा घर भर जाता। आखिरी बार तुमने कोई नई चीज़ कब ख़रीदी थी? देखो, तुम्हारी तो डायनिंग टेबल के भी अस्थिपंजर ढीले हो रहे हैं।'

शिप्रा मासी ने सुझाया। 'क्या सोच रही हो?' उन्होंने एक मिनट रुककर कहा। 'तुम्हें पता हैं पम्मी ने एक ऐसा फ़ोन खरीदा हैं, जिससे चलते-फिरते भी बात की जा सकती हैं? '

'कॉर्डलेस...?' मां ने कहा।

'नहीं कॉर्डलेस नहीं, एक नया फ़ोन, जिसकी क़ीमत बीस हज़ार रुपए हैं। तुम उसे चाहो तो दिल्ली में कहीं भी ले जा सकती हो। ज़रा मुझे वह अचार देना,' शिप्रा मासी ने कहा। वह झटपट खाने लगीं, ताकि बातचीत करने में ज़ाया हुए वक़्त की भरपाई कर सकें। भारत में हाल ही में सेलफ़ोन का आगमन हुआ था। एक मिनट के टॉकटाइम का ख़र्च एक लीटर पेट्रोल से भी अधिक था। कहने की ज़रूरत नहीं, दिल्ली के पंजाबियों के लिए सेलफ़ोन शान-शौक़त दिखाने का एक और खिलौना बन गया था।

'और ये लेखक बनने वाली बात का क्या मतलब हैं? डॉली कह रही थी कि तुम लेखक बनने के लिए बैंक की जॉब भी छोड़ देना चाहते हो।'

'क्या?' मां का दिल धक से रह गया।

'अभी नहीं, वक़्त आने पर। जब मैं अपने लिए थोड़ा पैसा भी बचा लूंगा,' मैंने कहा और किचन में जाने के लिए अपनी प्लेट उठा ली।

'बच्चों को ज़्यादा पढ़ाने का यहां नतीजा होता हैं,' मासी ने कहा।

'मुझे तो बिल्कुल पता नहीं था कि यह लेखक बनने की मुराद भी पाले हुए हैं। यह नया रोग कब से लगा?' मेरे किचन से लौटते ही मां ने पूछा।

'हो न हो, ये बीमारी उस साउथ इंडियन लड़की की ही दी हुई हैं। ये लोग किताबों को बहुत पसंद करते हैं,' शिप्रा मासी ने कहा।

मैंने टेबल पर ज़ोर से मुक्का मांरा। उसकी टांगे फिर लड़खड़ा गईं। शायद हमें इसकी जगह एक नई टेबल ले लेनी चाहिए थी।

'लेखक बनने का विचार मेरा खुद का हैं, यह किसी ने मेरे दिमाग़ में नहीं डाला। वैसे भी, शिप्रा मासी, तुम्हारा इससे कोई लेना-देना नहीं हैं।'

'ज़रा देखो तो, लगता हैं उन काले-कलूटे लोगों ने इस पर काला जादू कर दिया हैं,' शिप्रा मासी ने कहा। 'बेवकूफ़ मत बनो कविता, जाकर पम्मी से कह दो कि यह सिटीबैंक में ही काम करेगा और खूब पैसा कमांएगा। ज़रा इसकी सही क़ीमत वसूलो।'

मैंने सभी को घूरकर देखा, लिविंग रूम में रखे सोफ़े तक गया और अख़बार उठा लिया। मैट्रिमोनियल पेज खुला था। मैंने खिन्न होकर उसे फेंक दिया।

'चलो कुछ एजुकेटेड लड़कियां तलाशते हैं। तुम एजुकेटेड लड़कियां देखना चाहोगे? 'मां ने मुझे शांत करने की कोशिश करते हुए कहा।

'मैं एक एजुकेटेड लड़की को पसंद कर चुका हूं। उसके पास एक जॉब हैं। वह सुंदर हैं, सभ्य हैं, मेहनती और निष्ठावान हैं। आपकी प्रॉब्लम क्या हैं?'

'बेटा,' शिप्रा मासी ने कहा, उनका स्वर अब ज़रा कोमल पड़ गया था।, 'यह सब ठीक हैं। लेकिन हम तुम्हारी शादी एक मद्रासी लड़की से कैसे कर दें? कल से तुम्हारे कज़िन किसी गुजराती लड़की से शादी करना चाहेंगे।'

'या असमिया?' मां ने कहा।

'हे भगवान!' शिप्रा मासी ने कहा।

'तो क्या हुआ? क्या ये सभी भारतीय नहीं हैं? क्या वे अच्छे इंसान नहीं हो सकते?' मैंने कहा।

शिप्रा मासी मेरी मां की ओर मुड़ी। 'तुम्हारा बेटा अब हाथ से जा चुका हैं। माफ़ करना, लेकिन अब यह जयललिता का बेटा हो गया हैं।'

दरवाज़े की घंटी दो बार बजी। पापा वक़्त से पहले घर आ गए थे। घर में खलबली मच गई। हालांकि मैंने कभी अपने पिता के

घर आने पर उनका स्वागत नहीं किया, लेकिन इस बार मैं इसलिए खुश था क्योंकि उनके आने का मतलब था कि शिप्रा मासी को अब जाना पड़ेगा।

'हैलो जीजा-जी,' पापा के भीतर घुसते ही शिप्रा मासी ने कहा।

पापा ने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने फ़र्श से अख़बार उठाया और उसे फ़ोल्ड कर दिया।

'मैंने कहा हैलो जीजा–जी,' शिप्रा मासी ने कहा और मुस्करा दीं। वे आसानी से हार नहीं मानने वाली थीं।

'मुझे आपकी हैलो से ज़्यादा गुडबाय अच्छी लगती हैं पापा ने जवाब दिया। घटिया हरकतें करने में उनसे कोई जीत नहीं सकता था।

'मुझे मेरी बहन ने बुलाया था,' शिप्रा मासी ने कहा।

'फ़ालतू लोग फ़ालतू लोगों को मिलने बुला लेते हैं,' पापा ने कहा।

शिप्रा मासी मां की ओर मुड़ीं। 'मैं यहां अपनी बेइज़्ज़ती करवाने नहीं आई। इन्हें केवल तुम बर्दाश्त कर सकती हो। तुम्हारी ज़िन्दगी का सबसे ख़राब फ़ैसला,' शिप्रा मासी ने बड़बड़ाते हुए कहा। वे जाने के लिए अपना हैंडबैग पैक कर रही थीं।

'यदि तुम हमारे घरेलू मामलों में दख़ल न दो तो अच्छा होगा,' पापा ने कहा और उन्हें एक भूरा बैग थमा दिया। इस बैग में मिठाइयां थीं, जो शिप्रा मासी हमारे लिए लाई थीं। दोनों ने एक-दूसरे को तीखी निगाहों से देखा।

'इसे अपने साथ ले जाओ, नहीं तो मैं इसे कूड़ेदान में फेंक दूंगा,' पापा ने कहा। मैं पापा से बहस करने को उठ खड़ा हुआ, लेकिन मां ने मुझे चुप रहने का इशारा किया। शिप्रा मासी दरवाज़े तक पहुंचीं। मैं भी उनके साथ दरवाज़े तक गया। फिर मैंने झुक कर उनके पैर छू लिए, सम्मान के कारण नहीं, बल्कि प्रथा के कारण।

'बेटा, अपनी मां जैसी ग़लती मत करना। एक अच्छी पंजाबी लड़की से शादी कर लो, इससे पहले कि सब लोगों को तुम्हारे पापा के बारे में पता चल जाए। डॉली अच्छी लड़की हैं।'

पापा के कान उनकी ज़ुबान की ही तरह तेज़ थे। 'ये क्या चल रहा हैं? कौन हैं डॉली' उन्होंने चीखकर पूछा।

शिप्रा मासी ने दरवाज़ा बंद किया और चली गईं। किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। 'क्या तुम इसके लिए लड़कियां देख रही हो?' पापा ने मां से जवाब की मांग की। मां चुप रहीं।

'तुम लड़की देखने गए थे?'

'हां,' मैंने कहा। पापा को ग़ुस्से में तमतमाते देखकर मुझे इस बात की खुशी हो रही थी कि मैं डॉली को देखने गया था।

'मैं तुम्हें...' उन्होंने चीखते हुए मां पर अपना हाथ उठाया।

'ऐसी कोई हरकत करने के बारे में भूलकर भी मत सोचना!' मैं उनके क़रीब आ गया।

'इस घर में सारे फ़ैसले मैं लेता हूं.' पापा ने कहा। उन्होंने एक क्रिस्टल ग्लास उठाया और उसे फ़र्श पर पटक दिया। आखिर उन्हें किसी न किसी पर तो अपना गुस्सा निकालना ही था।

'हां, आपको देखकर लगता हैं कि आप इतने मैच्योर तो हैं ही कि फ़ैसले ले सकें मैंने कहा और किचन में चला गया।

'नंगे पैर मत चलो,' मां ने कहा। फिर वे झुकीं और टूटे हुए कांच की किरचें चुनने लगीं। मेरे भीतर गुस्सा उभर आया। केवल पापा पर ही नहीं, बल्कि मां पर भी। जो कुछ हुआ, उसे वे इतनी आसानी से भुलाकर आखिर चुपचाप फ़र्श की सफ़ाई कैसे कर सकती थीं?

'पता नहीं, मैं इस घर में क्यों चला आया,' पापा ने कहा।

'मैं भी यहां सोच रहा था,' मैंने कहा।

'बास्टर्ड, ज़ुबान संभाल के!' वह मुझ पर ऐसे चिल्लाए, जैसे दस साल पहले फ़ौज के जवानों पर चिल्लाते थे।

'क्रिश, दूसरे कमरे में जाओ,' मां ने कहा।

'मैं तब तक नहीं जाऊंगा, जब तक यह पागल इंसान यहां से नहीं चला जाता,' मैंने कहा।

'यह मेरी औलाद नहीं हो सकता। कोई भी अपने बाप से इस तरह बात नहीं करता हैं।'

'और कोई भी बाप इस तरह बिहेव नहीं करता हैं,' मैंने कहा।

मां ने मुझे बेडरूम की ओर धकेल दिया। पापा ने इस उम्मीद में इधर-उधर देखा कि उन्हें तोड़ने के लिए एक और चीज़ या चिल्लाने के लिए एक और वजह मिल जाए, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। वे मुड़े और ज़ोर से दरवाज़ा लगाकर बाहर चले गए। उनके जाते ही पूरे घर ने राहत की सांस ली।

लिविंग रूम को ठीक से जमाकर मां मेरे कमरे में आईं और मेरे पास आकर बैठ गईं। मैंने उनकी ओर नहीं देखा। उन्होंने मेरी ठोड़ी पकड़ी और मेरे चेहरे को उनकी ओर घुमा दिया।

'पापा यह सब इसलिए करते हैं,' क्योंकि आप उन्हें ऐसा करने देती हैं। आपको उनके सामने फ़र्श साफ़ करने की क्या ज़रूरत थी?' मैंने नाराज़ होते हुए कहा।

'क्योंकि वे शीशे का दूसरा सामान भी तोड़ देंगे और हमारे पास मेहमांनों के लिए कुछ नहीं बचेगा,' मां ने कहा।'चिंता मत करो, मैं उन्हें संभाल लूंगी।'

मैंने मां की ओर देखा। एक आंसू उनकी आँखों से ढुलक पड़ा। मुझे लगा मेरी आंखें भी नम हो गई हैं।

'तुम्हें अब उनसे दूर हो जाना चाहिए,' मैंने कुछ देर बाद कहा। हम अब ज़रा शांत हो गए थे।

'ये इतना आसान नहीं हैं,' उन्होंने कहा।

'अब मैं कमाने वाला हो गया हूं,' मैंने कहा।

'मैं ठीक हूं। नब्बे फ़ीसदी वक़्त तो वो घर पर रहते ही नहीं हैं। वह आर्मी मेस चले जाते हैं या अपने पार्टनरों से मिलने चले

जाते हैं, जिनके साथ वे अपनी बिज़नेस की योजनाओं पर बात करते हैं।'

'क्या? जैसे कि सिक्योरिटी एजेंसी?' मैंने उनकी हँसी उड़ाते हुए कहा।

'हाँ। लेकिन वो तो पहली मुलाक़ात में ही कस्टमर्स से झगड़ा मोल लेते हैं। कस्टमर्स सुरक्षित तो नहीं ही महसूस करते होंगे,' मां ने कहा।

मै हँस पड़ा।

'मैं उन्हें हैंडल कर सकती हूं। बस तुम्हीं उनसे उलझ जाते हो,' मां ने कहा।

'शुरुआत वे करते हैं। शिप्रा मासी की बेइज्ज़ती करने की क्या ज़रूरत थी? '

'वो अब नहीं बदलेंगे। अब तो शिप्रा भी आदी हो चुकी हैं। मुझे इस बात की चिंता है कि अगर तुम दिल्ली में जॉब करोगे तो उनके साथ कैसे रहोगे। शायद तुम्हें कंपनी द्वारा दिए गए फ़्लैट में रहना पड़े।'

'या यह भी संभव हैं कि दिल्ली में जॉब ही न करूं।'

'क्या कह रहे हो?'

'मैं उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सकता।'

'फिर तुम कहा जाना चाहते हो?'

'पता नहीं, मां। मैं केवल सिटीबैंक को अपनी चॉइस बता सकता हूं। लेकिन कोई गारंटी नहीं हैं। फिर दो साल बाद कहीं और पोस्टिंग कर दी जाती हैं।'

'तुमने दिल्ली को ही चुना हैं ना?'

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। दिल्ली में रहने और दिन में पंजाबी लड़कियों और रात में पापा से दो-चार होने का विचार मुझे बहुत एक्साइटिंग नहीं लग रहा था।

'जहां भी मैं जाऊं। तुम भी मेरे साथ चलो,' मैंने कहा।

'लेकिन कहां ? मैं दिल्ली नहीं छोड़ सकती। मेरे सभी सगे-संबंधी यहीं हैं। तुम दिनभर दफ़्तर में रहोगे, मैं नए शहर में अकेली क्या करूंगी? '

'मैं चेन्नई जाना चाहता हूं' मैंने कहा।

'हे प्रभु!' मां का मूड पलभर में बदल गया। वे उठ बैठीं। 'तुम्हारे पापा से भी ज़्यादा मुश्किल हैं तुम्हें हैंडल करना। तुम पागल हो गए हो क्या?'

'नहीं, मैं अनन्या को पसंद करता हूं। मैं चाहता हूं कि हमांरी रिलेशनशिप और आगे बढ़े।'

'तुम मद्रासी बन जाओगे?'

'मैं कुछ भी नहीं बनूंगा। मैं वही केवल रहने जा रहा हूं। वैसे भी सिटीबैंक हर दूसरे साल ट्रांसफ़र कर देती हैं।'

'मुझे किसी ज्योतिषी से मिलना चाहिए। पता नहीं, तुम पर कौन-सी दशा चल रही हैं।'

'दशा नहीं, मैं किसी से प्यार करता हूं।'

'प्यार-व्यार कुछ नहीं होता, बेटा,' मां ने मेरे गाल को थपकाया और कमरे से बाहर चली गईं।

मैंने आखिरी तारीख़ तक सिटीबैंक का फ़ार्म सबमिट नहीं किया। मेरा पेन बार-बार लोकेशन प्रिफ़रेंस वाले कॉलम तक जाकर रुक जाता। वहां तीन विकल्प दिए गए थे। लेकिन मैं उसे भर नहीं पा रहा था।

'तुमने फ़ार्म भेज दिया?' अनन्या ने फ़ोन पर पूछा।

'जल्द ही भेज दूंगा। लगभग तैयार हैं,' मैंने कहा।

'आर यू क्रेज़ी? आज आखिरी तारीख़ हैं। तुमने चेन्नई ही लिखा हैं ना? '

'हां' मैंने कहा और फ़ोन रख दिया।

मैंने फ़ार्म पर आखिरी बार निगाह डाली। फिर मैंने सिर उठाकर भगवान की ओर देखा और उनसे प्रार्थना की कि वे मेरी प्रेम-कहानी का कुछ फ़ैसला करें। मैंने फ़ार्म भर दिया:

लोकेशन प्रिफ़रेंस

1. चेन्नई या दिल्ली *(*ईक्वल प्रिफ़रेंस*)*

2.—

3.—

मैंने फ़ार्म को सीलबंद किया और उसे बैंक ब्रांच में डाल आया। बिस्तर में जाकर मैं अनन्या का पत्र पढ़ने लगा। यह पत्र मुझे पिछले हफ़्ते मिला था, लेकिन मैं इसे रोज़ सोने से पहले पढ़ता था।

हैंलो मेरे पंजाबी शेर,

मुझे मिस किया*?* मैं तो तुम्हें बहुत मिस करती हूँ। मैं मिस करती हूं प्यार से एक-दूसरे में सिमट जाना, कैम्पस में चहलक़दमी करना, साथ-साथ पढ़ना और फिर आधी रात के बाद चाय पीने जाना। मैं बहुत मिस करती हूं ब्रश करने के लिए सुबह-सुबह अपने डोर्म तक भागकर जाना, तुम्हारे साथ चार रास्ता पर पाव-भाजी खाना, लाइब्रेरी में फुटसी खेलना। बहुत याद आता हैं क्लास में नज़रें बचाकर एक-दूसरे को निहारना,

ख़राब ग्रेड्स मिलने पर मेरी आंखों से निकल आने वाले आंसुओं को तुम्हारे द्वारा पोंछना, मुझे हँसाने के लिए तुम्हारे द्वारा की जाने वाली हरकतें। मुझे याद आता हैं किस तरह तुम मेरे बालों के साथ खेलते थे, और जब मैं आई-लाइनर लगाती थी तो तुम किस तरह ध्यान से मुझे देखा करते थे। मुझे याद आता हैं... उफ, क्या-क्या बताऊं, बस इतना समझ जाओ कि मैने तुम्हें बहुत-बहुत याद किया।

मैं ठीक हूं। मां हमेशा की तरह चीखती-चिल्लाती रहती हैं, पापा हमेशा की तरह शांत रहते हैं और मेरे भाई के हाथ में हमेशा की तरह फिजिक्स, केमिस्ट्री या मैथ्स की कोई किताब रहती हैं। दूसरे शब्दों में, सब कुछ नॉर्मल हैं। मैने एक बार फिर मम्मी के सामने तुम्हारा ज़िक्र किया था। उन्होंने घर पर एक पुजारी को बुलवाया और उसने मुझे एक ऐसा ताबीज़ दिया, जिसे पहनकर मैं तुम्हें भूल जाऊं। वॉव, मैने कभी नहीं सोचा था कि मेरे पैरेंट्स तुम्हें लेकर इस तरह रिएक्ट करेंगें।. ख़ैर, तुम्हें भूलने के लिए महज़ एक ताबीज़ काफ़ी नहीं था, फिर भी मैने उसे मरीना बीच पर बंगाल की खाड़ी में फेंक दिया। उसके बाद से मैने उनके सामने तुम्हारा नाम भी नहीं लिया हैं, क्योकि मुझे पता हैं कि तुम चेन्नई आओगे और उनका दिल जीत लोगे, जैसे तुमने मेरा दिल जीत लिया था।

बाय, माय लव,

अनन्या।

पोस्ट स्क्रिप्ट: अरे हां, मैने बताया कि नहीं, मैं सेक्स को भी मिस करती हूं।

मैंने पत्र को दस बार पढ़ा। और उसके आखिरी वाक्य को तो मैंने सौ बार पढ़ा होगा। मैं ठीक उसी समय उसके पास चला जाना चाहता था। मैंने महसूस किया कि मैं फ़ार्म में बड़ी आसानी से चेन्नई लिख सकता था, लेकिन मैं परिवार के लिए अपनी ज़िम्मेदारी और अपराध बोध की किन्हीं धुंधली भावनाओं के कारण अपनी लव-लाइफ़ के साथ एक खेल खेलता आ रहा था। फिर मैंने सोचा कि कहीं सिटीबैंक को दिल्ली में ज़्यादा लोगों की ज़रूरत तो नहीं होगी। आखिर, किसी तमिल की तुलना में किसी पंजाबी द्वारा विदेशी बैंक खाता खुलवाने की संभावना ज़्यादा ही हैं। और चूंकि मैं पंजाबी हूं, इसलिए वे मुझे दिल्ली में प्लेस कर सकते हैं। मुझे लगा जैसे मेरे भीतर से कोई तीखी-सी आवाज़ आई हो। मैं अनन्या के पत्र को फिर पढ़ने लगा और तब तक पढता रहा, जब तक कि मेरी आंखें नहीं लग गई।

एक हफ़्ते बाद घर पर मेरे लिए एक कॉल आया। मां ने फ़ोन उठाया और मुझे कहा कि किसी लड़के का फ़ोन हैं, जिसकी आवाज़ लड़कियों जैसी हैं।

'हैंलो?' मैंने कहा।

'हाय क्रिश, इट्स देवेश फ्रॉम सिटी एचआर।'

'ओह, हाय देवेश। कैसे हो?'

'गुड, मैंने बस तुम्हें तुम्हारी जॉइनिंग डेट और लोकेशन बताने के लिए फ़ोन किया हैं।' मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा। 'हां,' मैंने कहा। मैं नर्वस भी था और एक्साइटेड भी।'तो तुम्हें 1 जून से शुरू करना हैं।'

'ओके।'

'और हम आपको चेन्नई में प्लेस कर रहे हैं।'

दिल्ली के आकाश में काल्पनिक आतिशबाज़ियां छूटने लगीं। ज़िन्दगी में पहली बार मुझे देवेश, एचआर डिपार्टमेंट और सिटीबैंक के लिए सच्चे प्यार का अहसास हुआ।

अंक 3: चेन्नई

15

मेरी फ़्लाइट शाम सात बजे चेन्नई में लैंड हुई। हम दिल्ली में छह घंटे लेट हो गए थे, क्योंकि किसी साइको ने एयरपोर्ट फ़ोन करके कह दिया था कि प्लेन में बम हैं। चेन्नई में कन्वेयर बेल्ट पर मेरे बैग्स को आने में और एक घंटा लगा। इस दौरान मैं अपने आसपास के लोगों को देखता रहा। जो पहली चीज़ मैंने नोटिस की, वह यह थी कि, कृपया मेरे इस सतहीपन के लिए मुझे माफ़ करें, लेकिन लगभग नब्बे फ़ीसदी लोगों का रंग गहरा सावला था। इनमें से अस्सी फ़ीसदी लोगों ने अपने पर इतना टैल्कम पावडर लगा रखा था कि इससे उनकी त्वचा की रंगत ग्रे हो गई थी। मैं समझ गया कि फ़ेयर एंड लवली का आविष्कार क्यों किया गया था, लेकिन मैं यह न समझ पाया कि लोग गोरा होने के लिए इतना तरसते क्यों हैं?

कन्वेयर बेल्ट पर अधिकतर महिलाएं अनन्या की मां जैसी लग रही थीं। मैं उनमें अंतर नहीं कर पा रहा था। उन सभी ने टनों सोना पहन रखा था, लेकिन पम्मी आंटी के नेकलेस में लगे महंगे रत्नों और बेडौल ड्रायफ्रूट्स की तरह उनसे लटक रहे मोतियों की तुलना में वे फिर भी कमतर ही लग रहे थे।

मैं एयरपोर्ट से बाहर चला आया। मुझे ऑटो पकड़ना था। मैंने कागज की एक पर्ची तलाशने के लिए अपनी ज़ेबे टटोलीं। इस पर्ची में मेरा नया पता था। जब मुझे अपनी जींस में कोई पर्ची नहीं मिली तो मैं लगभग घबरा गया। मैं चेन्नई में टी नगर को छोड़कर किसी और जगह को नहीं जानता था। और टी नगर को भी मैं इसलिए जानता था, क्योकि एक ज़माने में मैंने ब्रिलियंट ट्यूटोरियल्स से पढ़ाई की थी। लेकिन मुझे नहीं लगता था कि वे अपने लाखों स्टूडेंट्स में से एक, इस आठ साल पुराने स्टूडेंट को आसरा देना चाहेंगे।

लेकिन जब मैंने अपना पर्स खोलकर देखा तो मुझे वही पते की पर्ची मिल गई। मैंने राहत की सांस ली। मैं ऑटो स्टैंड पर आया। अगले पैसेंजर को लेकर चार ड्राइवर आपस में बहस कर रहे थे।

'एंगा?' एक ड्राइवर ने बाक़ी के तीन ड्राइवरों को पीछे धकेलते हुए मुझसे पूछा।'एंगा होटल?'

'नो होटल,' मैंने कहा और अपना पर्स बाहर निकाल लिया। जैसे ही मैंने पर्स खोला, ड्राइवर को सौ-सौ के वे दस नोट नज़र आए, जो मां ने दिल्ली छोड़ते समय मुझे दिए थे। उसने चटखारा भरा। मैंने वह पर्ची बाहर निकाल ली, जिस पर पता लिखा था।'इंग्लिश इल्ला,' उसने कहा।

मैंने आसपास देखा। कोई भी ऐसा नज़र नहीं आ रहा था, जिसकी अंग्रेजी अच्छी हो। मैंने पता पढ़ने की कोशिश की।

'नुंगा-बा-का-मा-मा?' मैंने कहा।

'नुंगमबक्कम?' ड्राइवर ने हँसते हुए कहा, जैसे कि यह उच्चारण करने के लिए दुनिया का सबसे आसान शब्द हो।

'हां,' मैंने कहा और देवेश द्वारा बताए गए एक लैंडमार्क को याद किया।'लोयोला कॉलेज के पास। तुमने लोयोला कॉलेज देखा हैं?'

'सेरी, सेरी' ड्राइवर ने कहा।

मैंने लगेज गाड़ी में चढ़ाया।'मीटर?'

वह फिर हँस पड़ा, मानो मैंने कोई भद्दा जोक सुनाया हो।

'क्या?' मैंने मीटर थपथपाते हुए कहा।

'मीटर इल्ला,' ड्राइवर ने ऊंचे स्वर में कहा। एयरपोर्ट से बाहर निकलने के बाद से ही उसका व्यक्तित्व और आक्रामक होता जा रहा था।

'कितना हुआ?' मैंने कहा।

'ईधुवुम,' उसने कहा।

'मुझे यह भाषा समझ नहीं आती। रुको कितना हुआ?'

न उसने गाड़ी रोकी और न ही कोई जवाब दिया। मैंने उसके कंधे को थपकाया। उसने पीछे मुड़कर देखा। मैंने उसे अपने हावभाव से यह समझाने की कोशिश की कि मैं उससे पूछ रहा हूं 'कितना हुआ, मेरे यार?'

लेकिन वह गाड़ी चलाता रहा। दस सेकेंड बाद उसने अपनी दाईं हथेली उठाई और अपनी पांचों अंगुलियां फैला दीं।

'पांच क्या? '

उसने फिर अपनी अंगुलियां हिलाईं।

'पचास? '

उसने सिर हिलाकर सहमति दी।

'ओके,' मैंने कहा। वह इस शब्द को समझता था।

'वोके,' उसने कहा और हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। मैंने उससे हाथ मिलाया तो वह हँस पड़ा और फिर चेन्नई के सूर्यास्त में कहीं गुम हो गया।

मैंने शहर को देखा। यहां ऑटो, खचाखच भरी बसें, परेशांहाल ट्रैफ़िक जवान और किराना, फल बर्तन, कपड़े नॉवल्टी का सामान बेचने वाली छोटी-छोटी दुकानों जैसी चीज़ें थीं, जिन्हें हर भारतीय शहर में पाया जा सकता हैं। फिर भी उसमें कुछ अलग था। पहली बात तो यह कि सभी दुकानों पर लगे बोर्ड में तमिल में कुछ लिखा था। तमिल के अक्षर उन ऑप्टिकल भ्रमों जैसे लगते हैं, जिन्हें यदि देर तक देखते रहें तो आपको सिरदर्द हो सकता हैं। सभी तमिल महिलाओं ने बालों में फूल लगा रखे थे। शहर की दीवारें फिल्मी पोस्टरों से पटी पड़ी थीं। हीरो की तस्वीरें देखकर लगता था कि आपके अंकल भी फ़िल्मी हीरो बन सकते थे। हीरो थुलथुल, अधगंजे और घनी मूंछों वाले थे और उनके सामने उनकी हीरोइनें मोहक सुंदर कन्याओं की तरह लगती थीं। जब मेरी मां ने कहा था कि तमिल महिलाएं उत्तर भारतीय पुरुषों की ओर आकर्षित होती हैं तो शायद उनकी बात में कुछ हद तक सच्चाई रही होगी।

'अरे, ये तो आईआईटी हैं? 'आईआईटी चेन्नई का बोर्ड देखते ही मैं ज़ोर से चिल्लाया।

'गिंडी, गिंडी,' ऑटो ड्राइवर ने ऐसे शब्दों का इस्तेमांल किया कि यदि वह दिल्ली में होता तो मुश्किल में पड़ सकता था।

आईआईटी कैम्पस की दीवार एक किलोमीटर तक हमारे साथ दौड़ती रही। मैं उसे निहारता रहा। ड्राइवर ऑटो चलाने के साथ ही जगहों के नाम भी बताता जा रहा था, जैसे आद्यार, सयदापेट, मंबलम और ऐसे ही अनेक नाम, जिनका उच्चारण करना टेढ़ी खीर था। मुझे यह सोचकर इन क्षेत्रों में रहने वालों के लिए सहानुभूति का अनुभव हुआ कि फ़ार्म में एड्रेस कॉलम में उन्हें अपना पता लिखने में उनका कितना समय ज़ाया होता होगा। नुंगमबक्कम पहुंचते ही हम एक विशालकाय पचास फ़ीट ऊंचे फ़िल्म पोस्टर के पास से गुजरे। ड्राइवर ने ऑटो रोका। फिर उसने ऑटो की खिड़की से अपनी गर्दन बाहर निकाली और हाथ बांध लिए।

'क्या हुआ?' मैंने इशारे से पूछा।

'थलाइवर?' उसने पोस्टर की ओर इशारा करते हुए कहा।

मैंने बाहर देखा। वह पडायप्पा नामक किसी फिल्म का पोस्टर था। मैंने अभिनेताओं-अभिनेत्रियों के चेहरे देखे और उनमें से केवल एक को पहचान पाया– रजनीकांत।

ऑटो ड्राइवर खीसें निपोरने लगा। आखिर मैंने शहर का एक लैंडमार्क पहचान लिया था। हम नुंगमबक्कम की घनी गलियों में चलते रहे और आखिरकार लोयोला कॉलेज पहुंचे। मैंने कई स्थानीय निवासियों से चिनप्पा टॉवर्स के बारे में पूछा और उन सभी ने सही बिल्डिंग की ओर इशारा किया।

मैं ऑटो से निकला और ड्राइवर को सौ रुपए का नोट दिया। फिर मैं सोचने लगा कि क्या मुझे उसके मैत्रीपूर्ण व्यवहार के लिए दस रुपए की टिप देनी चाहिए?

'अंजू' ड्राइवर ने कहा और अपनी हथेली फिर खोल दी। मुझे कुछ समझ न आया। लेकिन जब उसने तीन बार इशारा किया, तब जाकर मैं कुछ समझ सका।

'तुम्हें पाँच सौ रुपए चाहिए? पागल हो गए हो क्या?'

'इल्ला मैड,' ड्राइवर ने ऑटो का रास्ता रोकते हुए कहा, ताकि मैं अपना लगेज न निकाल पाऊं।

मैंने वीरान रास्ते पर नज़र डाली। अभी नौ ही बजे थे, लेकिन लग रहा था, जैसे रात के दो बज गए हों। इसी दौरान दो ऑटोवाले हमारे पास से गुजरे। मेरे ड्राइवर ने उन्हें रोका। एक ऑटो में दो ड्राइवर थे और दोनों ही आगे की सीट पर बैठे थे। वे चारों एक-दूसरे से तमिल में बतियाते रहे। उनकी आवाज़ कभी-कभी ऊंची हो जाती।

'पाँच सौ,' एक ड्राइवर, जो थोड़ी-बहुत अंग्रेजी बोल लेता था, ने मेरी ओर मुड़ते हुए कहा।'पाँच सौ नहीं। पचास, पचास,' मैंने कहा।

'अई,' एक अन्य ड्राइवर ने चिल्लाते हुए कहा। इसके बाद चार ड्राइवरों ने मुझे इस तरह घेर लिया, जैसे बॉलीवुड की किसी लो-बजट फिल्म में गुंडे किसी भले आदमी को घेर लेते हैं।

'व्हाट? मेरा लगेज लौटाओ और मुझे जाने दो,' मैंने कहा।

'इल्ला लगेज। पेमेंट... मेक... यू,' ड्राइवरों में से किसी शेक्सपियर ने मुझसे कहा।

वह धीमे-धीमे मेरे इर्द-गिर्द घूमने लगे। मैं सोचने लगा कि आखिर मैं दिल्ली के किसी एयर कंडीशंड ऑफ़िस में काम करने का मौक़ा गंवाकर यहां क्यों चला आया।

'चलो पुलिस स्टेशन चलते हैं,' मैंने मन ही मन अपने पंजाबी ख़ून की कसम खाकर दिलेरी के साथ कहा।

'इल्ला पुलिस,' मेरा ड्राइवर चिल्लाया, जबकि महज़ बीस मिनट पहले ही वह मुझसे हाथ मिला रहा था।

'दिस चेन्नई... हियर पुलिस इज़ माय पुलिस... दिस नो नॉर्थ इंडिया... इल्ला पुलिस, एन्नोडा पूला ऊम्बूडा,' अंग्रेज़ी-भाषी ड्राइवर ने कहा।

उनके सफ़ेद दांत रात में चमक रहे थे। जैसे ही मैंने अपनी पीठ पर एक ड्राइवर की थपकी महसूस की, वैसे ही मेरे मन से यह ख़्याल जाता रहा कि तमिल लोग डरपोक होते हैं। यह ख़्याल अनन्या के पिता के कारण उपजा था।

'धत्,' ड्राइवर को अपनी जेब से कुछ निकालता हुआ पाकर मैंने मन ही मन कहा। क़िस्मत की बात थी कि उसने कोई चाक़ू नहीं निकाला, बल्कि मांचिस और सिगरेट के पैकेट निकाले। उसने तमिल फिल्मों की स्टाइल में एक ख़ास अंदाज़ में सिगरेट जलाई। मैंने मदद के लिए सड़क की ओर देखा। काश कोई मुझे इस मुसीबत से बचा पाए। तभी पास की एक इमांरत से एक आदमी निकलकर आया। मैंने उसे देखा तो भरोसा ही न कर पाया। उसने पगड़ी पहन रखी थी। चेन्नई में किसी सरदार-जी को देखना ऐसा ही था, जैसे दिल्ली में किसी ध्रुवीय भालू को देख लेना। वह अपनी कार पर कवर चढ़ाने बाहर आया था। मैंने राहत की सांस ली। द्रौपदी की रक्षा करने भगवान कृष्ण अवतरित हो चुके थे।

'अंकल!' मैं पूरी ताकत लगाकर चिल्लाया।

अंकल ने मेरी ओर देखा। मुझे ऑटो से घिरा देखकर वे फौरन पूरी सिचुएशन समझ गए। वे हमारी तरफ़ आए।

ड्राइवर उनकी ओर बढ़े। वे उनका मुकाबला करने के लिए भी तैयार थे।

'एन्ना?' अंकल ने कहा।

ड्राइवरों ने उन्हें उस पूरी कहानी का अपना वर्ज़न सुनाया। अंकल उनसे धाराप्रवाह तमिल में बात कर रहे थे। किसी सरदार-जी को तमिल बोलते देखना बड़ा विचित्र और रोमांचक अनुभव था। ठीक सन टीवी के अल्फ़ा टीवी में विलय की तरह।

'कहां से आ रहे हो?' उन्होंने पूछा।

'एयरपोर्ट।'

'एयरपोर्ट से यहां तक आने के पांच सौ रुपए नहीं लग सकते। ज़्यादा से ज़्यादा सौ रुपए।' उन्होंने कहा।

चारों ड्राइवर एक साथ बोलने लगे। वे 'इल्ला' शब्द का बहुत ज़्यादा इस्तेमाल कर रहे थे। बहरहाल, अंकल की फर्राटेदार तमिल के कारण वे ज़रा नर्म ज़रूर पड़ गए थे। पाँच मिनट बाद हम सौ रुपए पर राज़ी हो गए। ड्राइवरों ने हमें घूरकर देखा। मेरे ड्राइवर ने मेरा लगेज निकाला और उसे सड़क पर पटकने के बाद अपनी गाड़ी लेकर वहां से चला गया।

'थैंक्स, अंकल,' मैंने कहा। 'आप चेन्नई में लंबे समय से हैं?'

'बहुत लंबे समय से। लेकिन तुम प्लीज़ इतने समय यहां मत रहना,' अंकल ने मेरा लगेज लिफ़्ट तक ले जाने में मेरी मदद करते हुए कहा। 'पंजाबी हो? '

मैंने सिर हिलाकर हां कहा।

'कभी ड्रिंक करने या चिकन खाने की इच्छा हो तो मेरे घर चले आना। लेकिन ज़रा सावधान रहना, तुम्हारी बिल्डिंग वेजिटेरियन हैं। ड्रिंकिंग पर भी पाबंदी हैं।'

'वाक़ई?'

'हां, यहां के लोग ऐसे ही हैं। ऐसा कोई मज़ा नहीं हैं, जिससे उन्हें अपराध बोध का अहसास न हो,' उन्होंने कहा। लिफ़्ट के दरवाज़े बंद हो गए।

मैंने अपने नए साथी की डोरबेल बजाई। रात के दस बज चुके थे। एक उनींदे-से लड़के ने दरवाज़ा खोला। अपार्टमेंट अंधेरे में डूबा हुआ था।

'हाय,' मैंने कहा।'दिल्ली से क्रिश। मैं कंज्यूमर फ़ायनेंस में हूं।'

'हुंह,' उसने कहा।'अच्छा, तो तुम वो हो। सिटीबैंक चेन्नई के इकलौते नॉर्थ इंडियन ट्रेनी। अंदर आ जाओ। तुम बहुत लेट हो गए हो।'

'फ़्लाइट डिले हो गई थी,' मैंने कमरे में घुसते हुए कहा।

उसने ड्राइंग रूम की बत्ती चला दी।'मैं रामानुजन हूं, आईआईएमबी से,' उसने कहा। मैंने उसकी ओर देखा। वह अभी-अभी बिस्तर से उठकर आया था फिर भी उसके बालों में तेल लगा था और वह ठीक से कंघी किए हुए थे। उसे देखकर ही लगता था कि यह इंसान बैंक की नौकरी बहुत मज़े से करेगा। जबकि ऑटो ड्राइवरों से हुई झड़प के बाद मेरा बेतरतीब हुलिया देखकर लगता था कि मैं एक बैंक अकाउंट भी नहीं खोल सकता।

'यह सेंडिल का रूम हैं और यह अप्पालिंगम का।'

फिर उसने मुझे अपना कमरा दिखाया।

'घर में खाने को कुछ हैं?' मैंने पूछा।

'पता नहीं,' उसने कहा और फ्रिज खोलकर देखा।'थोड़ा-सा दही-चावल हैं।' उसने भगोनी को बाहर निकाल लिया। उसे देखकर लगता नहीं था कि वह खाने की कोई डिश हैं। उसे देखकर यहां लगता था जैसे चावल किसी दुर्घटनावश दही में गिर पड़े हों।

'कुछ और? पास में कहीं कोई रेस्टोरेंट खुला होगा? '

उसने सिर हिलाकर ना कहा और फिर मेरी तरफ़ दो लिफ़ाफ़े बढ़ा दिए। 'ये तुम्हारे लिए कुछ पत्र आए हैं। नौकर ने बताया कि कोई लड़की मिलने आई थी।'

मैंने लिफ़ाफ़ो को देखा। एक तो सिटीबैंक की ओर से वेलकम लेटर था। दूसरे पर अनन्या के हस्ताक्षर थे। मैंने एक बार फिर दही चावल की ओर देखा और मन ही मन यह कल्पना करने की कोशिश की कि यह कोई बहुत ही लज़ि‍ज़ पकवान हैं लेकिन मैं उसे खाने का साहस न जुटा पाया।

मैं अपने कमरे में चला आया और बिस्तर पर पसर गया। रामानुजन ने घर की बाक़ी सभी बत्तियां बुझा दीं और फिर सोने चला गया।

'क्या हम तुम्हें सुबह जगा दें?' अपने कमरे में जाने से पहले उसने पूछा।

'ऑफ़िस का टाइम क्या हैं?'

'नौ, लेकिन ट्रेनीज़ से उम्मीद की जाती हैं कि वे आठ बजे तक पहुंच जाएंगे। हम साढ़े सात का टारगेट बनाकर चलते हैं, इसलिए सुबह पाँच बजे उठ जाते हैं।'

मैंने दिल्ली में बिताए अपने दो महीनों के बारे में सोचा, जहां सुबह नौ बजे जाग जाने का मतलब था जल्दी उठ जाना। 'सुबह पाँच बजे तक उजाला हो जाता हैं? ''लगभग। हम तुम्हें उठा देंगे। गुड नाइट।'

मैंने अपना दरवाज़ा बंद कर दिया और अनन्या की चिट्ठी खोली।

> हे चेन्नई बॉय ,
>
> मैं तुमसे आई थी। तुमने कहा था कि तुम दोपहर तक आ जाओगे, लेकिन तुम पहुचे नहीं थे। ख़ैर, अब मैं ज़्यादा देर तक इतंजार नहीं कर सकती, क्योकि मॉम सोच रही होगी कि मैं राधा सिल्क्स शॉप पर अपने दोस्तों के साथ हूं। मुझे जाना होगा। घर पर थोड़ा-बहुत नाटक चल रहा हैं, लेकिन मैं तुम्हें अभी उसमें नहीं उलझाना चाहती। डोंट वरी, हम जल्द ही मिलेंगे। तुम्हारा आफ़िस अन्ना सलाई में हैं और वह मेरे आफ़िस से बहुत दूर नहीं हैं। लेकिन एचएलएल मुझसे पूरे तमिलनाडु के चक्कर लगवा रहा हैं। मुझे टोमैटो केचप बेचना पड़ रहा हैं। मुश्किल काम हैं, ख़ास तौर पर तब, जब मैं सोचती हूं कि केचप में न तो इमली पड़ती हैं और न ही नारियल*!*
>
> अच्छा तो मैं चलती हूं। गेस वॉट, आज मैने बालों में जैस्मीन के फूल लगाए हैं*!* इटीरियर्स में ट्रडिशनल लुक ही ठीक रहती हैं। मैने कुछ पंखुड़ियां तोड़कर इस पत्र में रख दी हैं। उम्मीद करती हूं, वे तुम्हें मेरी याद दिलाएंगीं।

लव एंड किसेस,
अनन्या।

मैंने पत्र की तहों को खोला। जैस्मीन की पंखुड़िया मेरी गोद में गिर पड़ीं। वे बहुत कोमल थीं और उनकी गंध अद्भुत थी। आज के दिन की यह इकलौती ऐसी चीज़ थी, जिससे मुझे खुशी मिली थी। इसने मुझे फिर यह याद दिलाया कि आखिर मैं यहां क्यों और किसके लिए आया हूं।

16

जब आप अपने जॉब के पहले दिन पहले ही घंटे में उससे घृणा करने लगें तो समझिए यह आपके लिए एक बुरी ख़बर हैं। ऐसा नहीं था कि सिटीबैंक ने कुछ ऐसा किया हो, जिससे मैंने असहज महसूस किया हो। उन्होंने तो अपनी ओर से पूरी कोशिश की कि मैं सहज और स्वाभाविक महसूस करूं। मुझे एक क्यूबिकल और एक कंप्यूटर असाइन कर दिया गया था। मैं एक ऐसे समूह में था, जो 'प्रायरिटी बैंकिंग' क्लाइंट्स के लिए काम करता था। प्रायरिटी बैंकिंग क्लाइंट्स वास्तव में 'अमीरज़ादे ग्राहकों' के लिए एक पॉलिटिकली करेक्ट शब्द था। इस तरह के ग्राहकों को प्राथमिकता सूची में आने के लिए नोटों के बंडल लहराने के सिवाय कुछ भी नहीं करना था। प्राथमिकता सूची में शामिल ग्राहकों को विशेष सेवाएं मिलती थीं, जिसका मतलब था वेटिंग एरिया में कुर्सियों के बजाय सोफ़े और बैंक रिप्रज़ेंटेटिव्ज़ द्वारा उनकी जेब कतरने, माफ़ कीजिए, उन्हें अच्छी निवेश योजनाएं बताने के दौरान मुफ़्त गर्मागर्म चाय। और सबसे बड़ी सुविधा थी कस्टमर सर्विसेस मैनेजर्स तक सीधी पहुंच। ये मैनेजर्स शीर्ष एमबीए स्कूल्स से निकले ऐसे फ़ायनेंशियल विज़ार्ड्स थे, जिनमें आपकी वित्तीय नीतियों को एक नए स्तर तक ले जाने की क्षमता थी। जी हां, मैं इन्हीं मैनेजर्स में से एक था। ज़ाहिर हैं, ग्राहकों से बात करते समय कभी इस तरह की बातों का ज़िक्र नहीं किया जाता था कि उनका कस्टमर सर्विस मैनेजर अपने जॉब से घृणा करता हैं या वह यह काम केवल पैसों के लिए कर रहा हैं या वह इस शहर में केवल इसीलिए काम करने आया हैं, क्योंकि उसकी गर्लफ्रेंड यहां रहती हैं।

मुझे आठ बैंक रिप्रजेंटेटिव्ज़ को सुपरवाइज़ करना था। बैंक रिप्रजेंटेटिव्ज़ युवा थे। वे या तो सामांन्य ग्रेजुएट्स थे या फिर किसी ऐरे-गैरे संस्थान से निकले एमबीए। और चूंकि मैं आईआईएम से निकला था और इसीलिए यह माना जा सकता था कि मेरे पास कुछ विशिष्ट अधिकार होंगे, इसलिए ज़ाहिर तौर पर मैं उनसे ऊपर था। मैं तमिल नहीं बोलता था और बैंकिंग के बारे में भी कुछ नहीं जानता था। फिर भी मुझे यह दिखावा करना था कि मुझे पता हैं कि मैं क्या कर रहा हूं। कम से कम मेरे बॉस बालकृष्णन के सामने, जिन्हें बाला भी कहा जाता था।

'वेलकम टु द फ़ैमिली,' बाला ने मुझसे हाथ मिलाते हुए कहा।

मुझे लगा कि कहीं वह अनन्या के कोई रिश्तेदार तो नहीं।' फ़ैमिली?'

'द सिटीबैंक फ़ैमिली, और ऑफ़ कोर्स, द प्रायरिटी बैंकिंग फ़ैमिली। तुम बहुत लकी हो। इस ग्रुप से अपना कैरियर शुरू करने के लिए नए एमबीए क्या कुछ नहीं कर गुजरेंगे।' मैं मुस्करा दिया।

'आर यू एक्साइटेड, यंग मैन?' बाला ने ऊंची आवाज़ में पूछा।

'सुपर-एक्साइटेड,' मैंने कहा। मैं सोच रहा था कि चूंकि यह मेरा पहला ही दिन था, इसलिए क्या आज मुझे जल्दी छुट्टी मिल जाएगी।

वह मुझे प्रायरिटी बैंकिंग एरिया में ले गया। आठ रिप्रज़ेंटेटिव्ज़, जिनमें चार लड़के और चार लड़कियां थीं, ने रिसर्च रिपोर्ट और इस बारे में विभिन्न विभागों की टिप्स पढ़ी कि आज वे क्या बेच सकते थे। मैं सभी से मिला, अलबत्ता उन सभी के एक जैसे साउथ इंडियन नामों को मैं याद नहीं कर पाया।

'कस्टमर्स दस बजे से आने लगेंगे यानी अब से दो घंटे बाद,' बाला ने कहा 'और तभी हमारी वास्तविक लड़ाई शुरू होगी। हमारा मानना हैं कि ट्रेनीज़ काम करने के दौरान ही सबसे अच्छी तरह से सीखते हैं। तो जंग के लिए तैयार हो? '

मैंने उसकी ओर देखा। उसे देखकर ही बताया जा सकता था कि इसने अपनी पूरी ज़िन्दगी सिटीबैंक में बिता दी हैं। उसकी उम्र चालीस साल के क़रीब थी, जिसमें से शायद बीस साल वह बैंक में कुर्बान कर चुका था।

'रेडी? कोई सवाल, चैम्प?' बाला ने फिर पूछा।

'जी हां, मुझे एग्ज़ैक्टली क्या करना होगा? '

बाला ने मुझे निराश निगाहों से देखा। यह उसकी आगामी अनेक निराश निगाहों में से पहली थी। फिर उसने एक रिप्रज़ेंटेटिव्ज़ से डेली रिसर्च मंगवाईं। 'तुम्हें दो चीज़ें करनी होंगी, एक्चुअली दो नहीं तीन,' बाला ने मुझे मेरी डेस्क तक ले जाते हुए कहा, 'पहली यह कि रोज़ इन रिपोर्ट्स को पढ़ो और देखो कि तुम क्लाइंट्स को इनमें से कौन-सी इंवेस्टमेंट्स रिकमेंड कर सकते हो। जैसे कि यह।' उन्होंने इक्विटीज़ ग्रुप से एक रिपोर्ट निकाली। वह इंटरनेट कंपनियों के शेयर रिकमेंड कर रही थी, क्योंकि उनकी वैल्यू गिरकर आधी हो चुकी थी।

'लेकिन क्या डॉट कॉम का ग़ुब्बारा फूट नहीं रहा हैं?' मैंने कहा। 'ये कंपनियां कभी पैसा नहीं बना पाएंगी।'

बाला ने मेरी तरफ़ कुछ ऐसे देखा, जैसे मैंने उससे पंजाबी में कुछ कह दिया हो। 'देखो, हमारी रिसर्च कहती हैं कि यहां इसे ख़रीदना चाहिए। यह सिटीबैंक की ऑफिशियल रिसर्च हैं,' बाला इस तरह बोल रहा था, मानो वह बाइबिल में से कोई वाक्य कोट कर रहा हो। शायद वह ऑफिशियल रिसर्च किसी ऐसे हंग-ओवर एमबीए ने लिखी होगी, जिसे बिज़नेस स्कूल छोड़े तीन साल हो गए होंगे।

'फ़ाइन, इसके अलावा और क्या,'

'दूसरा महत्त्वपूर्ण जॉब हैं रिलेशनशिप डेवलप करना। तमिलियंस एजुकेटेड लोगों को पसंद करते हैं। तुम आईआईटी और आईआईएम से आए हो। तुम्हें उनके साथ रिलेशनशिप डेवलप करनी होगी।'

मैंने सिर हिलाकर हामी भरी। मैं प्रायरिटी बैंकिंग के इस चिड़ियाघर में एक ऐसी विलुप्त हो रही प्रजाति का जीव था, जिसे कस्टमर्स देखने और उसकी ओर केले उछालने आ सकते थे।

'अब, तुम्हारे लिए यह ज़रा मुश्किल होगा, क्योंकि तुम एक...?' बाला बोलते-बोलते रुक गया, जैसे कि उसे कोई शपथ लेनी हो।

'पंजाबी हो?'

‘हां, लेकिन क्या तुम तमिलियंस से दोस्ती कर सकते हो? '

‘मैं कोशिश कर रहा हूं। मुझे करना ही होगा,’ मैंने कहा। मैं सोच रहा था कि मैं अनन्या को उसके घर के अलावा और कहां फ़ोन कर सकता था। काश, इन कमबख़्त सेलफ़ोन की क़ीमतें तेज़ी से घट जाएं।

‘गुड। और आखिरी बात यह कि,’ बाला आगे बढ़ा और फुसफुसाते हुए कहा,’ ये रिप्रजेंटेटिव्ज़ ज़रा क़ाहिल किस्म के हैं। इन पर नज़र रखना। यदि कोई ठीक से काम न कर रहा हो तो मुझे बताना।’ उसने मुझे आंख मारी और जाने के लिए खड़ा हो गया।’ और ऑफ़िस ज़रा जल्दी आया करो।’

‘मैं साढ़े सात बजे आ गया था। ऑफ़िस का टाइम तो नौ बजे हैं ना?'

‘हां, लेकिन जब मैं तुम्हारे लेवल पर था, तो मैं सात बजे आता था। यदि तुम मेरे जैसा बनना चाहते हो तो वेक अप, सोलर,’ बाला ने कहा और अपने जोक पर ख़ुद ही हँस पड़ा। तमिल सेंस ऑफ़ ह्यूमर, अगर इस तरह की कोई चीज़ होती हो तो, वास्तव में दूसरों को देखकर सीखी गई कोई चीज़ होती हैं।

लेकिन मैं बाला जैसा नहीं बनना चाहता था। वास्तव में मैं यहां होना भी नहीं चाहता था। मैंने उसके जाने के बाद गहरी सांस ली और अपने सैलेरी पैकेज को याद किया। तुम यह पैसे के लिए कर रहे हो, मैंने ख़ुद से कहा। चार लाख रुपया सालाना, यानी तैतीस हज़ार रुपए प्रतिमाह, मैंने मन ही मन यह मंत्र दोहराया। मेरे पिताजी तीस साल से आर्मी में काम कर रहे थे और इसके बावजूद उनकी सैलेरी मुझसे आधी भी नहीं थी। मुझे बस बबल स्टॉक्स को पुरा करना था और उसके बाद सारा पैसा सीधे मेरी जेब में था। ज़िन्दगी आखिरकार इतनी बुरी भी नहीं, मैंने ख़ुद से कहा।

‘सर, क्या मैं टॉयलेट जा सकती हूं?’ एक रिप्रज़ेंटेटिव्ज़ ने मुझसे पूछा।

क्या?

वह परमिशन के लिए मेरी ओर देख रही थी।

‘तुम्हारा नाम क्या हैं?'

‘श्री।‘

‘कहां से हो? '

‘कोयंबटूर,’ उसने कॉकरोच कलर के बॉर्डर्स वाले अपने बड़े-से चश्मे को ठीक करते हुए कहा। चेन्नई में फैशन का ज़्यादा बोलबाला नहीं हैं।

‘तुमने कॉलेज में पढ़ाई की हैं?'

‘येस सर। कोयंबटूर यूनिवर्सिआंटी। डिस्टिंक्शन, सर।’

‘गुड। फिर तुम मुझसे परमिशन क्यों मांग रही हो? '

‘बस ऐसे ही, सर,’ उसने कहा।

‘टॉयलेट जाने के लिए मुझसे परमिशन लेने की ज़रूरत नहीं हैं,’ मैंने कहा।

‘थैंक यू, सर।’

मैं अगले दो घंटे तक रिपोर्ट्स पढ़ता रहा। इन सभी रिपोर्ट्स में उन अतिउत्साही एमबीएज़ के फ़ाइनेंशियल मॉडल्स थे, जिनकी दिलचस्पी इक्वेशंस सुलझाने में ज़्यादा थी, बनिस्वत यह सवाल पूछने के कि वे क्या कर रहे थे। एक टेबल में इंटरनेट कंपनियों की वैल्यू की तुलना उनकी साइट पर जाने वाले विज़िटर्स की संख्या से की गई थी। रिकमेंडेड कंपनी की आईबॉल रेशियो के लिए सबसे कम वैल्यू थी। आईबॉल रेशियो विश्लेषकों द्वारा गढ़ा गया एक ट्रेंडी टर्म था। महज़ इसी आधार पर रिपोर्ट में मोटे अक्षरों में लिखा था: ‘ख़रीद लो!’ ज़ाहिर हैं, विश्लेषक ने कभी यह सवाल नहीं पूछा था कि कोई भी साइट विजिटर कभी किसी इंटरनेट कंपनी को पैसा नहीं चुकाता था। ‘यह हर लिहाज़ से एक सस्ता सौदा होगा!’ रिपोर्ट विस्मय चिह्न के साथ कहती थी।

‘सर, मेरे कस्टमर आए हैं। मैं उन्हें आपके पास ले आऊं?’ श्री ने टॉयलेट से लौटते ही कहा।

‘श्योर,’ मैंने कहा।

‘सर, ये हैं मिस श्रीनिवास,’ श्री ने कहा। पचासेक साल की एक अधेड़ महिला मेरे क्यूबिकल में आई, जिसकी सोने की चूड़ियां हथकड़ियों से भी मोटी थीं। हम सोफ़ा एरिया में चले आए ताकि कस्टमर को लूटते-खसोटते समय उसे एक पर्सनल लिविंग रूम फ़िल दे सकें।

‘आप आईआईटी से हैं?’ उसने मेरी तरफ़ देखते हुए कहा।

‘हां,’ मैंने कहा। मैं उसे कोई लॉस-मेकिंग कंपनी ख़रीदने को राज़ी करने के लिए तैयार हो रहा था।

‘मेरा पोता भी आईआईटी के लिए तैयारी कर रहा हैं,’ उसने कहा। उसके बाल तेल से सने होने के कारण चमक रहे थे।

‘आपकी उम्र देखकर लगता नहीं कि आपका पोता आईआईटी की तैयारी कर रहा होगा,’ मैंने कहा।

मिस श्रीनिवास मुस्करा दीं। श्री ने भी खीसें निपोर दीं। जी हां, हमने चूहेदानी सजा दी थी और उसमें पनीर का टुकड़ा भी सजा दिया था। वॉक इन, बेबी।

‘अरे नहीं, मेरी तो अब उम्र हो चली। अलबत्ता मेरा पोता अभी छठी क्लास में ही हैं।’

‘मैडम का बैलेंस कितना हैं? ‘मैंने पूछा।

‘एक करोड़ बीस लाख, सर,’ श्री ने जवाब दिया।

मैंने मन ही मन अंदाज़ा लगाया। इतने पैसे कमाने के लिए मुझे तीस साल तक यह नौकरी करनी पड़ेगी। मुझे लगा कि उससे कुछ रुपए खसोट लेने में कोई बुराई नहीं हैं।

‘मैडम, क्या आपने किसी स्टॉक में इंवेस्ट किया हैं?’ इंटरनेट स्टॉक्स आजकल सस्ते हैं,’ मैंने कहा।

मिस श्रीनिवास ने मुझे चिंतित नज़रों से देखा। ‘स्टॉक्स? ना बाबा। और मेरा बेटा विदेश में एक इंटरनेट कंपनी में ही काम करता हैं। वह कहता हैं कि कंपनी बंद हो सकती हैं।’

‘वह अमेरिका हैं, मैडम। यह इंडिया हैं। हमारी एक अरब की आबादी हैं या दूसरे शब्दों में कहें तो हमारे यहां दो अरब आईबॉल्स हैं। ऐसे में ज़रा इंटरनेट की संभावनाओं की कल्पना कीजिए और हमारा म्यूचुअल फ़ंड हैं लिहाज़ा आपको किसी भी एक कंपनी में इंवेस्ट करने की ज़रूरत नहीं होगी।’

हम पांच मिनट तक मिस श्रीनिवास को बहलाते-फुसलाते रहे। मैंने बातचीत में बहुत सारे एमबीए टर्म्स फेंके, जैसे कि स्ट्रेटेजिक एडवांटेज, बॉटम लाइन वर्सेस टॉप लाइन, टॉप डाउन वर्सेस बॉटम अप। इन शब्दों के कारण मैं बड़ा इंटेलीजेंट मालूम हो रहा था। मिस श्रीनिवास और श्री मेरी हर बात पर सिर हिलाती रहीं। आखिरकार, मिस श्रीनिवास एक छोटा-सा इंवेस्टमेंट करने के लिए राजी हो गईं।

‘दस लाख से शुरुआत करते हैं,’ मैंने बात को ख़त्म करने के लिए कहा।

‘पाच, प्लीज़, पाच,’ मिस श्रीनिवास ने लगभग याचना के स्वर में कहा, जबकि पैसा उन्हीं का लग रहा था।

मैंने पाँच लाख पर बात तय की। श्री तो मारे खुशी के उछल ही पड़ी। मैं उसका फ़ेवरेट कस्टमर सर्विस मैनेजर बन गया था।

बाला मुझे संगीताज़ नाम के एक डोसा रेस्टोरेंट में लंच कराने ले गया।

‘यहां कितनी वैरायआंटी के डोसा हैं?’ मैंने वेटर से पूछा।

‘हमारे यहां चौरासी किस्म के डोसा मिलते हैं,’ वेटर ने बोर्ड की ओर इशारा करते हुए कहा। जितनी तरह की स्टफ़िंग की कल्पना की जा सकती थी, उतनी ही किस्म के डोसा यहां मुहैया थे।

‘स्पिनाच डोसा ट्राय करके देखो। और उसके बाद स्वीट बनाना डोसा,’ बाला ने मेरी तरफ़ कुछ इस तरह मुस्कराते हुए कहा, जैसे कि वह मुझे बाप का वह प्यार देना चाह रहा हो, जो मुझे कभी नहीं मिला। ‘तो अपना पहला इंवेस्टमेंट पाकर कैसा लग रहा हैं? दिल खुशी के मारे उछल रहा हैं? '

मेरा दिल उछल नहीं रहा था, केवल दुख रहा था। मुझे चेन्नई आए पंद्रह घंटे हो गए थे और मैं अभी तक अनन्या से बात भी नहीं कर पाया था। मैं जल्द ही एक सेलफ़ोन खरीदना चाहता था। एक नहीं, दो।

‘मैं तुममें अपनी झलक देखता हूं। तुम मेरी ही तरह हो।’ बाला ने अपने डोसे का पहला टुकड़ा सांभर में डुबोते हुए कहा। मुझे बिल्कुल नहीं पता था कि वह इस नतीजे पर कैसे पहुंचा था।

मेरे पास अनन्या का लैंडलाइन नंबर था। लेकिन वह शाम सात बजे के पहले घर नहीं पहुंचती थी। चूंकि उसका सेल्स फ़ील्ड जॉब था, इसलिए ऑफ़िस का भी कोई तय नंबर नहीं था। मुझे याद आया कि किस तरह हम कैम्पस में लंच के बाद एक-दूसरे से सटकर अपनी दोपहर की झपकी ले लिया करते थे। इट इज़ ऑफिशियल, कॉलेज के बाद ज़िन्दगी की राह बदल जाती हैं।

‘मज़ेदार हैं ना? ‘बाला ने कहा। ‘मुझे बीस साल हो गए, लेकिन बैंक आने का उत्साह ख़त्म नहीं हुआ। वॉव। मुझे आज भी वह दिन याद हैं, जब मेरे बॉस मुझे पहली बार लंच कराने ले गए थे। अरे क्या सोच रहे हो? काम की बातें बाद में सोचना, अभी लंच-टाइम चल रहा हैं।’

‘ऑफ़ कोर्स,’ मैंने ख़ुद को संभालते हुए कहा। ‘यहां से एचएलएल ऑफ़िस कितनी दूर हैं? '

‘क्यों? कोई पोटेंशियल क्लाइंट हैं?’ बाला ने कुछ इस तरह पूछा, मानो इस धरती पर अवतरित होने के पीछे लोगों का यही उद्देश्य होता हैं कि वे प्रायरिटी बैंकिंग कस्टमर्स बन जाएं।

‘मुमकिन हैं,’ मैंने कहा। बैंकिंग के बारे में सबसे अच्छी चीज़ यह हैं कि आपको झूठ बोलने के बाद क़तई बुरा महसूस नहीं होता।

‘एचएलएल ऑफ़िस तुंगमबक्कम में हैं। अपेक्स प्लाज़ा,’ उसने कहा।

वेटर ने हमें कड़छीभर सांभर और दे दिया। साथ ही बनाना डोसा भी परोस दिया। बनाना डोसा का स्वाद पैनकेक की तरह था और वह वाक़ई अच्छा था। ‘अच्छा, वही जगह, जहां मैं ठहरा हुआ हूं?'

‘येस, और मेरा घर भी वहीं हैं,’ वह आगे झुका और मेरी पीठ थपथपा दी। शायद मुझे एक अच्छा बॉस मिला था। मुझे अच्छा महसूस करना चाहिए था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मैं सोच रहा था कि मुझे पहले एचएलएल में कॉल करना चाहिए या सीधे वहीं पहुंच जाना चाहिए।

दोपहर को मैं अपनी डेस्क पर लौट आया। वहां मैं कुछ कस्टमर्स से मिला, लेकिन उनमें से अधिकांश के पास ज़्यादा रुकने का समय नहीं था। मिस श्रीनिवास ने मुझे एक लकी ब्रेक दे दिया था, लेकिन कंज़र्वेटिव तमिलों को इंवेस्टमेंट के लिए राज़ी करना आसान नहीं था।

‘फिक्स्ड डिपॉजिट। मुझे फिक्स्ड डिपॉजिट पसंद हैं,’ इंवेस्टमेंट की प्राथमिकताओं के बारे में पूछे जाने पर एक कस्टमर ने जवाब दिया।

दोपहर के तीन बज रहे थे। मेरे लिए एक कॉल आया।

‘आपके लिए हैं, सर,’ श्री ने मेरे एक्सटेंशन पर लाइन ट्रांसफ़र करते हुए कहा।

‘हाय, मैं अपने हॉट-शॉट सेक्सी बैंकर के साथ एक प्रायरिटी अकाउंट खुलवाना चाहती हूं।’

‘अनन्या?’ मेरी आवाज़ से खुशी छलक पड़ी थी, ‘तुम कहां हो? हम कब मिलेंगे? मैं एचएलएल चला आऊं? आई एम सॉरी, मेरी फ़्लाइट... '

‘इज़ी, इज़ी। मैं कांचीपुरम में हूं।’

‘ये कहां हैं? '

‘चेन्नई से तीन घंटे दूर, लेकिन मैं जल्दी लौट आऊंगी। तुम मेरे घर डिनर पर क्यों नहीं आते?'

‘घर पर? तुम्हारे घर पर? तुम्हारे मॉम और डैड के साथ? '

‘हां, क्यों नहीं। तुम्हें उनसे जान-पहचान तो करनी ही होगी ना। मॉम इन दिनों ज़रा ठीक नहीं हैं, लेकिन दैट्स ओके। '

‘वे ठीक क्यों नहीं हैं? हमारे कारण? '

‘नहीं, उनके पास दुखी होने के लिए दूसरी भी वजहें हैं। क़िस्मत की बात है कि इस बार वे मुझसे जुड़ी किसी चीज़ के कारण दुखी नहीं हैं। '

‘अनन्या, कहीं बाहर चलते हैं ठीक है? '

‘आज नहीं। कनाडा से मेरी आंटी आई हैं। तुम रात आठ बजे चले आना? ‘उसने मुझे अपना पता दिया। मैंने पता नोट किया, लेकिन उससे तीन बार स्पेलिंग पूछी। ‘पाँच घंटे बाद मिलते हैं उसने कहा और फ़ोन रख दिया।

मैंने इस उम्मीद में घड़ी की ओर देखा कि इससे उसकी गति तेज़ हो जाएगी। शाम छह बजे रिप्रज़ेंटेटिव्ज़ चले गए, लेकिन सिटीबैंक की महान कल्चर के मुताबिक एमबीएज़ आठ बजे तक दफ़्तर में ही रहते थे।

मैं भारत की अर्थव्यवस्था पर रिपोर्टें पढ़कर समय काटता रहा। इन्हें स्मार्ट लोगों ने लिखा था और उन्होंने कुछ इतने आत्मविश्वास से अगले दस सालों की जीडीपी का पूर्वानुमान लगाया था कि यह बुनियादी तथ्य छुप जाता था कि आखिर तुम अभी से कैसे बता सकते हो, भैया?

साढ़े सात बजे मैं जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। बाला मेरे पास आया। ‘जा रहे हो?’ उसने ऐसे पूछा, जैसे कि मैं हाफ़ डे लीव ले रहा हूं।

‘ही,’ मैंने कहा। ‘अभी यहां मेरे लिए करने को कुछ ख़ास नहीं है। '

‘एक और टिप, अपने बॉस से पहले कभी मत जाओ उसने कहा और मुझे आख मारी। फिर वह हँस पड़ा, लेकिन मुझे उसकी बात कहीं से भी फ़नी नहीं लगी थी। मैं जानना चाहता कि आखिर कोई तमिल जोक बुक कैसी होती होगी?

‘आप किस समय जाते हैं?’ मैंने थकान भरे स्वर में पूछा।

‘बहुत जल्दी, एक्चुअली मैं जा ही रहा हूं। कुसुम इंतज़ार कर रही होगी। तुम डिनर के लिए मेरे घर चलना चाहोगे? '

‘नहीं, थैंक्स, ‘मैंने कहा।

उसने मुझे दूसरी बार निराशा भरी निगाहों से देखा।

‘मुझे अपने एक दूर के रिश्तेदार के यहां जाना है मैंने कहा।

‘ओह उसने कहा। उसकी आवाज़ में अब भी उदासी थी।

आई एम सॉरी, डूड, लेकिन मैं केवल इसीलिए अपनी ज़िन्दगी का रिमोट तुम्हारे हवाले नहीं कर सकता क्योकि तुम मेरे बॉस हो, मैंने सोचा।

17

'स्वामीनाथन, 'अनन्या के छोटे अलग-थलग-से घर के बाहर लगी नेमप्लेट पर घुमावदार अक्षरों में यह लिखा हुआ था। मैंने दरवाज़े की घंटी बजाई, हालांकि ग्राइंडर की घरघराहट के कारण उसे साफ़ तरह नहीं सुना जा सकता था।

'येस?' अनन्या के पिता ने हैरत के भाव के साथ दरवाज़ा खोला। मुझे पूरा यक़ीन है कि वह मुझे पहचान गए थे, लेकिन वे मुझे न पहचान पाने का दिखावा करते रहे। उन्होंने आधी आस्तीन की सफ़ेद बंडी पहन रखी थी, जिसमें आगे की तरफ़ ज़ेबें थीं। साथ ही उन्होंने चेक्ड नीली-सफ़ेद लुंगी पहन रखी थी।

'क्रिश, सर, अनन्या का फ्रेंड, 'मैंने कहा। पता नहीं क्यों, लेकिन मैं जब डरा हुआ होता हूं तो लोगों को सर कहकर संबोधित करने लगता हूं। मैं अपने साथ बिस्किट्स का एक गिफ्ट पैक ले आया था, क्योंकि मेरी पंजाबी तहजीब ने मुझे यही सिखाया था कि जहां भी जाओ अपने साथ में कम से कम इतनी कैलोरीज़ तो लेकर ही जाओ, जितनी तुम वहां ख़ुद हज़म करने वाले हो।

मैंने एक बार फिर अपना परिचय दोहराया। तब उन्होंने कहा, 'ओह, अंदर आ जाओ। 'मैं भीतर आया और उन्हें गिफ़्ट पैक दे दिया।

'जूते!' उन्होंने रुखे स्वर में कहा, जबकि मैं 'थैंक्स 'की उम्मीद कर रहा था।

'क्या? 'मैंने कहा।

उन्होंने घर के बाहर शू रैक की ओर इशारा किया।

मैंने अपने जूते निकाले और जुराबों को चेक किया कि कहीं उनमें से बू तो नहीं आ रही या कहीं कोई छेद तो नहीं है। फिर मैंने तय किया कि मुझे जुराबें भी निकाल देनी चाहिए। मैं भीतर चला आया।

'रंगोली पर पैर मत रखो, 'उन्होंने चेतावनी भरे लहज़े में कहा।

मैंने नीचे देखा। मेरे दाएं पैर के नीचे चावल के आटे से बनाई गई फूल की डिज़ाइन थी। 'सॉरी, आई एम रियली सॉरी, सर, 'मैंने कहा और रंगोली ठीक करने झुक गया।

'इट्स ओके। अब उसे ठीक नहीं किया जा सकता, 'उन्होंने कहा और मुझे लिविंग रूम में ले आए। लंबा आयताकार कमरा कुछ ऐसा नज़र आ रहा था, जैसे कि पंजाबी ड्राइंग रूम किसी डकैती के बाद नज़र आते। सोफे सादे थे। कुशंस भारतीय रेलवे के स्लीपर्स से भी पतले थे। पम्मी अंटी के लाल मखमल के सोफ़ों से वे बिल्कुल अलग थे। दीवारों पर हल्के हरे रंग का डिस्टेंपर फिनिश था। पूरे कमरे में भिन्न-भिन्न प्रकार के साउथ इंडियन देवी-देवताओं के चित्र थे। डायनिंग एरिया में फ़र्श पर बैठक व्यवस्था थी। एक कोने में, एक डेबेड पर तंबूरा रखा था (जो देखने में सितार जैसा लगता था)। वहां एक बुज़ुर्ग व्यक्ति बैठे थे। मैंने सोचा कि कहीं अनन्या के पैरेंट्स ने डिनर के लिए लाइव म्यूज़िक का आयोजन तो नहीं करवाया है।

'बैठ जाओ, 'अनन्या के पिता ने सोफ़े की ओर इशारा करते हुए कहा।

हम एक-दूसरे के सामने बैठ गए। जीवन में पहली बार मैं अनन्या के पिता के ठीक सामने था। मैंने दिमाग पर ज़ोर डाला, ताकि मैं बातचीत शुरू करने के लिए कोई अच्छा-सा विषय सोच पाऊं। 'नाइस प्लेस, 'मैंने कहा।

'क्या ख़ाक़ नाइस। इस एरिया में तो पानी ही नहीं है अंकल ने न्यूजपेपर उठाते हुए कहा।

मैंने सिर झुका लिया, मानो मयलापुर में पानी की समस्या के लिए माफ़ी मांग रहा होऊं। अंकल ने पेपर खोला, जिससे उनका चेहरा छिप गया। मुझे पता नहीं, उन्होंने ऐसा जानबूझकर किया था या नहीं। मैं चुप रहा और तंबूरे वाले व्यक्ति की ओर मुड़ा। मैं मुस्कराया, लेकिन उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। घर में एक अजीब क़िस्म की ख़ामोशी थी। एक पंजाबी घर कभी इस तरह ख़ामोश नहीं होता, तब भी नहीं, जब रात को सब लोग सो रहे हों।

मैंने आगे झुककर देखा कि अंकल वास्तव में पेपर पढ़ रहे हैं या महज़ मुझसे बचने के लिए उन्होंने ऐसा किया है। उन्होंने द हिंदू का एडिटोरियल पेज खोल रखा था। वे एआईएडीएमके से संबंधित एक लेख पढ़ रहे थे, जिसमें सरकार से यह मांग की जा रही थी कि नेवी प्रमुख को बर्ख़ास्त करने वाले रक्षा मंत्री पर इंक्वायरी बिठवाए। बड़ा भारी-भरकम क़िस्म का लेख था। मेरे परिवार में किसी ने, करेक्यान, मेरे पूरे ख़ानदान में कभी किसी ने अख़बारों के एडिटोरियल पेज नहीं पढ़े थे, एआईएडीएमके के बारे में कोई लेख तो दूर की बात है।

अंकल ने मुझे ताक-झांक करते देख लिया। उन्होंने भुनभुनाते हुए कहा, 'क्या है?'

'कुछ नहीं मैंने कहा। पता नहीं मुझे इतने अपराध बोध का अनुभव क्यों हो रहा था। अंकल पाँच मिनट तक पढ़ते रहे। जब उन्होंने पेज पलटा तो मुझे बात करने का एक और मौक़ा मिला। 'घर पर कोई नहीं है क्या, सर? '

'इस वक़्त घर के लोग और कहां होंगे?'

'कोई नज़र नहीं आ रहा था।'

'वे खाना पका रहे हैं। तुम्हें ग्राइंडर की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही है? 'उन्होंने कहा। पता नहीं अनन्या के पिता स्वाभाविक रूप से ऐसे ही थे या आज ही वे कुछ ज़्यादा खिन्न थे। शायद, मेरे यहां आने के कारण वे भुनभुना रहे है मैंने सोचा।

'पानी? 'उन्होंने पूछा।

'नहीं सर, 'मैंने कहा।

'क्यों? तुम्हें पानी क्यों नहीं चाहिए?'

मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं था, सिवाय इसके कि मुझे इस घर में डर लग रहा था और कुछ अजीब-सा महसूस हो रहा था। 'ठीक है पानी दे दीजिए, 'मैंने कहा।

'राधा, 'अंकल ज़ोर से बोले। 'टन्ती!'

'क्या वे अनन्या के दादाजी हैं मैंने उस बुज़ुर्ग व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा।

'नहीं, 'उन्होंने कहा।

अनन्या के पिता ने उतना ही जवाब दिया था, जितना मैंने पूछा था। इसलिए मैंने धीरे-से पूछा: 'वे कौन हैं?'

'वे राधा के कर्नाटिक न्तुड़क टीचर हैं, जो उसकी क्लास लेने आए थे। लेकिन वह किचन में तुम्हारे लिए खाना बना रही है। अब क्या करें?'

मैंने सिर हिला दिया।

लिविंग रूम में अनन्या की मां आईं। उनके हाथ में एक टेर थी, जिसमें पानी का गिलास और एक प्लेट नमकीन था। भूरे रंग के घुमावदार स्नैक्स सांपों के जीवाश्म की याद दिला रहे थे।

'हैलो टी, 'मैं खड़ा हो गया।

'हैलो क्रिश, 'उन्होंने कहा।

'आई एम सॉरी, मैं ग़लत समय पर चला आया, 'मैंने टीचर की ओर देखते हुए कहा।

'इट्स ओके। तुम्हें अनन्या ने इनवाइट किया है। और यह उसकी आदत है कि वह मुझसे पूछे बिना कुछ भी करती रहती है अनन्या की मां ने कहा।

'टी, हम सभी बाहर चल सकते हैं मैंने कहा।

'इट्स ओके। खाना लगभग तैयार है, 'उन्होंने कहा और अपने पति की ओर मुड़ी।

'मुझे गुरुजी के साथ बैठने के लिए आधे घंटे का समय दो। 'फिर वे गुरुजी की ओर चली गईं और उनके पैर छुए। गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया। अनन्या की मा ने तंबूरा उठाया और वे कमरे से बाहर चले गए।

'तो, सिटीबैंक ने तुम्हें चेन्नई में प्लेस किया है? 'अंकल ने पहली बार बातचीत की शुरूआत करते हुए कहा।

'येस, सर, 'मैंने कहा। अनन्या ने उन्हें बताया था कि बैंक ने मेरा ट्रांसफ़र किया है।

'वे नॉर्थ इंडियंस को यहां क्यों भेजते हैं?'

'पता नहीं, सर? '

'बेकार लोग, 'उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा और फिर अपने अखबार में खो गए। मैंने गला खंखारा और आखिरकार पूछने का साहस जुटाया: 'अनन्या कहौ है?'

अंकल ने मेरी ओर कुछ इस तरह देखा, जैसे मैंने उनसे पूछा हो कि उन्होंने अपना पोर्न कलेक्शान कहौ रखा है। 'वह नहाने गई है। वह शाम की प्रार्थना के बाद ही आएगी। 'मैंने सिर हिला दिया। अहमदाबाद में अनन्या ने कभी शाम की प्रार्थना नहीं की थी। दूसरे कमरे से आवाजें आ रही थीं। ऐसा लग रहा था, जैसे कोई गला फाड़कर रो रहा हो। मुझे हैरत में देखकर अंकल ने मुझे देखा।

'कर्नाटिक न्तुड़क, 'अंकल ने कहा। 'तुम्हें पता है?'

मैंने सिर हिला दिया।

'फिर तुम्हें क्या पता है?' उन्होंने कहा और मेरे जवाब के लिए रुके बिना ही फिर से द हिंदू में अपना सिर घुसा लिया।

मेरा जी हुआ कि इस घर से भाग जाऊं। आखिर मैं इस पागलखाने में क्या कर रहा हूं? मुझे बाहर कोई आहट सुनाई दी।

'सॉरी, 'अनन्या ने भीतर आते हुए कहा।

मैं उसे देखने के लिए मुड़ा। मैं उसे दो महीने बाद देख रहा था। उसने क्रीम कलर की कॉटन साड़ी पहन रखी थी, जिस पर पतली सुनहरी बॉर्डर थी। जब मैंने उसे आखिरी बार देखा था, तब से वह ज़्यादा ख़ूबसूरत नज़र आ रही थी। मैं उसे अपनी बौहों में भींचकर उसके होंठों को कसकर चूम लेना चाहता था। चूंकि मेरे सामने मिस्टर द हिंदू-एडिक्ट चिड़चिड़े स्वामी बैठे हुए थे, इसलिए ज़ाहिर है ऐसा नहीं हो सकता था।

'हाय अनन्या, गुड टु सी यू 'मैंने इस तरह उसे ग्रीट किया, जैसे हम साथ-साथ काम करते हों। मैंने अपने हाथों को अपने तक ही सीमित रखा था।

'काट, गिव मी अ हग, 'उसने कहा, तब जाकर अंकल का ध्यान द हिंदू से हटा।

'अनन्या, यहां बैठो उन्होंने कहा और पेपर को इस तरह ऐहतियात से तह करके रख दिया, जैसे कि वे ज़िन्दगी भर हर रोज उठकर उसी को पढ़ेंगे।

'हाय डैड, 'अनन्या ने कहा और अपने पिता को गाल पर किस किया। मुझे ईर्ष्या हुई।

'ओह मॉम गा रही हैं उसने अपनी मां की कर्कश आवाज़ सुनकर कहा।

'ही, आखिरकार, 'अनन्या के पिता ने कहा। 'बता सकती हो कौन-सा राग है?' अनन्या ने ध्यान से सुनने के लिए आखें बंद कर लीं। वह ख़ूबसूरत लग रही थी, लेकिन मुझे कहीं और देखना पड़ा, क्योंकि अंकल मेरी हर हरकत पर नज़र रखे हुए थे।

'यह मल्हार है यक़ीनन मल्हार, 'उसने कहा।

अंकल ने सराहना के साथ अपना सिर हिलाया।

'राग कितने होते हैं?' मैंने बीच में घुसने की कोशिश करते हुए कहा।

'एक हजार, है ना डैड? 'अनन्या ने कहा।

'कम से कम। तुम कर्नाटिकी संगीत नहीं सुनते हो? 'अंकल ने मुझसे कहा।

'ज़्यादा नहीं, लेकिन यह सुनने में अच्छा लग रहा है मैंने कहा। निश्चित ही, यहां पर यह कहना शायद ठीक नहीं होता कि मुझे कतई अंदाज़ा नहीं है कि आप लोग किस बारे में बात कर रहे हैं।

'जब डैड की कोलकाता में पोस्टिंग थी, तब मॉम ने तमिल संगम में दो चैंपियनशिप जीती थीं, 'अनन्या ने गर्वभरे स्वर में कहा।

'लेकिन चेन्नई आने के बाद उसने गाना बंद कर दिया है, 'अंकल ने कहा और हाथ फैला दिए।

'क्यों?' मैंने पूछा।

'कई कारण हैं अनन्या ने कहा और फिर धीरे-से मुझे इशारा किया कि मैं यह विषय बदल दूं।

‘तुम्हारी टी यहां हैं?’ मैंने कहा।
‘ही, शोभा अथाई किचन में हैं। वे डैड की बड़ी बहन हैं।’
मैंने मन ही मन प्रार्थना की कि शोभा औटी का व्यक्तित्व उनके भाई जैसा न हो। कमरे में फिर खामोशी घिर आई। मैंने खाने के लिए एक स्नैक उठाया। मेरे मुंह में उसकी हर चरमराहट की आवाज़ को साफ सुना जा सकता था। मुझे बातचीत जारी रखनी थी। मैंने कुछ समय पहले एक किताब पढ़ी थी, जिसमें दोस्त बनाने की तरक़ीबें बताई गई थीं। उसमें लिखा था कि लोगों के काम में दिलचस्पी लो और बातचीत में बार-बार उनका नाम लाते रहो।
‘तो आप देशभर में काम कर चुके हैं मिस्टर स्वामीनाथन?’ मैंने कोशिश की।
‘कुछ जगहों पर, लेकिन फिर मैं बस यहीं उलझकर रह गया,’ उन्होंने कहा।
‘उलझकर? मैं तो समझा था कि आप चेन्नई को पसंद करते हैं। यह आपका होमटाउन है,’ मैंने कहा।
अंकल ने मुझे एक डर्टी लुक दी। मैंने सोचा कि मैंने कहीं कोई ग़लत बात तो नहीं कह दी।
‘मैं शोभा को ले आता हूं। चलो पहले जल्दी से खाना खा लेते हैं, अंकल ने कहा और कमरे से बाहर चले गए। मैं अनन्या से उसके पापा के बारे में पूछना चाहता था, लेकिन सबसे पहले तो मैं उसे अपनी बांहों में भर लेना चाहता था।
‘बिल्कुल नहीं,’ अनन्या ने मेरे इरादों को भांपते हुए कहा।
‘क्या?’
‘हिलो मत। मुझसे तीन फ़िट की दूरी बनाए रखो,’ उसने कहा।
‘आर यू मैड? यहां कोई भी नहीं है।
‘कोई नहीं है? पास के ही कमरे में मेरी मां गा रही हैं। '
‘तुम इसे गाना कहती हो?'
‘शट अप,’ उसने खिलखिलाते हुए कहा। ‘मैं तो यही सजेस्ट करूंगी कि तुम थोड़ा-बहुत कर्नाटिक म्यूज़िक सीख लो। नो, स्टॉप, सोफ़े से मत उठो।‘ उसने मुझे एक फ़्लाइंग किस दिया और मैं फिर सोफ़े पर बैठ गया।
‘बैंक में पापा का बुरा समय चल रहा है,’ अनन्या ने धीमे–से कहा। ‘उन्हें प्रमोशन नहीं मिली। वे बैंक ऑफ़ बड़ोदा के डिस्ट्रिक्ट हेड बनने के लायक हैं, लेकिन गंदी राजनीति के कारण उन्हें हेड नहीं बनाया गया और पापा राजनीति से सख़्त नफ़रत करते हैं। '
मैंने यह नहीं बताया कि अभी कुछ देर पहले वे कितने चाव से एआईएडीएमके का आर्टिकल पढ़ रहे थे। ‘तुम्हारा भाई कहां है? '
‘सो गया है। वह पढ़ाई के लिए सुबह जल्दी उठ जाता है। '
हमने किसी के कदमों की आहट सुनी।
‘शोभा आंटी के सामने ज़रा सावधान रहना। कम से कम बोलने की कोशिश करना,’ उसने कहा।
‘क्यों?’ मैंने कहा, लेकिन तभी अनन्या की मां लिविंग रूम में चली आईं। वे और उनके गुरु मुख्यद्वार तक गए। आंटी के चेहरे से निराशा झलक रही थी।
‘इल्ला प्रैक्टिस?’ गुरुजी ने बुदबुदाते हुए कहा। अनन्या की मां उनसे तमिल में बात कर रही थीं।
गुरुजी ने सिर हिलाया और चले गए।
‘क्या हुआ?’ अनन्या ने उनसे पूछा।
‘कुछ नहीं। तुम्हारे अप्पा और अथाई कहा हैं? चलो खाना खा लेते हैं,’ अनन्या की मां ने गंभीर लहज़े में कहा।
अनन्या के पिता और आंटी लिविंग रूम में आए। उनके हाथ में इतनी डिशेस थीं कि वे उनके संभाले नहीं संभल रही थीं। मैं उनकी मदद करने को खड़ा हो गया। ‘हैलो आंटी, क्या मैं कुछ ले सकता हूं?'
‘पहले अपने हाथ धो आओ,’ अंकल ने कहा और किचन की ओर इशारा किया।
डिनर के लिए हम फ़र्श पर बैठे। अनन्या ने मुझे केले का एक पत्ता दिया। मैं सोचने लगा कि मुझे इसे खाना है या इससे अपने हाथ पोंछने हैं।
‘इसे नीचे बिछा दो, यह प्लेट है,’ अनन्या ने फुसफुसाते हुए कहा।
‘राधा,’ शोभा आंटी ने अपने पत्ते की ओर इशारा करते हुए सख़्त लहज़े में कहा। उसके एक तरफ़ कुछ गंदगी लगी हुई थी।
‘ओह सॉरी, सॉरी; राधा आंटी ने कहा और उसे बदल दिया। यह ठीक उसी तरह था, जैसे शिप्रा मासी मेरी मां की ग़लती निकालने की कोशिश करती रहती थीं। दुनिया की हर संस्कृति में आपको इस तरह के नमूने नाते-रिश्तेदार मिलेंगे।
मैंने अनन्या की देखादेखी पत्ते पर चावल लिया, फिर उसमें सांभर मिलाया और अजीब-सी दिखने वाली दो सब्जिया लीं। दो तरह के ब्राउन पाउडर्स को देखकर मैं रुक गया। ‘यह क्या है?’ मैंने पूछा।
‘गनपाउडर, खाकर देखो,’ उसने कहा।
मैंने उसे चखा। उसका स्वाद मिर्च मिले लकड़ी के बुरादे की तरह था।
‘अच्छा है ना?'
मैंने अनन्या की ओर देखकर सिर हिला दिया। पहले तो सभी ने अपने-अपने पत्ते पर सफ़ाई से व्यंजन रखे और बाद में उन सभी को मिलाकर घालमेल कर दिया।
‘और अच्छे-से मिक्स करो,’ अनन्या ने कहा, जबकि मैं तो अपने भविष्य के ससुरालवालों की ही नक़ल करने की कोशिश कर रहा था।
‘तुम अनन्या के क्लासमेट हो?’ शोभा आंटी ने पहली बार कुछ कहा।
‘हां, हम आईआईएम में साथ थे,’ मैंने कहा।‘आईआईटी स्टूडेंट हो? '
मैंने हामी भरी। अनन्या ने मुझे बताया था कि मेरा आईआईटीयन होना उसके परिवार में मेरी एकमात्र ख़ूबी मानी जाती थी।

‘सुशील की कज़िन भी आईआईटी से है। राधा, मैंने तुम्हें बताया था ना? हरीश सैन फ्रैंसिस्को में रहता है।'

‘कौन-सी बैच?’ मैंने पूछा।

‘वह आईआईटी मद्रास में थी, तुम्हारे कॉलेज में नहीं,’ शोभा आंटी ने कहा। वे मेरे द्वारा बीच में दख़ल दिए जाने से नराज़ लग रही थीं।

मैं चुप हो गया और तरह-तरह की सब्जियों को देखने लगा। मैं उन्हें पहचानने की कोशिश कर रहा था। मैंने बीन्स और गोभी को हैलो कहा।

‘हरीश के पैरेंट्स उसकी शादी कर देना चाहते हैं। तुम्हारे पास अनन्या के नक्षत्रम हैं?’ शोभा आंटी ने कहा।

‘नहीं, अभी तो नहीं, ‘अनन्या की मां ने कहा।

‘क्या, स्वामी? तुम्हारी वाइफ़ को एक अच्छा दामाद तलाशने में कोई दिलचस्पी नहीं है?’ मैं विश्वास ही नहीं कर पाया कि वे लोग ये बातें मेरी मौजूदगी में कर रहे थे। ‘ज़रा चावल मिलेगा?’ मैंने इस उम्मीद में कहा कि बातचीत का रुख़ कहीं ओर मोड़ा जा सके। ‘राधा, तुम्हें शोभा की बात माननी चाहिए। उसे सब अच्छी तरह पता है,’ अनन्या के पिता ने कहा। भारतीय पुरुष अपनी बहन के सामने पत्नी को झिड़कते हुए बिल्कुल भी नहीं हिचकिचाते।

अनन्या की मां ने सिर हिला दिया। शोभा आंटी ने अब तमिल में बोलना शुरू कर दिया। अनन्या के पिता और मां भी तमिल में ही जवाब दे रहे थे। अपने सामने रीजनल लैंग्वेज की यह फिल्म चलती देखकर मैं बहुत खीझ रहा था।

पाँच मिनट बाद मैंने कहा : ‘एक्सक्यूज़ मी? '

‘क्या है?’ अनन्या के पिता ने कहा।

‘आप लोग इंग्लिश में बात करेंगे? मैं आपकी बातें समझ नहीं पा रहा हूं,’ मैंने कहा। अनन्या ने हैरत से मेरी ओर देखा। उसकी आंखें कह रही थीं कि मैं चुप रहूं।

‘तो तमिल सीख लो,’ अनन्या के पिता ने कहा।

‘येस सर,’ मैंने आज्ञाकारी की तरह कहा।

‘वैसे भी, हम क्या बात कर रहे हैं इससे तुम्हारा कोई सरोकार नहीं है,’ उन्होंने आगे कहा। मैंने सिर हिला दिया। मुझे कई टेक्नोलॉजी कंपनियों और लड़कों के नाम सुनाई दे रहे थे। मेरा जी कर रहा था कि अपनी प्लेट उठाकर शोभा आंटी के चेहरे पर दे मांरू।

डिनर के फ़ौरन बाद मैं चला आया। अनन्या मुझे बाहर तक छोड़ने आई। जैसे ही हम सूनी सड़क़ तक पहुंचे, अनन्या ने मेरी बांह थाम ली।

‘मुझे तुमसे बात नहीं करनी,’ मैंने कहा और अपनी बांह छुड़ा ली।

‘क्या?’ उसने कहा।

हम एक बंगले के पास से गुज़रे, जिसके बग़ीचे में नारियल के पेड़ थे।

‘वे तुम्हारी शादी की प्लानिंग कर रहे हैं। ये नक्षत्रम क्या होता हैं? ‘मैंने कहा।

‘ये एक एस्ट्रोलॉजिकल चार्ट होता हैं। वे लोग तो यूं ही बातें कर रहे हैं। मैं तुम्हारे सिवाय किसी और से शादी नहीं करूंगी।’

उसने मेरा हाथ थामा और उसे चूम लिया। मैंने उसे फिर छुड़ा लिया। मैंने एक ऑटो वाले को बुलाया। अनन्या ने उससे तमिल में भाव-ताव किया, वरना मुझसे तो वह दोगुना भाड़ा ले लेता।‘मैं इन लोगों को कैसे राज़ी कर पाऊंगा? यह तो नामुमकिन लगता हैं। तुम्हारे पापा के साथ बैठना तो ऐसा ही हैं जैसे किसी बच्चे को प्रिंसिपल के ऑफ़िस में बुला लिया गया हो।’

अनन्या हँस पड़ी।

‘मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा हूं।’

‘यह थोड़ा-बहुत मज़ाक़ ही हैं। और मेरी मॉम के बारे में क्या ख़्याल हैं?'

‘कैम्पस में मैं उनकी तस्वीरों से ही डरा हुआ रहता था तो रियल लाइफ़ की तो बात ही छोड़ दो। उन्हें तो देखकर ही लगता हैं कि वे मेरी जान ले लेंगी।’

‘उनकी तस्वीरें तुम्हें डराती थीं? '

‘हां, इसीलिए तो मैं कभी तुम्हारे कमरे में तुम्हें प्यार नहीं करता था। तुम्हारी मॉम की तस्वीर देखकर मेरे होश फ़ाख्ता हो जाते। मैं कल्पना करता था कि मुझे तुम्हें प्यार करते देखकर वे कहेंगी, तुम मेरी बेटी के साथ क्या कर रहे हो?'

अनन्या फिर हँस पड़ी। ‘यदि हम मयलापुर में नहीं होते तो मैं तुम्हें किस कर लेती। तुम बहुत क्यूट हो,’ उसने कहा।

‘ये सारी बातें छोड़ो, अनन्या, तुम्हारा क्या प्लान हैं? तुम मॉम से बात करोगी? ‘‘मां अभी ज़रा तनाव में हैं। उनके कर्नाटिक टीचर ने उन्हें पढ़ाने से मना कर दिया हैं।’

‘क्यों?'

‘मैं तुम्हें बाद में बताऊंगी।’

‘क्या हम कल कहीं बाहर मिल सकते हैं? प्लीज़,’ मैंने कहा।

‘कल छह बजे मुझे मरीना बीच पर मिलो,’ उसने कहा।

‘मैं छह बजे नहीं आ पाऊंगा। मेरा बॉस बाला ख़ुद आठ बजे तक बैठा रहता हैं।’

‘मैंने यह नहीं कहा कि शाम के छह बजे।’

‘तो क्या सुबह के छह बजे?’ मैंने थूक निगलते हुए कहा।

तब तक अनन्या ऑटो ड्राइवर से बात करने लगी थी।

‘नुंगमबक्कम, ट्वेंटी रुपीज़। एक्सट्रा इल्लई, ओके?’

18

मरीना बीच का ख़ूबसूरत सूर्योदय सुबह पांच बजे से शुरू हो जाता हैं। वेक-अप कॉल। सैंकड़ों लोग मीलों लंबे समुद्र तट के किनारे-किनारे मॉर्निंग वॉक करते हैं।

'तुम्हें पता हैं यह एशिया का सबसे बड़ा सिटी बीच हैं?' अनन्या ने कहा। हम पुलिस हेडक्वार्टर बिल्डिंग के बाहर मिले थे।

'तुमने मुझे बताया था,' मैंने कहा।

'तुम फ़ार्मल्स पहनकर क्यों आए हो?'

'मुझे यहां से सीधे काम पर जाना हैं। ट्रेनीज को सुबह साढ़े सात बजे तक ऑफ़िस पहुंच जाना होता हैं,' मैंने जूते निकालते हुए और पेंट ऊपर चढ़ाते हुए कहा, ताकि हम बीच पर चल सकें।

'इतनी जल्दी क्यों? '

'बॉस की लल्लो-चप्पो करने के लिए। यदि आप यह अच्छी तरह से कर पाए तो बॉस आपको लल्लो-चप्पो के नए लेवल पर प्रमोट कर देगा। वेलकम टु कॉर्पोरेट लाइफ़,' मैंने कहा।

'मेरा तो अभी इससे सामना नहीं हुआ हैं। मुझे हर हफ़्ते केचप की एक हज़ार बोतलें बेचनी हैं। अपने टारगेट्स से बहुत पीछे चल रही हूं।'

'तुम्हारे लिए अच्छा होगा कि तुम जल्दी से ''कैच अप" करो,' मैंने कहा।

'फ़नी,' उसने कहा और मुझे धीमे-से एक चपत लगाई। तभी उसने साइकिल पर एक आदमी को आते देखा। उसके पास बास्केट भरके इडलिया थीं। 'नाश्ता करोगे?' उसने पूछा।

'उसके पास टोस्ट नहीं हैं?'

'बेकार की बातें मत करो,' उसने कहा। हमने चार इडलियां लीं और समुद्र किनारे बैठ गए। 'गुरुजी ने मां को शिष्या के रूप में स्वीकार नहीं किया। उन्हें लगा कि वे संगीत के प्रति ज़्यादा समर्पित नहीं हैं।'

'लेकिन वे तो बहुत अच्छा गाती हैं,' मैंने कहा, अलबत्ता पिछली रात को मैंने जो कर्कश चीख-पुकार सुनी थी, उसके आधार पर तो मैं ऐसा नहीं कह सकता था।

'वे चेन्नई के स्टैंडर्ड्स से अच्छी नहीं हैं। डैड की पोस्टिंग तमिलनाडु के बाहर अलग-अलग कस्बों में होती रहती थी। मॉम वही की तमिल कम्युनिटी में स्टार बन गई थीं। यहां वे बस ठीक-ठाक हैं। चेन्नई का कर्नाटिक म्यूज़िक सीन कुछ अलग हैं।'

मैंने इस तरह सिर हिलाया, जैसे कि मैं उसकी बात समझ गया हूं।

'मेरे डैड बहुत उत्साह के साथ चेन्नई आए थे, लेकिन उन्हें प्रमोशन नहीं मिली। घर पर हमेशा मुसीबत की तरह नाते-रिश्तेदार आते रहते हैं। और इस सबके बीच उनकी बेटी एक ग़ैर ब्राह्मण, ग़ैर तमिल, पंजाबी लड़के को उन पर थोप देना चाहती हैं। ज़ाहिर हैं, वे परेशान तो होंगे ही। हमें धीरज रखना होगा। मैं उन्हें भी बहुत प्यार करती हूं, क्रिश,' उसने कहा और चुप हो गई।

सुबह की ताज़ी हवा हमारे चेहरों को सहला रही थी। उसने मेरे बांए कंधे पर अपना सिर टिका दिया। मैं उसके बालों पर थपकियां देता रहा। बंगाल की खाड़ी से सूर्य पूरी तरह निकल आया था, पहले-पहल तो कोमल लाल और फिर नारंगी रंग के एक गर्म गोले में तब्दील होता हुआ। मैंने अनन्या को अपनी बांहों में भर लिया। मैंने टाई और पतलून पहन रखी थी और मैं एक ऐसे सेल्समैन की तरह लग रहा था, जो अपनी गर्लफ्रेंड को कहीं घुमाने नहीं ले जा सकता।

'तुम मेरे घर में नियमित रूप से आते-जाते रहो, इसका एक ही रास्ता हैं,' अनन्या ने एक मिनट तक क्षितिज को ताकते रहने के बाद कहा।

'क्या?'

'मेरे भाई के लिए आईआईटी ट्यूशन्स। वे इसके लिए कुछ भी कुबूल कर लेंगे,' उसने कहा।

मैंने उसे छोड़ा और उठकर सीधा बैठ गया। 'आर यू केजी? मैंने आठ साल पहले आईआईटी एग्ज़ाम की तैयारी की थी। मैं उसे नहीं पढ़ा सकता।'

'तुम कुछ नोट्स रिवाइज़ करने के बाद उसकी मदद कर सकते हो। मेरे पैरेंट्स का तुम्हारे साथ कम्फ़र्टेबल होना ज़रूरी हैं। केवल तभी मैं उनसे तुम्हारे बारे में गंभीरता से सोचने को कह सकती हूं।'

मैंने अपनी इडली को नारियल की चटनी में डुबोया और उसे खा गया। मुझे नाश्ते में मां के हाथ के पराठों की याद आ रही थी।

'डू यू लव मी?' उसने मेरे होंठों पर लगी चटनी पोंछते हुए कहा।

मैंने उसे चूम लिया। मैं उसे दो माह बाद चूम रहा था। मैंने उसे एक मिनट तक थामे रखा। इस केमिस्ट्री के लिए मैं खुशी-खुशी आईआईटी की केमिस्ट्री रिवाइज़ कर सकता था।

'एई! 'हमारे पीछे कोई फटी हुई आवाज़ में चिल्लाया।

मैंने पीछे मुड़कर देखा। एक तोंदू तमिल पुलिसवाला, जो दिखने में पुलिस से ज़्यादा विलेन लग रहा था, तेज़ क़दमों से हमारी तरफ़ चलकर आया। 'ये क्या लगा रखा हैं?' उसने कहा और बेंच पर अपनी छड़ी दे मारी। हम दोनों उठ खड़े हुए। अनन्या मेरे पीछे छुप गई।

'ओह फ़क,' अनन्या ने कहा।

पुलिसवाले ने चिल्लाकर मुझसे तमिल में कुछ कहा। मैं उसे समझने में असहाय था, इसलिए मैंने अनन्या से उसकी बातों का अनुवाद करने को कहा।

'वह हमें पुलिस स्टेशन ले जाना चाहता हैं। वह कह रहा हैं हम लोग बहुत हिम्मतवाले रहे होंगे, तभी तो पुलिस हेडक्वार्टर के ठीक सामने यह सब कर रहे थे?'

‘इन लोगों ने समुद्र के सामने पुलिस हेडक्वार्टर क्यों बनाया?’ मैंने कहा।
‘शट अप और कुछ देकर इसे रफ़ा-दफ़ा करो,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा।
मैंने पर्स में से बीस रुपए निकाले।
‘इल्ला इल्ला...’ पुलिसवाला चिल्लाता रहा और उसने मेरी बांह पकड़ ली। मैंने पचास रुपए निकाले। उसने मेरी और अनन्या की ओर देखा।’ वार्निंग,’ उसने नोट लेते हुए कहा।
उसके जाते ही अनन्या ज़ोरों से हँस पड़ी।
‘इसमें हँसने वाली क्या बात हैं,’ मैंने जूते पहनते और पैंट ठीक करते हुए कहा।
‘क्या हम मेरे होस्टल में मिल सकते हैं, प्लीज़?'
‘कुछ समय बाद। मैं रोज़ चेन्नई से बाहर जाती हूं और देर से लौटती हूं,’ उसने कहा।
‘वीकेंड में?'
‘मैं कोशिश करूंगी,’ उसने कहा।‘तुम मुझे चिकन खिलाओगे? मैं नॉनवेज खाने के लिए तरस रही हूं। और हां, बीयर भी।’
‘ओके,’ मैंने वादा किया। मेरी बिल्डिंग में केवल वेजीटेरियन खाने का ही नियम था, लेकिन यदि मैं बाहर से लाऊं तो उन्हें भला कैसे पता चलेगा?
हम अपने-अपने ऑटो में बैठ गए। उसने अपनी साइड विंडो में से झांकते हुए मुझसे कहा: ‘और मैं ट्यूशंस के बारे में अपने पैरेंट्स से बात करूंगी। हफ़्ते में दो बार पांच बजे?'
‘सुबह पांच बजे? ‘आखिर इस शहर में सब लोग इतनी जल्दी उठने को तैयार क्यों रहते हैं! ‘क्योंकि सभी लोग इसी समय ट्यूशन की पढ़ाई करते हैं,’ उसने कहा और उसका ऑटो चल दिया।

दो हफ़्ते के लंबे इंतज़ार के बाद अनन्या एक शनिवार मेरे होस्टल पर लंच के लिए आई। एक वीकेंड को अनन्या की मां बीमांर पड़ गई थीं और उसे मां की ओर से एक गिल्ट-ट्रिप का सामना करने के बाद घर के लिए खाना बनाना पड़ा था। खाना बहुत अच्छा नहीं बना था, क्योंकि खाना बनाने के नाम पर अनन्या को केवल मैगी बनाने और क्लॉथ आइरन से पापड़ सेंकने (जी हां, यह जुगत कारगर साबित होती हैं) तक ही महारत हासिल थी। इस वजह से अनन्या की मां को शोभा आंटी की ओर से गिल्ट ट्रिप का सामना करना पड़ा। वह उन्हें अपनी बेटी की ठीक से परवरिश नहीं करने के लिए बुरा-भला कहने लगीं। इसका खामियाजा भी आखिरकार अनन्या को ही भुगतना पड़ा और उसे अगले वीकेंड शोभा आंटी को ज्वेलरी और साड़ियों की शॉपिंग करवाने ले जाना पढ़ा। इस दौरान मैं ब्रिलियंट ट्यूटोरियल्स जाकर आईआईटी एग्ज़ाम गाइड्स ले आया था। कोर्स मटैरियल इतना कठिन था कि एकबारगी तो मैं विश्वास ही नहीं कर पाया। शायद मैं इतने कठिन कोर्स की पढ़ाई इसीलिए कर पाया था, क्योंकि मैंने ख़ुद को अपने पैरेंट्स के लड़ाई-झगड़ों से दूर रखा था। मैंने अपनी पहली क्लास की तैयारी करने के लिए केमिस्ट्री को रिवाइज़ किया।
मैं पड़ोस में सरदार-जी के घर भी गया, ताकि पता लगा सकूं कि चिकन और बीयर को होस्टल ले जाने का सबसे अच्छा उपाय क्या हो सकता हैं।
‘कौन आ रहा हैं? तुम्हारे पंजाबी दोस्त?’ उन्होंने पूछा।
‘दफ़्तर के लोग,’ मैंने कहा, ताकि वे कहीं ख़ुद को ही मेरे यहां इनवाइट न कर लें।
‘लिफ़्ट से चिकन और बीयर ऊपर ले जाते समय सावधान रहना,’ उन्होंने कहा। मैं उनके बताए मुताबिक़ नुंगमबक्कम स्थित दिल्ली ढाबे पर पहुंचा, जो मेरे होस्टल से बामुश्किल आधा किलोमीटर दूर होगा। मैंने तंदूरी चिकन को ट्रिपल पैक करवाया, ताकि किसी तरह की गंध न आए। फिर मैं एक सरकारी अनुमति प्राप्त शराब की दुकान पर गया, जहां उन्हें मेरी उम्र तय करने को लेकर थोड़ी अड़चन हुई। ‘क्या तुम पच्चीस से ऊपर हो?'
‘नहीं, लेकिन जल्द ही हो जाऊंगा,’ मैंने कहा।
‘तब तो हम तुम्हें शराब नहीं दे सकते,’ दुकानदार ने कहा।
‘यदि मैं हर बोतल के एक्स्ट्रा दस रुपए दूं, तब भी नहीं?'
यह वाक़ई गजब हैं कि आखिर पैसा किस तरह देशभर में कहीं भी नियम-कायदों की पकड़ ढीली कर सकता हैं। दुकानदार ने भूरे काग़ज़ में तीन बोतलें बंधीं और मैंने उन्हें एक प्लास्टिक बैग में रख लिया, ताकि बाहर से देखकर कोई अंदाज़ा न लगा सके कि उसमें क्या हैं।
‘इसमें क्या हैं?’ लिफ़्टमैन ने मुझसे पूछा। पैकेट को फ़र्श पर रखते ही बोतलों के कारण टन्न-सी आवाज़ आई थी।
‘लेमन स्ववश,’ मैंने कहा।
‘तुम्हें इसके बजाय नारियल पानी पीना चाहिए,’ लिफ़्टमैन ने कहा।
मैंने सिर हिलाकर हामी भरी और अपने अपार्टमेंट चला आया। रामानुजन ने मुझे फ्रिज में बॉटल जमाते हुए देखा।‘ये क्या हैं?’ उसने लुंगी पहन रखी थी। लेकिन उसने ऊपर कुछ नहीं पहना था, सिवाय एक सफ़ेद धागे के, जो उसके कंधे से लिपटा हुआ था।
‘बीयर,’ मैंने कहा।
‘ड्यूड, इस बिल्डिंग में अल्कोहल लाना मना हैं,’ उसने कहा।
‘मेरी गर्लफ्रेंड मुझसे मिलने आ रही हैं। उसे यह पसंद हैं,’ मैंने कहा।
‘तुम्हारी गर्लफ्रेंड हैं? ‘रामानुजन ने कुछ ऐसे कहा, मानो मेरी दस बीवियां हों। मेरे किसी भी फ़्लैटमेट की गर्लफ्रेंड्स नहीं थीं। वे सभी गुणवान, अच्छी तनख़्वाह पाने वाले तमिल सिटीबैंकर्स थे और उनके पैरेंट्स जल्द ही उनकी बोली लगवाने की तैयारी कर रहे थे।
‘हां, हम कॉलेज में साथ थे,’ मैंने कहा।

‘मेरे दूसरे रूममेट्स भी लिविंग रूम में चले आए। उनमें से किसी ने क़मीज़ नहीं पहन रखी थी। मैंने फ्रिज बंद कर दिया, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि अल्कोहल के बारे में हमारी बात आगे बढ़े।

‘वो चेन्नई आ रही हैं?’ सेंडिल ने पूछा।

‘क्या वो यहीं रहेगी वो यहां नहीं रह सकती,’ अप्पालिंगम ने कहा।

‘वह चेन्नई में ही रहती हैं,’ मैंने कहा।

लड़कों ने एक-दूसरे की ओर देखा, मानो मन ही मन तय कर रहे हों कि बिल्ली के गली में घंटी बांधने जैसा सवाल कौन पूछेगा।

‘तमिल? ‘रामानुजन ने पूछा।

‘हां,’ मैंने कहा, ‘तमिल ब्राह्मण।’ मैंने बाद में ये दो शब्द भी इसलिए जोड़ दिए, ताकि उन्हें ज़ोर का झटका ज़ोर से ही लगे।

‘वॉव!’ उन सभी ने एक सुर में कहा।

‘वह बीयर पीती हैं?’ रामानुजन ने पूछा।

‘हां,’ मैंने कहा और देगची में चिकन उड़ेल दिया।

‘और चिकन भी? यह कैसी ब्राह्मण हैं?’ सेंडिल ने कहा। ‘और ड्यूड, इस घर में नॉन-वेज लेकर मत आओ।’

‘यह घर मेरा भी तो हैं,’ मैंने कहा।

‘लेकिन नियम तो नियम हैं,’ उसने कहा।

इस शहर के लोग या तो नियमों को चाहते थे या नियमों का पालन करना चाहते थे, बशर्ते आप कोई पुलिसवाले या शराब की दुकानवाले या ऑटो ड्राइवर न हों।

‘छोड़ो भी, सेंडिल,’ रामानुजन ने कहा।

‘थैंक्स,’ मैंने कहा और चिकन को फ्रिज में रख दिया। ‘और हां, जब वो यहां आए तो प्लीज़ तुम सब शर्ट पहन लेना।’

अनन्या दो बजे आई। मैंने लिविंग रूम में विनम्रता से उसका स्वागत किया। जब उसने मेरे फ़्लैटमेट्स का अभिवादन किया तो वे सभी लजाते हुए एक-दूसरे को देखने लगे। सेंडिल ने उससे तमिल में बात की। तमिल यह पसंद करते हैं कि वे ग़ैर-तमिल भाषियों के सामने केवल तमिल में बात करके उन्हें इरिटेट करें। आमतौर पर दमित और दब्बू तमिलों का यही एक ख़ामोश विद्रोह होता हैं। आखिरकार जब वह मेरे कमरे में आई तो मैंने उसे पीछे से पकड़ लिया।

‘पहले कुछ खाते हैं? मैंने एक महीने से चिकन नहीं खाया हैं।’

‘मैंने चार महीने से सेक्स नहीं किया हैं,’ मैंने कहा, लेकिन वह बाहर चली गई और फ्रिज खोल लिया।

‘अरे वाह, तुम्हारे पास तो बीयर भी हैं। सुपर्ब!’ उसने बीयर की बोतल निकाली और मेरे फ़्लैटमेट्स को ऑफ़र की। उन्होंने इनकार कर दिया। हम खाना और बीयर अपने कमरे में ले आए। मैं नही चाहता था कि मेरे साथी इस पाप के साक्षी बनें कि हम दोनों अकेले ही एक पूरा चिकन और दो बीयर सफ़ाचट कर रहे हैं।

‘और अब मीठे की बारी,’ मैंने कहा और उसके क़रीब चला आया।

‘यदि मुझे डकार आ जाए, तब भी मुझे प्यार करते रहना,’ उसने कहा। उसके होंठ मेरे होंठों के क़रीब आ गए।

मुझे डकार आ गई। उसने मुझे एक तमाचा जमाया। हमने एक-दूसरे को किस किया, और किस किया, फिर थोड़ा और किस किया। इस बार हमारी लवमेकिंग और इंटेंस थी। केवल इसीलिए नहीं कि हमने बहुत समय बाद ऐसा किया था, बल्कि इसलिए भी क्योंकि हम इस बंद-बंद-से शहर में ऐसा पहली बार कर रहे थे।

‘मिस्टर सिटीबैंकर, तुम्हें कोई ट्रेन नहीं पकड़नी हैं। अगली बार ज़रा धीरे और इत्मीनान से,’ हमारी लवमेकिंग के बाद अनन्या ने कहा। मैंने आह भरी। मैं उनींदा-सा हो रहा था। कमरे के बाहर रामानुजन तमिल म्यूज़िक बजा रहा था।

‘अरे, कुछ कहो भी? लड़कों को तो बस सेक्स से ही मतलब हैं,’ उसने कहा और मेरे पैरों पर एक किक जमाई।

‘हां, इसीलिए तो मैं तुम्हारे भाई को सुबह पांच बजे पढ़ाने के लिए भी राज़ी हो गया। तुम मेरे केमिस्ट्री नोट्स देखना चाहती हो?’ मैं उठ बैठा, कपड़े पहने और ड्रॉअर से ट्यूटोरियल्स निकाले। ‘कल रात मैं चार घंटे तक इसकी पढ़ाई करता रहा,’ मैंने कहा। ‘सो स्वीट,’ उसने कहा और मेरे गालों को चूमने के लिए आगे बढ़ी। ‘डोंट वरी। मेरे पैरेंट्स जल्द ही समझ जाएंगे कि तुम कितने अच्छे हो। और फिर वे भी तुम्हें ऐसे ही प्यार करेंगे, जैसे मैं करती हूं।’

‘क्या वे भी मेरे साथ सोएंगे?’ मैं उसके पास लेट गया।

उसने मेरे पेट में कुहनी मारी।

‘दैट हर्ट,’ मैंने कहा।

‘अच्छा हैं।’ उसने मेरी आंखों में देखा। उसकी नज़रों में ज़रा कोमलता आ गई। ‘मैं जानती हूं कि ट्यूशन्स कठिन हैं। मेरे पैरेंट्स भी अजीबो-ग़रीब हैं। लेकिन तुम हार तो नहीं मानोगे ना?'

‘बिल्कुल नहीं।’ मैंने उसके बालों को सहलाते हुए कहा।

‘यह इंटीमेसी कितनी अच्छी लगती हैं ना। क्या यह सेक्स से भी बेहतर नहीं?’ ‘आई एम नॉट श्योर,’ मैंने कहा और पंखे की स्पीड बढ़ाने के लिए हाथ आगे बढ़ाया।

‘घर पर हम कभी बात नहीं करते। मॉम और डैड बामुश्किल ही कुछ कहते हैं। वे न्यूज, खाना, मौसम हर बारे में बात कर सकते हैं, लेकिन हम कभी आपस में अपनी फ़ीलिंग्स के बारे में बात नहीं करते। मैं इस तरह की बातें केवल तुमसे करती हूं,’ उसने कहा। मैं चुप रहा। वह कपड़े पहनने के लिए उठ बैठी। फिर उसने फ़र्श से पिलो उठाया और उन्हें बिस्तर पर जमा दिया। मैंने उसकी बांह खींची और फिर अपने पास बिठा लिया।‘तुम मुझे कभी अपने साथ भाग चलने को क्यों नहीं कहते?’ उसने पूछा।

‘तुम ऐसा चाहती हो? अगर मैं तुमसे कहीं भाग चलने को कहूं तो क्या करोगी?’

‘पता नहीं। मैं मॉम और डैड को हर्ट नहीं करना चाहती। एक पंजाबी लड़के से दोस्ती करके मैं पहले ही उन्हें हर्ट कर चुकी हूं, लेकिन मुझे लगता हैं कि हम उनका दिल जीत लेंगे। मैं चाहती हूं कि मेरी शादी के दिन उनके चेहरे पर मुस्कराहट हो। मैं बचपन से अपनी शादी की ऐसी ही कल्पना करती आ रही हूं। तुम क्या सोचते हो?'

मैंने एक मिनट सोचा और फिर कहा: ‘मैं भागकर शादी नहीं करना चाहता।’

‘क्यों?'

‘वह बहुत आसान हैं। इससे कोई बड़ा लक्ष्य हासिल नहीं होता।’

अनन्या उठी और बचा-खुचा खाना ले आई। उसने चिकन का टुकड़ा उठाया और उसे खाते हुए कहा: ‘बड़ा लक्ष्य?'

‘हां, इन स्टुपिड पक्षपातों और भेदभावों के कारण ही आज हमारे देश की ये हालत हैं। हम तमिल पहले होते हैं, भारतीय बाद में। पंजाबी पहले होते हैं, भारतीय बाद में। इसका कोई अंत नहीं हैं।’ अनन्या ने मेरी ओर देखा।‘गो ऑन,’ उसने शरारत भरे लहज़े में कहा।

मैंने अपनी बात जारी रखी।’ हमांरा नेशनल एंथम हैं, नेशनल करेंसी हैं, नेशनल टीमें हैं, इसके बावजूद हम अपने बच्चों की शादी अपने स्टेट से बाहर नहीं करते। इस तरह हमारा देश कैसे आगे बढ़ेगा?'

अनन्या मुस्करा दी।‘ये चिकन का कमाल हैं, बीयर का या फिर सेक्स का? ऐसी कौन-सी चीज़ हैं, जिसने तुम्हें इतना चार्ज कर दिया हैं? चलो मेरा मन रखते हुए कह दो ये सेक्स का ही कमाल हैं। कम ऑन, कहो ना,’ उसने कहा।

‘मैं सीरियस हूं अनन्या। यह बुलशिट ख़त्म होनी चाहिए।’

‘और ऐसा कैसे होगा? '

‘हमारे बच्चों की कल्पना करो।’

‘मैं कई बार उनकी कल्पना कर चुकी हूं। मैं चाहती हूं कि उनकी शक्ल-सूरत मेरे जैसी हो। तुम्हारे जैसी केवल आंखें होनी चाहिए,’ उसने कहा।

‘नहीं, यह नहीं। यह सोचो कि वे न तमिल होंगे, न पंजाबी। वे केवल भारतीय होंगे। वे इस सब बकवास से ऊपर होंगे। यदि सभी युवा अपनी कम्मुनिटी से बाहर ही शादी करें तो देश के लिए अच्छा होगा। यही हैं वह बड़ा लक्ष्य।’

‘ओह, तो तुम देश के लिए मुझे प्यार करते हो,’ उसने कहा।

‘वेल, कुछ मायनों में हां।’ मैं मुस्करा दिया।

उसने पिलो उठाया और मेरे सिर पर हमला बोल दिया। और फिर, अपने देश की ख़ातिर हमने एक बार फिर प्यार किया।

‘दरवाज़ा खोलो, क्रिश,’ रामानुजन की घबराहट भरी आवाज़ और दरवाज़े पर ज़ोरों की दस्तक से मेरी झपकी आंटी।

19

अनन्या मेरे क़रीब सो रही थी और बीयर के कारण मेरा सिर दुख रहा था। रामानुजन दरवाज़ा बजाए जा रहा था।

'क्या हुआ?' मैंने दरवाज़ा खोलते हुए पूछा।

'मैं पांच मिनट से दरवाज़ा बजाए जा रहा हूं 'रामानुजन ने कहा। 'बाहर आओ, मकान मालिक आए हैं।'

'मकान मालिक? '

'हां, उनसे अच्छे-से पेश आना। यह नुंगमबक्कम का आखिरी होस्टल हैं। मैं नहीं चाहता कि मुझे लात मारकर यहां से बाहर निकाल दिया जाए।'

'क्या हुआ?' मैंने पूछा।

'पहले बाहर तो आओ।'

मैंने दरवाज़ा लगाया और अपने बाक़ी के कपड़े पहने।

'अनन्या,' मैंने कहा।

'बेबी, मैं सो रही हूं,' उसने मुझे फिर से बिस्तर में खीचने की कोशिश करते हुए कहा।

'मेरे मकान मालिक आए हैं,' मैंने कहा। मैं उसे पागलों की तरह हिलाता रहा, फिर भी उसने कोई जवाब नहीं दिया।

'बाहर तुम्हारे अप्पा हैं,' मैंने कहा।

वह उचककर बैठ गई।' क्या?'

'बाहर आ जाओ। मेरे मकान मालिक आए हैं,' मैंने कहा।

मैं लिविंग रूम में चला आया। मेरे फ़्लैटमेट्स डाइनिंग टेबल पर बैठे थे। साठ साल से ज़्यादा उम्र के हमारे मकान मालिक मिस्टर पुन्नू सबसे बड़ी कुर्सी पर बैठे थे। उनके चेहरे पर हमेशा ही उदासी मंडराती रहती थी।

मैं उनके क़रीब जाकर बैठ गया। कोई कुछ नहीं बोला।

'हाय गाइज़,' पांच मिनट बाद अनन्या बाहर आई। 'चाय चाहिए? मैं बना देती हूं।' वह किचन की ओर जाने लगी।

'अनन्या, हम बाद में मिलते हैं,' मैंने कहा।

अनन्या ने मेरी ओर देखा। वह शॉक्ड थी और अब वह डाइनिंग टेबल के मूड के अनुरूप लग रही थी।' अच्छा मैं चलती हूं।' उसने अपना बैग उठा लिया।

अनन्या के जाने के बाद मिस्टर उठ खड़े हुए। फिर वे कुछ सूंघने की कोशिश करने लगे। उन्होंने मेरे कमरे में झांककर देखा और त्यौरिया चढ़ाते हुए कहा: 'चिकन? 'मैंने कोई जवाब नहीं दिया। बिस्तर के पास की टेबल पर बीयर की बोतलें रखी थीं।

'लेडीज?' उन्होंने पूछा।

'वह एचएलएल में काम करती हैं,' मैंने कहा, लेकिन मैं समझ नहीं पा रहा था कि आखिर यहां उसके कॉर्पोरेट स्टेटस के बारे में बताने में क्या तुक हैं।

'चिकन, बीयर, लेडी फ्रेंड-ये सब क्या हो रहा हैं?' उन्होंने कहा।

मैं कहना चाहता था मौज-मस्ती हो रही हैं और क्या, लेकिन चुप रहा। आखिर आदमी इन तीन चीज़ों के लिए ही तो जीता हैं।

सभी चुप्पी साधे रहे। मैं सोच रहा था कि यह ख़बर मकान मालिक तक कैसे पहुंची। मेरे फ़्लैटमेट्स फ्रैंड मटैरियल तो नहीं थे, लेकिन न जाने क्यों मैंने यह उम्मीद नहीं की थी कि वे ऐसी हरकत करेंगे। शायद वॉचमैन ने यह काम किया हो।

'मुझे तुम लड़कों से यह उम्मीद नहीं थी,' पुन्नू ने भारी तमिल लहज़े में कहा।' यह मेरी ग़लती हैं। मैं ही अपनी गर्लफ्रेंड के लिए चिकन और बीयर लाया था,' मैंने कहा।

'गर्लफ्रेंड?' पुन्नू ने कुछ इस तरह कहा मानो मैंने शुद्ध संस्कृत का कोई शब्द कह दिया हो।

'वह मेरी बैच-मेट हैं और बहुत अच्छी लड़की हैं,' मैंने कहा।

मिस्टर पुन्नू पर इस जवाब का कोई प्रभाव नहीं पढ़ा।

'वह तमिल ब्राह्मण हैं मैंने कहा।

'और तुम?'

'पंजाबी,' मैंने कहा और मेरा सिर अपने आप ज़रा-सा झुक गया।

'अगर वह तुम जैसे लड़के के साथ घूम रही हैं तो वह अच्छी लड़की कैसे हो सकती हैं? '

मिस्टर पुन्नू ने पूछा।

उनकी बात पते की थी। मैंने विषय बदलने के बारे में सोचा।' मिस्टर पुन्नू यह कोई बोर्डिंग स्कूल नहीं हैं। हम सभी प्रोफेशनल्स हैं और हम अपने घर में क्या करते हैं...?' मिस्टर पुन्नू ने टेबल पर ज़ोर का मुक्का मारा।' यह मेरा घर हैं उन्होंने मेरी ग़लती को दुरुस्त करते हुए कहा।

'हां, यह आपका ही घर हैं, लेकिन यह आपने हमें किराये पर दिया हैं। टेक्नीकली, हमारे पास यह अधिकार हैं कि हम आपको अपनी संपत्ति में दख़लअंदाजी न करने दें।'

मिस्टर पुन्नू हक्के-बक्के रह गए। मामले को संभालने के लिए रामानुजन को आगे आना पढ़ा।' इसे अभी कुछ पता नहीं हैं मिस्टर पुन्नू । यह यहां पर नया हैं। हमें इसे बताना चाहिए था कि यह वेज बिल्डिंग हैं और यहां अल्कोहल पीने की भी अनुमति नहीं हैं।'

'एक बूंद भी नहीं,' मिस्टर पुन्नू ने कहा।' मैंने अपने पूरे जीवन में शराब की एक बूंद भी नहीं छुई।'

मिस्टर पुन्नू को देखकर लग रहा था कि उन्होंने अपने जीवन में न तो शराब छुई और न ही किसी लड़की को छुआ हैं लेकिन उन्हें इसकी सख़्त ज़रूरत थी।

‘मांफी मागो रामानुजन ने मुझसे कहा।

मैंने आसपास देखा। तमिल मेरे इर्द-गिर्द लिट्टे की तरह घेरा बनाकर खड़े थे। मेरे सामने कोई विकल्प नहीं था।’ आई एम सॉरी,’ मैंने कहा।

‘आगे से यहां कोई लेडीज नहीं।’ मिस्टर पुन्दू ने अपनी एक अंगुली लहराते हुए कहा।

‘और बीयर और चिकन भी नहीं?’ मैंने कहा।

‘वह तो पहले से ही अलाउड नहीं था,’ सेंडिल ने कहा। मेरे इर्द-गिर्द खड़े सभी लड़कों ने सिर हिला दिया। उन्हें एक धुंधला-सा अहसास हुआ कि उनके लिए ये नियम तय किए जा रहे हैं कि वह अपनी ज़िन्दगी कैसे जिएं।

और मैं सोच रहा था कि अगली बार अनन्या को कहां ले जाऊंगा।

20

‘मेरी केमिस्ट्री बहुत अच्छी हैं, लेकिन फिजिक्स में मुझे मदद की ज़रूरत होगी,’ अनन्या के भाई मंजूनाथ, जो कि आगे चलकर एक खूब पढ़ाकू लेकिन असामाजिक इंसान बनने जा रहा था ने किसी मुर्गे सरीखीसें ऊर्जा के साथ कहा। जब वह बोलता था तो उसकी भौंहें भी ऊपर-नीचे होती थीं और इसी के साथ उसके माथे पर भस्म से खींची गई तीन रेखाएं भी नाचती रहती थीं।

मैं अपनी पहली क्लास के लिए आया था। एक रात पहले ही अनन्या अपनी हफ़्तेभर की सेल्स ट्रिप के लिए मदुरई चली गई थी। सुबह जल्दी उठ जाने के कारण मेरा सिर दुख रहा था। अनन्या की मां ने मंजू के कमरे में कॉफी भिजवाई लेकिन उससे कोई फ़ायदा न हुआ।

और इस बात से भी कोई फ़ायदा नहीं हुआ कि मैंने केवल केमिस्ट्री की ही तैयारी की थी।

‘चलो फिर भी उसे एक बार रिवाइज़ करते हैं मैंने कहा और अपनी शीट्स खोलीं।

‘हाइड्रोकॉर्बन? ‘उसने मेरे नोट्स को देखते ही कहा। ‘मैं इसे तीन बार कर चुका हूं।’ मैंने उसके सामने एक सवाल रखा और उसने उसे दो मिनट में सुलझा दिया। मैंने थोड़ा और मुश्किल सवाल पूछा, लेकिन उसने उसे भी इतने ही समय में सुलझा दिया। बाजू के कमरे में एक टेप बज रही थी और उसे सुनकर ऐसा लग रहा था जैसे महिलाओं का एक समूह फ़ौज की ओर बड़े जा रहा हैं।

‘एम एस सुझलक्ष्मी, ‘मंजू ने मेरे चिंतित एक्सप्रेशंस देखकर कहा।’ भक्ति संगीत।’ मैंने सिर हिलाया और केमिस्ट्री बुक को खंगालने लगा। मैं एक ऐसा सवाल खोज लेना चाहता था, जो इस छुटकू आइंस्टीन के लिए चुनौतीपूर्ण हो।

‘यह भक्ति संगीत हर तमिल घर में सुबह-सुबह बजता हैं? ‘मैंने पूछा।

मैंने सोचा कि क्या हमांरी शादी के बाद अनन्या इसे हमारे घर में भी बजाएगी। यह संगीत सुनकर तो मेरी मां को गहरा सदमां पहुंच सकता हैं। हर गुज़रते मिनट के साथ भजन की आवाज़ तेज़ होती जा रही थी।

‘आईआईटी कैसा होता हैं?’ उसने पूछा।

मैंने उसे अपने पूर्व कॉलेज के बारे में बताया, लेकिन इस दौरान मेरे जीवन में जो भी मसालेदार घटनाएं घटी थीं, उन्हें मैंने सावधानी से अलग कर दिया।

‘मैं एरोनॉटिक्स करना चाहता हूं ‘मंजू ने कहा। जब मैं उसकी उम्र का था, तब मैंने यह शब्द भी नहीं सुना था।

एक घंटे बाद उसने अपनी फिजिक्स की टेन्व्हबुक निकाली। उसने मुझे एक सवाल दिया और मैंने उसे सुलझाने के लिए उससे समय मंगा। उसने हामी भरी और अगला चैप्टर पढ़ने लगा। यहां पर तो ट्यूटर की ही ट्यूशन ली जा रही थी।

अगला एक घंटा मैंने मंजू से फिजिक्स सीखते हुए बिताया। फिर मैं वही से जाने के लिए खड़ा हो गया। मैं लिविंग रूम में पहुंचा, जहां अनन्या के डैड द हिंदू को आहिस्ते-आहिस्ते पड़ रहे थे। अनन्या ने मुझे हिदायत दी थी कि मैं ज़्यादा से ज़्यादा समय उसके पिता के साथ बिताने की कोशिश करूं। मैं दस मिनट तक इंतज़ार करता रहा, जब तक कि उन्होंने अपना लेख पूरा नहीं कर लिया।

‘येस? '

‘कुछ नहीं, ‘मैंने कहा।’ क्लास पूरी हो गई।’

‘गुड,’ उन्होंने कहा और अख़बार का पेज पलट दिया।

‘बैंक कैसी हैं अंकल? '

उन्होंने तनिक आश्चर्य के साथ अख़बार से सिर बाहर निकालकर देखा। ‘कौन-सी बैंक?'

‘आपकी बैंक।’ मैंने गला साफ़ करते हुए कहा। ‘आपका जॉब कैसा चल रहा हैं?'

‘काट? ‘उन्होंने कहा, मानो वे इस बेवकूफी भरे सवाल से खिन्न हो गए हों।’ जॉब में क्या होगा? जॉब हमेशा की तरह चल रहा हैं?'

‘जी ही, यक़ीनन,’ मैंने कहा।

मैं अगले पाँच मिनट तक चुपचाप बैठा रहा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करना चाहिए। मैं द हिंदू से मुकाबला नहीं कर सकता था, क्योंकि वह रोज नया आता था।

‘अच्छा तो मैं चलता हूं अंकल मैंने कहा।

‘ओके उन्होंने कहा।

मैं दरवाज़े तक पहुंचा ही था कि पीछे से उनकी आवाज़ आई ‘ब्रेकफास्ट? '

‘मैं ऑफ़िस में कर लूंगा।

‘तुम्हारा ऑफ़िस कहां हैं?'

‘अन्ना सलाई मैंने कहा।

‘मेरी बैंक के रास्ते में ही हैं। मैं साढ़े आठ बजे बैंक जाता हूं और तुम्हें ड्रॉप कर सकता हूं ‘उन्होंने कहा।

साढ़े आठ का मतलब था अपने बॉस से एक घंटा लेट पहुंचना लेकिन अनन्या के

डैड से लिफ़्ट लेने का मतलब था इस घर में दो घंटे और बिताना और अपने होने वाले ससुरजी के साथ कार में अकेले होना।

‘दैट्स पेरफ़ेक्ट। मुझे भी साढ़े आठ बजे ही ऑफ़िस पहुंचना हैं मैंने कहा।

‘गुड,’ उन्होंने कहा और फिर से अपने अख़बार में खो गए।

हम साढ़े सात बजे ब्रेकफास्ट के लिए बैठे। अनन्या के डैड प्रार्थना करने मंदिर-घर में गए और मांथे पर भस्म की तीन रेखाएं लगाकर लौटे। मैंने सोचा कि मुझे भी प्रार्थना करने जाना चाहिए लेकिन यह सोचकर रुक गया कि मैं ऑफ़िस में अपने माथे पर भस्म की तीन रेखाओं और देरी से आने के बारे में क्या कहूंगा।

ब्रेकफास्ट में इडलियां थीं। अनन्या की मॉम ने मेरे सामने ढेरों इडलिया रख दीं। हम चुपचाप खाते रहे। अनन्या ने मुझे बताया

था कि उसके पैरेंट्स ज़्यादा बात नहीं करते थे इसलिए मेरे लिए भी सबसे अच्छा यहां था कि मैं अपने मुंह पर ताला लगाए रखूं। 'चटनी और चाहिए?' अनन्या की मां का यह सवाल और मेरे द्वारा सिर हिलाकर ना कहना ही खाने के दौरान हुई हमारी एकमात्र बातचीत थी।

अंकल ने गैरेज से अपनी फिएट निकाली। वे बार-बार कार की खिड़की से झांककर मुझे देखते रहे। मैं समझ नहीं पा रहा था कि वे मुझे नज़रअंदाज़ करना चाहते थे या मुझे कार से टक्कर मार देना चाहते थे।

'बैठ जाओ,' अंकल ने कहा। मैं उनके पास बैठने के लिए घूमकर उनके पास आया। अपनी गर्लफ्रेंड के पापा के साथ कार में बैठने ने मेरे मन में पुरानी बुरी यादें ताजा कर दीं। मैंने गहरी सांस ली। यह एक अलग सिचुएशन हैं शांत रहो, मैंने ख़ुद से अनेक बार कहा।

अंकल दस की स्पीड पर गाड़ी चलाते रहे। मैं सोच रहा था कि मैं अपने बॉस के सामने दो घंटे देरी से आने के लिए क्या बहाना बनाऊंगा। ऑटो, स्कूटर और यहां तक कि रिक्शे जैसे वाहन भी हमें ओवरटेक करने की कोशिश करते रहे।

मैं बात करना चाहता था, लेकिन मुझे ऐसा कोई विषय नहीं सूझा, जिसके बारे में बात करने का कोई जोखिम न हो। मैंने अपना ऑफ़िस बैग खोला, जिस पर 'सिआॅटी नेवर स्लीप्स 'का लोगो लिखा हुआ था और अपनी रिपोर्ट्स निकालकर पढ़ने लगा। पिछले हफ़्ते डॉट कॉम के 25 फ़ीसदी स्टॉक्स का नुकसान हुआ था। जिन विश्लेषकों ने अनुमान लगाया था कि इन स्टॉक्स में हर घंटे तिगुनी बढ़ोतरी होगी, वे अब यह कह रहे थे कि मार्केट सेल्फ़-करेक्ट मोड में चला गया हैं। सेल्फ़-करेक्ट-यह शब्द इतना इंटेलीजेंट और चतुराईभरा लगता था कि यह अपने जीवनभर की जमांपूंजी गंवा देने वाले लोगों का दुख दूर कर देता था। यदि आप पूछें कि मार्केट पहले सेल्फ़-करेक्ट क्यों नहीं था तो यह सवाल बेवकूफ़ीभरा भी लग सकता हैं। या अगर आप और साफ़ शब्दों में पूछें कि वैसे सेल्फ़-करेक्ट से आपका क्या मतलब हैं? आज ऐसे दो क्लाइंट मुझसे मिलने आने वाले थे, जो दस-दस लाख रुपए गंवा चुके थे। चूंकि मेरे पास आईआईएमए डिग्री थी, इसलिए मुझे कोई ऐसी जुगत भिड़ानी थी कि उन्हें वह घाटा नज़र आना बंद हो जाए।

एक लालबत्ती के पास जाकर कार रुक गई।

'ये रिपोर्ट्स तुमने लिखी हैं?' अंकल ने पूछा।

मैंने सिर हिलाकर इनकार किया।'ये हमारे रिसर्च ग्रुप ने लिखी हैं मैंने कहा। 'फिर तुम बैंक में क्या करते हो?' उन्होंने पूछा।

'कस्टमर सर्विस,' मैंने कहा, हालांकि मुझे पता नहीं था कि जो कुछ मैं करता था, उसे किस तरह की सर्विस का नाम दिया जाए। लोगों से कहना कि वे अपनी जमांपूंजी हमें दे दें और फिर उन्हें उससे महरूम कर देना तो सर्विस नहीं हैं।

'तुम्हें पता हैं ये रिपोर्ट्स कैसे लिखीसें जाती हैं?' उन्होंने कहा।

हमारे पीछे खड़ी कारें हॉर्न बजाने लगी थीं। फिएट स्टार्ट नहीं हो रही थी। अंकल ने दो बार असफल कोशिशें की।

'इल्ला सर्विसिंग क्वालिटी,' उन्होंने अपनी कार को कोसते हुए कहा। उन्होंने चोक खींचा। मैंने रिपोर्ट्स भीतर रख लीं और कार को धक्का लगाने की तैयारी करने लगा, लेकिन मेरी खुशनसीबी थी कि तीसरी कोशिश में कार स्टार्ट हो गई।

'वैसे मैं भी इस तरह की रिपोर्ट्स लिख सकता हूं क्यों?' मैंने कुछ देर पहले पूछे गए उनके सवाल का जवाब देते हुए कहा।

'कुछ नहीं। मेरी बैंक ने स्टुपिड जॉइंट वेंचर किया हैं। अब वे चाहते हैं कि हम एक बिज़नेस प्लान सबमिट करें। और जीएम ने मुझसे यह करने को कहा हैं।'

'मैं आपकी मदद कर सकता हूं 'मैंने किसी स्काउट लड़के की तरह चिल्लाते हुए कहा।

'रास्कल,' उन्होंने कहा।

'जी?'

'अरे वह जीएम वर्मा। मैंने बैंक में अपनी तीस साल की नौकरी में कभी एक रिपोर्ट नहीं बनाई। अब मुझे पिनपॉइंट प्रेजेंटेशन भी बनाना पड़ रहा हैं।'

'पॉवरपाइंट प्रेजेंटेशन?' मैंने कहा।

'हां, वही। वह रास्कल मुझे जान-अकर ऐसे काम देता हैं, जिन्हें मैं समझ ही नहीं पाता,' अंकल ने कहा।

'मैं आपकी मदद कर सकता हूं' मैंने कहा। शायद मुझे अंकल के दिल में जगह बनाने का एक रास्ता मिल गया था।

'कोई ज़रूरत नहीं,' अंकल ने गंभीर स्वर में कहा। वे समझ गए थे कि वे मेरे सामने ज़रूरत से ज़्यादा ही खुल गए था।

'तुम यहाँ उतर जाओ,' अंकल ने कहा और सड़क के किनारे गाड़ी खड़ी कर दी।' सिटीबैंक यहां से मुश्किल से सौ मीटर दूर होगी।'

मैं कार से बाहर निकल आया। मैंने तीन बार थैंक्स कहा और हाथ हिलाकर उन्हें गुडबाय किया। उन्होंने कोई रिस्पास नहीं दिया। उनका हाथ गियर-शिफ्ट पर था।

'अनन्या से ज़्यादा मिला-जुला मत करो। हम सीधे-सादे लोग हैं और ज़्यादा बात नहीं करते। लेकिन हमांरी कम्मुनिटी में उसके नाम पर बट्टा मत लगाओ,' उन्होंने कहा।

'अंकल लेकिन... '

'मुझे पता हैं कि अनन्या और तुम क्लासमेट्स हो और तुम मंजू की भी मदद कर रहे हो। इसके लिए हम तुम्हारे आभारी हो सकते हैं। हम अच्छे-से तुम्हारी आवभगत कर सकते हैं लेकिन हम अनन्या को तुमसे शादी नहीं करने दे सकते।'

मैं ट्रैफिक इंटरसेक्यान पर खड़ा रहा। ऑटो एक-दूसरे पर हॉर्न बजाते रहे, जैसे कि ग़ुस्से में एक-दूसरे से बतिया रहे हों। यह कतई वह जगह नहीं थी, जहां खड़े होकर किसी को उसकी ज़िन्दगी के सबसे जरूरी फ़ैसले के बारे में कंविंस किया जाए।'

अंकल लेकिन... 'मैंने फिर कहा।

अंकल ने एक्सीलेरेटर दबाने से पहले अपने हाथ बांध लिए। कार धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। बेड़ा ग़र्क, बंधे हाथों पर मैं क्या प्रतिक्रिया दूं? मैंने सोचा। अंकल मुझे छोड़कर आगे बढ़ गए। मैंने एक हारे हुए इंश्योरेंस सेल्समैन की तरह अपना बैग उठाया और बैंक की ओर चल दिया।

21

‘वेलकम सर, वेलकम टु स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया,’ बाला ने कहा। उसकी आवाज़ के लहज़े से इतनी साफ़ तरह से गुस्सा झलक रहा था कि उसकी बात में छुपा कटाक्ष बेअसर हो गया। वह मेरी डेस्क पर बैठा था और ठीक इसी खुशी भरे क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था कि मैं आऊं और वह मुझे मसलकर रख दे।

‘आई एम रियली सॉरी, मेरे ऑटो का एक्सीडेंट हो गया था,’ मैंने झूठ बोल दिया।

‘तुम्हारे होस्टल का नौकर तो कह रहा था कि तुम सुबह पाँच बजे ही घर से निकल गए थे,’ उसने कहा।

‘आपने मेरे होस्टल पर फ़ोन लगाया था? अभी तो बस नौ ही बजे हैं वैसे भी ऑफिशियल टाइम तो यहां हैं ना? '

‘नहीं, यह सिटीबैंक हैं कोई पब्लिक सेक्टर बैंक नहीं,’ उसने कहा।

‘तो क्या जो लोग यहां काम करते हैं उनकी कोई ज़िन्दगी नहीं हो सकती हैं मैंने बुदबुदाते हुए कहा।

क्या?

‘कुछ नहीं। आज दस बजे मिस श्रीनिवास आने वाली हैं मैंने कहा।

‘और तुमने इसके लिए तैयारी नहीं की हैं। तुमने रिपोर्ट्स पढ़ी हैं?'

‘जी हां, मैंने रिपोर्ट्स पढ़ी हैं। लेकिन मुसीबत यह हैं कि वे अपने दस लाख रुपए गंवा चुकी हैं और ऐसा इसलिए, क्योंकि उन्होंने इन रिपोर्ट्स पर भरोसा किया था। तो मैं इन रिपोर्ट्स की चाहे जितनी अच्छी पढ़ाई कर लूं? लेकिन वे अब इन पर भरोसा नहीं करेंगी। क्या मैं अपनी कुर्सी पर बैठ सकता हूं?’ मैंने पूछा।

बाला ने मेरी ओर देखा। वह मेरे अक्खड़पन से हैरत में था। मैं अपनी कुर्सी पर बैठ गया।’ आपने मुझसे कहा था कि इन स्टॉक्स को पुश करूं और आज हमारे रूघइंट्स ख़राब स्थिति में हैं। मिस श्रीनिवास बुज़ुर्ग महिला हैं। वे घबरा जाएंगी। मैं चाहता हूं कि आप तैयार रहें।’

‘तैयार? किस बात के लिए तैयार?'

‘इस बात के लिए कि वे और उनके जैसे दूसरे रूघइंट्स अपने संदेस दूसरी जगहों पर ले जा सकते हैं?'

‘कैसे? वे ऐसा कैसे कर सकते हैं? यह सिटीबैंक हैं,’ बाला ने कहा।

‘क्योंकि भले ही सिटी कभी सोती न हो, लेकिन हमारी वजह से हमारे ग्राहक ज़रूर रोते हैं।’

मिस श्रीनिवास का पैनिक मोड इतना मनोरंजक था कि उसके कारण दूसरे ग्रुप्स के बैंकर्स भी हमारे एरिया में चले आए। सबसे पहले तो वे मुझसे दो मिनट तक तमिल में बोलती रहीं। लेकिन जब उन्हें लगा कि मैं उनकी भाषा नहीं समझ सकता तो वे अंग्रेजी में बोलने लगीं।

‘तुम, तुम्हीं ने कहा था ना कि मेरा पैसा डबल हो जाएगा। अभी यह सेवंटी परसेंट डाउन हो गया हैं मिस श्रीनिवास ने कहा।

‘एक्चुअली मैडम मार्केट सेल्फ़-करेक्यान मोड में चला गया हैं मैंने कहा। अब जाकर मैं समझा था कि कठिन रिसर्च टर्म्स का क्या मतलब था। जिन उलझनभरे सवालों का कोई जवाब नहीं होता, उन्हें वे दूसरी तरफ़ मोड़ देते हैं।

‘लेकिन मुझे दस लाख रुपए का घाटा हुआ हैं। दस लाख! ‘उन्होंने चीखते हुए कहा।

‘मैडम स्टॉक मार्केट ऊपर-नीचे होता रहता हैं। हमारे पास कुछ ऐसे प्रोडक्ट भी हैं जो कम रिस्की हैं मैं उनके दुख का फ़ायदा उठाने की कोशिश करते हुए कुछ और बेचने का प्रयास करने लगा।

‘फॉरगेट इट। सिटीबैंक में मेरा खाता ख़त्म हो गया। मैंने तुम्हें फ़िक्स्ड डिपॉजिट करने को कहा था, लेकिन तुमने नहीं किया। अब मैं व्यासा बैंक में अपना अकाउंट खुलवा रही हूं।’

मेरे सेल्स रिप्रजेंटेटिव्व उनके लिए खूब सारे स्नैक्स और कोल्ड ड्रिंक्स लाए, लेकिन मिस श्रीनिवास को मनाया नहीं जा सका।

‘मैडम लेकिन सिटीबैंक व्यासा की तुलना में कहीं बड़ा नाम हैं,’ मैंने कहा।

‘मुझे अकाउंट क्लोजिंग डॉलूज़मेंट्स दो,’ मिस श्रीनिवास ने कहा। हमारे पास अब और कोई चारा न था। ऑफ़िस के पहले घंटे में ही हम अपना एक कस्टमर गंवा चुके थे। रिसेशन पर लगी टीवी में सीएनबीसी चैनल बता रही थी कि उस दिन इंटरनेट स्टॉक्स को और पांच फ़ीसदी का नुकसान पहुंच चुका था।

अगले दो हफ़्तों में हमारे सबसे भरोसेमंद ग्राहकों जो कि इसी कारण हमारे द्वारा सबसे आसानी से उल्लू बनाए जा सकने वाले ग्राहक भी थे को कुल दो करोड़ रुपयों का नुक़सान हुआ। हमने उन्हें ऐसी कंपनियां भी टिका दी थीं, जिन्होंने एक वेबसाइट बनाने के अलावा और कुछ नहीं किया था। मेरी दो लेडीज कस्टमर को ही नुकसान उठाना पढ़ा था, क्योंकि मैं इस तरह की कंपनियों को कभी अच्छे से बेच नहीं पाया था। लेकिन बाला, जिसके स्मार्ट लोगों के साम्राज्य का काम अमीरों को लूटना-खसोटना भर था, को मुंबई हेडक्वार्टर में इसका जवाब देना था।

‘मेरे पास सात शिक़ायतें आई हैं कस्टमर सर्विस ग्रुप के कंट्री हेड ने एक कांग्रेस कॉल में कहा।

‘सर, यह केवल बाजार की अस्थिरता का ओवर रिएक्यान हैं बाला ने कहा।

‘रिसर्च रिपोर्ट में कहां गई बातों को मत दोहरा। उन्हें मैंने भी पढ़ा हैं कंट्री हेड ने कहा।

कॉल ख़त्म हुआ। बाला का चेहरा पीला पड़ गया था। बॉस लोगों ने चेन्नई ब्रांच में विजिट करने का मन बना लिया था। बाला यह ख़बर सुनते ही थरथराने लगा। मुंबई हेडक्वार्टर कह रहा था कि हमें इंडिविजुअल इंवेस्टर्स को इंटरनेट स्टॉक्स नहीं बेचने थे और हाउसवाइव्ज को तो कतई नहीं। ज़ाहिर हैं जब कमीशन मिल रहा था, तब उन्होंने कभी कोई शिकायत नहीं की। लेकिन अब पाँच कस्टमर्स ने अपना खाता बंद करवा लिया था और एक ने तो न्यूयॉर्क में सिटीबैंक के सीईओ को लेकर भी लिख दिया था।

अपनी वीकली सेल्स मीटिंग में मैंने अपने सेल्स रिप्रेजेन्टेटिव्व से कहा कि वे चेन्नई के कस्टमर्स को फ़िक्स डिपॉजिट, सोना और साड़ियों के सिवा और कुछ न बेचे।

'सर, हम साड़ियां नहीं बेचते मेरी एक रिप्रज़ेंटेटिव्ज़ ने साफ़ किया।

'सॉरी, मैं तो बस मज़ाक़ कर रहा था। हम सोना भी कहां बेचते हैं हैं ना? '

'नहीं सर, हम बेचते हैं। गोल्ड-लिंक डिपॉजिट, सर,' उसने कहा।

हां, मुझे अपने ग्रुप के प्रोडक्ट्स के बारे में ही नहीं पता था। वास्तव में मुझे यह भी नहीं पता था कि मैं यह जॉब क्यों कर रहा हूं। मैंने सिर हिलाया और मुस्करा दिया। यदि आप कस्टमर सर्विस में हैं तो आपको किसी टूथपेस्ट कंपनी के मॉडल से भी ज़्यादा मुस्कराना पड़ता हैं।

'क्या यह सच हैं कि मिस श्रीनिवास को दस लाख का घाटा हुआ हैं?' मेरी एक और लेडी कस्टमर बैंक में आईं। फिर वे कुड़कुड़ाते हुए पूरा लो-डाउन पाने के लिए सेल्स रिप्रज़ेंटेटिव्ज़ के पास बैठ गईं। लेकिन बुरी बात यह थी कि गोपनीय कारणों से हम उन्हें डिटेल्स नहीं दे सकते थे। हम रिटर्न्स ऑफ़र नहीं कर सकते थे, लेकिन हम थोड़ी-बहुत गपशप ज़रूर कर सकते थे। शायद उसके जरिये हम अपने कस्टमर्स को थोड़ा फुसला सकते।

'क्रिश, यहां आओ,' शाम को सात बजे बाला मेरे पास आया। उसे देखकर लग रहा था, जैसे कि वह काठ का हो गया हो।

मैं अपना 'सिटी नेवर स्लीप्स 'बैग पैक कर चुका था, ताकि घर जाकर सो जाऊं। दो दिन बाद हमारे बॉसेस आने वाले थे। मैंने पिछली कुछ रातें उनके लिए प्रजेंटेशन बनाते हुए गुजारी थीं। यह तमिलनाडु का सबसे घटिया और बैकलेस जॉब था। मैंने अपनी रूघइड्स चाहे कितनी ही बेहतरीन क्यों न बनाई हों, लेकिन नंबर्स इतने बुरे थे कि यह तय था कि हमें बॉसेस की चली-कआंटी सुनने को मिलेगी। पिछली रात मैं तीन बजे घर पहुंचा था और पाँच बजे फिर जाग गया था, क्योंकि मुझे अपने साले बाबू को पढ़ाना था। इस वक़्त मुझे बाला नहीं किसी तकिये की ज़रूरत थी।

'बाला, मैं...?' मैं अपनी बात कहते-कहते बीच में ही रुक गया, क्योंकि मैंने देखा कि बाला यह उम्मीद करते हुए पहले ही अपने केबिन की ओर मुड़ गया था कि मैं उसके पीछे-पीछे आऊंगा।

मैं बाला के केबिन में गया। उसने बहुत धीमे-से दरवाज़ा बंद किया। फिर उसने परदे खींच दिए और फ़ोन का रिसीवर उठाकर रख दिया। मैंने सोचा कि या तो वह मुझे मार डालना चाहता हैं या मेरा यौन शोषण करना चाहता हैं।

'काम कैसा चल रहा हैं?' उसने फुसफुसाते हुए पूछा, हालांकि इतने धीमे बोलने की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि दफ़्तर के लोग पहले ही जा चुके थे।

'फ़ाइन। मैंने आपको प्रेजेंटेशन भेजा था। आपने उसे अप्रूव कर दिया हैं, राइट? 'मैंने कहा। बाला ने दोपहर में उसे ओके कर दिया था। मैं एक रात और जागकर काम करना नहीं चाहता था।

'येस, दैट्स फ़ाइन। लिसन, बडी, मुझे तुमसे एक मदद चाहिए।'

बाला ने इससे पहले मुझे कभी बडी कहकर नहीं बुलाया था। कमरे में नारियल और मछली की बू थी। नारियल की बू बाला के बालों से आ रही थी और मछली की बू उसके अनकहे इरादों से।

'कैसी मदद?' मैंने बिना मुस्कराते हुए पूछा।

'देखो क्रिश, यह जॉब, मेरा कैरियर, यह मेरे लिए सब कुछ हैं। मैंने इस बैंक को अपनी पूरी ज़िन्दगी दे दी हैं।'

मैंने सिर हिलाया। मुद्दे की बात करो, बडी, मैंने सोचा।

'और, जैसा कि तुम ख़ुद भी कबूल करोगे क्या तुम भी इसमें इतने ही इन्वॉल्व नहीं हो, जितना मैं हूं? मेरी बात को ग़लत ढंग से मत लेना।'

वह सौ फ़ीसदी सही था। लेकिन जब कोई व्यक्ति आपसे यह कहता हैं कि इस बात को ग़लत ढंग से मत लेना, तो आपको उसे ग़लत ढंग से लेना ही पड़ता हैं। इसके अलावा, मैंने पिछली तीन रातें कड़ी मेहनत करते हुए बिता दी थीं, जबकि मेरा साथ देने के लिए केवल एटीएम गाड़से ही मौजूद थे। मैं इससे बेहतर के लायक़ था। 'यह सौ फ़ीसदी ग़लत हैं,' मैंने कहा। 'मैं काम कर-करके मरा जा रहा हूं। मैं वही करता हूं जो आप चाहते हैं। मैंने वे कड़ा इंटरनेट स्टॉक्स इसलिए बेचे... '

'ईजी, ईजी,' बाला ने मुझे चुप कराते हुए कहा।

'यहां कोई भी नहीं हैं। हम किसी जेम्स बॉन्ड मिशन की तैयारी नहीं कर रहे हैं कि हमें फुसफुसाते हुए बात करनी पड़े,' मैंने कहा।

कॉर्पोरेट टाइप्स यह दिखावा करना पसंद करते हैं कि उनकी ज़िन्दगी रोमांच से

भरपूर हैं। फुसफुसाहटें, मुट्ठियां भींच लेना, हाथ लहराना वग़ैरह-वग़ैरह कुछ ऐसे जेस्चर्स थे, जिनकी मदद से वे अपने जॉब डिस्किएान को ऊंचा उठा देना चाहते हैं जबकि वे एक ऐसे क्लर्क से ज़्यादा कुछ नहीं होते जिसे ज़रूरत से ज़्यादा तनख़्वाह मिलती हैं।

'मैं तुम्हारी मेहनत पर शक नहीं कर रहा हूं। लेकिन देखो कॉर्पोरेट लाइफ़ में हमें एक-दूसरे का ख़्याल रखना पड़ता हैं।'

'क्या? कैसे?' मैंने सोचा कि अब अगर बाला दो मिनट में मुद्दे की बात पर नहीं आया तो मैं उसे एक तमांचा रसीद कर दूंगा। वास्तव में मैं मन ही मन ऐसा कर चुका था।

'मैं तुम्हारा बॉस हूं तो मैं तुम्हारा ख़्याल रखूंगा ही। लेकिन आज तुम्हारे पास मेरा ख़्याल रखने का एक मौका हैं।'

मैं चुप रहा।

'कंट्री मैनेजर आ रहे हैं। वे पूछेंगे कि हाउसवाइज्ज को इंटरनेट स्टॉक्स कैसे बेच दिए गए। मुझे इन सब बातों का जवाब तो देना ही पड़ेगा, लेकिन यदि तुम... ''मैं क्या? 'मैंने उसे उकसाया, ताकि वह जल्दी से असल बात पर आ जाए लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

'आप चाहते हैं कि मैं सारा दोष अपने सिर ले लूं?' मैंने एक अनुमान लगाने का जोखिम उठाया।

उसने सहमति में धीमे-से सिर हिला दिया।

'वॉव देइस अनबिलीवेबल बाला। मैं देनी हूं। वे मेरा भरोसा वैसे भी क्यों करेंगे? '

‘तुम आईआईएमए से हो। यह मान लिया जाएगा कि तुम शुरूआत में ही कंपनी में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका में आ गए थे।’

‘और यदि मैं ऐसा कह देता हूं तो मेरा कैरियर चौपट हो जाएगा।’

‘नहीं, तुम ट्रेनी हो। तुम्हारी प्रमोशन मुझे रिकमेंड करनी हैं। मान लो कि मैंने तुम्हारी प्रमोशन रिकमेंड कर दी। लेकिन यदि मुझे जिम्मेदार ठहराया गया तो मुझे कभी कोई प्रमोशन नहीं मिलने वाली।’

‘जिम्मेदार तो आप ही हैं मैंने उसकी आंखों में झांकते हुए कहा।

‘प्लीज़, क्रिश,’ बाला ने कहा।

बॉस-सबऑर्डिनेट का संबंध बदल चुका था। बाला मुझसे मदद की भीख मांग रहा था। मैं समझ रहा था कि यदि मैंने उसकी बात मान ली, तो मुझे कितनी पॉवर्स मिल सकती हैं। मैं सभी की तरह आराम से ऑफिस आ सकता था। मैं काम से जल्दी घर जा सकता था। मैं अपनी डेस्क पर बैठकर झपकी ले सकता था। ओके तो यदि सिटी ओवरपेड क्लर्क्स क्लब में मेरे कैरियर को नुकसान पहुंचता है, तो भी क्या?

मैं तभी हा कह सकता था, लेकिन मैं चाहता था कि बाला कुछ और देर मुझसे मिन्नत करता रहे। मैं चुप रहा।

‘वैसे भी कंट्री मैनेजर मुझे पसंद नहीं करता। वह नॉर्थ इंडियन है। वह एक बार तुम्हें माफ़ कर देगा, लेकिन मुझे नहीं,’ बाला ने कहा। मुझे लगा कि कहीं वह रोने न लगे। मैं और देर तक इस तमाशे का मज़ा ले सकता था, लेकिन मैं घर जाकर आराम भी करना चाहता था।

‘मैं देखता हूं कि मैं क्या कर सकता हूं।‘ मैं खड़ा हो गया।

‘क्या मैं इसे हा समझूं?’ बाला ने कहा। उसकी आंखें उम्मीदों से भरी थी।

‘गुड नाइट, सर,’ मैंने आखिरी शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा।

22

पापा मुझे कभी कॉल नहीं करते। पता नहीं, उस रात उन्होंने मुझे क्यों कॉल किया। मैं चाहता था कि ऑफिस और ट्यूशंस का टंटा फिर शुरू हो, उससे पहले नींदभर सो लूं। लेकिन रात को ग्यारह बजे रामानुजन ने मेरे दरवाज़े पर दस्तक दी।

'क्या है?' मैंने पूछा। जिस दिन अनन्या मुझसे मिलने आई थी, तब से मैंने बामुश्किल ही अपने किसी फ्लैटमेट से बात की थी।

'तुम्हारा फ़ोन है। '

'कौन है?' इस वक़्त तो मुझे अनन्या भी फ़ोन नहीं करती थी।

'तुम्हारे पापा। क्या तुम उन्हें कह सकते हो कि इस वक़्त फ़ोन न करें?' रामानुजन ने जमुहाई लेते हुए कहा।

पापा का नाम सुनते ही जैसे मुझ पर पाला पड़ गया। मैंने मन ही मन प्रार्थना की कि मॉम ठीक हों। उन्होंने मुझे फ़ोन क्यों लगाया होगा? 'हैलो?'

'क्या मैं अपने बेटे से बात कर रहा हूं?'

मुझे ज़रा अजीब लगा कि उन्होंने मुझे अपना बेटा कहकर पुकारा। पिछले तीन साल से हमने आपस में ठीक से बात नहीं की थी।

'क्रिश बोल रहा हूं,' मैंने कहा।

'तब तो मैं अपने बेटे से ही बात कर रहा हूं, है ना? '

'यदि आपको ऐसा लगता है तो,' मैंने कहा।एसटीडी की दो पल्स बीत गईं। चुप्पी छाई रही।'मैं सुन रहा हूं,' उन्होंने कहा।'क्या सुन रहे हैं?'

'वही, जो मेरा बेटा मुझसे कहना चाहता है। '

'अब कहने को कुछ बाक़ी नहीं रह गया है। आपने मुझे इतनी रात गए फ़ोन क्यों लगाया?' मैंने गुस्सेभरी आवाज़ में पूछा।

'तुमने मॉम को अपना पहला सैलेरी चेक भेजा? '

'हां,' कुछ देर के बाद मैंने कहा।

'इसके लिए तुम्हें बधाइयां,' उन्होंने कहा।

'मॉम ठीक तो हैं ना? आई होप, आप मुझे अपनी किसी गिल्ट ट्रिप के लिए फ़ोन नहीं कर रहे हैं, क्योंकि यदि मॉम ठीक नहीं हैं तो... 'मैंने अपने शब्दों को अंतरालों से अलगाते हुए कहा।

'तुम्हारी मां ठीक हैं। उन्हें तुम पर नाज़ है,' उन्होंने कहा।

'और कुछ? '

'तुम्हारे क्या हाल हैं?'

'इससे आपका कोई लेना-देना नहीं है,' मैंने कहा।

'क्या अपने बाप से बात करने का यही तरीक़ा है?' उन्होंने चीखते हुए कहा।

'यदि अपने ग़ौर न किया हो तो बता दूं,' मैंने कहा,' कि आपसे कभी बात नहीं करता हूं। '

'और मैं यहां तुमसे बात करने की कोशिश कर रहा हूं,' उन्होंने कहा। उनकी आवाज़ अब भी तेज़ थी। मैं उसी वक़्त फ़ोन रख देता, लेकिन मैं नहीं चाहता था कि वे मॉम पर गुस्सा निकालें। वे गुस्से में बड़बड़ाते रहे कि मैंने किस तरह उनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया है और किस तरह मैं एक नालायक बेटा साबित हुआ हूं, लेकिन मैं चुप्पी साधे रहा। उन्होंने ऐसी कोई बात नहीं कही, जो उन्होंने पिछले बीस सालों में नहीं कही थी। मैं यह भी जानता था कि एक बार उनका एकालाप शुरू हो गया तो उन्हें चुप होने में ख़ासा वक़्त लगेगा। मैंने फ़ोन टेबल पर रख दिया और फ्रिज खोला। उसमें से एक सेब और पानी की एक बोतल निकाली। किचन में गया, सेब को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट दिया और लौट आया। दो कौर खाए और एक गिलास पानी गटक गया। फ़ोन के रिसीवर से कटी-फटी आवाज़ आ रही थी।

आधा सेब खाने के बाद मैंने फ़ोन उठाया।

'तुममें ऐसा कोई गुण नहीं है, जिस पर गर्व किया जा सके। ये डिग्रियां बेकार हैं। मां को पैसा भेज देने भर से ही तुम तुर्रम खां नहीं बन जाते। मुझे लगता है कि तुम्हारे जैसा लड़का 'वे बोले चले जा रहे थे, लेकिन मैंने फ़ोन फिर टेबल पर रख दिया। मैंने उसे केवल तभी उठाया, जब मैं अपना सेब पूरा खा चुका था।

'आई सेड, तुम मेरी बात सुन रहे हो या नहीं?' उनकी आवाज़ काप रही थी।

'सुन रहा हूं,' मैंने कहा। 'बहुत देर हो चुकी है। आपका बिल भी बहुत बढ़ गया होगा। क्या मैं सोने जा सकता हूं?'

'तुम्हारे मन में अपने बाप के लिए कोई इज्ज़त नहीं है। '

'आप यह बात पहले भी कह चुके हैं। अब आप भी सो जाइए और मुझे भी सोने दीजिए। गुड नाइट,' मैंने कहा।

'गुड नाइट,' उन्होंने कहा और फ़ोन रख दिया। फ़ौज में काम करने वाले लोग चाहे कितने ही पागल क्यों न हों, लेकिन वे हमेशा सौजन्य और शिष्टाचार में विश्वास रखते हैं। मुझे पक्का विश्वास है कि एक-दूसरे को गोली से उड़ा देने से पहले भारत और पाकिस्तान के अफसर भी एक-दूसरे का अभिवादन करते होंगे।

मैं अपने कमरे में औट आया। मैं अपनी लाइफ़ में फिर से डैड का चेप्टर नहीं चाहता था। कोई भी पिता एक बुरे पिता से बेहतर नहीं होता। इसके अलावा अभी मेरा पाला एक और ऐसे पिता से पड़ रहा था, जिन्होंने मुझे अपनी बेटी से दूर करने के लिए हाथ बांध लिए थे। साथ ही मेरी ज़िन्दगी में मेरा बॉस बाला और मेरे लूज़र फ़्लैटमेट्स और मेरा सनकी मकान मालिक भी मौजूद थे। मेरी ज़िन्दगी सांभर की उस गंध से भरी हुई थी, जो कि इस शहर में हर जगह फैली थी। सोने से पहले दर्जनों आवारा विचार मेरे जेहन में मंडराते रहे। ये विचार बेडौल मछलियां की तरह यहां-वहां तैर रहे थे और मेरा बेचारा छोटा-सा दिमाग़ मिन्नत मांग रहा था–गाइज़,

मुझे आराम की सख़्त ज़रुरत है। क्या तुम्हें कोई प्रॉब्लम है? लेकिन विचारों की मछलियों की आवाजाही कम नहीं हुई। हर मछली को अटेंशन डेफिसिट डिसऑर्डर था यानी उस पर ध्यान दिया जाना ज़रूरी था।

बाला के विचार के साथ मुझे दिख रहा था कि मैं किसी नुकीली चीज़ से उस पर वार कर रहा हूं। अनन्या के डैड के विचार के साथ मुझे क़रीब एक दर्जन बातें याद आ रही थीं, जो मैं उनसे तब कह सकता था जब उन्होंने अपने हाथ बांध लिए थे–लेकिन मैं उससे प्यार करता हूं सर, लेकिन आपको पहले मुझे अच्छी तरह समझ लेना चाहिए अंकल, आप यह बात क्यों नहीं समझ रहे है कि हम दोनों भागकर भी शादी कर सकते हैं, यू द हिंदू-रीडिंग लूज़र।

कुछ लोग लकी होते हैं। वे बिस्तर पर लेटते हैं, आंखें बंद करते हैं और दुबई की इंपोर्टेड डॉल्स की तरह सो जाते हैं। लेकिन मुझे एक-एक कर अपने दिमाग़ में पचास चैनलें बंद करनी पड़ती हैं। एक घंटे बाद मैंने इस आखिरी विचार की चैनल बंद की कि मैं कैसे यह कहूंगा कि हाउसवाइव्ज को रेडियोएक्टिव स्टॉक्स के साथ खेलना मैंने ही सिखाया था।

23

'रेडी?' सुबह-सुबह बाला ने मुझे कॉफ़ी पेश करते हुए मुझे खुश करने की कोशिश की। जी हां, मिस्टर बालाकृष्णन, ब्रांच हेड ऑफ़ कस्टमर सर्विसेस, मेरे लिए मग में कॉफ़ी लेकर आए थे। कितनी बुरी बात है कि वे मग को ट्रे में रखकर नहीं लाए।

'अपने आपको एक स्टुपिड के रूप में पेश करने के लिए ज़्यादा तैयारी की ज़रूरत नहीं होती,' मैंने कहा और कॉफ़ी ले ली। मैंने देखा कि मग नीचे से गीला था। बाला ने फ़ौरन मुझे अपने डेस्क से टिशू उठाकर दिया। शायद मुझे जल्द ही इस सबकी आदत हो जाएगी, मैंने सोचा।

हम दो घंटे बाद कांफ्रेंस रूम में मिले। बाला ने प्रजेंटेशन तैयार किया। अपने कैरेक्टर के मुताबिक उसने टाइटिल स्लाइड से मेरा नाम हटा दिया। भारत के हर बैंक के हर डिपार्टमेंट के प्रजेंटेशन की तरह यह प्रजेंटेशन भी 1991 के उदारीकरण और उसके कारण देश को मिले अवसरों के विवरण से शुरू हो रहा था।

'जैसा कि आप देख सकते हैं, पिछले तीन महीनों में आईटी स्पेस में ख़ासी अस्थिरता रही है,' बाला ने ग्राफ़ की ओर इशारा करते हुए कहा, जो कि केवल नीचे की ओर ही जा रहा था।

हमारे कंट्री हेड अनिल माथुर पहली फ़्लाइट पकड़कर चेन्नई आए थे। उनके दिन की शुरूआत ही ख़राब रही थी, क्योंकि उन्हें आखिरी मिनट पर बिज़नेस क्लास सीट नहीं मिली थी और उन्हें आम लोगों के साथ कंधे रगड़ते हुए आना पड़ा था। प्रजेंटेशन के दौरान उनका चिड़चिड़ापन बढ़ता रहा।

अनिल की उम्र चालीस साल के क़रीब थी और उन्हें एक युवा तुर्क की तरह देखा जाता था। सिटी स्टार सिस्टम को पसंद करती थी और वह उसी के सहारे फल-फूल भी रही थी। अनिल को इस तरह इंट्रोड्यूस किया जाता था : 'दिस इज़ अनिल, एमडी। ही इज़ अ स्टार परफ़ॉर्मर। '

लेकिन किसी भी बैंक में करने को ऐसा कुछ नहीं होता, जिसे स्टारडम कहा

जाए। वास्तव में हमारे जन्म की नीरसता को कम करने के लिए यह सिटी की एक और जुगत थी। बहरहाल, जैसे ही अनिल रूम में आए, कुछ चेन्नई बैंकर्स की आंखें चमक उठीं, ठीक वैसे ही, जैसे रजनीकांत का पोस्टर देखकर ऑटो ड्राइवरों की आंखें चमक उठती हैं।

'और संक्षेप में, ये ही वे कारण थे, जिनके कारण आज हम इस स्थिति में हैं,' बाला ने अपनी एक घंटे की स्पीच ख़त्म करते हुए कहा। मुझे तब भरोसा ही नहीं हुआ, जब उसने अपनी स्पीच को छोटी-सी कहा।

अनिल ने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। उसने कमरे में नज़र घुमाई। चेन्नई के ट्रेनीज़ यूं भी आई कॉन्टैक्ट से बचते हैं, ख़ासतौर पर तब, जब सामने कोई बड़ा अधिकारी हो। उसने बाला की ओर देखा और बाला ने मुझे देखा। मैंने सिर हिलाया। आज मैं सुसाइड मिशन पर था।

अनिल का सेलफ़ोन बजा। उसने जेब से फ़ोन निकाला। मुंबई से उसकी सेक्रेटरी का फ़ोन था।

'वॉट डु यू मीन कि बिज़नेस क्लास के लिए वेटिंग लिस्ट है? मैं इन मद्रासियों से जिस तरह रगड़ाते हुए आया था, उसी तरह लौटकर जाना नहीं चाहता।'

मुझे और अनिल को छोड़कर रूम में बैठे हर शख्स को इस बात से ठेस पहुंची। लेकिन चूंकि अनिल बॉस था, इसलिए उसकी इस बात पर सभी इस तरह मुस्करा दिए, जैसे कि उसने कोई क्यूट रोमैंटिक जोक सुनाया हो।

अनिल फ़ोन पर बात करते-करते खड़ा हो गया। 'और मुझे लेने के लिए होंडा सिटी क्यों भेजी जाएगी? उन्हें बताओ कि यदि उनके पास मर्सीडीज़ नहीं है तो मैं बीएमडब्ल्यू के लिए एलिजिबल हूं... येस, ऑफ़ कोर्स, आई एम,' उसने कहा और फ़ोन रख दिया।

उसने ज़ोर से ठंडी सांस छोड़ी और चेहरे को रगड़कर पोंछा। जी हां, किसी को रोज़ अपने बुनियादी हक के लिए संघर्ष करना पड़े तो उसकी ज़िन्दगी मुश्किल ही होगी। 'ओके, फ़ोकस, फ़ोकस,' उसने खुद से कहा और कमरे में बैठे सभी लोगों ने अपनी कमर सीधी कर ली।

'सर, जैसा कि मैं कह रहा था...' बाला ने फिर अपनी बात शुरू की। अनिल को चार घंटे बाद वाली फ़्लाइट से लौटना था। मुझे लगा कि शायद बाला यह उम्मीद कर रहा था कि वह प्रजेंटेशन देता रहे और अनिल के पास उससे कुछ सख्त सवाल पूछने का समय ही न बचे।

'बाला, तुम बहुत बोल चुके हो,' अनिल ने कहा। 'मुझे केवल इस बात से मतलब है कि तुमने एक महीने में सात बड़े कस्टमर्स कैसे गंवा दिए, जबकि हम हर दूसरे बाज़ार में आगे बढ़ रहे हैं?'

हम सभी सिर झुकाकर ज़मीन को ताकते रहे।

'दो करोड़? रिटेल कस्टमर्स को दो करोड़ का नुकसान कैसे हो सकता है? वे बैंक में पैसे जमा कराने आते हैं, गंवाने नहीं,' अनिल ने कहा। उसे इन कारणों से ही बैंक में एक स्टार का दर्जा मिला था।

'सर, जैसा कि आप जानते हैं कि सारा घाटा इंटरनेट स्टॉक्स में हुआ है,' बाला ने कहा।

उसकी आवाज़ से लग रहा था, मानो वह मिन्नत कर रहा हो।

'तो, यह किसका बिग आइडिया था कि इन लेडीज़ को नेट स्टॉक्स बेचे जाएं?' अनिल ने पूछा।

'सर,' बाला ने कहा और मेरी ओर देखा। सभी की नज़रें मेरी ओर घूम गईं। उनके एक साथ इस तरह देखने भर से ही मैं दोषी बन गया था।

'तुम?' अनिल ने पूछा।

'क्रिश, सर,' मैंने कहा।

'तुम चेन्नई से हो?' अनिल ने पूछा। वह मेरे लहज़े के कारण सोच में पड़ गया था, जो बाकी लोगों से मेल नहीं खाता था।

'नहीं, मैं दिल्ली से हूं।'

'तुम पंजाबी हो? '

मैंने सिर हिलाकर हामी भरी।

अनिल ने कोई जवाब नहीं दिया। वह बस हँस पड़ा। वह एक सैडिस्टिक हँसी थी मानो कोई मछली को पानी से बाहर तड़पता हुआ देखकर हँस रहा हो। 'क्या हुआ था? एचआर की गड़बड़ी?' अनिल ने कहा। उसका फ़ोन फिर बजा। उसकी सेक्रेटरी ने कंफ़र्म किया कि वह बिज़नेस क्लास में ही सफ़र करेगा और एयरपोर्ट पर उसे पिकअप करने बीएमडब्ल्यू भी आएगी। अनिल ने सेक्रेटरी से कहा कि वह यह सुनिश्चित करे कि बीएमडब्ल्यू कम से कम फ़ाइव-सीरीज की तो होनी ही चाहिए।

'टाटा आंटी डील याद है, जो हमने बैंकएम के साथ की थी?' मैं बैंकएम से उस इडियट एमडी के साथ आया था और कार कंपनी ने मेरे लिए टोयोटा और उसके लिए फ़ाइव-सीरीज़ भिजवाई थी। कैन यू इमेजिन मुझ पर क्या बीती थी?' अनिल ने फिर ज़ोर देते हुए कहा। सेक्रेटरी ने कंफ़र्म किया कि वह उनके लिए ऐसी कोई कार भिजवाने का बंदोबस्त नहीं करेगी, जिसकी कीमत एक पूरे अपार्टमेंट से कम हो। अनिल का मूड अच्छा होते ही पूरे कमरे ने राहत की सांस ली।

'अच्छा, तो मैं कहां था?' अनिल ने कहा और मेरी ओर देखा। वह फिर हँस पड़ा। 'तुम किस कॉलेज से हो? '

'आईआईएमए,' मैंने कहा।

'सैल्यूट, सर,' अनिल ने सैल्यूट करने की नकल उतारते हुए कहा।

'मैंने शेखी बघारने के लिए कॉलेज का नाम नहीं लिया था, यू एसहोल,' मैं कहना चाहता था।

'मैंने आईआईएमसी से पढ़ाई की है। मैं आईआईएमए के लिए वेटलिस्ट में था, लेकिन उन्होंने मुझे कॉल नहीं किया। आई गेस, मैं तुम्हारी तरह स्मार्ट नहीं था,' अनिल ने कहा।

मुझे नहीं पता था कि इस सवाल का जवाब कैसे दूं। रूम में बैठा एक और ट्रेनी आईआईएमसी से था और उसने ख़ुद को इंट्रोड्यूस किया। उन्होंने हाई-फ़ाइव किया। इसके बाद अनिल फिर मुझसे मुख़ातिब हुआ।

'बट हू केयर्स, तुम्हारे कई आईआईएमए सीनियर्स कंट्री मैनेजर नहीं बन पाए, जबकि मैं बन गया,' अनिल ने कहा और मुझे देखकर आंख मारी।

ज़ाहिर है। तुम्हें अभी तक उस बात का अफ़सोस है, घिनौने, इनसिक्योर बेवकूफ़, मैंने मन में कहा, जबकि बाहर से मैं मुस्करा रहा था। मन में बोले जाने वाले डॉयलागों के बिना ज़िन्दगी में भला क्या मज़ा रह जाएगा?

'तो यह तुम्हारा आइडिया था कि हाउसवाइव्ज़ को इंटरनेट स्टॉक्स बेचना बहुत फायदे का सौदा होगा?' अनिल ने कहा। 'और बाला, तुमने इसे रोका भी नहीं?'

'सर, मैं हमेशा यंग टैलेंट्स को इनकरेज करने की कोशिश करता हूं। प्लस, आईआईएमए, मैंने सोचा, उसे पता होगा,' बाला ने कहा। अब वह मेरे प्रतिष्ठित इंस्टिट्यूट के प्रति अनिल की नाराज़गी का फ़ायदा उठाने की कोशिश कर रहा था। 'आईआईएमए, येस राइट,' अनिल ने कहा। 'तुम्हारी वजह से बैंक को इतना नुकसान पहुंचा है कि तुम पांच साल में भी उसकी भरपाई नहीं कर पाओगे।'

मैं सोचने लगा कि क्या मुझे बाला से अपनी डील कैंसिल करके सब कुछ सच-सच बता देना चाहिए। अब तो मुझे बाला द्वारा पेश की जाने वाली कॉफ़ी का भी कोई मोल नज़र नहीं आ रहा था।

'वॉट अबाउट मॉनिटरिंग? बाला, जब घाटा होना शुरू हुआ, तब तुमने मॉनिटर भी नहीं किया?'

'मुझे ज़्यादा बिज़नेस मिल रहा था, सर,' बाला ने कहा।

लंच ब्रेक हो गया। मैंने सबके साथ खाना नहीं खाया। पहला कारण यह कि मुझे अगली सुबह अपने साले साहब की क्लास के लिए आईआईटी ट्रीगोनोमेट्री की तैयारी करनी थी। दूसरा कारण यह कि अब मैं और फटकार नहीं सुन सकता था। और तीसरा कारण यह कि खाने में साउथ इंडियन स्पेशल था और अब तक मैं इस खाने से नफ़रत करने लगा था। मुझे पक्का पता था कि अनिल की भी यही हालत होगी।

लंच के बाद अनिल ने जल्दी से मीटिंग ख़त्म की। 'मुझे अच्छे कस्टमर नंबर्स चाहिए। या तो उन कस्टमर्स को वापस लेकर आओ या नए कस्टमर्स बनाओ, मुझे इससे मतलब नहीं। एंड प्लीज़, अगली बार बेहतर खाने का बंदोबस्त करना। '

'हम ऐसा ही करेंगे, सर, हम सुपर–हार्ड मेहनत कर रहे हैं,' बाला ने कहा।

सभी ट्रेनीज़ ने सिर हिलाया। आईआईएमसी के ट्रेनी को छोड़कर उनमें से किसी ने भी पूरी मीटिंग के दौरान एक शब्द भी नहीं कहा था।

'आई कैन टेल यू, इंटरनेट डिबेकल के कारण पूरी बैंक में लेऑफ़ होंगे। और यदि हमने चेन्नई को बॉटम में देखा तो समझो सभी की छुट्टी हो जाएगी,' अनिल ने कहा और उसके आखिरी शब्दों के कारण पैदा हुई दहशत हर चेहरे पर नज़र आई।

'एंड यू एचआर एरर,' अनिल ने मेरे कंधे को थपथपाते हुए कहा। 'यू नीड टु बक अप बिग टाइम। '

अनिल और उसके साथ ही हमारी चिंताओं को ले जाने के लिए बीएमडब्ल्यू आ गई। जब हम अपनी-अपनी सीट्स पर लौट आए तो बाला मेरी डेस्क पर आया। 'थैंक्स बडी, मुझे तुम्हारा यह एहसान याद रहेगा,' उसने कहा।

'बिग टाइम, बडी, बिग टाइम,' मैंने कहा।

24

जब मैंने अनन्या के किचन में किसी चीज़ को तले जाने की ख़ूब आवाज़ें सुनीं तो मैंने अनुमान लगाया कि यह कोई विशेष अवसर होगा। मैं मंजू को दो माह से ट्यूशन पढ़ा रहा था और वह कम्प्लान और बोर्नविटा के विज्ञापनों में दिखाए जाने वाले बच्चों से भी ज़्यादा स्मार्ट हो गया था। मैं अपनी एक महीने की ऑफ़्टर टैक्स, पीएफ़ और एचआरए सैलेरी दांव पर लगाकर कह सकता था कि मंजू आईआईटी, मेडिकल या मनुष्यमात्र को ज्ञात कोई भी कठिन परीक्षा क्रैक कर देगा। इसके लिए ज़्यादातर तो उसकी मेहनत ही जिम्मेदार होगी और मेरे हर सुबह पांच बजे उठने से इसका ज़्यादा ताल्लुक नहीं ही होगा।

'क्या माज़रा है?' मैंने पूछा और दो बार छींक दिया। चली हुई मिर्चों की गंध ने मेरी नाक में खलबली मचा दी थी।

'स्पेशल गेस्ट्स के लिए स्पेशल कुकिंग,' मंजू ने अपनी फिज़िक्स की न्यूमेरिकल्स करते हुए कहा।

'कौन? '

'हरीश, खाड़ी देशों से,' मंजू ने कहा।

'हरीश कौन? '

स्टोव पर एक और कड़ाही चढ़ चुकी थी। इस बार भुनी हुई राई, कड़ीपत्ता और प्याज की गंध हम तक पहुंची। यदि यह कोई पुरस्कार विजेता भारतीय उपन्यास होता तो मैं उस ख़ुशबू का बखान करने में ही दो पेज बर्बाद कर चुका होता। लेकिन उसका मुझ पर केवल यही असर पड़ा कि मुझे ख़ासी का एक दौरा पड़ा और मेरी आंखो से आंसू निकल आए।

'तुम बहुत सेंसेटिव हो,' मंजू ने मेरी ओर अफ़सोस भरी नज़रों से देखते हुए कहा। फिर वह खड़ा हुआ और दरवाज़े पर चला गया। 'अम्मा, एग्ज़ॉस्ट फ़ैन स्विच ऑन कर दो,' उसने चिल्लाते हुए कहा और दरवाज़ा लगा दिया।

अनन्या की मां कड़ाही में कड़छी घुमाती रही। 'ओके, अब तुम नहाने चले जाओ। वे लोग आते ही होंगे,' अनन्या की मा ने कहा और फिर अपनी आवाज़ का वॉल्यूम सबसे तेज़ करते हुए अनन्या को पुकारने चली गईं, 'अनन्या, तुम तैयार हो?'

'हरीश कौन है?' मैंने मंजू से फिर पूछा।

'नक्षत्रम नहीं मिले, इसलिए वे लोग यहां आ रहे हैं। ओके, तो जी 9.8 मीटर पर सेकंड है और रूट ऑफ़...' मंजू बात करते-करते फिर अपनी जानी-पहचानी दुनिया में चला गया था और मुझे अपनी दुनिया में अकेला छोड़ गया था। एक ऐसी दुनिया, जिसमें एक लड़का मेरी गर्लफ्रेंड के लिए आ रहा था, ताकि उसे अपनी पत्नी बना सके। मैंने मंजू से उसकी नोटबुक छीन ली।

'अय्यो, व्हाट?' मंजू ने हैरत से मुझे देखते हुए कहा।

'हरीश वाला मामला क्या है? मुझे अभी बताओ, नहीं तो मैं तुम्हारी मां को बता दूंगा कि तुम पोर्न देखते हो,' मैंने कहा।

मंजू हैरान रह गया। 'मैं पोर्न नहीं देखता हूं,' उसने डरी हुई आवाज़ में कहा।

'मुझसे झूठ मत बोलो,' मैंने कहा। मुझे पता था कि हर लड़का पोर्न देखता है।

'मैंने तो बस एक बार... अपने दोस्त के यहां ब्लू फिल्म देखी थी, बाय मिस्टेक,' उसने हकलाते हुए कहा।

'कोई लड़का बाय मिस्टेक ब्लू फिल्म कैसे देख सकता है? '

'वह मेरे दोस्त के डैड की फिल्म थी। प्लीज़, अम्मा को मत बताना। '

उसका चेहरा और यहां तक कि उसका चश्मा भी डरा हुआ नज़र आ रहा था। मैंने उसकी किताबें बंद कर दीं। 'मुझे हरीश के बारे में सब कुछ बताओ। यह सब कैसे हुआ? '

मंजू ने मुझे हरीश के बारे में बताया, जो कि एक पेरफ़ेक्ट तमिल दूल्हे का पोस्टर बॉय था। राधा आंटी पिछले दो साल से हरीश से बात तय करने की कोशिश कर रही थीं। वह भारतीय पैरेंट्स द्वारा तय किए जाने वाले हर मापदंड पर खरा उतरता था, जिस वजह से वह अनन्या के लिए एक सही व्यक्ति माना जा सकता था। वह तमिल था, ब्राह्मण था, और अय्यर था। (अगर किसी में ये तीन ख़ूबियां नहीं हों तो इतने भर से ही उसका नाम ख़ारिज कर दिया जा सकता था।) उसने आईआईटी चेन्नई में पढ़ाई की थी और 9.45 का जीपीए स्कोर किया था। (जी हां, स्वामीनाथन परिवार तक उसकी इस उपलब्धि का बखान भी पहुंच चुका था।)

इसके बाद उसने फुल स्कॉलरशिप के साथ एमएस किया और फिलहाल वह एक उभरती हुई सिलिकॉन वैली कंपनी सिस्को सिस्टम्स में काम कर रहा था। वह कभी शराब नहीं पीता था, या मांस नहीं खाता था, या स्मोकिंग नहीं करता था। (यानी उसने ज़िन्दगी में कभी कोई मज़ा नहीं किया था।) उसे कर्नाटिक संगीत और भरतनाट्यम को अच्छा ज्ञान था। उसकी आधा इंच घनी पूरी मूंछें थीं, सैन फ्रांसिस्को के एक उपनगर इलाक़े में उसका अपना एक घर था। उसके पास सफ़ेद होंडा अकॉर्ड कार थी और उसके स्टॉक ऑप्शंस, यदि पिछले तीन महीनों को छोड़ दें, तो हर बारहवें मिनट में डबल होते रहे थे। उसके पास एक टेलीस्कोप भी था, जिससे वह सप्ताहांत के दिनों में आकाशगंगा को निहारता रहता था (क्योंकि मैं आपको पहले ही बता चुका हूं कि मौज-मस्ती से उसका कोई नाता नहीं था)। मंजू इस बात को लेकर बहुत उत्साहित था कि उसे टेलीस्कोप से देखने का मौक़ा मिलेगा और उसे लगता था कि महज़ इस वजह से ही हरीश से उसकी बहन की शादी हो जानी चाहिए।

'उसने कहा कि टेलीस्कोप से शनि की रिंग्स के रंगों को भी देखा जा सकता है,' मंजू ने उत्साह भरे स्वर में कहा।

'तुमने उससे बात की? '

'उसने दो बार मुझे फ़ोन लगाया था,' मंजू ने कहा।

'अनन्या ने उससे बात की थी? '

'नहीं। वह तब फ़ोन लगाता था, जब वह घर पर न हो। वैसे भी, जब तक नक्षत्रम न मिल जाएं, तब तक लड़का और लड़की एक-दूसरे से बात नहीं कर सकते। '

'नक्षत्रम क्या?' मैंने पूछा। मुझे लगा कि शादी करने से पहले मेरे लिए जिन तमिल चीज़ों के नाम जानना ज़रूरी है, उनकी फ़ेहरिस्त अब बहुत-बहुत लंबी होती जा रही है। 'होरोस्कोप। यह तो बहुत ज़रूरी है। यदि नक्षत्रम न मिलें तो लड़का और लड़की के

पक्ष आपस में बात नहीं करते। लेकिन अक्का और हरीश के नक्षत्रम मिल गए हैं।'

मैंने अपने परिवार के बारे में सोचा। जब हम किसी लड़की को देखने जाते हैं तो हम केवल एक ही नक्षत्रम के बारे में सोचते हैं, और वो यह कि लड़की के खाते में कौन-सा पेट्रोल पम्प आएगा।

'तुम साइंस विज़ किड हो और शनि की रिंग्स देखना चाहते हो, इसके बावजूद तुम इस बात में यक़ीन रखते हो कि जिन लोगों के नक्षत्रम न मिलें, उन्हें आपस में बात भी नहीं करनी चाहिए?' मैंने पूछा।

'हमारी कल्चर यही है,' मंजू ने कहा। उसके हाथ अपनी वर्कबुक पाने के लिए मचल-से रहे थे। मैंने उसे उसके नोट्स दे दिए।

'और अब वो आ रहा है?' मैंने कहा।

'ही, नाश्ते पर। और प्लीज़ अब फिर मेरी नोटबुक मत छीनना। '

'सॉरी,' मैंने कहा और खड़ा हो गया। मैं इस बारे में अनन्या से बात करना चाहता था। निश्चित ही, अब तक उसे हरीश के आने के कारण में बारे में पता चल गया होगा। लेकिन अभी तो मैं बस यहां से चला जाना चाहता था।

'बाय मंजू,' मैंने कहा और मुड़कर जाने लगा।

'क्रिश भैया, मैं आपसे एक बात पूछ सकता हूं?' उसने कहा।

'क्या?' मैंने कहा।

क्या ब्लू फिलम्स देखने से कुछ बुरा हो सकता है?'

मैंने उसे नज़रें तरेरकर देखा।

'मैं अब नहीं देखूंगा, आई प्रोमिस। मैं तो बस जानना चाह रहा था,' उसने कहा। 'केवल देखने से? '

'केवल देखने... और,' उसने झिझकते हुए कहा, 'यदि हम उसके बाद कुछ और करें तो? '

'तुम अपने अप्पा से क्यों नहीं पूछते?'

'अय्यो, आप क्या कह रहे हैं '

'ऐसा करने से तुम अंधे हो सकते हो,' मैंने गंभीर मुद्रा में कहा।

'रियली?' उसने कहा, 'ऐसा कैसे संभव है? '

'बी केयरफुल,' मैंने उसे आंख मारकर कहा और वहां से चला गया।

'वेलकम, वेलकम,' मैं घर से बाहर निकल पाता, इससे पहले ही प्रवेशद्वार पर स्वागत-सत्कार शुरू हो गया।

मुख्यद्वार पर मानो अच्छी-खासी भीड़ जमा थी। अनन्या के डैड और मॉम, शोभा अथाई, कांजीवरम साड़ियों में लिपटीं तीन अन्य आंटीज़ और सफ़ारी सूट पहने दो अंकल इस वेलकम पार्टी में शामिल थे। उन्होंने हरीश की आवभगत कुछ इस तरह की, मानो वह भारत के पहले चंद्र अभियान से लौटा कोई एस्ट्रॉनॉट हो। बड़े-बुज़ुर्ग युवाओं के मामले में केवल तभी रोमांचित होते हैं, जब उनकी शादी होने वाली होती है, क्योंकि वे तभी पूरी तरह से स्थितियों को अपने नियंत्रण में रख सकते हैं। मैं अनेक बार अनन्या के घर आया था, लेकिन मुझे कभी किसी केबल मनी कलेक्ट करने वाले से अच्छा वेलकम नहीं मिला। लेकिन हरीश के लिए पलक-पाँवड़े बिछाए जा रहे थे। आंटीज़ उसकी ओर कुछ ऐसे स्नेह से देख रही थीं, जैसे कि वह कोई दो साल का बच्चा है, जबकि वो किसी दो साल के बच्चे से पचास गुना बड़ा था और उसकी मूंछें किसी भी दो साल के बच्चे को दहशत में डाल देने के लिए काफ़ी थीं। उसने धूप का चश्मा पहन रखा था, जिसकी कोई ज़रूरत नहीं थी, (क्योंकि अभी सुबह के सात ही बजे थे) सिवाय इसके कि वह अपनी इस बेतुकी स्टाइल का प्रदर्शन करना चाहता था। उसके साथ उसके पैरेंट्स भी आए थे। एक आत्मतुष्ट तमिल परिवार, जिसने अपनी उपलब्धियों की गर्व भरी भावना के साथ कमरे में प्रवेश किया। ग़नीमत थी कि सोफ़े पर बैठने से पहले हरीश ने अपना चश्मा निकाल लिया।

अनन्या के पिता ने देखा कि मेरे चेहरे पर कंफ़्यूजन के भाव थे।

'अंकल, मैं जा रहा था,' मैंने कहा। 'सॉरी, मैं मंजू की ट्यूशन के लिए आया था। '

'नाश्ता किया?' उन्होंने पूछा।

'नहीं,' मैंने कहा।

'तो बैठ जाओ,' उन्होंने कहा। उनका स्वर इतना दृढ़ था कि मैंने फ़ौरन उनकी आज्ञा का पालन किया। मैं यहां से दूर चला जाना चाहता था, लेकिन मेरे भीतर एक हिस्सा ऐसा भी था, जो यह तमाशा देखना चाहता था। अब अंकल का ध्यान नए मेहमानों पर चला गया। शायद उन्होंने जान-बूझकर मुझे रोका था। वे मुझे दिखा देना चाहते थे कि अनन्या किसके लायक है और मैं कभी वैसा नहीं हो सकता। मैं एक ऐसे घरेलू नौकर की तरह कोने की एक कुर्सी में बैठ गया, जिसे कभी-कभी टीवी देखने की इजाज़त मिल जाया करती हो।

टैक्सी ड्राइवर अपने पैसों के भुगतान के लिए भीतर आया। हरीश के पिता उसके साथ बाहर चले गए। वे टैक्सी ड्राइवर द्वारा बताए गए बिल का भुगतान करने को तैयार नहीं थे और धीरे-धीरे उनकी बहस गरमाने लगी। हरीश के डैड पांच रुपए के लिए अड़े हुए थे, जबकि दूसरी तरफ़ उसकी मां किसी से अपने बेटे की उपलब्धियों का बखान कर रही थीं।

'एमआईटी उसे बुला रहा है, उससे रिक्वेस्ट कर रहा है कि वह उनके कॉलेज से पीएचडी करे। '

कमरे में मौजूद सभी महिलाओं को मानो मिनी ऑर्गेज़्म हो गया हो। पंजाबियों के लिए जो महत्त्व मार्बल के फ़र्श का है, तमिलों के लिए उतना ही महत्त्व फ़ॉरन डिग्री का है। 'लेकिन उसके सिस्को के बॉस ने कहा कि तुम हमें छोड़कर कहीं नहीं जाओगे,' हरीश की मां ने कहा। इस दौरान हरीश पूरे समय मुस्कराता रहा।

मंजू कमरे में आया और मुझे बुलाया।

'क्या हुआ?' मैंने पूछा। मुझे डर था कि कहीं वह फिज़िक्स का कोई और सवाल लेकर न आ गया हो।

मैं उसके कमरे में चला गया। अनन्या उसके बिस्तर पर बैठी थी। मोरपंखिया साड़ी में वह बला की ख़ूबसूरत लग रही थी। जिस

दिन मैंने उसे प्रपोज़ किया था, तब भी तो उसने यही साड़ी पहनी थी।

'जाओ, जाओ, बाहर तुम्हारा दूल्हा तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है,' मैंने कहा।

'मंजू, कमरे से बाहर जाओ,' उसने कहा।

मंजू पहले ही पढ़ाई करने बैठ चुका था। 'अय्यो, अब मैं कहां जाऊं?'

'जाओ और मेहमानों से मिलो। या किचन में अम्मा की मदद करो,' अनन्या ने कहा। मंजू अपनी फिज़िक्स गाइड के साथ लिविंग रूम में चला गया।

मैंने अनन्या की ओर से अपना मुंह फेर लिया।

'आई एम सॉरी,' उसने कहा।

'ये सॉरी शब्द की ईजाद कमबख़्त किसने की होगी? आखिर हर बात का जवाब केवल एक शब्द कैसे हो सकता है? कल तुम बाहर बैठे मिस्टर सनग्लासेस से शादी कर लोगी और आकर मुझे कहोगी सॉरी। तब मैं क्या करूंगा? '

'ओवर रिएक्ट मत करो। मैं यह सब केवल शोभा आंटी को भुलावे में रखने के लिए कर रही हूं। मैंने अभी तक इस रिश्ते के बारे में अपना फ़ैसला नहीं सुनाया है। मैं ना ही कहूंगी।'

'तुमने मुझे क्यों नहीं बताया?

'क्योंकि इसमें बताने जैसा कुछ है ही नहीं। तुम भी पेट्रोल पम्प वाली लड़की को देखने गए थे ना? '

'हां, लेकिन मैंने बाद में तुम्हें बता दिया था। वैसे भी कोई फ़ॉर्मल बातचीत नहीं थी। मेरी मम्मी पम्मी आंटी से बस मिलने के लिए ही गई थी। '

'और यह भी कोई फ़ॉर्मल बातचीत नहीं है। मेरे पैरेंट्स ने मुझे कहा है कि हरीश केवल एक कैजुअल विजिट के लिए आ रहा है। '

'ओह, तो होरोस्कोप का मिलान केवल कैजुअली हो जाता है?'

'यह केवल फ़र्स्ट स्टेप है और वह भी शोभा आंटी का किया-धरा है। क्रिश, मेरी बात सुनो...?'

'अनन्या?' तमिल लहज़े वाली एक ज़ोरों की पुकार सुनाई दी।

'आई लव यू,' उसने कहा, 'और अब मुझे जाना होगा,' वह मेरे क़रीब से सरसराते हुए निकली।

'तुमने इतनी ख़ूबसूरत साड़ी क्यों पहनी है?' मैंने दरवाज़े की चिटखनी पर हाथ रखकर उसका रास्ता रोक लिया।

'क्योंकि मां ने मेरे लिए यह साड़ी चुनी है। अब मैं जाऊं या तुम चाहते हो कि अप्पा यहां आ जाएं?'

'चलो कहीं भाग चलते हैं, मैंने कहा।

'इतनी जल्दी हिम्मत मत हारो,' उसने कहा और अपने पंजों के बल खड़े होकर मुझे चूम लिया। स्ट्रॉबेरी लिप-ग्लॉस की खुशबू मेरे होंठों पर ठहर गई।

पांच मिनट बाद मैं बाहर आया। हरीश को लेकर मची हायतौबा अब थोड़ी कम हो गई थी। पुरुषों ने अख़बार खोल लिए। महिलाएं बैले डांसरों की तरह एक-दूसरे को देखकर औपचारिक ढंग से मुस्कराती रहीं। दूल्हे ने अपना लेटेस्ट मोटोरोला स्टारटैक मोबाइल फ़ोन निकाला और मैसेजेस चेक करने लगा। अनन्या की मां ने हमेशा की तरह सांपों के जीवाश्मों जैसे स्नैक्स परोसे। कोई किसी से बात नहीं कर रहा था। यदि किसी पंजाबी घर में इस तरह का सन्नाटा पसर जाए तो यह मान लिया जाएगा कि कोई बहुत ही भयानक हादसा हो गया–जैसे कि या तो किसी की मौत हो गई है या किसी तरह का कोई प्रॉपर्टी विवाद है या फिर कोई काली दाल में मक्खन डालना भूल गया है। लेकिन अनन्या के घर का तौर-तरीक़ा यही था। मेहमानों से गर्मजोशी से मिलो, उन्हें बेस्वाद स्नैक्स परोसो और फिर अख़बार खोलकर चुप्पी साधे बैठ जाओ।

मेरी री-एंट्री के कारण सभी का ध्यान मेरी ओर चला गया था। अनन्या की मां को मुझे देखकर हैरानी-सी हुई थी। अनन्या उनके क़रीब बैठकर हरीश के पैरेंट्स से बात कर रही थी। मैं अपनी कोने की कुर्सी में धंस गया था।

'मंजू के ट्यूटर,' अनन्या की मां ने कहा। सभी की नज़रें मेरी तरफ़ घूम गईं। कॉर्पोरेट सूट पहनकर पढाने आया एक ट्यूटर।

'ये अनन्या अक्का के क्लासमेट हैं,' मंजू ने मेरा थोड़ा-बहुत सम्मान रखते हुए कहा।

'तुम भी आईआईएमए से हो?' मेरे कई दोस्त तुम्हारे सीनियर्स हैं,' हरीश ने कहा।

'रियली? दैट्स नाइस,' मैंने कहा। मैं मूंछों से ढंकी उसकी नाक में घुमावदार स्नैक्स घुसेड़ देना चाहता था, लेकिन मैं डिप्लोमैटिक ढंग से मुस्कराता रहा।

अनन्या के पिता हरीश के पिता से तमिल में बात करने लगे। 'समथिंग समथिंग सिटीबैंक चेन्नई पोस्टेड समथिंग। समथिंग समथिंग पंजाबी फ़ेलो। '

सभी ने सिर हिलाया और राहत महसूस की, क्योंकि पंजाबी होने के कारण मैं एक सुरक्षित आउटसाइडर था।

'अनन्या, बातें करो,' अनन्या की मां ने फुसफुसाते हुए उससे कहा।

'तुम यहां कितने समय के लिए आए हो?' अनन्या ने कहा। उसकी चूडियां खनक उठीं। उसे चूड़ियां पहनने की भी कोई ज़रूरत नहीं थी।

'दो हफ़्ते। फिर मुझे बाली में हमारी एनुअल कांफ्रेंस के लिए जाना है,' हरीश ने कहा।

'बाली?' अनन्या की आंटीज़ में से एक ने पूछा।

'बाली इंडोनेशिया का एक द्वीपसमूह है। यहां से वाया सिंगापुर आठ घंटे का फ़्लाइंग टाइम है,' हरीश की मां ने कहा।

सभी ने सिर हिलाया। आखिर उन्हें नाश्ते से भी पहले एक महत्त्वपूर्ण ज्ञानवर्द्धक जानकारी जो मिल गई थी। अनन्या का परिवार ज्ञान का प्रेमी था, चाहे वह ज्ञान कभी उनके कोई काम न आए।

हम डाइनिंग टेबल की ओर बढ़े या बेहतर होगा अगर कहें डाइनिंग फ़्लोर की ओर। अनन्या की मां पहले ही केले के पत्ते बिछा चुकी थी। मैंने पाया कि केले के पत्ते सामान्य से ज़्यादा हरे-भरे थे। शायद उनमें मेरी जलन झलक रही थी।

आंटीज़ ने हरीश की प्लेट में खूब सारा खाना रख दिया।

'यह तो बहुत ज़्यादा है,' हरीश ने अपनी प्लेट में रखी छह इडलियों की ओर इशारा करते हुए कहा। 'किसी को एक चाहिए?' उसने एक इडली उठाई और अनन्या की प्लेट में रख दी।

'वॉव!' सभी आंटीज़ एक सुर में चिल्लाईं।

'देखो तो, वो अभी से उसका कितना ख़्याल रख रहा है। यू आर सो लकी, अनन्या,' एक आंटी ने कहा। मैं केले के पत्ते का एक टुकड़ा तोड़कर खाते-खाते बचा।

मैंने देखा कि बीचोंबीच सांभर से भरी एक पतीली रखी हुई थी। मेरा जी किया कि उसे उठाकर हरीश के सिर पर उड़ेल दूं। इडियट, वह अपनी इडलियां खुद ले सकती है। तुम बाली में डूब क्यों न मरे, मैंने सोचा।

हरीश को लगा यह वाक़ई मज़ेदार होगा कि वह उसे परोसी जाने वाली हर चीज़ से कुछ हिस्सा अनन्या को देता रहे। वह अपनी पत्तल से थोड़ी-थोड़ी उपमा, पोंगल, चटनी और केले की चिप्स उसकी ओर बढ़ाता रहा। रियली हरीश, क्या तुम्हें किसी ने बताया नहीं कि एक बैड जोक को ज़्यादा दूर तक नहीं खींचते है? और आंटियों, क्या तुम खी-खी करना बंद करोगी, क्योंकि इससे इस इडियट को इनकरेजमेंट मिल रहा है?

'हमें यूएस हॉलिडे कैलेंडर को ध्यान में रखकर तारीख़ तय करनी चाहिए,' शोभा आंटी ने कहा तो मुझे लगा कि वे कुछ ज़्यादा ही तेज़ गति से चल रही हैं।

'ईज़ी, आंटी, ईज़ी,' अनन्या ने कहा।

थैंक्स अनन्या मैडम, सो नाइस ऑफ़ यू कि आखिरकार आपने इन सब लोगों के बीच में एक समझदारी भरी बात कही। 'तुम ठीक तो हो ना?' मंजू ने मुझे एक इडली देते हुए कहा। मैं उसे दो महीने से पढा रहा था। अगर मेरे मन में कहीं कोई उथल-पुथल मची हो तो वह इसे समझ सकता था।

'मैं ठीक हूं,' मैंने कहा।

नाश्ता चलता रहा। और फिर अनन्या की मां ने कुछ ऐसा किया कि एक-दूसरे की ओर इडलियां बढ़ाने जैसी हरकतें और तारीख तय करने जैसी टिप्पणियां एकदम से थम गईं। वे रोने लगीं।

'अम्मा?' अनन्या ने कहा और उठकर अपनी मां की ओर चली गई।

अम्मा ने अपना सिर हिलाया। मंजू ने उनकी ओर देखा, लेकिन खाना जारी रखा। तमाम अंकल्स ऐसा दिखाते रहे, मानो कुछ हुआ ही न हो।

'राधा, क्या हुआ?' सुरुचि आंटी ने अम्मा के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

'कुछ नहीं, मैं बहुत खुश हूं। ये खुशी के आंसू हैं,' उन्होंने कुछ इतने भावनात्मक ढंग से कहा कि मुझे लगा जैसे मेरा गला भी भर आया हो। सभी आंटियों की आखें नम हो आईं। हरीश की मां ने अनन्या की मां को गले से लगाया। मैंने अनन्या की ओर देखा। उसने आंखें फेर लीं।

'हमारे बच्चे कितनी जल्दी बड़े हो जाते हैं,' एक आंटी ने कहा, लेकिन उन्होंने इस छोटे-से तथ्य को अनदेखा कर दिया कि बच्चे जहां बड़े होते जा रहे हैं, वहीं वे भी तो बुढाती जा रही हैं।

मैं तुम सबको देख लूंगा, तुम सभी को, मैने हाथ धोते हुए कसम खाई।

'तुम उन्हें बता क्यों नहीं देतीं! ज़ाहिर है, धीरे-धीरे आगे बढ़ने की हमारी रणनीति कारगर साबित नहीं हो रही है,' मैंने मेनु खोलते हुए कहा।

हम एमेथिस्ट में आए थे। यह ख़ूबसूरत टीहाउस अंग्रेजों के जुमाने के एक बंगले में मौजूद था। इस शहर की कुछ सबसे अच्छी बातों में यह टीहाउस भी शामिल था। एक एकड़ इलाक़े में फैले इस बंगले में बाहर की तरफ़ शानदार बरामदे थे, जिसमें बेंत का फ़र्नीचर और बड़े-बड़े पत्तों वाले पौधों के गुलदान थे। टीहाउस में जामुन आइस्ट टी और मिंट एंड जिंजर कूलर्स जैसी नई-नवेली चीज़ें परोसी जाती थीं। भेड़ के दूध के पनीर से बनीं डिशेस ख़ासी महंगी होती थीं। यह टीहाउस बंगला चेन्नई की स्टाइलिश महिलाओं और प्यार में पूरी तरह से डूबे उन प्रेमियों का पसंदीदा ठिकाना था, जिन्हें लगता था कि जामुन मिक्स विद सोडा के सामने भला चंद सौ रुपयों की क्या बिसात है।

'मुझे जामुन आइस्ट और चिकन सैंडविच लाना, और कुछ बिस्किट और क्रीम भी प्लीज़।' अनन्या ने कहा।

'और थोड़ा पानी, प्लीज़,' मैंने वेटर से कहा।

'स्टिल वाटर या स्पार्कलिंग वाटर, सर?' वेटर ने पूछा।

'वह पानी, जिससे तुम आज सुबह नहाए थे,' मैंने कहा।

'सर?' वेटर ने हैरत से कहा, 'नल का पानी, सर।'

'ठीक है, वही ले आओ,' मैंने कहा।

'ऑफ़ कोर्स, मैंने उन्हें बताया है। वे राज़ी नहीं हैं,' अनन्या ने विषय पर लौटते हुए कहा।

'तो क्या मिस्टर हरीश बीते कल की बात हो चुके हैं?'

'फ़ाइनली, हालांकि शोभा अथाई को ओके होने में सालों लग जाएंगे। वे कहती हैं कि मुझे हरीश में एक ख़राबी बता दो। '

'वह अपने दम पर किसी लड़की को नहीं पटा सकता,' मैंने कहा।

'शट अप, क्रिश,' अनन्या ने कहा। 'तुम्हें पता है मैंने हरीश का चैप्टर कैसे बंद कराया?'

'तुमने उसे मेरे बारे में बता दिया? '

'कुछ-कुछ। '

'कुछ-कुछ?' मैंने तेज़ आवाज़ में कहा। 'मैं कोई मिस्टर कुछ-कुछ नहीं हूं। मैं एक अच्छा-भला इंसान हूं। '

'हां, लेकिन मैं उसे सब कुछ तो नहीं बता सकती थी ना। कैसा लगता? जब वह मुझे देखने आया था तो मेरा बॉयफ्रेंड भी मेरे साथ में बैठा हुआ था। '

'ज़रा सोचो, मुझ पर क्या बीती होगी। ख़ैर, तुमने उससे क्या कहा? '

'उसने मुझसे पूछा, या कहूं कि उसने इशारे में पूछा कि क्या मैं अब तक वर्जिन
हूं।'

'क्या, उसने यह पूछा?! मैं उस बास्टर्ड की जान ले लूंगा,' मैंने कहा। मेरा चेहरा तमतमा रहा था।

अनन्या हँस पड़ी। 'वैसे किसी को चलते-कुढ़ते देखकर मज़ा तो आता है,' उसने कहा। 'फ़नी। '

'उसने कहा था... रुको मुझे याद कर लेने दो। हां, उसने कहा था कि क्या तुम अब भी प्योर हो या नहीं,' उसने खिलखिलाते हुए कहा।

'व्हाट अ लूज़र। उसे किस चीज़ की तलाश है–घी?' मैंने कहा।

अनन्या पेट पकड़कर हँस पड़ी। 'रुको तो, मेरा जवाब सुनोगे तो तुम हँसते-हँसते मर ही जाओगे। '

'और वह क्या है?'

'मैंने उससे कहा–हरीश, यदि वर्जिनिटी की कोई एंट्रेंस एग्ज़ाम हो तो मैं निश्चित ही उसमें टॉप नहीं करूंगी,' अनन्या ने कहा।

'तुमने ऐसा कहा! फिर क्या हुआ? '

'और फिर द सिस्को बॉय ने फ़ोन रख दिया। हरीश का चैप्टर क्लॉज़। राधा आंटी कहती हैं कि अब तो हरीश भी मुझे पसंद नहीं करता। यिप्पी! '

वेटर हमारी ड्रिंक्स ले आया। ड्रिंक्स को देखकर लग रहा था, जैसे किसी ने पानी में ख़ूब सारे पेंट ब्रश डुबो दिए हों। जामुन टी का स्वाद ज़रा अलग था, अलबत्ता अलग होने का मतलब यह ज़रूरी नहीं कि वह बहुत अच्छा ही हो। एमेथिस्ट अपने माहौल के लिए जाना जाता था, उसकी डिशेज़ के पौष्टिक तत्त्वों के लिए नहीं।

'अनन्या, हमें जल्द से जल्द कोई कदम उठाना होगा। तुम्हारे पैरेंट्स से मेरी पटरी नहीं बैठ पा रही है। हो सकता है मंजू के साथ मेरा थोड़ा मेलजोल हुआ हो, लेकिन बाक़ी लोग तो मुझे ना के बराबर स्वीकार कर पाते हैं। '

'नहीं, ऐसा नहीं है। इन फ़ैक्ट, मैंने तुम्हें आज यहां इसीलिए बुलाया है। तुम्हारे पास एक मौका है कि डैड को इंप्रेस कर लो। '

'मैं नहीं कर सकता। मैंने तुम्हें बताया था ना कि उन्होंने मेरे सामने अपने हाथ बांध लिए थे। '

'वे अपने प्रेज़ेंटेशन को लेकर बहुत पेरशान हैं। बैंक ऑफ़ बड़ौदा में इससे पहले कभी किसी ने बिज़नेस प्लान नहीं बनाया। उन्हें कंप्यूटर चलाना भी नहीं आता है। वे बहुत मुश्किल में हैं। '

'मैंने तो उनके सामने मदद का प्रस्ताव रखा था। उन्होंने इनकार कर दिया। '

'लेकिन अब वे ना नहीं कहेंगे। मैं भी उनकी मदद कर सकती हूं, लेकिन मुझे बहुत ट्रेवल करना पड़ रहा है। यदि तुम उनकी मदद करो तो बात बन सकती है। '

'बात बन सकती है बड़ी आसानी से 'बात नहीं बन सकती है' भी हो सकता है,' मैंने कहा।

‘कोशिश करो,’ अनन्या ने कहा और मेरे हाथ पर हाथ रख दिया। शायद यह चेन्नई का अकेला ऐसा रेस्टोरेंट था, जहां वह इस तरह का स्टंट कर सकती थी। यहां ऐसा करना ओके था।

‘पहले तुम्हारा भाई और अब तुम्हारे पापा। और कुछ नहीं तो मैं तुम्हारा फ़ैमिली ट्यूटर तो बन ही जाऊंगा,’ मैंने बची-खुची चाय की चुस्कियां लेते हुए कहा।

‘और मेरे लवर,’ अनन्या ने आंख मारते हुए कहा।

‘थैंक्स। और तुम्हारी मां के बारे में क्या?’ मैं उनकी आँखों में खुशी के आंसू कैसे ला पाऊंगा, जैसे प्योरिटी की खोज करने वाले हरीश के कारण आए थे?’

अनन्या ने हाथ फेंकते हुए कहा, ‘मुझसे मॉम के बारे में कुछ न पूछो। पहली बात तो यह वे हरीश का नाम लेकर मुझे रोज़ दोषी ठहराती रहती हैं। दूसरी बात यह कि कर्नाटिक संगीत में माहिर न होने के कारण चेन्नई ने उन्हें उनकी सही जगह पर ला दिया है। उन्होंने गाना पूरी तरह छोड़ दिया है। इससे वे और परेशान हो जाती हैं। वे ख़ुद को दोष देने लगती हैं और फिर बात मुझ तक आ जाती है और यह चक्कर इसी तरह चलता रहता है। इस मामले में तो मैं भी उनकी मदद नहीं कर सकती। तुम फिलहाल पापा के दिल में ही जगह बनाने की कोशिश करो।’

मैंने सिर हिला दिया। अनन्या सांस लेने के लिए रुक गई।

‘मेरी बातें बर्दाश्त करने के लिए शुक्रिया,’ उसने कहा और मुझे क्रीम में लिपटा एक बिस्किट खिलाया। उसकी अंगुलियों पर भी कुछ क्रीम लग गई थी, जिसे मैंने आहिस्ते से चाट लिया। इस तरह की छोटी-छोटी चीज़ें ही मेरा हौसला बनाए हुए थीं।

‘ईज़ी, यह पब्लिक प्लेस है,’ उसने कहा।

वेटर बिल लेकर आया। उसने अपने हाथ वापस खींच लिए। मैंने भुगतान किया और टिप के लिए इतने रुपए छोड़ दिए, जो मेरे एक दिन के लंच बजट से भी ज़्यादा थे।

‘सुनो, तुम डांस करने चलोगे?’ उसने पूछा।

‘डास? यहां रात आठ बजे के बाद कर्फ्यू** लग जाता है। हम डांस के लिए कैसे जा सकते हैं?'

‘क्योंकि चेन्नई में हम दोपहर में डांस करने जाते हैं। चलो ना, शेराटन के यहां बहुत अच्छा डीजे है। '

‘दोपहर तीन बजे? '

‘हां, सभी इसी समय जाते हैं। नाइट क्लब पर बैन लग गया है, इसलिए अब ऑफ़्टरनून क्लब चलने लगे हैं। '

हम एक ऑटो करके शेराटन पहुंचे। मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा हूं, कम से कम सौ यंग्स्टर्स पार्टी के कपड़े पहने बाहर धूप भरे बरामदे में इंतज़ार कर रहे थे। दस मिनट बाद डिस्को खुला। सभी भीतर चले गए और बत्तियां बुझा दी गईं। बार का कारोबार शुरू हो गया। डीजे ने लेटेस्ट रजनी तमिल ट्रैक लगा दिए। मुझे छोड़कर सभी उसे सुनकर दीवाने हो गए।

अनन्या ने म्यूज़िक की रिदम पर थिरकना शुरू कर दिया। वह बहुत अच्छा नाच रही थी, उन सभी लड़कियों की तरह, जिन्होंने छोटी उम्र से ही भरतनाट्यम सीखना शुरू कर दिया था।

‘नान ओन्नाई काडालिकारन,’ उसने तमिल में आई लव यू कहा। मैंने उसे अपनी बांहों में ले लिया।

मैंने चारों ओर देखा। यंग्स्टर्स वह सब कर रहे थे, जिस पर उनके पैरेंट्स से लेकर सरकार तक ने पाबंदी लगा रखी थी।

हां, यदि दोपहर में डिस्को हो सकता है तो एक पंजाबी लड़का भी एक तमिल लड़की से शादी कर सकता है। आखिरकार नियम इसीलिए तो बनाए जाते हैं कि उन्हें तोड़ने के तरीक़े खोजे जा सकें।

‘अंकल अनन्या ने मुझे बताया था कि आपको अपना बिज़नेस प्लान तैयार करने में मुश्किल आ रही है। '

अंकल ने कार को इस तरह ब्रेक लगाया, जैसे उन्हें शॉक लगा हो। हम कभी फिएट में बात नहीं करते थे। यह हमारी अनकही रस्म थी। मैं अपनी रिपोर्ट्स पढ़ता रहता था, वे ट्रैफिक और शहर की सड़कों को कोसते रहते थे। बीस मिनट में हम सिटीबैंक के समीप ट्रैफिक सिग्नल तक पहुंच जाते थे, जहां वे मुझे उतार देते थे। मैं उन्हें थैंक कर देता था, वे अपना सिर हिला देते थे, लेकिन हम कभी नज़रें नहीं मिलाते थे। अनन्या और मेरी एमेथिस्ट डेट के एक हफ़्ते बाद मैंने अपनी ओर से पहल की थी। अनन्या काम के सिलसिले में पांच दिन के लिए तंजौर गई थी। वहां के मंदिर देखने के लिए अनन्या की मां भी उसके साथ गई थीं। अनन्या ने मुझसे कहा था कि मदद का प्रस्ताव रखने के लिए यह पेरफ़ेक्ट समय होगा। उसके पिता को यह भी नहीं लगेगा कि मैं अनन्या के लिए घर आना चाहता था। इसके अलावा, वे मुझसे मदद ले सकते थे, जिसके बारे में उनकी पत्नी और उनकी बेटी को कुछ पता न चलता।

‘वो तुमको यह सब क्यों बता रही है?’ उन्होंने स्टीयरिंग व्हील को कसकर भींचते हुए कहा।

‘एक्चुअली, मैंने अपने बॉस की भी बिज़नेस प्लान बनाने में मदद की थी,’ मैंने झूठ बोलते हुए कहा।

‘रियली?’ उनका लहज़ा ज़रा नर्म पड़ा और उन्होंने मेरी ओर देखा।

‘मल्टीनेशनल कॉर्पोरेशन बैंकें हमेशा प्रेज़ेंटेशंस ही बनाती हैं,’ मैंने कहा।

अंकल ने ब्रेक से पैर हटाया। कार फिर चल पड़ी।

‘अगर मैं आपकी मदद करना चाहूं तो आपको ऐतराज़ तो न होगा?’ सिटीबैंक सिग्नल के क़रीब पहुंचते ही मैंने कहा।

‘तुम पहले ही मंजू को ट्यूशन पढ़ा रहे हो। आखिर तुम हमारी इतनी मदद क्यों कर रहे हो?'

मैंने खूब सोचा कि इस सवाल का क्या जवाब दूं। ‘चेन्नई में मेरा अपना कोई नहीं है। कोई पुराने दोस्त नहीं, परिवार भी नहीं,’ मैंने कहा।

परिवार शब्द सुनते ही उनकी भौहें तन गईं।

‘ज़ाहिर है, आपका परिवार भी मेरा अपना परिवार तो नहीं है,’ मैंने कहा। उनका चेहरा फिर सहज हो गया। ‘फिर भी अच्छा लगता है कि अपने घर जैसा कुछ हो।’

मेरा सिग्नल आ गया था। मैंने धीमे-से दरवाज़ा खोला, ताकि उनके पास जवाब देने को पर्याप्त समय हो।

‘यदि तुम्हारे पास वक़्त हो तो शाम को आओ। मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि मैंने क्या किया है। '

‘ओह, ओके, मैं रात को आता हूं, मैंने कहा। अंकल गाड़ी चलाकर आगे बढ़ गए। उनकी फिएट अपने पीछे कॉर्बन मोनोऑक्साइड का एक ताज़ा झोंका छोड़ गई थी।

26

‘मेरे ख़्याल से यह एक बेहतरीन आइडिया है,’ बाला ने कहा। हम अपनी प्रायरिटी बैंकिंग ग्रुप टीम मीटिंग में बैठे थे। मुंबई ने देशभर के हमारे प्राइवेट क्लाइंट्स के लिए एक ‘रेंज स्पिरिट्स’ डिनर का प्रस्ताव रखा था। मंदी के बावजूद उन्होंने सभी बड़े सेंटर्स के लिए बजट अप्रूव किया था। चूंकि चेन्नई ने अपने क्लाइंट्स को एडवेंचर बैंकिंग से जोड़ा था, इसलिए उसे सबसे ज़्यादा बजट की दरकार थी।

‘तो, हम यहां इस बारे में दिमाग खपाने के लिए बैठे हैं कि चेन्नई के कस्टमर्स के लिए कौन-सा इवेंट सबसे कारगर साबित होगा,’ बाला ने कहा।

‘आर्ट एग्ज़ीबिशन,’ एक एक्ज़ीक्यूटिव ने कहा।

‘अगेन, हम कुछ बेच रहे हैं,’ एक अन्य एक्ज़ीक्यूटिव ने कहा। ‘फ़ोकस मौज-मस्ती पर रहना चाहिए। '

‘फ़ैशन शो,’ पहले वाले एक्ज़ीक्यूटिव ने कहा।

‘यह हमारे मार्केट के लिए बहुत ज़्यादा बोल्ड होगा,’ जवाबी प्रतिक्रिया आई।

दस मिनट तक यह डिस्कशन चलता रहा। मूवी-नाइट से लेकर कॉलीवुड के किसी सितारे को बुलाने और लज़ीज़ खाना तैयार करने के लिए किसी शेफ़ को बुलवाने तक हर विचार पर बात की गई।

बहरहाल, किसी न किसी कारण हर विचार नाकाम रहा। चूंकि मैंने कुछ भी नहीं कहा था, इसलिए मुझे लगा कि मैंने मीटिंग में अपनी ओर से कोई योगदान नहीं दिया है। लेकिन मुझे नहीं पता था कि चेन्नई के कस्टमर्स के लिए क्या चीज़ कारगर साबित हो सकती है, सिवाय इसके कि उन्हें उनका पैसा लौटा दिया जाए।

‘क्रिश, तुम्हें क्या लगता है,’ बाला ने मुझे सपने से जगाते हुए कहा। मैं सपने में अनन्या का हाथ थामे चला जा रहा था और उसने मोरपंखिया साड़ी पहनी थी।

‘हुंह?’ मैंने कहा। मैंने पाया कि सभी की नज़रें मेरी ओर घूम गई थीं।

‘तुम भी अपनी ओर से कोई आइडिया देना चाहोगे?’ बाला ने कहा। हालांकि उसने मुझे अब थोड़ी छूट देकर रखी थी, फिर भी उसके भीतर का अत्याचारी बॉस कभी-कभी बाहर निकल आता था।

‘म्यूज़िक, व्हाट अबाउट म्यूज़िक?’ एक म्यूज़िकल नाइट रख लेते हैं?’ मैंने सुझाव दिया। पूरे कमरे में रोमांच भरे स्वर सुनाई देने लगे। आखिरकार, एक ऐसा विचार सामने रखा गया था, जिसके विरोध में कोई भी ठोस तर्क नहीं दिए गए। अलबत्ता, म्यूज़िक में ही दर्जनभर और नए विचार पेश कर दिए गए।

‘कचेरी, चलो कचेरी करवा लेते हैं,’ एक ने कहा।

‘ये क्या होता है?’ मैंने सरस्वती की ओर मुड़ते हुए कहा।

सरस्वती परंपरागत तमिल एजेंट थी, जो साल में केवल एक बार बोलती थी और अपनी बांहों को कभी वैक्स नहीं करती थी। (मैं स्वीकारता हूं कि यह बिंदु यहां अप्रासंगिक है, लेकिन इस तरह की चीज़ों पर ध्यान न जाए, यह बड़ा मुश्किल है।) ‘कचेरी कर्नाटिक संगीत का एक कंसर्ट होता है,’ सरस्वती ने कहा और फिर पहले की तरह चुप्पी साध ली।

‘हे, मैंने सोचा था कि हम कोई मज़ेदार इवेंट करवाना चाहते हैं,’ मैंने कहा।

‘कर्नाटिक संगीत भी मज़ेदार होता है,’ एक अन्य सुपरवाइज़र रवि ने कहा।

हां, उतना ही मज़ेदार होता है, जितने कि भीड़भरी ट्रेन में गला फाड़कर रोते बच्चे, मैं कहना चाहता था, लेकिन चुप रहा। चेन्नई में पॉलिटिकल करेक्टनेस ज़रूरी है, ख़ासतौर पर तब, जब हर कोई आपको बाहरी इंसान मानकर आपसे नफ़रत करता हो। मैं बाला से मुख़ातिब हुआ। ‘हम हौसला बढ़ाना चाहते हैं। क्या कर्नाटिक संगीत बहुत गंभीर नहीं? पॉपुलर म्यूज़िक की शाम क्यों न आयोजित की जाए? गुड पॉपुलर म्यूज़िक। '

‘एआर रहमान, क्यों ना एआर रहमान का शो रखवा लें?’ एक व्यक्ति ने कहा।

‘या फिर इलैयाराजा का,’ दूसरे ने कहा।

बाला ने सिर हिलाया और अपने हाथों को लहराकर ‘ना’ कह दिया। ‘हम इतने बड़े नामों के साथ कार्यक्रम नहीं कर सकते। हमारे पास इतना बजट नहीं है। और इस तरह के लोग प्रेस को अपनी ओर खींचते हैं। कहीं ऐसा न हो कि कार्यक्रम में कोई कस्टमर प्रेस से कह दे कि उसे कितना घाटा हुआ है और हम इस तरह के कंसर्ट्स** में पैसा बरबाद कर रहे हैं। मुंबई ऑफिस तो मेरी जान ही ले लेगा। '

दो घंटे के विचार-मंथन के बाद लंच ब्रेक हो गया, लेकिन हम अपने इवेंट के संबंध में कुछ नतीजों तक पहुंच चुके थे। कंसर्ट का आयोजन फिशरमैन्स कोव पर तय किया गया, जो कि शहर के बाहरी इलाक़े में स्थित एक अपमार्केट रिज़ॉर्ट था। तीन से पांच तक ऐसे सिंगर्स को बुलाना तय किया गया, जिनका अच्छा-ख़ासा नाम हो, बशर्ते हम दो लाख रुपए के बजट के भीतर ही यह इवेंट करवा लें।

‘तो तय हुआ,’ बाला ने कहा। जब हमारी मीटिंग ख़त्म हुई, तब शाम के छह बज गए थे। मुझे लगा कि अब मुझे चलना चाहिए। आखिर, आज मेरी बिग डैडी के साथ बिग डेट जो थी।

27

'तो, क्या यह लगभग पूरा हो चुका है?' मैंने कहा। अंकल ने मुझे अपने काम की एक सीडी दी थी। मैंने उसे अपने लैपटॉप पर अपलोड कर लिया। स्लाइड्स में किसी तरह का कोई पैटर्न नहीं था। कहीं भी बुलेट पॉइंट्स का इस्तेमाल नहीं किया गया था और फ़ोंट साइज़ आठ से लेकर बहत्तर तक थी।

'हां, मैंने इस पर तीन हफ़्ते मेहनत की है,' उन्होंने कहा।

हम लिविंग रूम में एक वर्क-टेबल पर बैठे थे। मंजू भीतर पढ़ाई कर रहा था। घर में और कोई नहीं था। लैपटॉप की स्क्रीन देखने के लिए मैं और अनन्या के पापा एक-दूसरे से सटकर बैठे हुए थे।

'इनमें कहीं भी फिगर्स नहीं हैं, चार्ट्स नहीं हैं, स्पेसिफिक पॉइंट्स भी नहीं हैं...' मैंने उनके प्रेज़ेंटेशन के प्रति कम आलोचनापूर्ण होने का प्रयास करते हुए कहा। साथ ही मैं सच कहने की भी कोशिश कर रहा था।

'फिगर्स यहां हैं,' अंकल ने अपना ब्रीफ़केस खोलते हुए कहा। 'मुझे पॉवरपाइंट में वह फ़ीचर अभी सीखना है। '

उन्होंने तीन मोटी-मोटी फ़ाइलें निकालीं, जिन पर गंदे भूरे कवर चढ़े थे और सभी के भीतर दो सौ से कम शीट्स न थीं।

'यह क्या है? '

'हमारा पिछले साल का बिज़नेस डाटा,' उन्होंने कहा।

'आप यह सब प्लान में नहीं डाल सकते,' मैंने कहा। प्लान कब सबमिट करना है?'

'वह रास्कल वर्मा एक हफ़्ते के भीतर प्लान चाहता है,' अंकल ने कहा।

अनन्या के पिता जिस गति से चल रहे थे, उस तरह तो वे इसे एक साल में भी सबमिट नहीं कर पाते।

'एक हफ़्ता? यह तो पिछली परफ़ॉर्मेंस का डाटा है। आपको अगले साल का प्लान भी तो बनाना होगा। '

'मैं जल्द ही वह भी बनाने वाला था,' उन्होंने थूक निगलते हुए कहा।

मेरे बाएं हाथ की कोहनी टेबल पर और हथेली मेरे माथे पर ही रही। फिर मैं स्लाइड्स को रिवर्स ऑर्डर में पलटाने लगा, ताकि पहली तक पहुंच सकूं।

'क्या जो मैंने किया, उसमें कुछ ग़लत है?' उन्होंने कहा।

मैं उनकी ओर मुड़ा और हल्के-से मुस्कराते हुए कहा, 'जी नहीं, बस थोड़ा-सा फिनिशिंग टच देना बाक़ी है। '

'और वह कैसे होगा?'

'सबसे पहले तो आप मुझे बताइए कि आप बैंक में एग्ज़ैक्टली क्या करते हैं। फिर मुझे इन फ़ाइलों के बारे में बताइये। '

मैंने लैपटॉप बंद कर दिया। अगले तीन घंटों तक मैं समझता रहा कि एक पब्लिक सेक्टर बैंक में एक डिप्टी डिस्ट्रिक्ट मैनेजर क्या करता है। वास्तव में, काम बहुत था, जबकि मैं यही सोचता था कि गवर्नमेंट बैंक स्टाफ़ कुछ भी करता-धरता नहीं है। लेकिन, बहुत सारा काम रिपोर्टिंग, अप्रूवल्स और रिकॉर्ड मेंटेनेंस से संबंधित था। यह बिज़नेस से ज़्यादा ब्यूरोक्रेसी थी।

वे बताते रहे कि किस तरह उनके एगमोर डिस्ट्रिक्ट में सेल्फ़-रिक्रूटिंग प्रोसेस चलती है। मुझे उबासी आ गई। फिर मैंने दीवार पर टंगी घड़ी की ओर देखा। साढ़े नौ बज चुके थे।

'सॉरी, मैंने तुमसे डिनर के बारे में भी नहीं पूछा।' मिस्टर स्वामीनाथन ने कहा।

'इट्स ओके, कीप गोइंग। मैं मुंह धोकर आता हूं,' मैंने कहा और अपनी कुर्सी पीछे खींच ली।

मैं बाथरूम से लौटा, तब तक अंकल स्टील की दो प्लेटें और लेमन राइस का एक बॉउल ले अए थे। उन्होंने खाना गर्म करने के लिए बॉउल को माइक्रोवेव में रख दिया। 'सॉरी, आज खाना ठीक-ठाक नहीं है। मैंने मेड से सादा खाना बनाने को कह दिया,' उन्होंने कहा।

'इट्स फ़ाइन,' मैंने उनसे प्लेट लेते हुए कहा। मैं किचन में गया। दही और पानी लिया। मुझे चम्मचें नज़र आईं, लेकिन मैं उन्हें लिए बिना चला आया।

'मंजू कहां हैं?' मैंने टेबल पर लौटकर पूछा।

'उसने खाना खा लिया है। वह सुबह चार बजे उठ जाता है, इसलिए अभी वह सो गया है,' अंकल ने कहा।

हम चुपचाप खाते रहे। मुझे इस घर में पहली बार ऐसा लगा, जैसे मेरा स्वागत हुआ हो। निश्चित ही, मुझे हफ़्ते में तीन दिन काम करने के लिए नाश्ता और ऑफ़िस तक की लिफ़्ट मिलती थी, लेकिन आज की बात कुछ और थी। जब मैंने अपनी प्लेट में रखा खाना खा लिया तो अंकल ने मुझे थोड़ा और दे दिया। मेरे गिलास में पानी ख़त्म हो जाने पर उन्होंने उसमें पानी भी उड़ेल दिया। डिनर के बाद हम तब तक काम करते रहे, जब तक कि नींद के मारे अंकल की आखें नहीं मुंदने लगीं।

'साढ़े ग्यारह बज चुके हैं। अब मुझे चलना चाहिए,' मैंने कहा। मैंने अपना लैपटाप बंद किया और सभी काग़ज जमा लिए।

'हां,' अंकल ने अपनी घड़ी की ओर देखते हुए कहा। 'मुझे अंदाज़ा नहीं था कि इतना काम होगा। '

मैं दरवाज़े तक आया। मैंने मन ही मन काम का एजेंडा सोच लिया था।

'प्लान यह है कि,' मैंने कहा, 'कल हम एक स्ट्रक्चर बनाएंगे, ताकि हमारे पास कम से कम सभी पंद्रह स्लाइड्स के लिए एक टाइटिल हो। अगले दिन हम टेक्स्ट पर काम करेंगे। उसके अगले दिन हम फिगर्स और चार्ट्स पर काम शुरू कर देंगे। '

हम घर से बाहर चले आए।

'बहुत देर हो गई है। मैं तुम्हें छोड़ आऊं?' अंकल ने पूछा।

'नहीं, मेन रोड से ऑटो मिल जाएंगे। गुड नाइट अंकल। मंजू से कह दीजिएगा कि मैं उससे परसों मिलता हूं। '

'थैंक यू, क्रिश,' अंकल ने मुझे हाथ लहराकर गुडबाय करते हुए कहा।

'एनीटाइम,' मैंने कहा।

28

मैंने अगली तीन शामें मिस्टर स्वामीनाथन के साथ बिताईं। बैंक ऑफ़ बड़ौदा का एगमोर डिस्ट्रिक्ट बिज़नेस प्लान मेरी ज़िन्दगी का मक़सद बन गया था। मैं अंकल का थोड़ा काम अपने दफ़्तर में भी ले आया और दोपहर में उस पर काम करता रहा।

'तुम क्या कर रहे हो?' बाला ने मुझसे पूछा। मैं कॉमन ऑफिस प्रिंटर पर अंकल के प्रज़ेंटेशन के प्रिंटआउट लेने आया था, जहां मुझे बाला मिल गया।

'पर्सनल रिसर्च,' मैंने कहा और शीट्स को भींचकर अपने डेस्क पर चला आया।

पता नहीं ऐसा कैसे होता था, लेकिन मैं फ़ोन की घंटी सुनकर ही बता सकता था कि अनन्या का कॉल आया है।

'हाय हॉटी। क्या चल रहा है?'

'तुम्हें पता है चार साल पहले बैंक ऑफ़ बड़ोदा के पास कोई एटीएम नहीं था, लेकिन आज अकेले एगमोर में ही दर्जनों एटीएम हैं,' मैंने प्रेज़ेंटशन की बारहवीं स्लाइड खोलते हुए कहा।

'क्या?' उसने कहा।

'और दो साल बाद उनकी संख्या बढ़कर तीस तक पहुंच जाएगी,' मैंने कहा।

'तुम क्या बातें कर रहे हो? '

'मैं ऑफिस में तुम्हारे डैड के प्रेज़ेंटेशन पर काम कर रहा हूं,' मैंने कहा और मॉनिटर से दूर होने के लिए अपनी कुर्सी घुमा ली।

'इसीलिए तो मैं तुम्हें स्वीटी कहती हूं,' उसने कहा।

'मैं एक टैलेंटेड एमबीए के समय का दुरुपयोग इन प्रेज़ेंटेशन में कर रहा हूं, जिसे सिटीबैंक तनख़्वाह देती है। मुझे इसके लिए जेल भी भेजा जा सकता है,' मैंने कहा।

'हाऊ एक्साइटिंग! मेरा लवर मेरे लिए जेल जाने को भी तैयार है,' उसने खिलखिलाते हुए कहा। 'मंजू ने मुझे बताया था कि तुम हर शाम देर तक मेरे घर पर रहते हो और आज तुमने मंजू की सुबह की ट्यूशन भी ली थी। अपना ख़्याल रखो। '

'आई एम फ़ाइन। मैं ऑफिस में आराम कर लेता हूं। प्रज़ेंटेशन आज रात को ही पूरा हो जाना चाहिएं'

'कूल। और अप्पा के साथ तुम्हारी पटरी बैठ रही है या नहीं? '

'वेल, यह तो बिज़नेस-लाइक मामला है। हां, लेकिन मैं यह ज़रूर कहना चाहूंगा कि मैंने उन्हें मुस्कराते हुए देखा। मैंने डिनर के समय एक पूरी मिर्च चबा डाली थी और फिर मैं दौड़कर पानी के लिए किचन की ओर भागा था। जब मैं लौटा तो वे पूरे तीन सेकंड तक मुस्कराए। यह सब मैंने जान-बूझकर किया था। '

'मेरे डैड के लिए तीन सेकंड बहुत ही ज़्यादा हैं,' अनन्या ने कहा। 'वह अपनी किसी भी वेडिंग पिक्चर में नहीं मुस्करा रहे हैं। '

'उन्हें तुम्हारी मॉम से जो शादी करनी पड़ रही थी,' मैंने कहा।

'शट अप,' अनन्या ने कहा।

पियून मुझे यह कहने आया कि बाला ने मेरे एक्सटेंशन पर फ़ोन लगाया था, लेकिन मेरा फ़ोन इंगेज था। मैंने अनन्या से होल्ड करने को कहा।

'उन्हें कह दो कि मैं एक प्रोस्पेक्टिव न्यू क्लाइंट से बात कर रहा हूं और उन्हें कंसर्ट में बुलाने की कोशिश कर रहा हूं,' मैंने कहा। पियून ने सिर हिलाया और चला गया।

'कंसर्ट?' अनन्या ने कहा।

'एक प्राइवेट क्लाइंट इवेंट है। फिशरमैन्स कोव पर,' मैंने कहा।

'फिशरमैन्स कोव बहुत अच्छी जगह है। क्या मैं भी आ सकती हूं?' उसने कहा।

'यदि तुम्हारे पास दस लाख रुपए हों तो,' मैंने कहा।

'श्योर, मेरे हसबैंड कैश भिजवा देंगे,' अनन्या ने कहा।

'हां, मेरे द्वारा बैंक डकैती करने के फ़ौरन बाद। ओके, क्या मैं अब तुम्हें यूं ही बहलाता रहूं या फिर कुछ ऐसा करूं कि पांच दिन बाद तुम्हारे डैड की खिल्ली न उड़ाई जाए? '

मैंने कहा।

'डैडी फ़र्स्ट,' उसने कहा। 'वैसे भी मैं तीन दिन बाद आ रही हूं। '

'तंजौर कैसा लगा? '

'मंदिर, तमिलियंस और तुनकमिज़ाज मां। आना चाहोगे?' उसने कहा।

'फिर कभी। उनकी तुनकमिज़ाजी की वजह क्या है?'

'मैं, मैं और केवल मैं,' अनन्या ने कहा और हँस पड़ी। 'जैसा कि हमेशा से रहा है।' 'रियली?' तुमने अब कौन-सा गुनाह कर दिया? '

'वह कहती हैं कि मेरे पास उनके लिए वक़्त नहीं है, जो कि सच भी है, क्योंकि मैं दिन भर पूरे डिस्ट्रिक्ट में मीटिंग्स में शामिल होती हूं। ऑफ़ कोर्स, उन्हें यह भी लगता है कि हरीश को ना कहना नोबेल पुरस्कार ठुकराने की तरह है। लेकिन वे जिस एक बात की रट लगाए रहती हैं, वह यह है कि उन्होंने मुझे आगे पढ़ाने का जो फ़ैसला किया था, मैंने उसका ग़लत फ़ायदा उठाया। इतना कहते-कहते उनकी आंखों से गंगा-जमुना बहने लगती है। मुझे अगले हफ़्ते पांडिचेरी जाना पड़ेगा, लेकिन मैं अब उन्हें अपने साथ नहीं ले जाऊंगी। '

'तुम्हें जाना पड़ेगा?'

'बस एक दिन के लिए। '

‘सुनो, फिशरमैन्स कोव पांडिचेरी के रास्ते पर ही है ना?’ मैंने कहा।
‘हां, क्यों?'
‘गुड, मुझे वह जगह देख आनी चाहिए। मैं उस दिन तुम्हारे साथ जाऊंगा,’ मैंने कहा। ऑफिस के पचड़े से बचने के लिए मैं कुछ भी कर सकता था।
‘ओह, कूल,’ उसने कहा।
पियून फिर आया।
‘येस,’ मैंने अनन्या को होल्ड करने को कहा और पियून की ओर मुड़कर पूछा।
‘सर पूछ रहे हैं कौन-सा क्लाइंट?’ पियून ने कहा।
मैंने चारों ओर देखा। ऑफिस की खिड़की के बाहर कई होर्डिंग्स लगे थे। एक होर्डिंग्स आतिशबाजी का था।
‘स्टैंडर्ड फ़ायरवर्क्स, शिवकाशी। ओके।?’ मैंने कहा।
पियून ने सिर हिला दिया।
‘बाय स्वीटी, मैं तुम्हें डिस्टर्ब कर रही हूं ना? '
‘हां, लेकिन अगर हमें अच्छे लोग डिस्टर्ब न करें तो फिर ज़िन्दगी का मतलब ही क्या,’ मैंने कहा।
‘थैंक यू। लव यू,’ अनन्या ने कहा।
‘आई लव यू टू, मैंने कहा और फ़ोन रख दिया। पित्त मेरे सामने खड़ा था। मेरे अंतिम शब्द सुनने के बाद उसकी आखें फैल गई थीं।
‘तुम अभी तक यहां क्या कर रहे हो?’ मैंने कहा।
‘सॉरी, सर,’ पियून ने कहा और चला गया।

अंकल का प्रेज़ेंटेशन फिनिश करने के लिए मैं ऑफिस से जल्दी चला आया। हम आखिरी पड़ाव पर पहुंच चुके थे और अब केवल फ़ाइनल फ़ॉर्मेटिंग ही बाक़ी थी। मयलापुर में मेरी नज़र एक सीडी स्टोर पर पड़ी। प्रेज़ेंटेशन पूरा करने के बाद थोड़ा म्यूज़िक सुनना अच्छा रहेगा, मैंने सोचा और सीडी स्टोर के भीतर चला गया।
‘आप क्या चाहते हैं, सर?’ शॉपकीपर ने कहा।
मैंने चारों तरफ़ नज़रें घुमाकर देखा। सभी अलमारियां तमिल सीडीज़ से भरी पड़ी थीं, जिनके रंग-बिरंगे चमकीले कवर क्राइम नॉवल्स की याद दिला रहे थे। ‘आपके यहां नॉन-तमिल सीडीज़ कौन-सी हैं?’ मैंने पूछा।
उसेन सिर हिलाकर ना कहा। ‘नॉन-तमिल के लिए आपको नुंगमबक्कम जाना पड़ेगा, सर।’ शॉपकीपर ने कहा, हालांकि शॉप अटेंडेंट अपने कलेक्शान में कोई नॉन-तमिल सीडी खोजने लगा।
‘ओके हियर,’ उसने तीन सीडीज़ निकालते हुए कहा।
पहली सीडी नॉन-स्टॉप हिंदी रीमिक्स की थी। उसके कवर पर भड़कीली मुद्राओं वाली लड़कियां थीं। मुझे उसे रिजेक्ट करना पड़ा। दूसरी सीडी रोमैंटिक लव सॉन्ग्स का कलेक्शन थी, जिसका कवर दिल के आकार का था। तीसरी सीडी अंग्रेज़ी में नर्सरी राइम्स की थी।
‘मुझे लव सॉन्ग्स वाली सीडी दीजिए,’ मैंने कहा।
शॉपकीपर बिल बनाने लगा। मैंने कर्नाटिक म्यूज़िक के एक सेक्शन की ओर देखा।
‘कर्नाटिक म्यूज़िक की कुछ अच्छी सीडीज़ हैं?’ मैंने पूछा।
‘अच्छी यानी कौन-सी, सर?’ उसने मेरी लाल रंग की सीडी पैक करते हुए कहा। मैंने सीडीज़ के कवर्स की ओर देखा। उनमें से अधिकांश पर अधेड़ तमिल पुरुषों और महिलाओं के चित्र थे। ‘क्या आपके पास कर्नाटिक म्यूज़िक का कोई ग्रेटेस्ट हिट्स कलेक्शान है?’ मैंने कहा।
शॉपकीपर अचरज में पड़ गया। मैंने निराशा में हाथ झटक दिए। ‘मुझे कुछ पता नहीं है, मैं शुरूआत करना चाहता हूं,’ मैंने कहा।
‘नार्थ इंडियन? उसने पूछा।
मैंने सिर हिलाकर हां कहा।
‘फिर आप कर्नाटिक संगीत क्यों सीखना चाहते हैं?'
मैंने कोई जवाब नहीं दिया।
शॉपकीपर ने मुझे दो सीडीज़ दीं। एक के कवर पर एक महिला तंबूरा थामे बैठी थी। दूसरे के कवर पर किसी बुज़ुर्ग व्यक्ति का चित्र था। उस पर सब कुछ तमिल में लिखा था। मैं उलट-पुलटकर देखता रहा।
‘टीआर सुब्रमणियना नाइस,’ एक अधेड़ उम्र की महिला ने मेरे हाथ की सीडीज़ देखकर कहा। वे अभी-अभी शॉप में आई थीं।
‘जी हां, माय ऑल टाइम फ़ेवरेट,’ मैंने सीडीज़ अपने बैग में रखते हुए कहा और शॉप से बाहर चला आया।

मैं साढ़े छह बजे अनन्या के घर पहुंचा। अंकल पहले ही टेबल पर विराजमान हो चुके थे।
उन्होंने नज़र का चश्मा पहन रखा था और वे प्रेज़ेंटेशन के प्रिंटआउट्स पर करेक्शन कर रहे थे। टेबल पर गर्मागर्म वड़े लाल, हरी और सफ़ेद चटनियों के साथ रखे थे। ‘एक वड़ा लो। हमारे ऑफिस के पास वड़े की एक फ़ेमस शॉप है। मैं ये तुम्हारे लिए लाया हूं,’ अंकल ने कहा।

मैंने उनकी ओर देखा और एक वड़ा उठा लिया। हमने पहली बार एक-दूसरे से नज़रें मिलाई थीं। मैंने ग़ौर किया कि यदि झुर्रियोंदार चेहरे और नज़र के चश्मे को नज़रअंदाज़ कर दिए जाए, तो उनकी आखें अनन्या की आँखों की तरह ही थीं।

'तो, आज चाहे जितनी देर हो जाए, हम यह काम ख़त्म करके ही उठेंगे,' मैंने फ़ाइल खोलते हुए कहा।

अंकल ने सिर हिला दिया। उन्होंने स्कीन देखने के लिए अपनी कुर्सी मेरे पास सरका ली।

'ओके, तो अब एक-एक कर सभी स्लाइड्स देखते हैं। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते जाएंगे, मैं फ़ॉर्मेट करता जाऊंगा,' मैंने कहा।

पहली पांच स्लाइड्स पूरी करने में एक घंटे का समय लगा।

'अंकल, यदि मैं थोड़ा म्यूज़िक लगा लूं तो आपको कोई ऐतराज़ तो न होगा? फ़ॉर्मेटिग बहुत थकाऊ है,' मैंने कहा। मैंने अपने लैपटॉप में सीडी प्लेयर खोला।

'स्टीरियो में बजाओ,' अंकल ने कहा और लिविंग रूम डिस्प्ले कैबिनेट में रखे हाई-फ़ाई सिस्टम की ओर इशारा किया। मैंने अपने ऑफिस बैग से सीडीज़ निकालीं। मैं सिस्टम कनेक्ट करने के लिए उठा। अंकल भी मेरी मदद करने के लिए उठ गए। वे वायर सुलझा रहे थे कि तभी मेरी नज़र शिवास रीगल व्हिस्की की एक लीटर की अनखुली बोतल पर पड़ी। वह स्टीरियो सिस्टम के पास रखी थी।

मैंने मौक़ा देखकर उनसे पूछ लिया,' आप व्हिस्की लेते हैं?'

'नहीं, बस कभी-कभार सर्दी लगने पर एकाध पैग ले लेता हूं। मुझे यह बड़ी-सी बॉटल हरीश ने दी थी। अब यह सालों चलेगी,' उन्होंने कहा।

मैं चुप रहा।

'तुम हरीश को जानते हो ना? वही लड़का, जो अनन्या को देखने आया था। '

मैंने सिर हिलाकर हां कहा।

'रियली गुड बॉय,' उन्होंने कहा।

अंकल ने स्टीरियो चालू कर दिया। मैंने उन्हें अपने बैग से निकालकर दिल के आकार वाली सीडी दी।

अंकल उसे कुछ देर तक उलट-पुलटकर देखते रहे।

'मयलापुर की शॉप में बस कुल-मिलाकर यही था,' मैंने धीमी आवाज़ में कहा। 'और कौन-सी सीडीज़ हैं?'

मैंने उन्हें बाक़ी दोनों सीडीज़ भी दिखा दीं।

'टीआर सुब्रमणियन और एमएस शीला? तुम यह किसके लिए लाए हो? '

'अपने लिए। '

'तुम कर्नाटिक संगीत समझ लेते हो?'

'नहीं, लेकिन मैं सीखना चाहता हूं। मैंने सुना है कि यह संगीत का सबसे शुद्ध रूप है,' मैंने कहा।

अंकल ने अपना सिर हिला दिया। मैं सोचने लगा कि उन्हें मेरी बात सही लगी या नहीं। उन्होंने सीडीज़ फिर से मेरे बैग में रख दीं। 'कभी-कभी, मैं सोचता हूं कि काश मैंने राधा को कर्नाटिक संगीत के लिए इनकरेज न किया होता। इससे उसे केवल तकलीफ़ ही पहुंची है। '

मैंने भी सिर हिला दिया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उनकी इस बात पर क्या प्रतिक्रिया दूं। अंकल पहली बार मुझसे कोई पर्सनल बात कर रहे थे। कितना अजीब है कि दो लोग लैपटॉप के साथ महज़ पांच दिन में एक-दूसरे के कितने क़रीब आ सकते हैं। हम फिर अपनी-अपनी कुर्सियों पर जा बैठे और मैंने छठी स्लाइड पर काम शुरू कर दिया। कमरे की हवा में मैंडी मूर का रोमैंटिक ट्रैक तैरने लगा।

आई वाना बी विद यू

इफ़ ओनली फ़ॉर द नाइट

पचास साल के एक तमिल अधेड़ और चौबीस साल के एक पंजाबी लड़के के बीच हो रही एक वर्क-डेट के लिए यह गाना ज़रा अजीब ज़रूर था, लेकिन ख़ामोशी से तो यह फिर भी बेहतर ही था। मुझे टेक्स्ट बॉक्सेस, टेबल्स, चार्ट्स और लिस्ट्स को सही जगह पर प्लेस करते हुए हर स्लाइड को साफ़-सुथरा और सलीक़ेदार बनाने में मज़ा आ रहा था। अंकल हर पॉइंट को पढ़ते और फिगर्स को चेक करते रहे। गाना चलता रहा।

टु बी द वन हू इज़ इन योर आर्म्स

हू होल्ड्स यू टाइट

जब सीडी तीन बार बज चुकी, तब जाकर मैं आधा काम पूरा कर पाया। दस बजे हम डिनर के लिए बैठे। अंकल किचन गए और अपने साथ दो प्लेट टोमैटो राइस ले आए।

'तुम तो साउथ इंडियन खाने से बोर हो गए होंगे?' उन्होंने कहा।

'नहीं, अब मुझे इसकी आदत हो गई है। अब यह घर के खाने जैसा ही लगता है,' मैंने कहा।

'गुड,' उन्होंने कहा। फिर वे डिस्प्ले कैबिनेट की ओर चले गए।

मैं 'गुड' तक तो पहुंच चुका था, लेकिन हरीश की तरह 'रियली गुड' की श्रेणी तक पहुंचने में मुझे अभी समय है, मैंने सोचा।

'अब प्रेज़ेंटेशन अंडर कंट्रोल है। तुम ड्रिंक लोगे?' अंकल ने पूछा।

'श्योर,' मैंने कहा।

अंकल ने डिस्प्ले कैबिनेट के क्रॉकरी रैक से दो गिलास निकाले। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं किचन से एक चम्मच और आइस ले आऊं। उन्होंने बॉटल खोली।

'मेरे लिए पांच चम्मच काफ़ी हैं,' उन्होंने अपनी ड्रिंक बनाते हुए कहा। 'और तुम्हारे लिए? '

'हम चम्मच से शराब नहीं नापते,' मैंने कहा। मैं थोड़ा उत्तेजित हो रहा था। मैं पिछले एक हफ़्ते से उनके लिए जी तोड़ मेहनत

कर रहा था और अब भी उनके लिए हरीश ही 'रियली गुड बॉय' था। फ़क यू, हरीश, तुम्हारी शिवास रीगल तो मेरे ही नाम होगी। मैंने वह सुनहरी शराब अपने गिलास में चार अंगुल उड़ेल दी।

'तुम क्या कर रहे हो?' उन्होंने हैरत से कहा।

'अपने लिए एक रियल ड्रिंक बना रहा हूं। चियर्स,' मैंने कहा और अपना गिलास उठा लिया।

'एक्चुअली, राधा ही मुझे ज़्यादा नहीं पीने देती है,' अंकल ने कहा और मुझसे बॉटल लेते हुए मेरे जितनी ही ड्रिंक अपने लिए भी बना ली।

'चियर्स,' उन्होंने कहा, 'एंड थैंक यू। तुम आईआईटीयंस बहुत स्मार्ट होते हो। तुमने मेरे लिए क्या जबर्दस्त प्रेज़ेंटेशन बनाया है। '

'यू आर वेलकम,' मैंने कहा।

रात साढ़े दस बजे हमने अपना डिनर और पहली ड्रिंक पूरी की। मैं व्हिस्की बॉटल लैपटॉप के पास ले आया। मैंने अपने लिए दूसरी ड्रिंक बनाई और अंकल को ऑफ़र की। उन्होंने मना नहीं किया। सीडी पर गाना बदल गया। अब लास्ट क्रिसमस बज रहा था। अंकल स्टीरियो के पास गए और वॉल्यूम बढ़ा दिया। 'आई गेव यू माय हार्ट,' अंकल ने गाने के साथ गाते हुए कहा और अंगुलियां चटकारने लगे। फिर वे मेरे पास आकर बैठ गए।

मैंने एक अद्भूत नजारा देखा था। एक तमिल ब्राह्मण ने पहली बार अपने को बंधनों से मुक्त कर दिया था। मुझे प्रेज़ेंटेशन पर काम करना था, नहीं तो मैं उन्हें इस हालत में निहारता ही रहता। अभी मुझे बस इतना ही याद है कि अगले दो घंटे में हम आखिरी स्लाइड और व्हिस्की की बोतल के एक-तिहाई मार्क तक पहुंच चुके थे।

'एंड थैंक यू,' मैंने आखिरी स्लाइड पढ़ते हुए कहा। 'लीजिए, हो गया काम पूरा?' मैंने फ़ाइल सेव कर ली।

'दो बार सेव करो,' अंकल ने कहा।

मैंने एक बार फिर सेव की और टाइम देखा। रात के एक बज चुके थे। तीन घंटे बाद मंजू के जागने का समय हो जाता।

'तो अब आप इसे प्रेज़ेंट करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं?' मैंने कहा।

'प्रेज़ेंट? मैं? नहीं-नहीं, इसे वर्मा 'प्रेज़ेंट: करेगा। मेरा काम था इसे पूरा करना और अब मेरा काम पूरा हो गया है। '

'अंकल,' मैंने कहा, मेरी आवाज़ व्हिस्की के कारण कठोर हो गई थी, 'ये आपको ही प्रेज़ेंट करना होगा। अगर इसे आपके बजाय कोई और प्रेज़ेंट करेगा तो इस पर एक हफ़्ते तक पसीना बहाने का फ़ायदा ही क्या। '

'मैंने कभी वह प्रोजेक्टर ऑपरेट नहीं किया,' अंकल ने कहा।

'इसमें कोई बड़ी बात नहीं है। आपका आईटी डिपार्टमेंट उसे सेट कर देगा। आपको अगली स्लाइड दिखाने के लिए केवल फ़ॉरवर्ड बटन दबाना पड़ेगा। '

'पता नहीं।' उन्होंने कहा और चुप्पी साध ली।

मैंने लैपटॉप लिया और अपना सिर हिलाया। 'दिस इज़ अनबिलीवेबल। इतना अच्छा प्रेज़ेंटेशन बनकर तैयार हुआ है। आपके कंट्री मैनेजर वहां मौजूद रहेंगे। और आप केवल इतना ही करना चाहते हैं कि एक कोने में चुपचाप बैठ जाएं। वर्मा सारा क्रेडिट ले जाएगा। '

'रियली?' उन्होंने कहा।

'सभी बॉस यही तो करते हैं। एक भी इससे अलग नहीं है,' मैंने कहा।

'ब्लडी नॉर्थ इंडियन फ़ेलो,' अंकल ने कहा।

मैं जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

'नींद आ रही है?' उन्होंने पूछा।

'आ तो रही है, लेकिन आपसे कम। आप रात दस बजे सो जाते हैं। राइट?' मैंने कहा।

'इसने मेरी नींद उड़ा दी है,' अंकल ने अपनी ड्रिंक की ओर इशारा करते हुए कहा। 'एक और चाहिए?'

'अंकल, बहुत देर हो गई है, मुझे ऑटो पकड़ना होगा। '

'तुम यहीं क्यों नहीं रुक जाते?' उन्होंने कहा।

'एक्सक्यूज़ मी' मैंने कहा।

'हां, मैं तुम्हें नाइट-क्लॉथ्स दे दूंगा। मेरे कपड़े तुम्हें फिट बैठने चाहिए,' उन्होंने कहा। इससे पहले एक बार मुझे अपनी गर्लफ्रेंड के पिता के कपड़े पहनने का बुरा अनुभव हो चुका था। यह कोई बहुत अच्छा आइडिया नहीं हो सकता, मैंने सोचा।

इससे पहले कि मैं कुछ कहता, अंकल ने हम दोनों के लिए एक और ड्रिंक तैयार कर दी।

'चाहो तो म्यूज़िक चेंज कर दो,' उन्होंने कहा।

मैं दराज में अनन्या की टेप्स टटोलने लगा। मुझे पिंक फ़्लॉयड का एक एल्बम मिला तो मैं ख़ुद को रोक न पाया। शराब का नशा फ़्लॉयड की मांग कर रहा था।

शाइन ऑन योर क्रेज़ी डायमंड का लंबा और अद्भुत ओपनिंग नोट कमरे में गूंजने लगा।

अंकल धीमी बीट्स पर अपने एक पैर से धीमे-धीमे थपकियां देने लगे। मैं सोचने लगा कि क्या वे इतनी मात्रा में अल्कोहल बर्दाश्त कर पाएंगे। मेरी इच्छा हुई कि मैं स्मोक करूं। नहीं, स्मोकिंग के बारे में सोचना भी मत, मेरे दिमाग़ ने मुझे सलाह दी। ऐसा मत सोचना कि तुम अभी अनन्या के साथ हो। अपना वर्स्ट-केस इमरजेंसी प्लान तैयार रखो। सोचो कि यदि अंकल ग़श खाकर गिर गए तो क्या होगा? तुम चेन्नई में एंबुलेंस कैसे बुलाओगे? तुम अनन्या की मां को यह सब कैसे समझाओगे?

ख़ैर, लग तो यही रहा था कि अंकल मज़े में हैं। वे सोफ़े पर बैठ गए और अपने पैर टेबल पर रख दिए। 'वर्मा ने मुझसे एक बात ऐसी कही थी, जिसे मैं कभी भूल नहीं पाऊंगा,' उन्होंने कहा।

मैंने सिर हिला दिया।

‘वर्मा ने कहा था: “स्वामीनाथन, तुम्हें पता है उन्होंने तुम्हें डिप्टी जीएम क्यों बनाया और मुझे जीएम बनाकर क्यों भेजा?’ ”
‘क्यों?’ मैंने पूछा। मैं इतनी शराब पी चुका था कि अब अपने को रोककर नहीं रख सकता था।
‘उसने कहा, “क्योंकि साउथ इंडियंस टॉप क्लास नंबर टू ऑफिसर होते हैं, लेकिन नंबर वन की पोजिशन पर कभी क़ामयाब नहीं हो सकते”,’ अंकल ने एक बड़ा सिप लेते हुए अपना सिर हिलाया। नशे की हालत में भी उनके भीतर का दर्द झलक रहा था। मुझे कुछ सूझा नहीं कि मैं क्या कहूं।
‘क्या तुम उसकी बात से सहमत हो?’ उन्होंने पूछा।
‘ओह, पता नहीं। मेरे बॉस साउथ इंडियन हैं,’ मैंने कहा।
‘हां, लेकिन तुमने अभी शुरूआत ही की है। शायद, वह सही है। हम साउथ इंडियंस लाइमलाइट में आना पसंद नहीं करते। मैं जानता हूं कि यह प्लान मुझे ही प्रेज़ेंट करना चाहिए, लेकिन मैं ऐसा करना नहीं चाहता।’
‘क्यों?'
‘क्योंकि नॉलेज दिखावे की चीज़ नहीं है। यदि मैं अच्छा काम करता हूं तो लोगों का ध्यान मेरे काम पर जाना चाहिए। मैं उस बेशर्म वर्मा की तरह अपना विज्ञापन नहीं कर सकता। '
मैंने सिर ज़रूर हिलाया, लेकिन उनसे सहमत होने से ज़्यादा उन्हें यह बताने के लिए कि मैंने उनकी बात सुन ली है। नशे में डूबे दो लोगों से बेहतर बुद्धिमत्ता का स्रोत और कोई दूसरा नहीं हो सकता।
‘ठीक है ना? '
‘डिपेंड करता है,’ मैंने कहा।
‘किस चीज़ पर?'
‘जब उन्होंने आपको जीएम नहीं बनाया तो क्या आपको बुरा लगा था?’ मैंने कहा। अंकल कुछ सेकेंड तक मेरी ओर देखते रहे। वे मेरे क़रीब आने के लिए आगे की ओर झुके। ‘मैं तुम्हें एक बात बताता हूं। तुम्हारा नाम क्या है?’ उन्होंने कहा।
ज़ाहिर है, मैं अभी तक किसी भी मायने में उनके क़रीब नहीं था। ‘क्रिश,’ मैंने कहा।
‘ऑफ़ कोर्स, सॉरी, ये व्हिस्की... एनीवे, क्रिश, मुझे ऑफ़र्स थे। दस साल पहले मुझे मल्टीनेशनल बैंक्स से ऑफ़र मिले थे। लेकिन मैं अपनी बैंक के प्रति वफादार बना रहा। और मैं धैर्य रखकर जीएम बनने का इंतज़ार कर रहा था। अब, मेरे रिटायरमेंट में पांच साल बचे हैं और उन्होंने इस रास्कल नॉर्थ इंडियन को भेज दिया। '
‘यानी आपको बुरा लगा था,’ मैंने कहा।
‘मुझे आज भी बुरा लगता है। मैंने यह अपनी वाइफ़ तक को नहीं बताया। शायद आज मैंने कुछ ज़्यादा ही पी ली है,’ उन्होंने कहा।
‘इट्स ओके। पॉइंट यह है कि यदि आपको अब भी बुरा लगता है तो आपको नंबर वन बनने की कोशिश करनी चाहिए और...’ मैंने अपने आपको रोक लिया।
‘क्या? कहो ना,’ उन्होंने कहा।
‘और यदि आपमें मार्केटिंग स्किल्स नहीं हैं, तो बेहतर होगा कि इसे स्वीकारिए, ज्ञान और नैतिकता का हवाला मत दीजिए। अगर आपने अच्छा काम किया है तो पूरी दुनिया को यह पता चलना चाहिए। इसमें चीपनेस और बेशर्मी क्या है?'
अंकल ने कोई जवाब नहीं दिया।
‘आई एम सॉरी,’ मैंने अपने आपको संभालते हुए कहा।
‘नहीं, तुम सही हो। मैं बेकार आदमी हूं,’ उन्होंने कहा। उनकी आवाज़ कांप रही थी। मुझे डर लगने लगा कि कहीं वे रो न पड़े।
‘मेरा वह मतलब नहीं था, देखिए, यह हमने बनाया है?’ मैंने अपने लैपटॉप की ओर इशारा करते हुए कहा।
‘तुम्हें लगता है इसे मुझे प्रेज़ेंट करना चाहिए? क्या मैं ऐसा कर पाऊंगा?’ उन्होंने पूछा।
‘यू विल किक एस,’ मैंने कहा।
‘क्या?’
‘सॉरी, मैं कह रहा था कि क्या आपको आइस चाहिए?'
उन्होंने अपना सिर हिला दिया।
‘वर्मा से कह दीजिए कि आप ही इसे प्रेज़ेंट करंगे। उसे एक कॉपी भी मत दीजिएगा। '
‘क्या मुझे उससे लड़ाई करनी पड़ेगी? '
‘हां, अगर आपको यह लड़ाई लगती है तो यही सही,’ मैंने कहा। ‘और आगे से याद रखिएगा कि लोगों को यह पता चलना चाहिए कि आप क्या काम कर रहे हैं। मेरे बॉस बाला को देख लीजिए। वह हर मामले में कंट्री मैनेजर को रिपोर्ट करता है। अगले महीने हम एक स्टुपिड लोकल कंसर्ट करने जा रहे हैं। बाला ने कंट्री मैनेजर को उसका फ़ूड मेनु तक अभी से बता दिया है। काम करना ज़रूरी नहीं है, लेकिन काम का दिखावा करना बहुत ज़रूरी है। कॉर्पोरेट्स इसी तरह काम करते हैं। सभी को पता है। '
अंकल ने सिर हिलाया और गहरी सोच में डूब गए। मैंने समय देखा। रात के दो बज चुके थे। मैं अपने आपको एक उबासी लेने से नहीं रोक पाया।
‘ओके, अब सो जाना चाहिए,’ अंकल ने कहा और खड़े हो गए। ‘रुको।’ वे अपने साथ एक लुंगी और एक बंडी ले आए। ‘इससे काम चलेगा? '
आप मज़ाक़ तो नहीं कर रहे, मैं कहना चाहता था, लेकिन मैंने कहा: ‘पेरफ़ेक्ट।’ अंकल ने मुझे गेस्टरूम दिखाया। मैं नाइट क्लॉथ्स अपनी गोद में रखकर बिस्तर पर बैठ गया।
अंकल मुझे रूम में छोड़कर जा रहे थे कि तभी दरवाज़े पर पहुंचकर उन्होंने पलटते हुए मुझसे पूछा: ‘तुम क्या बनना चाहते हो? सिटीबैंक का एमडी? '

‘राइटर,’ मैंने कहा।
‘एक्सक्यूज़ मी,’ उन्होंने कहा और उनका थका हुआ शरीर एक बार फिर सतर्क हो गया।
‘एमडी, कंट्री मैनेजर, आई डोंट केयर। वो मेरी दुनिया नहीं है,’ मैंने कहा।
‘क्या तुम बैंक छोड़ दोगे? '
‘एकदम से नहीं। पहले मैं कुछ सालों के लिए बचत करना चाहता हूं। '
‘और उसके बाद?’ तुम्हारे पैरेंट्स के बारे में क्या?’ उन्हें यह मंजूर है?'
‘देखा जाएगा। अब आपको सो जाना चाहिए, अंकल। आपको कल एक ज़रूरी प्रेज़ेंटेशन देना है,’ मैंने कहा।
‘अंकल ने मेन लाइट बंद की और बाहर चले गए। मैं बाथरूम गया, लेकिन लुंगी बांधने में मुझे बहुत अड़चन हुई। आखिरकार मैंने उसे अपने बेल्ट से मेरी कमर पर बांध दिया और बिस्तर पर लेट गया। मेरी पीठ को अठारह घंटों बाद आराम मिल रहा था। मैंने राहत की सांस ली। '
अंकल ने मेरा दरवाज़ा खटखटाया। वे भीतर आए और बत्ती फिर चला दी।
मैं फ़ौरन अपने बिस्तर पर उठ बैठा। ‘क्या?'
‘पानी,’ अंकल ने कहा और मेरे बिस्तर के पास पानी की एक बॉटल रख दी। ‘इसे पी जाओ, नहीं तो कल दफ़्तर में तुम्हारा सिर दर्द करेगा। '
‘थैंक्स,’ मैंने कहा।
‘इस लुंगी की वजह से तुम्हें कोई अड़चन तो नहीं हो रही है? मदद चाहिए?’
‘जी नहीं, मैं ठीक हूं,’ मैंने कहा और बेल्ट को कसकर भींच लिया।
‘गुड नाइट,’ अंकल ने एक बार फिर बत्ती बुझाते हुए कहा।
‘गुड नाइट, सर,’ मैंने कहा और फिर अगले दस मिनट तक मैं खुद को कोसता रहा कि आखिर मैंने उन्हें सर क्यों कहा।

29

'तीन लाख!' कंसर्ट स्टीयरिंग कमेटी की मीटिंग के दौरान बाला मानो एक झटके से उछल ही पड़ा। जी हां, बाला के अनेक बेहतरीन वैल्यू एडिशन्स में से एक यह भी था कि हर चीज़ के बारे में इस तरह बात करो, जैसे वह बहुत महत्त्वपूर्ण हो। सीएससी या कंसर्ट स्टीयरिंग कमेटी भी उसी ने बनाई थी और यह नाम इतना महत्त्वपूर्ण लगता था कि मैं इसे अपने रेज़्यूमे में भी दर्ज कर सकता था।

लेकिन फिलहाल हमारे सामने एक समस्या थी। जब सिंगर्स के लिए इंचार्ज नियुक्त की गई महिला ने अपनी रिपोर्ट दी तो सभी चुप्पी साधे रहे। 'आप तीन सेलेब्रिटी सिंगर चाहते हैं, सर,' माधवी ने कहा, जो कि थुलथुल बदन वाली एक चश्मीश थी और उसे देखकर लगता था मानो वह किसी स्कूल निरीक्षक और आईसीयू नर्स की मिली-जुली पैदावार हो।

'लेकिन उन्हें इतना ज़्यादा पेमेंट कैसे किया जाएगा?' बाला ने कहा। जाने क्यों, बाला को लगता था कि ज़रूरत से ज़्यादा पेमेंट पाने का हक़दार केवल वही है, और कोई नहीं। 'उनका एक बैंड होता है, सर, और उनके साथ बैक-अप सिंगर्स भी होते हैं,' माधवी ने कहा।

कमरे में मौजूद सभी लोगों ने सहमति में सिर हिला दिया।

लेकिन बाला ने असहमति में सिर हिलाया। 'हमें बैक-अप सिंगर्स क्यों चाहिए? क्या कंसर्ट के दौरान मेन सिंगर्स ग़श खाकर गिर पड़ेंगे? '

कोई नहीं हँसा।

'बैक-अप का मतलब है कोरस, सर,' माधवी ने कहा।

बाला पर इसका कोई असर नहीं हुआ।

'कोरस वह लोग होते हैं, जो लव सॉन्ग्स में आ आ आ करते हैं, सर,' एक अन्य एजेंट रेणुका ने कहा।

'मुझे पता है कोरस क्या होता है,' बाला ने मेज़ पर मुक्का मारते हुए कहा। 'लेकिन यह बहुत ज़्यादा है। '

'हम फ़ूड में कटौती कर सकते हैं,' एक एजेंट ने कहा। उसे इतनी सारी डर्टी लुक्स मिलीं, जितनी बस में लड़की छेड़ने वाले किसी शोहदे को भी न मिलती होंगी। उसने फ़ौरन अपना सुझाव वापस ले लिया।

'हम कम मशहूर सिंगर्स को क्यों नहीं बुला सकते?' मैंने पूछा।

'लेकिन यह सिटीबैंक का इवेंट है। यदि हम बी-ग्रेड सिंगर्स को बुलवा लेंगे और कल से एचएसबीसी ए-ग्रेड सिंगर्स के साथ एक इवेंट कर लेगा तो हमारा तो बेड़ा ही ग़र्क हो जाएगा ना,' बाला ने कहा।

'सर, वेन्यू...' एक एजेंट, जो अपने पूरे कैरियर के दौरान कभी किसी बैठक में नहीं बोला था, ने अपना मुंह खोला ही था कि उसकी बात को बीच में ही काट दिया गया।

'वेन्यू फ़ाइव-स्टार ही होना चाहिए,' बाला ने कहा।

'इन तीनों में से टॉप सिंगर कौन है?' मैंने पूछा।

'हरिहरन,' एक एजेंट ने कहा।

'नहीं, एसपी बालासुब्रमण्यम,' दूसरे ने कहा।

आमतौर पर शांतिप्रिय तमिलों के बीच जंग छिड़ गई। अगर बात संगीत की हो तो वे एक-दूसरे की जान लेने को भी उतारू हो सकते थे।

'कोई हैसियत नहीं। एसपी के सामने हरि की कोई हैसियत नहीं है,' माधवी भावुक होकर चिल्लाई।

'सुचित्रा? आप सुचित्रा को भूल गईं?' एक अन्य एजेंट ने अपनी मौजूदगी दर्ज कराई। बाला उठ खड़ा हुआ। दुनियाभर में होने वाली कॉर्पोरेट मीटिंग्स की तरह यह मीटिंग भी बिना किसी नतीजे पर पहुंचे ख़त्म हो गई थी। 'मैं सीधी-सीधी बात कह रहा हूं कि हम इतना ख़र्चा नहीं कर सकते। वेन्यू, फ़ूड और एडवरटाइजिंग पर पहले ही चार लाख रुपया ख़र्च हो रहा है,' बाला ने कहा।

'एडवरटाइजिंग?' मैंने पूछा।

'हम द हिंदू में आधे पेज का एड दे रहे हैं,' बाला ने कहा।

एजेंट्स ने अपनी-अपनी फ़ाइलें बन्द कर लीं और जाने के लिए तैयार होने लगे।

'यह इंविटेशन-ओनली इवेंट है। है ना?' मैंने कहा।

'एग्ज़ैक्टली। एड में यही बताया जाएगा। इवेंट में केवल हमारे कस्टमर्स को ही इनवाइट किया जाएगा। बहरहाल, एड से यह भी होगा कि उनके दोस्तों और नाते-रिश्तेदारों को जलन होगी। '

'और यही सिटी का एडवांटेज है,' मैंने कहा।

'एग्ज़ैक्टली।' बाला ने मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा।

'तो, डैड खुश हैं ना?' मैंने ऑटो में अनन्या से पूछा।

'यू बेट। डैड रोज़ डिनर के समय प्रेज़ेंटेशन की ही बात करते हैं। और अब वे हेड ऑफिस में यही प्रेज़ेंटेशन देने दिल्ली गए हैं। कैन यू बिलीव इट?' अनन्या ने कहा।

'वॉव!' मैंने कहा। ऑटो ने हमें अपने मुक़ाम पर पहुंचा दिया था।

हम टी नगर में रत्ना स्टोर्स में आए थे। मुझे अपने होस्टल के लिए स्टील की प्लेट्स ख़रीदनी थीं। मुझे चार प्लेट्स चाहिए थीं और रत्ना स्टोर्स में चालीस लाख प्लेट्स होंगी। इस इमारत की हर दीवार, छत कोना, शेल्फ़, रैक वग़ैरह-वग़ैरह स्टील के चमकीले बर्तनों से लदी हुई थी। यदि स्टोर में सीधे धूप घुस जाए तो आप उसमें उसी तरह जलकर राख हो सकते थे, जैसे मैग्नीफ़ाइंग ग्लास के नीचे किसी चींटी का भुर्ता बन जाता है। मैं सोचने लगा कि आखिर यह स्टोर किस तरह अपने सामान का हिसाब-किताब रखता

होगा।

‘तुम इनमें से अपने लिए प्लेट्स कैसे चुन सकती हो?’ प्लेट्स सेक्शन के क़रीब पहुंचने पर मैंने अनन्या से पूछा।

अनन्या ने एक अटेंडेंट को अपने हाथों से इशारा करके बताया कि उसे कितनी लंबी-चौड़ी प्लेट्स चाहिए।

‘सीरियसली, डैड की मदद करने के लिए थैंक्स। मुझे लगता है वे अब तुम्हें पसंद करने लगे हैं,’ उसने कहा।

‘लेकिन उतना नहीं, जितना वे हरीश को पसंद करते हैं। अलबत्ता मैंने उसकी व्हिस्की ज़रूर पी डाली। '

‘क्या?’ अनन्या ने कहा।

मैंने अनन्या को हमारे ड्रिंक सेशन के बारे में बताया।

‘तुमने बिस्तर में उनकी क्या पहनी थी?’ मेरी कहानी ख़त्म होने पर उसने हैरानी से पूछा।

‘लुंगी,’ मैंने कैशियर के काउंटर पर भुगतान करते हुए कहा। ‘इसमें इतना हैरान होने वाली क्या बात है। लुंगी बहुत कंफ़र्टेबल होती है। '

अनन्या की भौंहें तन गईं।

‘लेकिन मैंने यह सब तुम्हारे लिए किया।’ मैंने उसकी आँखों में झांकते हुए कहा। वह आगे बढ़ी और इसके बावजूद कि हमारा रिफ़्लेक्शन आसपास के पांच सौ फ्राइंग पैन्स में देखा जा सकता था, उसने मुझे चूम लिया। स्टोर में मौजूद सभी तमिल हाउसवाइव्ज़ ने हैरत से हमारी ओर देखा।

‘अनन्या,’ पीछे से एक महिला की आवाज़ आई।

अनन्या ने पीछे मुड़कर देखा। ‘फ़क, चित्रा आंटी,’ अनन्या ने अपना चेहरा छुपाने के लिए स्टील की एक बड़ी-सी ट्रे उठाते हुए कहा। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी और चित्रा आंटी हमारी ओर चली आ रही थीं।

‘चित्रा कौन?’ मैंने पूछा।

‘चित्रा आंटी हमारी लेन में रहती हैं। वे मॉम के साथ कर्नाटिक गायन करती हैं,’ अनन्या ने ट्रे के पीछे से कहा।

‘वैसे, मैंने कर्नाटिक संगीत की सीडीज़ भी ख़रीदी थीं,’ मैंने कहा।

‘क्या?’ उसने कहा।

‘नेवर माइंड, हैलो आंटी,’ मैंने चित्रा आंटी से कहा, जो तब तक हमारे क़रीब आ चुकी थीं।

‘क्रिश,’ अनन्या ने कहा। ‘कॉलीग? '

‘रियली, किस तरह का कॉलीग?’ चित्रा आंटी ने दिलेरी से पूछा।

‘अब मुझे चलना चाहिए,’ मैंने कहा और अपनी प्लेट्स उठा लीं। ‘हमें डिनर से पहले इनकी ज़रूरत होगी। '

देर रात को अनन्या ने मुझे फ़ोन लगाया। तब तक मैं स्टील की नई प्लेट्स में अपना पहला डिनर कर चुका था।

‘सब कुछ ओके?’ मैंने पुछा।

‘थोड़ा-बहुत,’ अनन्या ने कहा। ‘लेकिन वे मॉम को ज़रूर बताएंगी। वैसे भी उनके बीच में कांपीटिशन है। गुरुजी ने चित्रा आंटी को अपनी शिष्या बना लिया था, लेकिन मॉम को नहीं। '

‘और फिर? '

‘कुछ नहीं। मैं मां से कह दूंगी कि वे बढ़ा-चढ़ाकर कह रही हैं। क्या मैं इतनी पागल हूं कि रत्ना स्टोर्स में किसी को किस करूंगी?’ उसने कहा।

‘तुम इतनी पागल तो हो,’ मैंने हँसते हुए कहा।

‘हां, लेकिन केवल तुम यह जानते हो। '

‘मैंने बहुत मेहनत करके तुम्हारे डैड का विश्वास जीता है, मैं अपनी मेहनत को बर्बाद नहीं होने दे सकता,’ मैंने कहा।

‘अब तुम्हें केवल मॉम की फिक्र करनी है। मंजू और डैड अब ओके हैं। '

‘कैसे? '

‘पता नहीं। मैंने मॉम को कह दिया है कि तुम कल डिनर के लिए आ रहे हो।’

‘क्यों?'

‘एक ज़ाहिर वजह तो ये है कि तुमने डैड की जो मदद की, उसके लिए हम तुम्हें थैंक करना चाहते हैं। हम चित्रा आंटी से पहले ही मॉम को बता देंगे कि हम रत्ना स्टोर्स गए थे। ऑफ़ कोर्स, हम कुछ बातें गोल कर जाएंगे। '

‘तुम्हें वहां मुझे किस नहीं करना चाहिए था। तुमने ऐसा क्यों किया? '

‘क्योंकि मैं ख़ुद को रोक नहीं पाई। कभी-कभी तुम्हें देखकर मैं ख़ुद को क़ाबू में नहीं रख पाती हूं,’ अनन्या ने कहा।

अनन्या की यह बात सुनकर एक पल को मेरा दिल धक से रह गया। ऑल राइट, मिसेज़ स्वामीनाथन, अगर आपकी बेटी मुझे देखकर ख़ुद को क़ाबू में नहीं रख पाती तो आप भी मेरे जादू से बच नहीं पाएंगी।

'एक्सीलेंट प्रेज़ेंटेशन, दिल्ली में डैड से बोर्ड ने यही कहा। अब उन्होंने सभी जोनल ऑफिसेस से कहा है कि वे भी ऐसे ही प्रेज़ेंटेशन बनाएं,' अनन्या ने उत्साह भरी आवाज़ में कहा।

हम डिनर के लिए फ़र्श पर बैठे थे। अनन्या की मा चुप्पी साधे रहीं। वे रसम

की एक पतीली में कड़छी घुमा रही थीं। उन्होंने एक भी शब्द कहे बिना मुझे रसम परोसा।

'आप ठीक तो हैं ना, मॉम?' अनन्या ने कहा।

'क्या तुम इसके साथ रत्ना स्टोर्स गई थीं?' अनन्या की मां ने मेरी ओर इशारा करते हुए कहा।

'ओह शिट, चित्रा आंटी एक दिन भी सब्र न रख पाईं,' अनन्या ने कहा। उसके हाथ दाल और चावल को मिक्स कर रहे थे।

'अक्का, डिनर टेबल पर गंदे शब्दों का यूज़ मत करो,' मंजू ने कहा।

'मंजू, तुम चुपचाप खाओ। मैं मॉम से बात कर रही हूं,' अनन्या ने कहा।

'वह सही कह रहा है। इस घर में हम इस तरह बात नहीं करते। हम इस तरह की हरकतें नहीं करते, जैसी तुम करती हो,' अनन्या की मां ने कहा। फिर वे अपनी पत्तल के चावल में सब्जिया डालकर उसे गुस्से से चूरने लगीं।

'मैंने क्या किया, मॉम? क्रिश को स्टील प्लेट्स चाहिए थीं। उसे कैसे पता चलता कि अच्छी स्टील प्लेट्स कहां मिलती हैं, तो मैं उसे रत्ना स्टोर्स ले गई। '

'और स्टोर में जाकर तुमने चीप हरकतें कीं?' अनन्या की मां ने कहा।

'कौन-सी चीप हरकतें, मॉम?' मंजू ने पूछा।

'मंजू, जाओ अपनी फिजिक्स की किताबें पढ़ो,' अनन्या ने हुक्म सुनाते हुए कहा।

'लेकिन मैं पहले ही फिजिक्स को रिवाइज़ कर चुका हूं,' मंजू ने कहा।

'तो मैथ्स या केमिस्ट्री पढ़ो, लेकिन फ़ॉर गॉड्स सेक, यहां से जाओ।' अनन्या की गुस्सेभरी निगाहें कारगर साबित हुईं। मंजू ने अपनी पत्तल उठाई और उसे अपने कमरे में ले गया।

'समथिंग समथिंग चीप समथिंग...' अनन्या की मां कुछ कह रही थीं कि अनन्या ने उन्हें टोक दिया।

'मॉम, क्रिश को तमिल नहीं आती। प्लीज़, अंग्रेज़ी में बात करो,' अनन्या ने कहा।

अनन्या की मां कुछ देर रुकीं और फिर उन्होंने बोलना शुरू कर दिया: 'तुम अपने भाई को क्यों बाहर भेज रही हो जबकि तुम्हें खुद सबके सामने चीप हरकतें करने में शर्म नहीं आती? '

'मैंने कोई चीप हरकत नहीं की। '

'तो क्या चित्रा झूठ बोल रही है? '

'मैंने बस क्रिश को एक छोटा-सा किस किया था। '

'किसिंग!' अनन्या की मा ने कुछ यूं कहा, जैसे अनन्या ने किसी नशीली दवाई का नाम ले लिया हो।

'मॉम, इतनी हायपर मत होओ। ये मेरा बॉयफ्रेंड है। यू अंडरस्टैंड? '

'और तुम मेरी बेटी हो, डू यू अंडरस्टैंड? तुम कम्मुनिटी में हमारे नाम पर बट्टा लगा रही हो, डू यू अंडरस्टैंड? मैंने तुम्हें पाला-पोसा, तुम्हें पढ़ाया, तुम्हारे लिए जाने कितनी कुर्बानिया दीं, डू यू अंडरस्टैंड? '

पता नहीं, मां और बेटी कुछ समझ पाई या नहीं, लेकिन मैं ज़रूर यह समझ गया कि यहां से खिसकने का समय आ गया है। मैं उठ खड़ा हुआ।

'कहां जा रहे हो?' अनन्या ने मुझसे पूछा।

'हाथ धोने,' मैंने सबूत के तौर पर दही में लथपथ अपने हाथ दिखाते हुए कहा।

'मेरे हाथ भी तो ख़राब हो रहे हैं। यहीं रुको,' अनन्या ने आदेश सुनाया।

'तुम्हें पता नहीं, तुम्हारे कारण मुझे क्या झेलना पड़ा है,' अनन्या की मां ने कहा। वे एकदम से उठीं, अपनी पत्तल उठाई और कमरे से बाहर चली गईं।

अनन्या ने ठंडी सांस छोड़ी।

'रसम अच्छा बना था: तीखा और ज़ायकेदार,' मैंने कहा।

'आपने तो कहा था कि आप मेरा अहसान कभी न भूलेंगे,' मैंने कहा। मैं बाला के ऑफिस में बैठा था। उसकी दोनों कोहनियां डेस्क पर टिकी हुई थीं और वह अपनी सभी दस अंगुलियां अपने तेल सने बालों में फिरा रहा था।

'लेकिन कैसे?' बाला ने कहा।

'आपने कहा था कि आपका बजट बिगड़ रहा है। मेरे पास एक सिंगर है। फ्री।'

मैं पेपरवेट से खेलता रहा। जब मैं बाला के साथ अकेला होता था तो मैं उससे बराबरी से ही पेश आता था।

'कौन?' उसने कहा।

'राधा स्वामीनाथन, उभरती हुई गायिका। '

'रियली? कभी उन्हें सुना तो नहीं,' बाला ने कहा

'वे अभी परदे के पीछे ही हैं। उन्होंने कर्नाटिक संगीत की शिक्षा ली है। '

'लेकिन ये तो पॉपुलर म्यूज़िक का कंसर्ट है। इसमें गाने के साथ डांस भी होगा। '

‘बाला, कर्नाटिक सिंगर्स के लिए पॉपुलर गाना बाएं हाथ का खेल है। आप यह जानते हैं। '
‘वे अच्छा गाती हैं? तुमने सुना है उन्हें?'
‘थोड़ा-बहुत। '
‘यानी? '
‘हां, सुना है। वे अच्छा गाती हैं। फिर हमारे पास पहले ही हरिहरन और एसपी हैं, हम बाजी मार लेंगे।’
बाला खड़ा हो गया और अपनी खिड़की के पास चला गया।
‘इज़ शी हॉट?’ बाला ने पूछा, ‘देखने में गुड-लुकिंग है? '
‘वो मेरी गर्लफ्रेंड की मां हैं। मुझे उनकी बेटी ज़रूर गुड-लुकिंग लगती है। '
‘क्या?’
‘मेरे लिए यह बहुत ज़रूरी है बाला। मेरी लव लाइफ़ मुश्किल दौर से गुज़र रही है। यदि मैंने जल्द ही कुछ ख़ास नहीं किया, तो मुझे हमेशा-हमेशा के लिए अपनी गर्लफ्रेंड को गुडबाय किस करना होगा। सिस्को का एक लड़का पहले ही उसके लिए लाइन लगाए हुए है, ताज़े नारियल तेल की तरह शुद्ध। '
‘तुम्हारी गर्लफ्रेंड तमिल है?'
‘हां, ब्राह्मण। '
‘आयंगर या... '
‘अय्यर, लेकिन क्या इससे कोई फ़र्क पड़ता है?'
‘नहीं, बाला ने कहा और अपनी सीट पर लौट आया। ‘अब मैं समझा कि तुम चेन्नई क्यों आए। '
‘यदि इस पॉइंट को छोड़ दिया जाए कि मैं आपके सरीखे एक फ़ाइनेशियल विज़ार्ड के साथ काम करने के लिए मरा जा रहा था तो,’ मैंने कहा।
‘क्या?’
‘कुछ नहीं। तो क्या आप ऐसा करेंगे? '
‘क्या?’
‘सिंगर्स के नाम फ़ाइनल करना: हरिहरन, एसपी और न्यू टैलेंट राधा। '
‘एजेंट्स क्या कहेंगे? हमारी एक कमेटी है। '
‘कमेटी में बैठा हर आदमी आपके लिए काम करता है। '
‘लेकिन फिर भी,’ बाला ने कहा। वह गहरी सोच में डूबा हुआ था।
‘आप सोचिए,’ मैंने कहा। ‘मुझे थोड़ा काम है। मैंने एक अरसे से अपना मेलबॉक्स
साफ़ नहीं किया है। मेरे पास अब भी आपके वे ईमेल्स हैं, जिनमें आपने मुझे उन इंटरनेट स्टॉक्स को खपाने के लिए कहा था। मुझे उन्हें डिलीट कर देना चाहिए, है ना?’ बाला मुझे देखता रह गया। मैं बाहर जाने के लिए मुडा। ‘देखिए, यह पर्सनल नहीं है,’ मैंने कहा, ‘लेकिन यह मेरे होने वाले बच्चों का सवाल ज़रूर है। '

31

‘आंटी, मैं आ सकता हूं? मैंने कहा।

अनन्या की मां ने मुझे जालीदार दरवाज़े से देखा। उन्होंने नाइटी पहन रखी थी और उनकी आखें उनींदी थीं। मैंने उनकी दोपहर की नींद डिस्टर्ब कर दी थी।

मैंने अपने एजेंट्स से कह दिया था कि मैं लंच के समय बाहर रहूंगा और मुझे देर हो जाएगी। उनके घर पर आने से पहले मैं ग्रैंड स्वीट्स पर रुका था और वहां से दो किलो मैसूर पाक बंधवा लाया था।

आंटी ने दरवाज़ा खोल दिया। मैं भीतर चला आया। वे कपड़े चेंज करने भीतर चली गईं। जब तक वे लौटतीं, मैं द हिंदू के पन्ने पलटता रहा।

‘अंकल लौट आए हैं?’ मैंने पूछा।

‘वे पिछली रात ही लौटे।’ उन्होंने जमुहाई लेते हुए कहा। ‘लेकिन अभी वे ऑफिस में हैं। '

‘आपकी नींद में खलल डालने के लिए सॉरी,’ मैंने कहा और मिठाइयों का डिब्बा उनकी ओर बढ़ा दिया।

‘यह क्या है? '

‘उस रात डिनर के दौरान जो कुछ हुआ, मैं उसके लिए माफ़ी मांगना चाहता था। ‘आंटी चुप रहीं और कॉफ़ी टेबल को ताकती रहीं।

‘मैं रत्ना स्टोर्स वाली घटना के लिए भी माफ़ी मांगता हूं। लेकिन मैं आपको यक़ीन दिलाता हूं कि हमने कोई चीप हरकत नहीं की थी,’ मैंने कहा।

‘चित्रा के पेट में कोई बात नहीं टिकती,’ उन्होंने कहा। ‘उसने अभी तक पूरे मयलापुर को बता दिया होगा। '

‘मैं समझ सकता हूं। हम पंजाबियों में भी कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो दूसरों की ज़िंदगी में दख़लअंदाज़ी करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। '

आंटी ने मेरी बातों पर ध्यान नहीं दिया। वे मिठाइयों को फ्रिज में रखने के लिए भीतर चली गईं। वे अपने साथ एक गिलास पानी और फ़ैमिली डिश लेकर लौटीं। वही स ख्त, खस्ता और घुमावदार स्नैक, जिसमें कोई स्वाद नहीं था।

मैंने एक स्नैक लिया। उसे चबाने की कोशिश में मेरे दांत दर्द करने लगे। मैंने चुपके से उसे अपने मुंह से निकाला और मुंह चलाने का अभिनय करने लगा, ताकि उन्हें लगे कि मैं उनकी डिश खा रहा हूं। एक अजीब-सी चुप्पी भरा एक मिनट बीता।

‘आंटी, मैं आपको ये दिखाना चाहता था,’ मैंने कहा और अपना बैग खोला। मैंने कर्नाटिक म्यूज़िक की सीडीज़ निकालीं और उन्हें दीं।

‘टीएस सुब्रमणियन? ये किसकी हैं?'

‘मेरी। '

‘क्या?’

‘मैं अपना टेस्ट डेवलप करने की कोशिश कर रहा हूं। मैं कर्नाटिक म्यूज़िक सीख रहा हूं, लेकिन बहुत कठिन है। उसमें स्वर, राग होते हैं, श्रुतियां होती हैं। '

‘तुम श्रुतियों के बारे में जानते हो?'

‘केवल बुनियादी बातें। मैं आपकी तरह एक्सपर्ट तो हूं नहीं। '

उन्होंने मेरी सीडीज़ लौटा दीं और एक टेढ़ी मुस्कान मुस्करा दीं। ‘चेन्नई में मेरी कोई हैसियत नहीं है। यहां तो चित्रा भी मुझसे आगे है। हालांकि लोग कहते हैं कि वह चेन्नई के कॉर्पोरेटर को अच्छी तरह जानती है। उसी ने गुरुजी से कहा था कि वे चित्रा को अपनी शिष्या स्वीकारें। कॉर्पोरेटर के पास कचेरी के आयोजन स्थलों का चार्ज है, इसलिए गुरुजी को उसकी बात माननी ही पड़ी। तुम सोच भी नहीं सकते वह कितनी छिछोरी महिला है। '

‘दूसरे गुरु भी तो होंगे,’ मैंने कहा।

‘मैं भी एक बेहतर गुरु से सीखने के लिए तैयार थी। एनीवे, आई एम सॉरी। उस दिन मैंने ओवररिएक्ट कर दिया था। '

‘नहीं, नहीं, आपको माफ़ी मांगने की ज़रूरत नहीं है। माफ़ी मांगने तो मैं आया था। और साथ ही एक छोटी-सी रिक्वेस्ट करने भी। '

‘रिक्वेस्ट? तुम मुझसे क्या रिक्वेस्ट करोगे, तुम नौजवान लोग तो जो मन आए वही करते हो, ख़ैर। '

‘नहीं, मैं अनन्या और मेरे बारे में नहीं, हमारे सिटीबैंक के कंसर्ट के बारे में बात कर रहा हूं। '

अगले आधे घंटे तक मैं उन्हें उस इवेंट के बारे में समझाता रहा। मैंने उन्हें फिशरमैन्स कोव के बारे में बताया। मैंने उन्हें बताया कि चेन्नई के कौन-कौन-से लोग वहां मौजूद रहेंगे। साथ ही मैंने उन्हें यह भी बताया कि दो घंटे के कंसर्ट में तीन लोग गाएंगे और मैं चाहता हूं कि उनमें से एक वे हों।

‘मैं?’ वे शॉक्ड रह गईं।

‘जी हां,’ मैंने कहा।

‘मैंने कभी पॉपुलर गाना नहीं गाया,’ उन्होंने कहा।

‘देखिए, आपने संगीत की शिक्षा ली है। एमटीवी चालू कीजिए और देखिए लेटेस्ट चार्टबस्टर्स कौन-कौन-से हैं। तीन गाने कॉलीवुड के, तीन गाने बॉलीवुड के, बस हो गया काम। '

‘लेकिन मैं ही क्यों?’ उन्होंने पूछा। वे अब भी रोमांचित थीं।

‘वास्तव में हमें अच्छे सिंगर्स की सख़्त ज़रूरत है। हमें तीन सिंगर्स चाहिए थे, लेकिन हमें केवल दो ही मिले। अब मुझे यह

ज़िम्मेदारी सौंपी गई है कि मैं तीसरे सिंगर को खोजूं। ऐसे में मेरी तरक़्क़ी अब आपके ही हाथों में है। '

'बाक़ी दो सिंगर्स कौन हैं?'

'वे ज़रा जाने-माने सिंगर्स हैं, इसलिए भी हम चाह रहे थे कि तीसरी आवाज़ नई और ताज़ी हो, ताकि कंसर्ट में बैलेंस रहे। '

'कौन हैं वे जाने-माने सिंगर्स?'

'हरिहरन और एसपी बालासुब्रमणियम,' मैंने कहा।

आंटी का मुंह खुला का खुला रह गया। वे उठीं और कमरे से चली गईं। मैं भी उनके पीछे-पीछे किचन में चला आया। 'आंटी, ये बहुत आसान है? यह कोई पब्लिक कंसर्ट नहीं है। '

आंटी ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने स्टोव पर एक फ्राइंग पैन रख दिया और उसमें तेल डाल दिया। तेल गर्म होने पर उन्होंने उसमें राई और कड़ी पत्ते डाल दिए। तड़के की गंध पूरे कमरे मैं फैल गई। मैं दो बार खांसा।

'देखो, मैं दिन भर यही करती हूं। खाना पकाना। मैं परफ़ॉर्म नहीं करती। मैं अभी एमेच्योर हूं। मैं हरिहरन और एसपी के सामने बैठ भी नहीं सकती, उनके साथ स्टेज शेयर करना तो दूर की बात है। '

'ये एक फ़न इवेंट है, कांपीटिशन नहीं। वे दोनो आपके बाद ही गाएंगे। '

उन्होंने कतरे हुए प्याज़ पैन में डाल दिए। मेरे गले के साथ ही मेरी आखें भी चलने लगीं। 'आंटी, आपने इससे पहले कभी स्टेज पर परफ़ॉर्म किया है?'

'नहीं। अरे हां, जहां-जहां अनन्या के पापा की पोस्टिंग होती थी, वहां के तमिल संगम इवेंट्स में मैंने दो-एक बार गाया है। लेकिन ये तो फ़ाइव स्टार होटल है, हाई सोसायटी, हरिहरन... हरिहरन जैसा गायक तुम्हारे लिए गा रहा है, तुम्हें मेरी ज़रूरत भला क्यों आन पडी। '

'प्रोफ़ेशनल सिंगर्स हमारे इवेंट को बहुत कॉमर्शियल बना देंगे। हम अपने क्लाइंट्स को होम फ़ीलिंग देना चाहते हैं। आपके होने से तो उन्हें और अच्छा लगेगा,' मैंने कहा।

आंटी ने सिर हिला दिया। मैं उन्हें तब तक राज़ी करने की कोशिश करता रहा, जब तक कि उन्होंने पूरा डिनर नहीं तैयार कर लिया: टोमेटो रसम, लेमन राइस और फ्राइड भिंडी। मैं उन्हें खाना बनाते देख रहा था और अब मैं भी रसम बना सकता था। ख़ैर, मैं अभी तक उन्हें राज़ी नहीं कर पाया था।

'तुम यह सब क्यों कर रहे हो? तुमने माफ़ी मागी थी और मैंने तुम्हें माफ़ कर दिया था। है ना?'

'मैं इसके लिए यह नहीं कर रहा हूं। '

'फिर क्यों?' उन्होंने प्लेट्स से डिशेस ढांक दीं।

'मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूं, क्योंकि मुझे लगता है कि आप बहुत अच्छा गाती है।'

'तुम्हें कैसे पता? '

'क्योंकि मुझे यह अनन्या ने बताया है। उसने मुझे यह भी बताया कि आप लंबे समय से संगीत का प्रशिक्षण लेती आ रही हैं। और मैं उसकी बात पर भरोसा करता

हूं।'

उन्होंने मेरी ओर देखा।

'अब मुझे यह मत कहिएगा कि यह आइडिया आपको एक्साइट नहीं कर रहा है। ज़रा-सा भी नहीं।' मैंने कहा। हम फिर लिविंग रूम में चले आए थे।

'ऑफ़ कोर्स, यह मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती।'

'ऐसा मत कहिए कि आप नहीं कर सकतीं। कम ऑन। हम इसे सरप्राइज़ रखेंगे। हम अंकल को नहीं बताएंगे। हम अनन्या को भी नहीं बताएंगे, यदि आप चाहें।'

हम सोफ़े पर बैठ गए। मैंने व्हिस्की बॉटल को देखा। उसमें उतनी ही शराब थी, जितनी हमने उस रात छोड़ी थी।

'ओके, एक डील करते हैं। आप अभी तो हां कह दीजिए। जब अंकल और अनन्या घर पर न हों तो आप गाने की तैयारी कीजिए। यदि कंसर्ट के दिन भी आप कहेंगी कि मैं नहीं गाना चाहती तो मैं कोई दूसरा बंदोबस्त कर लूंगा। और यदि आप गाना चाहती हैं तो एक बार कोशिश करके तो देखिए। ठीक है?'

'मैं अंत में घबराहट के मारे ना ही कहूंगी,' उन्होंने कहा।

'मैं एक चांस लेता हूं। प्लीज़,' मैंने कहा।

उन्होंने दस सेकंड का समय लिया और फिर अंत में धीमे से सिर हिलाकर हां कह दिया। मैं उत्साह में सोफ़े से उछल पड़ा। 'कूल। तो आपकी प्रैक्टिस शुरू होती है अब,' मैंने कहा और टीवी चालू कर उसमें एमटीवी लगा दिया।

'ये कौन-से गाने हैं?' उन्होंने एमटीवी पर चल रहे गाने को देखकर पूछा। गाने में दो सौ साउथ इंडियन डांसर्स चीन की दीवार पर नाच रहे थे।

'मैं आपको बाद में सब कुछ समझा दूंगा। लेकिन अभी मुझे ऑफिस चलना चाहिए,' मैंने कहा। 'द सिटी नेवर स्लीप्स, लेकिन सिटी को ऑफिस बंक भी नहीं करना चाहिए।' अनन्या के घर से निकलते ही मैंने मारे खुशी के हवा में ज़ोर से मुक्का लहरा दिया।

जो लोग आपके बहुत क़रीब होते हैं, वे ही आपको सबसे ज़्यादा डिस्टर्ब कर देने की ताक़त भी रखते हैं। मुझे पापा के उस पत्र को फाड़कर फेंक देना था, लेकिन इसके बजाय मैंने उसे तीन बार पढ़ा।

बेटे,

मैं जानबूझकर तुम्हें प्यारे बेटे नहीं लिख रहा हूं, क्योकि मुझे नहीं लगता कि मैं अब तुम्हें अपना प्यारा बेटा कह सकता हूं। जिस दिन तुमने अपने बाप की इज़्ज़त करनी बंद कर दी, उसी दिन मैं समझ गया था कि तुम ग़लत रास्ते पर आगे बढ़ रहे हो। मुझे पूरा यक़ीन है कि तुम्हें वह दिन याद होगा। तब से आज तक तुमने मुझसे कोई बात नहीं की है।

मुझे पता चला है कि चेन्नई में एक लड़की के साथ तुम्हारा चक्कर चल रहा है। मुझे पूरी बातें तो नहीं पता। मुझे तुम्हारी मां की बातों से बस इतना ही पता चल सका, जो कि वे अपने नाकारा नाते-रिश्तेदारों को बता रही थीं।

तुम्हारे लिए लड़की ढूंढना हमारा काम होना चाहिए, तुम्हारा ख़ुद का नहीं। क्योंकि तुम एक ऐसे रास्ते पर आगे बढ़ रहे हो, जहां आगे चलकर तुम लो कैरेक्टर के इंसान बनने वाले हो। तुम्हारी मां और उनके सगे-संबंधियों से तुम्हें ऐसे संस्कार मिले है कि तुम्हें शायद यह पता नहीं चल पाएगा कि तुम्हारी हरकतें कितनी घटिया और वाहियात हैं।

लेकिन तुमने अपने इरादे मुझसे छुपाए, इससे तो यही पता चलता है कि कहीं न कहीं अपनी हरकतों के लिए तुम भी ख़ुद को शार्मिंदा महसूस करते हो।

बदनसीबी से,
तुम्हारा बाप।

मैंने दसवीं बार अपनी सोने की पोजिशन बदली। मैं सो जाना चाहता था, लेकिन नींद मेरी आँखों से कोसों दूर थी। भूल जाओ, वे बस तुम्हें उकसाना चाहते हैं, मैंने एक बार फिर खुद से कहा। जल्दी से सो जाओ, अभी!-मैंने अपने आपको फटकारते हुए कहा। नींद के साथ एक विचित्र बात यह है कि आप जान-बूझकर सो नहीं सकते। आपका दिमाग़ सभी तथ्यों को जानता है और वह बार-बार आपके कान में फुसफुसाता रहता है कि देर हो चुकी है, महज़ पांच घंटे बाद तुम्हें फिर उठ जाना है तुम्हें आराम की ज़रूरत है। आपके दिमाग़ पर सोचने के लिए लाखों विकल्प भी हमेशा मौजूद रहते हैं जैसे , साफ़ आकाश में टिमटिमाते तारे, नुंगमबक्कम फ़्लॉवर शॉप के ख़ूबसूरत फूल, अनन्या के घर में अगरबत्ती की महक, आपकी बेस्ट बर्थडे पार्टी। मनुष्य के दिमाग़ में कुछ सकारात्मक विचार हमेशा मौजूद रहते हैं, लेकिन जाने क्यों ऐसा होता है कि मात्र एक बुरा विचार उन सभी अच्छे विचारों को रफ़ा-दफ़ा कर देता है। शायद हमारे दिमाग़ का मैकेनिज़्म ही कुछ इस तरह है ताकि हम मौजूदा मुसीबतों पर ध्यान दें और केवल अच्छी-अच्छी बातों में ही न खोए रहें। लेकिन इससे ज़िन्दगी बड़ी कठिन हो जाती है, क्योंकि अच्छी बातों और यादों की अपनी जगह है। और भला, चिंता के मारे नींद गंवा देने से भी क्या होगा? मेरे पिता ने जिस दिन की ओर इशारा किया था, उसकी यादें मेरे दिमाग़ में बार-बार चक्कर काटती रहीं। जब मैं उन्हें अपने मैरिज-प्लान के बारे में बताऊंगा, तब वे क्या ड्रामा करेंगे? मैंने सोचा। सो जाओ, इडियट। महज़ चार घंटे बाद तुम्हें फिर जाग जाना है मेरे दिमाग़ ने मुझे झिड़कते हुए कहा।

लेकिन मुझे चैन कहाँ। रात दो बजे मैं बिस्तर से उठा और घर पर फ़ोन लगाया। 'हैलो?' मां की उनींदी आवाज़ सुनाई दी।

'सॉरी, मैं बोल रहा हूं।'

'क्रिश? सब ठीक तो है ना?' उनकी आवाज़ से घबराहट झलकने लगी थी।

'हां, सब ठीक है,' मैंने कहा।

'क्या हुआ?'

'डैड ने एक लेटर भेजा है। उससे मैं बहुत डिस्टर्ब हूं।'

'ओह रियली? क्या लिखा है उन्होंने?'

'कुछ ख़ास नहीं। वे अनन्या के बारे में जानते हैं।'

'तुम्हारी दोस्त? हां, तो क्या हुआ?'

'मॉम, वो मेरी केवल दोस्त ही नहीं है। मैं उससे शादी करना चाहता हूं।'

'ओह क्रिश, अब इतनी रात गए वो रामायण फिर से मत शुरू करो। वो तुम्हारी गर्लफ्रेंड है तो ठीक है। तुम चेन्नई में जो करना चाहो, करो। लेकिन उसे हम पर थोपने की कोशिश मत करो।'

'मैं उसे थोप नहीं रहा हूं। मैं आपको बता रहा हूं कि मैंने किस लड़की को अपना साथी बनाना चाहा है,' मैंने कहा। मेरी आवाज़ ज़रा तेज़ थी।

'चिल्लाओ मत।'

'आई एम सॉरी।'

'अगर इतना ही ज़ोर है तो अपने पिता पर चिल्लाओ।'

'मैं तो उनसे बात ही नहीं करता हूं। आप जानती हैं कि मैं उनकी क़तई परवाह नहीं करता।'

'फिर उस लेटर से इतने परेशान क्यों हो रहे हो? '
मैं चुप रहा।
'हैलो?' पांच सेकंड बाद मां ने कहा।
'हां, मैं सुन रहा हूं,' मैंने कहा। मेरी आवाज़ अब नर्म पड़ गई थी।
'तुम ठीक हो?'
मेरी आँखों में आंसू छलक आए, लेकिन मैंने मां को यह ज़ाहिर नहीं होने दिया।
'मैं अकेला महसूस कर रहा हूं, मॉम मुझे पापा से इस तरह के बिहेवियर की ज़रूरत नहीं है।'
'तो उस लेटर को फाड़कर फेंक दो।'
'वैसे भी मैं यहां अनन्या के माता-पिता को राज़ी करने के लिए जूझ रहा हूं। यह बड़ा अजीब शहर है। ऐसी कोई जगह नहीं है, जहां मुझे लगता है कि मेरा स्वागत किया जा रहा हो। और आप कह रही हैं कि मैं आप पर किसी को थोपने की कोशिश कर रहा हूं,' मैंने कहा और खुद को रोक न पाया। मैं फ़ोन को कसकर पकड़े रहा और रो पड़ा।
'चुप हो जाओ क्रिश, रोओ मत,' मां ने कहा।
मैंने ख़ुद को संभाला और अपने बाएं पैर से फ्रिज खोला। उसमें से पानी की एक बोतल निकाली और पी गया। 'मैं क्या करूं?' थोड़ी देर बाद मैंने कहा।
लौट आओ। तुम अपना ट्रांस्फ़र दिल्ली करवा लेने की अर्जी क्यों नहीं देते?'
'मैं यहां केवल छह महीने पहले ही आया हूं।'
'कह दो कि तुम्हें पारिवारिक समस्या है। कह दो कि मैं बीमार हूं।'
'मॉम, प्लीज़?'
'यदि नौकरी छोड़ने की नौबत आए तो छोड़ दो। हम दूसरा जॉब ढूंढ लेंगे। हमारे घर के पास ही कैनेरा बैंक है।'
'मॉम, मैं सिटीबैंक में हूं। ये एक मल्टीनेशनल कॉर्पोरेशन है।'
'ठीक है, तो हम कोई मल्टीनेशनल ढूंढ लेंगे। मेरी क़सम खाकर कहो कि तुम ट्रांसफ़र के लिए बात करोगे। काले-कलूटे लोगों के उस शहर में फंसकर मत रह जाओ।'
'मॉम, यहां सभी लोग बुरे नहीं हैं।'
'मुझे इससे कोई मतलब नहीं। यदि तुमने ट्रांसफ़र के लिए अप्लाई नहीं किया तो मैं तुम्हारे बॉस को एक लेटर लिख दूंगी। मैं उससे कहूंगी कि मैं बूढ़ी महिला हूं और आपको इंसानियत के नाते मेरे अनुरोध पर विचार करना होगा।'
'मॉम, तुम्हें मेरी क़सम है तुम ऐसा कुछ नहीं करोगी,' मैंने कहा और उनके शब्दों के चयन पर मुस्करा दिया, जो कि भारत के सरकारी दफ़्तरों में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा से प्रेरित थे।
'ठीक है तो तुम अर्ज़ी दे देना।'
'मैं दे दूंगा, मॉम पहले मुझे यहां कुछ काम पूरे करने हैं। मैं अपनी मंजिल के लगभग क़रीब पहुंच चुका हूं,' मैंने कहा। मेरा मन अब शांत हो चुका था।
'ओके, तुम अब ठीक हो ना?' उन्होंने कहा।
'हां, मैं एकदम ठीक हूं।'
'गुड। और इन मद्रासियों की कोई फालतू बात बर्दाश्त मत करना। ऐसा हो तो पलटकर जवाब देना। ये लोग बहुत जल्दी डर जाते हैं।'
'ओके मॉम।'
'और उस लड़की को लेकर बहुत ज़्यादा सीरियस मत होना।'
मॉम, उस मामले में तो अब बहुत देर हो चुकी है मैंने सोचा। 'गुड नाइट, मॉम,' मैंने कहा।
'आई लव यू। गुड नाइट,' उन्होंने कहा और फ़ोन रख दिया।
मैं अपने बिस्तर पर लौट आया और उस लेटर को कचरे के डिब्बे में फेंक दिया। मां से बात करने के बाद मैं थोड़ा हल्कापन महसूस कर रहा था और महज़ पांच मिनट में मुझे नींद आ गई। अगर दुनिया में मौएं न होतीं तो क्या होता?

33

'बाइक?' अनन्या ने चहकते हुए कहा। मैं उसे ब्लैक यामाहा आरएक्स 100 से लेने आया था।

'बाला की बाइक है,' मैंने कहा।

अनन्या पिछली सीट पर बैठ गई। उसने मरून रंग की सलवार कमीज़ पहन रखी थी। अपने सफ़ेद दुपट्टे से उसने अपने सिर और चेहरे को ढाँक रखा था। इस हुलिये में वह वीरप्पन की गैंग की कोई मेंबर लग रही थी।

पोंडिचेरी चेन्नई से कोई एक सौ चालीस किलोमीटर दूर ईस्ट कोस्ट रोड या ईसीआर पर बंगाल की खाड़ी की ओर है। फ़िशरमैन्स कोव इसी रास्ते पर चेन्नई सिटी से बीस किलोमीटर दूर पड़ता है।

हम अभा सलाई स्थित अनन्या के ऑफ़िस से चले। वह गाड़ी की पिछली सीट पर बैठी थी और उसने साइडबार्स को मज़बूती से पकड़ रखा था। जैसे ही लैटिस ब्रिज रोड आया और शहर पीछे छूट गया, उसने साइडबार्स को छोड़कर अपने हाथों को मेरे कंधे पर रख दिया। हमने ओल्ड महाबलिपुरम रोड पकड़ा, जो कि हमें सीधे ईसीआर पर ले जाता। 'बहुत ख़ूबसूरत है,' समुद्र को देखते ही मैंने कहा।

'मैंने तुम्हें कहा था ना?' अनन्या ने मेरी गर्दन पर एक किस करते हुए कहा।

हम फ़िशरमैन्स कोव पर जाकर रुके, जहां हमारी कैटरिंग मैनेजर से भेंट हुई। सिटीबैंक इवेंट के लिए हर चीज़ नियत्रण में लग रही थी। हम रिज़ॉर्ट से चले आए और फिर ईसीआर पर निकल पड़े। एक घंटे की सवारी के बाद हम महाबलिपुरम पहुंच चुके थे। यहां समुद्र के किनारे चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिर थे।

'वॉव, ये मंदिर तो अद्भुत हैं,' मैंने कहा। हवा मेरे बालों को सहला रही थी।

महाबलिपुरम से एक घंटे और चलने के बाद ईसीआर ख़त्म हो गया। सड़कें अब संकरी हो गई थीं। रास्ते में कई छोटे-छोटे क़स्बे पड़े, जिनके लंबे-लंबे नाम थे और जो धान के खेतों से पटे पड़े थे। कुछ जगहों पर मुझे बैलगाड़ियों, गांव के स्कूली बच्चों और बकरियों के रेवड़ को निकल जाने देने के लिए रुकना भी पड़ा। हम दोपहर तक पोंडिचेरी पहुंचे और उसे पहले-पहल देखकर मुझे निराशा ही हुई।

'बस, यही है पोंडिचेरी?' क़स्बे के मेन चौक में पहुंचकर मैंने कहा। पोंडिचेरी भारत के किसी अन्य क़स्बे जैसा ही था: धूल और कोलाहल से भरा हुआ, जिसकी उबड़-खाबड़ दीवारों पर कोला के विज्ञापन पुते हुए थे।

'पोंडिचेरी की ख़ास जगहें भीतर हैं : फ्रेंच क्वार्टर और अरबिंदो आश्रम अनन्या ने कहा।

मैंने एक अंधे मोड़ पर गाड़ी को संभालने की कोशिश की, जहां से हमारे साथ ही पचास अन्य टू-व्हीलर और चार ट्रक भी निकलने की कोशिश कर रहे थे।

यहां मुझे फ्रेंच के नाम पर अंडरवियर का एक बिलबोर्ड ही नज़र आया, जिसका ब्रौड फ्रेंच था।

'मुझे यहां ड्रॉप कर दो,' कुड्डालोर रोड पहुंचते ही अनन्या ने कहा। यहां एचएलएल की एक फ़ैक्टरी थी।

अनन्या की लंच मीटिंग लंबी खिंचने वाली थी, जिसका मतलब यह था कि मुझे इस मालगुडी टाउन में तीन घंटे का समय काटना था। हमने तय किया कि हम चार बजे कॉफ़ी के लिए ला ओरियंट होटल में मिलेंगे।

मैं फैक्टरी कंपाउंड से बाहर निकला और साइन बोर्ड्स का पीछा करते हुए रियू दे ला मरीन स्थित अरबिंदो आश्रम पहुंचा। आश्रम की बिल्डिंग समुद्र किनारे स्थित किसी ख़ामोश होस्टल जैसी लग रही थी। मैं रिसेशन पर पहुंचा। आश्रम की लॉबी में भारतीयों से ज़्यादा विदेशी थे।

काउंटर पर साड़ी और मनकों की माला पहने एक वेस्टर्न महिला बैठी थी। उसकी उम्र कोई चालीस साल रही होगी। 'आपको क्या काम है?' उसने मुझसे पूछा।

कुछ मेरे आश्रम में होने और कुछ उसके पूछने के तरीक़े से मुझे ऐसा लगा कि जैसे उसके इस सवाल में कोई गहरा अर्थ है। मैंने उसकी ओर देखा। उसकी आखें नीली थीं, जिन्हें झुर्रियों ने घेर रखा था। 'मैं यहां पहली बार आया हूं,' मैंने स्वीकारा।

उसने मुझे आश्रम के ब्रोशर दिए। एक और व्यक्ति आया और उसने भोजन के लिए टिकट्स ख़रीदे।

'क्या यहां लंच मिल सकता है?' मैंने पूछा।

'हां, आश्रम डायनिंग हॉल में उसने कहा और मुझे कूपन बुकलेट दिखाई। मैंने अपने लिए एक कूपन खुरीद लिया।

'चलो, मैं भी वहीं जा रही हूं,' उसने मेरे साथ चलते हुए कहा। हम आश्रम से जुड़ी एक लेन पर साथ-साथ चलते रहे। डायनिंग हॉल आधा किलोमीटर दूर था। उसने मुझे कहा कि उसका नाम डायना था और वह फिनलैंड से आई थी । वह पहले एक वकील हुआ करती थी, लेकिन अब उसे नोकिया के लिए पेटेंट सुरक्षित करने से अधिक संतोष आश्रम में वालटीयर के रूप में काम करके मिल रहा था ।

'मैं सिटीबैंक में काम करता हूं 'मैंने कहा । मैं चाहता था कि उसे बताऊं कि मैं लेखक बनना चाहता हूं लेकिन फिर मुझे लगा कि मैं अभी उसे इतनी अच्छी तरह से नहीं जानता हूं ।

'क्या तुम कुछ खोज रहे हो या यहां केवल टूरिस्ट की तरह आ गए हो?' उसने मुझे अपना कूपन थमाते हुए कहा ।

'कुछ खोज रहा हूं मतलब?'

'मतलब क्या तुम कोई रास्ता खोजना चाहते हो या किसी खास सवाल का जवाब चाहते हो?'

'सच कहूं तो मैं यहां अपनी एक दोस्त के साथ आया था जिसे यहां कुछ काम था । मैं बस एक दिन के लिए अपने दफ़्तर से दूर रहना चाहता था ।'

डायना हँस पड़ी । हम डायनिंग हॉल पहुंचे और अपनी-अपनी स्टेनलेस स्टील की प्लेट्स उठा लीं । फिर हम ईटिंग एरिया में घुसे, जहां सभी फ़र्श पर बैठे हुए थे । लंच सीधा-सरल था । चावल दाल और गाजर-मटर की सब्जी ।

'ओके तो यदि मैं किसी जवाब की तलाश कर रहा होऊं तो मुझे वह कैसे मिलेगा?'

'जवाब हमारे भीतर है। लोग कुछ हफ्तों तक आश्रम में रहते हैं, ध्यान-मनन करते हैं, सत्संग में शामिल होते हैं और किसी गुरु से प्रश्न पूछते हैं। तुम्हारे पास कितना समय है?'

'मुझे दो घंटे बाद कॉफी के लिए अपनी गर्लफ्रेंड से मिलना है और फिर चेन्नई लौट जाना है।'

डायना मुस्कराई और अपना सिर हिला दिया। 'जीवन के अबूझ सवालों का जवाब खोजने के लिए तो यह बड़ी सख़्त डेडलाइन है।'

'शायद तब तो मुझे कोशिश भी नहीं करनी चाहिए,' मैंने कहा।

'रुको, वहां उन सज्जन को देखो उसने कहा और हमसे दो क़तार आगे सफ़ेद चोगा पहने बैठे सत्तर साल के एक बूढ़े की ओर इशारा किया। 'वे हमारे गुरु हैं। शायद मैं तुम्हें उनसे मिलवा सकती हूं।'

'नहीं, नहीं, प्लीज़ ऐसा मत कीजिए मैंने कहा।

'क्यों नहीं? अगर वे व्यस्त हैं तो वह ख़ुद ही ना कह देंगे।'

'प्रणाम गुरुजी,' डायना ने कहा और उनके पैर छुए। मैंने भी उसका अनुसरण करते हुए उनके पैर छुए। उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया। 'गुरुजी, ये मेरा दोस्त है। इसका नाम है डायना ने कहा और रुक गई।'

'क्रिश।'

'हां, और इसके पास केवल दो घंटे का समय है, लेकिन यह किसी समस्या का हल पाना चाहता है डायना ने कहा।

'केवल दो घंटे ही क्यों?' गुरुजी ने पूछा। उनकी आवाज़ शांत थी।

'इसे इसकी गर्लफ्रेंड से मिलना है डायना ने रोमांच के साथ गर्लफ्रेंड शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा।

'तो ज़ाहिर है कि गर्लफ्रेंड प्रॉब्लम से ज़्यादा ज़रूरी है,' गुरुजी ने मुस्कराते हुए कहा।

'एक्चुअली, गर्लफ्रेंड ही तो प्रॉब्लम है मैंने कहा।

डायना ने मुझे हैरतभरी नज़रों से देखा।

'नहीं, नहीं, वह नहीं। मेरा परिवार, उसका परिवार,' मैंने कहा।' इट्स ओके। मुझे पता है यह समस्या सुलझाने के लिए मेरे पास अभी ज़्यादा वक़्त नहीं है।'

'इसे पंद्रह मिनट के लिए मेरे घर पर भेजो,' गुरुजी ने कहा और चले गए।

34

गुरुजी के घर में घुसने से पहले मैं घर के खुले दरवाज़े के आसपास मंडराता रहा। 'भीतर आ जाओ, क्रिश,' गुरुजी ने कहा। वे अपने लिविंग रूम में एक डंडे-बेड पर बैठे थे। मैंने सोचा था कि मैं पोंडिचेरी के फ्रेंच कैफेज में भटकता रहूंगा, लेकिन मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि मैं किसी गुरु के घर पहुंच जाऊंगा। उनके इस छोटे-से घर में न के बराबर फ़र्नीचर था।

'शायद तुम्हें यह अजीब लगे कि तुम यहां कैसे पहुंच गए, लेकिन मुझे लगता है कि तुम्हारी क़िस्मत में मुझसे मिलना लिखा था,' गुरुजी ने कहा।

'क्या आप माइंड रीडिंग करते हैं?' मैंने जानना चाहा।

'मैं लोगों को पड़ता हूं। तुम्हारी नर्वसनेस ज़ाहिर है। बैठ जाओ उन्होंने कहा और अपनी सफ़ेद दादी को सहलाया।

मैं फ़र्श पर आलथी-पालथी बनाकर उनके सामने बैठ गया।

'तुम्हें किस बात की फ़िक्र सता रही है?'

'मेरी गर्लफ्रेंड तमिल है मैं पंजाबी हूं। हमारे परिवार हमारी शादी के खिलाफ़ हैं। मैं अपनी ओर से पूरी कोशिश कर रहा हूं लेकिन यह बहुत कठिन है।'

'हम्भ गुरुजी ने कहा।' 'अपनी आखें बंद करो और जो तुम्हारे मन में आए, वह कहो।'

'मैं उससे प्यार करता हूं 'मैंने कहा,' और हम एक-दूसरे के साथ खुश रहते हैं लेकिन यदि हमारी खुशी कई लोगों के लिए दुख का कारण बन जाए तो क्या ऐसा करना ठीक होगा?'

मैं और कुछ देर तक इसी तरह बड़बड़ाता रहा। गुरुजी चुप्पी साधे रहे। चूंकि मेरी आखें बंद थीं, इसलिए मुझे यह भी पता नहीं था कि वे यहां मौजूद भी हैं या नहीं।' वही मेरा आने वाला कल है,' मैं इतना कहकर चुप हो गया।

'बस इतना ही?'

'आप यहां मौजूद हैं?' मैंने आखें खोले बिना पूछा।

'क्या तुम्हें पक्का पता है कि तुम्हें केवल यही एक समस्या परेशान कर रही है?' 'क्या मतलब है आपका?'

'तुम्हारे भीतर... बहुत सारी तकलीफे, बहुत सारी अनसुलझी समस्याएं हैं। तुम अपना आने वाला कल बनाओ इससे पहले तुम्हें अपने बीते हुए कल को दुरुस्त कर लेना चाहिए।'

'आप किस बारे में बात कर रहे हैं?' मैंने अपनी आखें खोल दीं। गुरुजी मेरे सामने थे, लेकिन उनकी आखें बंद थीं।

'अपनी आखें बंद करो?'

'ठीक है,' मैंने कहा और अपनी आखें फिर बंद कर लीं।

'तुम रातों को क्यों जागते रहते हो?'

मैं चुप रहा।

'क्या तुम्हें सोने में लंबा समय लगता है?' उन्होंने मुझे कुरेदते हुए पूछा।

'ही,' मैंने कहा।

'ऐसा क्यों होता है?'

'कई कारण हैं। काम है जो मुझे बहुत पसंद नहीं। अनन्या से अपने संबंधों की अनिश्चितता है। मेरे पिता हैं।'

'पिता की वजह से क्या दिक्कत है?'

'मामला ज़रा पेचीदा है,' मैंने कहा।

'और उसकी वजह से तुम्हारे दिमाग़ पर बहुत भारी बोझ है है ना?'

मैंने गहरी सांस भरी।

'बोझ को उतार दो,' गुरुजी ने कहा।

'मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं करना नहीं चाहता। मैंने कभी इस बारे में किसी से बात तक नहीं की है।'

'मैं सुन रहा हूं 'गुरुजी ने कहा। वे आगे झुके और मेरे माथे पर अपनी हथेली रख दी। मैंने एक नए किस्म का हल्कापन महसूस किया। मुझे लगा जैसे मैं एक नई दुनिया में चला गया हूं। जैसे मेरी आत्मा का मेरी देह से नाता ख़त्म हो गया हो। 'गुरुजी, मुझे वह सब बताने के लिए मजबूर मत करो मैंने लगभग मिन्नत मांगते हुए कहा। मैं वह सब फिर से याद करने के कारण हाने वाली तकलीफ़ से बचना चाहता था।

'सुनाओ, मैं सुन रहा हूं 'गुरुजी ने कहा।

35

तीन साल पहले

पिता आधी रात को घर आए थे। मैं घंटों से उनका इतंजार कर रहा था। मेरे पास समय नहीं था और मुझे उनसे उसी रात बात करनी थी। उन्होने हाथ लहराकर खाना खाने से मना कर दिया और अपने जूते निकालने के लिए लिविंग रूम के सोफे पर बैठ गए।

'डैड?' मैने दबी हुई आवाज़ में कहा। मैने शॉट्र्स और एक सफ़ेद टी-शर्ट पहन रखी थी। टी-शर्ट के कंधे पर एक छोटा-सा छेद था।

'क्या है?' वे मेरी ओर मुड़े। 'तुम घर में इसी तरह के कपड़े पहनते हो?'

'ये मेरे नाइटक्लॉप्स है 'मैने कहा।

'तुम्हारे पास का के नाइटक्लॉप्स नहीं है?'

मैने विषय बदल दिया। 'डैड मैं आपसे एक बात करना चाहता हूं।'

'क्या?'

'मैं एक लड़की को पसंद करता हूं।'

'ज़ाहिर है तुम्हारे पास बरबाद करने के लिए बहुत सारा समय है 'उन्हांने कहा। 'ऐसी बात नहीं है। वह बहुत अच्छी लड़की है। एक आईआईटी प्रोफ़ेसर की बेटी ।'

'ओ तो अब जाकर पता चला कि तुम आईआईटी में क्या कर रहे थे।' 'मैने ग्रेजुएशन कर लिया है। मेरे पास एक जॉब है। मैं एमबीए की तैयारी कर रहा हूं। प्रॉब्लम क्या है?'

'मुझे कोई प्रॉब्लम नहीं है। बात तुम करना चाहते थे 'उन्होने मेरी ओर देखे बिना कहा।

'लड़की के पिता उसे अपने साथ विदेश ले जा रहे है। वे किसी और से उसकी इंगेजमेंट कर सौ '

'ओह तो उसके पिता को यह रिश्ता मंजूर नहीं है।'

'नहीं।'

'क्यों?'

मैं नज़र झुकाए खड़ा रहा। 'मेरी और मेरे दोस्तों की उनसे कुछ प्रॉब्लम हो गई थी |'

किस तरह की प्रॉब्लम? डिसिप्लिनेरी इशूज़?

'हां,' मैंन कहा।

'शॉक्गि ।एक आर्मी ऑफिसर के बेटे के साथ डिसिप्लिनेरी इच्चू थे। मैने जो भी नाम कमाया था, तुमने मिट्टी में मिला दिया।'

'वे सारे इशूज़ अब पुराने हो गए है।'

'तो फिर उन्हें भला क्या समस्या है? तुम्हारी मां इस बारे में जानती है?'

'हां,' मैने कहा।

'उसने मुझे क्यों नहीं बताया? कविता! 'वे ज़ोर से चिल्लाए।

मां गहरी नींद में सोई हुई थीं। आवाज़ सुनकर वे बाहर चली आईं। 'क्या हुआ?' 'मुझे इस लड़की के बारे में पहले क्यों नहीं बताया गया?' उन्हांने चीखते हुए '३-, अ कुछ हफ्तों पहले ही बताया,' मां ने कहा।

'और तुमने ये बात मुझसे छुपाई, बिच 'पापा ने कहा।

'मां से इस तरह बात मत कर,' मैने तपाक से कहा। मैं और भी बहुत कुछ कह जाता, लेकिन उस दिन मुझे उनकी ज़रूरत थी।

मां की आंखो से आसू छलक आए। मामला बिगड़ता ही जा रहा था।

'डैड प्लीज़। मुझे आपकी मदद की जुरूरत है। यदि आप उसके पिता से मिलें तो वे मेरे बारे में फिर से विचार कर सकते है।'

'मैं भला किसी से क्यों मिलूं?' उन्होंने कहा। 'क्योंकी मैं उस प्यार करता हूं और उससे दूर नहीं होना चाहता।'

'प्यार नहीं, तुम बहके हुए हो।'

'रहने दो क्रिश। ये नहीं सुनेंगे? तुमने देखा ना ये मुझसे किस तरह बात करते है। तुम्हें पता नहीं जब तुम होस्टल में थे, तो मैने यहां कैसे दिन गुजारे।'

मेरे पिता मां की ओर बड़े और उन्हें मारने के लिए हाथ उठाया। मैने मां को अपने पीछे खींच लिया। 'नहीं, ऐसा मत करना,' मैने कहा।

'तुम मुझे रोकने वाले कौन होते हो?' उन्हांने मेरे गाल पर ज़ोर से तमाचा जड़ा, मै डायनिंग रूम चेयर पर बैठ गया।

'हमें छोड़ दो और यहां से चले जाओ। आप यहां आए ही क्यों?' मां ने पिता के हाथ जोड़ते हुए कहा।

'हाथ मत जोड़ो मॉम 'मैने कहा। मेरा गला रुँधा हुआ था और मैं अपने आंसुओं को पीने की कोशिश कर रहा था। मेरे पिता एक बार पहले मेरे आसुओं के लिए मेरा मज़ाक़ उड़ा चुके थे। उनके मुताबिक केवल कमज़ोर लोग ही रोते है।

'ज़रा इसकी आवाज़ तो सुनो, लड़कियों सरीखी,' पिता ने मेरा मखौल उड़ाते हुए कहा। फिर उन्होने मुझे मृणाभरी नज़र, से देखा और चेर्ज करने बाथरूम में चले *1*

सो जाओ, बेटा,' मां ने कहा।

'वे अगले हफ़्ते उसे यहां से भेज रहे है 'मैने कहा।

'तुमने भी अपने आपको किस लड़की के फेर में उलझा लिया? अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है 'मां ने कहा।

'मैं उससे कल ही तो शादी नहीं कर रहा हूं ना?'

'वो पंजाबी है?' मां ने पूछा।

'नहीं?' मैने कहा।

'क्या?' उन्हें मेरी बात सुनकर इस तरह झटका लगा, मानो मैने कह दिया हो कि वह लड़की इसान ही नहीं है।

'आप बस एक बार उसके पिता से मिल लीजिए?'

पिता बाथरूम से निकले। उन्हांने मेरे अतिम शब्द सुन लिए थे।' तुम कहीं भी जाने की हिम्मत मत करना, कविता,' उन्हांने कहा। उनकी आंखो से अंगारे फूट रहे थे। मैने उन्हें घूरकर देखा।

'अपने कमरे में जाओ,' उन्हांने कहा।

मैं अपने बिस्तर पर चला आया। मॉम और पापा के कमरे से आवाजें आ रही थीं।

मैं सो नहीं पा रहा था। मैं उठा और उनके कमरे की तरफ़ चला गया। मैं ईतन?ाई? ब?रि उन्हें झगड़ते हुए सुन चुका था कि अब मुझे इसकी ज़्यादा परवाह नहीं होती थी, फिर भी उस दिन मैं उनकी बातें सुनने की कोशिश कर रहा था। मैने उनके दरवाज़े पर अपना कान लगा दिया।

'वह बड़ा हो रहा है 'मां ने कहा।

'लेकिन गलत वेल्यूज के साथ। वह लड़कियों के बारे में अभी भला क्या जानता है? वह मेरा बेटा है वह आईआईटी से है देखना सही वक़्त आने पर मैं उसके लिए क्या करता हूं।'

यही सच था। पापा के तमाम उसूलों के बावजूद मैं उनके लिए एक ट्रॉफी से बढ्कर कुछ नहीं था, जिसे वे बाजार में सबसे ऊंची बोली लगाने वाले को बेच देना चाहते थे।

'उसकी गलत परवरिश के लिए तुम जिम्मेदार हो,' वे मॉम पर चिल्लाए। मैने एक गिलास के दीवार से टकराकर चूर-चूर हो जाने की आवाज़ सुनी।

'मेरा क्या कसूर है? मैं तो इस लड़की के बारे में जानती तक नहीं थी... '

चट् वह,.. पापा के तमाचों ने मां को आगे बोलने न दिया। मैं दरवाज़ा खोलकर भीतर घुस गया। मैने देखा कि मां अपने चेहरे को हाथों से ढांके हुए थीं। कांच का एक टुकड़ा लग जाने के कारण उनकी बांह से खून निकल रहा था।

पापा मेरी ओर मुद्दे।' तुममें कोई मैनर्स नहीं है क्या? तुम नकि नहीं कर सकते ??? आप मुझे मैनर्स सिखाने की कोशिश मत कीजिए,' मैने कहा।

'दफा हो जाओ यहां से 'उन्हांने कहा।

मैने देखा कि मां की आंखो से आसू बह रहे है। मेरा चेहरा गुस्से से तमतमा गया। वे पिछले पच्चीस साल से यह सब बर्दाश्त करती आ रही थीं। और मैं जानता हूं क्यों: मुझे पाल-पोसकर बड़ा करने के लिए। मुझे पता नहीं उन्हांने ऐसा कैसे किया।

पापा ने मुझे मारने के लिए अपना हाथ उठाया। मैने बिना जाने-बूझे उनकी कलाई कसकर पकड़ ली।

'ओ तो अब तुम अपने बाप पर भी हाथ उठाना चाहते हो,' उन्हांने कहा।

मैने उनकी बांह मरोड़ दी।

'उन्हें छोड़ दो। इससे वे बदल नहीं जाएंगे,' मां ने हांफ़ते हुए कहा।

मैने उनकी बात सुनकर सिर हिला दिया। मैं अपने पिता को घूरकर देख रह था। फिर मैने उन्हें एक तमाचा जड़ दिया। एक बार, फिर दूसरी बार। फिर मैने अपनी अंगुलियों को भीचेकर मुक्का बनाया और उनके चेहरे पर ज़ोर से एक पंच मार दिया।

मेरे पिता शॉच्छ रह गए। वे जवाबी हमला भी न कर पाए। उन्हें इसकी उम्मीद नहीं थी। बचपन से लेकर अब तक घर में उनका दबदबा रहा था और हमें इस वजह से कई मुसीबतें उठानी पड़ी थीं। आज बात केवल टूटे शीशे की ही नहीं थी, बात यह भी नहीं थी कि मैं जिस लड़की को प्यार करता था, वह अब हमेशा के लिए मुझसे दूर हो जाएगी। यह दो दशकों के बुरे बरताव की प्रतिक्रिया थी। या कम से कम मैं अपने बचाव में यही कह सकता हूं क्योकि आप अपने पिता पर हाथ उठाने के लिए और कौन-सी सफाइयां पेश कर सकते है? उस वक्त मैं ख़ुद को रोक नहीं पाया। मैं उनके सिर पर तब तक मुक्के जमाता रहा, जब तक कि वे फ़र्श पर न गिर पड़े मुझे याद नहीं आता इससे पहले मैं कब इतना हिसंक हो गया था। मैं मन लगाकर पढ़ाई करने वाला लड़का था, जो जीवन भर किताबों से चिपका रहा था। लेकिन आज शायद यह क़िस्मत की ही बात थी कि घर में कोई बंदूक नहीं थी। पांच मिनट बाद मेरा यह पागलपन ख़त्म हो गया। मेरे पिता ने मुझसे नज़रें नहीं मिला; वे फ़र्श पर बैठे रहे और अपनी उस बांह को मसलते रहे, जिसे मैने मरोड़ दिया था। उन्हांने मां को घूरते हुए देखा, मानो कह रहे हों: 'देखा, मैने कहा था ना?'

मां बिस्तर पर बैठी थीं और अपने जज्बात पर क़ाबू पाने की कोशिश कर रही थीं। हमने एक-दूसरे की ओर देखा। हम एक परिवार का हिस्सा थे लेकिन वह परिवार बिखर रहा था। मैने एक झाड़ू उठाई और कांच के टुकड़ों को एक अख़बार में समेट लिया। मैने अपने पिता की ओर देखा और कुसम खाकर कहा कि आज के बाद मैं उनसे कभी बात नहीं करूंगा। मैने कांच के टुकड़ों वाला अख़बार उठाया और कमरे से बाहर चला गया।

'बस इतना ही, गुरुजी,' मैंने कहा। मेरे चेहरे पर बनी मू. की लकीरें अब सूख चुकी थीं।
'मैंने इससे पहले कभी किसी से इतना शेयर नहीं किया।'
समुद्र में लहरों के थपेड़ों की आवाज़ सुनी जा सकती थी। समुद्र की लहरें मेरे जेहन में मंडरा रहे विचारों की ही तरह थीं।
'अपनी आखें खोल दो गुरुजी ने कहा।
मैंने धीमे-धीमे अपनी पलकें उठाईं।
'आओ, पीछे बाल्कनी है, हम वहां चलते हैं गुरुजी ने कहा।
मैं उनके पीछे-पीछे चला आया। बाल्कनी घर के पिछले हिस्से में थी। सूर्य की तपिश के बावजूद समुद्री हवा ठंडक का अहसास दे रही थी। वहां दो स्टूल रखे थे। मैं उनमें से एक पर बैठ गया। वे भीतर गए और दो गिलास और एक किताब के साथ लौटे।
'यह नारियल पानी है। और यह है गीता। तुम गीता के बारे में तो जानते हो ना?' 'ही,' मैंने कहा,' थोड़ा-बहुत।' मैंने एक घूंट नारियल पानी पिया।
'क्या जानते हो?'
'यही कि यह बहुत अद्‌धृत किताब है। इसमें जीवन के बारे में सभी समझदारी भरी बातें समाई हुई हैं। कर्म किए जाओ, लेकिन फ़ल की इच्छा मत करो। राइट?'
'तुमने गीता को पड़ा है?'
कुछ-कुछ। अच्छी किताब है लेकिन ज़रा... '
'बोरिंग है?'
'एक्चुअली, नहीं, बोरिंग तो नहीं। लेकिन हर चीज़ पर गीता के उपदेशों को लागू करना ज़रा कठिन है।'
'मैं तुम्हें केवल एक शब्द देता हूं जिसे तुम्हें अपने जीवन पर लागू करना होगा।'
क्या?
क्षमा।
'मतलब? आप चाहते हैं कि मैं अपने पिता को माफ़ कर दूं। मैं नहीं कर सकता।'
'क्यों नहीं कर सकते?'
'क्योंकि उन्होंने जो कुछ किया, वह बहुत ग़लत था। उन्होंने मेरी मा का जीवन बर्बाद कर दिया। उन्होंने मुझे कभी बाप का प्यार नहीं दिया।'
'मैं यह नहीं कह रहा हूं कि उन्होंने जो कुछ किया, ठीक किया। मैं इतना ही कह रहा हूं कि तुम उन्हें क्षमा कर दो।'
'क्यों?'
'तुम्हारे अपने भले के लिए। क्षमा कर देने से वह व्यक्ति अच्छा महसूस करे या न करे जिसे क्षमा किया गया है लेकिन क्षमा करने वाला ज़रूर अच्छा महसूस करता है।'
मैं उनके शब्दों के बारे में सोचने लगा।
'अपनी आखें फिर बंद करो गुरुजी ने कहा।' कल्पना करो कि तुम्हारे सिर पर पोटलिया रखी हुई हैं। ये पोटलिया गुस्से दुख और हार की हैं। कैसा लग रहा है?' ' बहुत भारी,' मैंने कहा।
'अब एक-एक कर उन्हें सिर से उतार दो,' गुरुजी ने कहा।' कल्पना करो कि तुम एक मोटा-सा लबादा पहने हुए हो और उसके बोझ तले दबे जा रहे हो। दूसरों ने तुम्हें जो नुक़सान पहुंचाया, उसके लिए उन्हें माफ़ कर दो। जो कुछ हुआ, उसे भूल जाओ। तुम्हें आज जो बात परेशान कर रही है, वह है तुम्हारी आज की चिंताएं, जो तुम्हारे सिर पर रखे इस भारी बोझ के कारण उपजी हैं। उसे उतार दो।'
गुरुजी की बातें अजीब थीं लेकिन मैं मन ही मन उनके द्वारा बताई बातों का पालन करने से ख़ुद को रोक न पाया। मुझे लगा जैसे मेरे सिर से कोई बोझ उतर गया हो।
'और ईश्वर के सामने समर्पण कर दो,' वे कहते रहे।' तुम्हारा किसी चीज़ या किसी व्यक्ति पर कोई नियंत्रण नहीं है।'
'मैं समझा नहीं,' मैंने कहा।
'क्या तुम्हारा अपनी ज़िन्दगी पर नियंत्रण है? तुम्हारी ज़िन्दगी इस बात पर निर्भर करती है कि तुम्हारे शरीर के भीतरी अंग सही तरह से अपना काम करते रहें। लेकिन तुम्हारा उन पर कोई नियंत्रण नहीं है। यदि तुम्हारे फेफ़ड़े तुम्हारा साथ छोड़ दें किडनी ३फ़ेल हो जाए या तुम्हारा दिल धड़कना बंद कर दे तो सब कुछ ख़त्म हो जाएगा। तुम यहीं इसी वक़्त नीचे गिर पड़ोगे और तुम्हारी जान चली जाएगी। ईश्वर ने तुम्हें जीवन का उपहार दिया है इसे उन्हीं को समर्पित कर दो।'
उन्होंने मुझे अगले कुछ और मिनटों तक ध्यान की स्थिति में रखा।
'और अब, तुम जहां चाहे वहां जा सकते हो,' गुरुजी ने मुस्कराते हुए कहा।
मैंने आखें खोलीं। दोपहर की तेज़ धूप गुरुजी के चेहरे पर चमक रही थी। वे भीतर गए और एक छोटा-सा प्याला ले आए जिसमें ज़ुरा-सी भस्म थी। उन्होंने अपनी तर्जनी उसमें डाली और मेरे माथे पर टीका लगा दिया।
'धन्यवाद,' मैंने कहा। उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखकर मुझे आशीर्वाद दिया।
'तुम्हारा स्वागत है उन्होंने कहा।' मुझसे और किसी मदद की ज़रूरत है?'
'ही, होटल ला ओरियंट किस तरफ़ है?'
'अच्छा, यह वाली मदद,' गुरुजी ने हँसते हुए कहा,' वह रियू रोम्यौ रोल पर है। यहां से एक किलोमीटर दूर।'

मैं चार बजे ला ओरियंट पहुंचा। -ऐस पर अनन्या मेरा इंतज़ार कर रही थी। वह होटल एक हेरिटेज बिल्डिंग थी, जिसका रिनोवेशन किया गया था। जब पॉंडिचेरी फ्रांसीसियों का उपनिवेश हुआ करता था तब यह बिल्डिंग शिक्षा विभाग का दफ़्तर हुआ करती थी। ला ओरियंट के भीतरी खुले गन में एक छोटा-सा रेस्टोरेंट था। हमने कॉफी के साथ ही जिंजर केक की एक स्लाइस और कस्टर्ड साँस ऑर्डर किया।

'यह जगह प्यारी है ना?' अनन्या ने गहरी सांस लेते हुए कहा।

मैंने सिर हिला दिया। मैं अब भी सोच में डूबा हुआ था।

'तो, बताओ तुमने क्या किया? और तुमने अपने माथे पर यह टीका क्यों लगा रखा है?'

'मैंने अपने पिता पर हाथ उठाया था।'

क्या?

'बहुत समय पहले। तुम्हें याद है ना, मैं कैम्पस में हर बार अपने पिता के बारे में बात करने से कतराता रहता था?'

'ही, और इसीलिए मैंने उसके बाद कभी तुम पर ज़ोर नहीं डाला कि तुम मुझे अपने पिता के बारे में बताओ,' उसने कहा।' लेकिन तुम क्या कह रहे हो?'

मैंने उस रात की कहानी एक बार फिर दोहरा दी।

वह हैरत से मेरा मुंह ताकती रह गई।

'ओह डियर, मुझे नहीं पता था तुम्हारे पैरेंट्स के बीच ऐसी प्रॉब्लम है।'

'मैंने ही तुम्हें कभी नहीं बताया। इट्स फ़ाइन।'

'तुम ठीक तो हो ना?' उसने कहा और मुझे पकड़ने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया।

'ही, मैं ठीक हूं। और मेरी एक गुरुजी से भेंट हुई जिन्होंने मुझे एक अच्छी सलाह दी।'

'क्या? कौन-से गुरुजी, कौन-सी सलाह?' अनन्या ने कहा।

'गुरुजी को तो मैं नहीं जानता। लेकिन इससे कोई फ़र्क भी नहीं पड़ता। कभी-कभी ज़िन्दगी में ऐसा होता है कि हमारी किसी ऐसे व्यक्ति से मुलाकात होती है या हम कोई ऐसी बात सुन लेते हैं, जो हमें सही रास्ता बता देती है। फिर वह सलाह हमारे लिए सबसे अच्छी सलाह बन जाती है। हो सकता है, जो बात हमसे कही गई हो, वह बिल्कुल कॉमन सेंस की हो, लेकिन वह हमें इतनी तीव्रता से बताई जाती है कि वह हमारे भीतर की किसी चीज़ से टकराकर एक गूंज की तरह लौट आती है। वह

कोई नई बात नहीं होती है, लेकिन चूंकि वह हमसे जुड़ी हुई होती है, इसलिए हमारे लिए वह बहुत मायने रखती है।'

मैंने ये सारी बातें कुछ इस इंटेंसिटी से कही कि अनन्या को चिंता होने लगी।

'तुम ठीक तो हो ना, बेबी? मुझे तुम्हें अकेला नहीं छोड़ना था।'

'मैं ठीक हूं। मुझे खुशी है कि मेरे पास इतना समय था। अब मैं बेहतर महसूस कर रहा हूं।'

'आई लव यू 'उसने मेरे चेहरे पर उड़ आई मेरे बालों की एक लट को सहलाते हुए कहा।

'आई लव यू टू 'मैंने कहा और उसके हाथों को मजबूती से जकड़ लिया।

हमारा ऑर्डर आ गया। उसने केक को दो भागों में काटा और एक एक हिस्सा मेरी ओर बढ़ा दिया। मैं अब बातचीत का विषय बदल देना चाहता था। उसने मेरे मन की बात समझ ली।

'तो मुझे इस सिटीबैंक इवेंट के बारे में बताओ। तुमने बताया था उसमें एक कंसर्ट होगा।'

'ही,' मैंने कहा,' लेकिन केवल रूघइंट्स के लिए।'

'मुझे आने की इजाज़त है?'

'ऑफ़ कोर्स, मैं तुम्हारी फ़ैमिली के लिए पास का इंतजाम करवा दूंगा।'

'कंसर्ट में कौन परफ़ॉर्म कर रहा है?'

'एसपी बालासुब्रमणियम, हरिहरन और...' मैं रुक गया।

'वॉव, ये तो बहुत बड़े नाम हैं। तीसरा कौन?'

'एक नया सिंगर।'

'कूल, आई एम श्योर मॉम और डैड को वहां जाकर बहुत अच्छा लगेगा।'

मैंने सिर हिला दिया। कॉफी की कुछ चुस्कियां लेने के बाद मैंने कहा,' अनन्या, मैंने अपनी ओर से काफ़ी कोशिशें कर लीं। अब मैं लौट जाना चाहता हूं।'

मैंने उसे अपनी मां से हुई बात के बारे में बताया, जिसमें उन्होंने मुझे दिल्ली ट्रांसफ़र करवा लेने को कहा था।

'तुम कहना क्या चाहते हो?' उसने दूध से मेरे मुंह पर बन आई ओं को पोंछते हुए कहा।

'मैं पूरी ज़िन्दगी चेन्नई में काम नहीं कर सकता। मैं कुछ और हफ़्ते इंतज़ार करूंगा और फिर तुम्हारे पैरेंट्स को कह दूंगा कि वह तुम्हारे लिए मेरे बारे में सोचना शुरू कर दें।'

'कुछ हफ़्ते? और उन्होंने ना कह दिया तो?'

'तब जो होगा, देखा जाएगा। वैसे भी अब मैंने सब कुछ ईश्वर को समर्पित कर दिया है।'

'क्या?'

'कुछ नहीं। छोड़ा इसे। मैं अंधेरा होने से पहले यहां से चल देना चाहता हूं।' मैंने अपना हेलमेट उठा लिया।

37

'आंटी, आपको परेशान करने के लिए सॉरी, लेकिन कंसर्ट अगले हफ़्ते है,' मैंने फ़ोन पर कहा।

मैंने दोपहर को ऑफिस से अनन्या की मां को फ़ोन लगाया था। अख़बार के विज्ञापन की डिज़ाइन मेरे दिमाग़ में थी।

सिटीबैंक प्रायर्टी बैंकिंग अपने क्लाइंट्स को फिशरमैन्स कोव पर एक मन मोह लेने वाली म्यूज़िकल शाम के लिए निमंत्रित करते हुए बहुत खुशी का अनुभव कर रहा है।

फ़ीचरिंग दिग्गज कलाकार:
एसपी बालासुब्रमणियम
हरिहरन
और न्यू टैलेंट, राधा
कंसर्ट के बाद डिनर होगा।
केवल आमंत्रितों के लिए।
(पास के लिए अपने कस्टमर रिप्रेज़ेंटेटिव या किसी भी ब्रांच से संपर्क करें।)
नोट: कंसर्ट से पहले अकाउंट खुलवाने वाले न्यू अकाउंट होल्डर्स को भी निमंत्रित किया जाएगा।

मुझे यह आखिरी लाइन बहुत ख़राब लग रही थी, लेकिन बाला चाहता था कि इसे एड में ज़रूर रखा जाए।

'हैलो, आंटी? यू देयर' मैंने कहा।

'तुमने भी मुझे कहां फंसा दिया?' अनन्या की मा ने अपना दुखड़ा रोते हुए कहा।

'आप प्रैक्टिस कर रही हैं ना?'

'हाँ, लेकिन...'

'लेकिन क्या? आपने कहो ना प्यार है का कोई गाना तैयार किया? आजकल उसके गाने बहुत चल रहे हैं,' मैंने कहा।

'हां, किया है। फिल्मी गाने आसान होते हैं। चिंता की असल वजह है... मेरा काफिडेंस।'

'सब ठीक हो जाएगा। आज मैं अख़बार में एड दे रहा हूं। उसमें नाम भी होगा, लेकिन आपका सरनेम नहीं होगा, जैसा कि आपने कहा था। यह एड संडे को छपेगा, जिस दिन कंसर्ट है।'

'नहीं, नहीं, मेरा नाम मत दो। यदि मैं नही आई तो?' उन्होंने ज़रा घबराते हुए पूछा।

'ठीक है। चेन्नई में कई राधा हैं। किसी को भी पता नहीं चलेगा कि कौन-सी वाली राधा का नाम एड में था,' मैंने कहा।

'मेरी वजह से तुम्हें नीचा देखना पड़ेगा,' उन्होंने कहा।

'नहीं, ऐसा नहीं होगा,' मैंने कहा।

'एड में से मेरा नाम कब तक हटाया जा सकता है?'

'शनिवार। लेकिन प्लीज़, नाम वापस लेने के बारे में मत सोचिए,' मैंने कहा।

'ओके, मैं तो बस जानना चाह रही थी,' उन्होंने कहा।

'फ़ाइन, और इक पल का जीना वाले गाने की अच्छी प्रैक्टिस करना। अभी यह गाना चार्ट में नंबर वन बना हुआ है,' मैंने कहा।

'मैंने कहा था ना कि मेरा नाम मत देना,' अनन्या की मां ने रविवार की सुबह छह बजे फ़ोन करके कहा।

'आपने अभी से एड देख लिया?' मैंने आखें मलते हुए कहा। फिर मैंने होस्टल के-एंट्रेंस डोर के नीचे से द हिंदू उठाया और संडे सप्लीमेंट मेट्रोप्लस खोला।

'हां, मैंने देख लिया,' उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा।' यह क्या है?'

उन्होंने तब फ़ोन लगाया था, जब अंकल नहाने गए थे। अनन्या अभी उठी नहीं थी और मंजू अपने सबसे अच्छे दोस्तों फिजिक्स, केमिस्ट्री और मैप्स के साथ अपने कमरे में था।

'मैं आपका नाम नहीं हटवा पाया,' मैंने कहा और एक मनगढ़ंत कहानी सुनाने लगा,' अख़बार ने मुझे बताया कि मेट्रोप्लस दो दिन पहले प्रेस में चला जाता है। एक रात पहले तो केवल मेन पेपर में ही चेंज किया जा सकता है।'

'तो, अब हम क्या करें?'

पिछली सुबह उन्होंने मुझे फ़ोन कर उनका नाम हटवाने को कहा था, लेकिन मैंने अख़बार को कोई भी बदलाव करने को नहीं कहा।

'कुछ नहीं, हम कह देंगे कि राधा जी बीमार पड़ गईं,' मैंने कहा।

वे चुप रहीं। 'इससे ऑफिस में तुम्हारा नाम ख़राब होगा ना?' कुछ देर बाद उन्होंने पूछा।

'हाँ, होगा तो, लेकिन पहली बार नहीं। मैं मैनेज कर लूंगा। एनीवे, आप सभी कंसर्ट में आएंगे ना?' मैंने कहा।

'ओके सुनो, यदि मुझे परफ़ॉर्म करना हो तो मुझे कब और कहां पहुंचना होगा?' मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा। वे गाने का मन बना रही थीं। 'आंटी, सब कुछ अच्छी तरह से ऑर्गेनाइज़ किया गया है। कंसर्ट गार्डन के पास में ही एक रूम है जो हमारा ग्रीनरूम

होगा। कंसर्ट से तीन घंटे पहले यानी शाम चार बजे तक वहां पहुंचना है। ओके?'

'ठीक है,' उन्होंने कहा।

'थैंक्स आंटी,' मैंने कहा।

'थैंक्स तो मुझे तुम्हें कहना चाहिए। मैंने अभी तक घर में किसी को बताया नहीं।'

'गुड, बस कोई बहाना बनाकर घर से निकल जाइएगा। सी यू।'

'मैं इनमें से कौन-सी पहनूं?' अनन्या की मां ने पूछा। जिस कॉटेज को हमने ग्रीनरूम बना दिया था, वे उसमें एक किंगसाइज़ बिस्तर पर बैठी थीं। मेक-अप आर्टिस्ट्स, साउंड इंजीनियर्स और हरिहरन और एसपी के स्टाफ़ मेंबर्स पहले ही पहुंच चुके थे। दोनों मुख्य गायक कार्यक्रम शुरू होने से थोड़ी देर पहले ही पहुंचने वाले थे। लेकिन आंटी जल्दी आ गई थीं। उन्होंने मुझे तीन कांजीवरम सिल्क साड़ियां दिखाते हुए मुझसे पूछा कि उन्हें इनमें से कौन-सी साड़ी पहननी चाहिए।

'सभी ख़ूबसूरत हैं,' मैंने कहा।

पहली साड़ी पर्पल और गोल्ड, दूसरी येलो और गोल्ड और तीसरी ऑरेंज और गोल्ड रंग की थी।

'टच-अप, मैडम?' मेकअप मैन अनन्या की मा की ओर आया।

'अब मुझे यहां से चलना चाहिए,' मैंने कहा। हालांकि मेरे इर्द-गिर्द आधा दर्जन लोग थे, लेकिन इसके बावजूद मुझे अपनी होने वाली सासु मां को मस्कारा लगाते देखकर अजीब-सा लग रहा था।

'मैं इतनी तनाव में हूं कि मैं सही का चयन ही नहीं कर पा रही हूं,' उन्होंने माथे से पसीना पोंछते हुए कहा।

मेक-अप मैन ने अनन्या की मां के गालों पर फ़ाउंडेशन लगाया। मैंने कोशिश की कि मैं उधर ना देखूं।

'ऑरेंज वाली साड़ी लीजिए, वह बहुत अच्छी और चमकदार है।'

'यह मेरी वेडिंग साड़ी है। उस दिन के बाद से आज तक मैंने इसे न के बराबर पहना है।'

'आज का दिन भी तो बहुत खास है।'

'पर्पल कैसी रहेगी? '

'वह भी बहुत ख़ूबसूरत है मैंने कहा।

मेक-अप मैन ने आंटी के माथे पर वाटर स्प्रे किया और उसे पोंछ दिया।

'मैं बाहर हूं। स्टेज पर मिलते हैं।'

उन्होंने आंखें बंद कर लीं और प्रार्थना की मुद्रा में हाथ जोड़ लिए।

मैं खाने का इंतजाम देखने के लिए बाहर आया। शाम छह बजे मैंने अनन्या को फ़ोन लगाया, ताकि वे सही समय पर वहां से रवाना हो सकें।

'तुम तो अब मेरी जान ही ले लोगे,' अनन्या ने कहा।

'क्यों?' मैंने पूछा।

'मॉम नहीं आ रही हैं।'

'क्यों?' मैंने नाराज़गी ज़ाहिर करने की कोशिश करते हुए पूछा।

'उन्होंने कहा कि तिरुकुडयूर में मेरी नानीमी बीमार पड़ गई हैं और लंच के बाद वे वहां चली गईं।'

'ये तिरुकुडयूर कहा है? '

'चेन्नई से छह घंटे का सफ़र है। वे कंसर्ट में नहीं आ पाएंगी।'

'और तुम लोग?'

'हम लगभग तैयार हैं। मैं मॉम की ऑरेंज कांजीवरम साड़ी पहनना चाहती थी, लेकिन वह मुझे कहीं मिल ही नहीं रही। आई होप, उन्होंने वह साड़ी गुमा न दी हो। वे उसे अपने साथ तो नहीं ले गई होंगी, क्योंकि जहां वे गई हैं वहां वह साड़ी पहनने का कोई मतलब नहीं है।'

'अनन्या, जल्दी करो नहीं तो अच्छी सीटें नहीं मिलेंगी,' मैंने कहा।

'ओके, ओके, बाय,' उसने कहा और फ़ोन रख दिया।

बाला शाम साढ़े छह बजे कंट्री मैनेजर अनिल माथुर के साथ आया। अनिल मुंबई से उड़ान भरकर यहां पहुंचा था। बाला ने बंदोबस्त किया था कि एक मर्सीडीज़ गाड़ी अनिल को सीधे वेन्यू तक ले आए। बाला उसके साथ कुछ इस तरह चिपका हुआ था, जैसे तमिल फ़िल्मों में विलेन के साथ उसके गुर्गे चिपके हुए होते हैं। वह उन्हें पूरा अरेंजमेंट दिखा रहा था और पूरे कार्यक्रम का क्रेडिट खुद लेने की कोशिश कर रहा था।

'और ये रहा बार। और देखिए उसके पीछे सिटीबैंक का बैनर है। आज मैंने द हिंदू में बहुत बड़ा एड भी दिया है। चेन्नई का नंबर वन न्यूज पेपर,' बाला ने कहा।

मैंने बाला को ग्रीट किया, लेकिन वह मुझे नज़रअंदाज़ कर आगे बढ़ गया।

'हे तुम तो वही इंटरनेट की गड़बड़ वाले हो अनिल ने मुझे पहचानते हुए कहा।

'गुड ईवनिंग, सर,' मैंने कहा। मैं बैंक में लूज़रडम का पोस्टर बॉय बन गया था।

'तुम यहां इकलौते पंजाबी हो ना?' वह हँस पड़ा। 'मुझे लगता है यह सज़ा ही काफ़ी है। क्यों, बाला?'

बाला ने एक ठहाका लगाया, जबकि वास्तव में वह जोक उसके बारे में था। या शायद उसके शहर के बारे में।

'दिल्ली जाने के बारे में सोच रहे हो?' कंट्री मैनेजर ने कहा।

'मैं आपसे इस बारे में बात करूंगा, सर,' मैंने कहा।

'तुम पहले मुझे इस बारे में बताना,' बाला ने आखिरकार मेरी तरफ़ ध्यान देते हुए कहा।

'मैं इसकी मदद करूंगा सर।'

कंट्री मैनेजर ने मेरा कंधा थपथपाया और आगे बढ़ गया।

अनन्या सवा सात बजे पर अपने पिता और भाई के साथ आई। 'हमें देर तो नहीं हो गई?' उसने हांफते हुए पूछा। उसने एक शानदार शिफ़ॉन साड़ी पहन रखी थी,

जिस पर बारीक़-सी सिल्वर बॉर्डर थी। उसने सिल्वर का नेकलेस और मैचिंग ईयर रिंग्स पहन रखी थीं।

'हां, लेकिन कंसर्ट अभी शुरू नहीं हुआ। आओ,' मैंने कहा। मैं गार्डन में लगी अनेक राउंड टेबल में से एक पर उन्हें ले गया। मैंने एक ऐसी टेबल का चयन किया था, जो स्टेज के क़रीब हो।

'खाना इधर है, और अंकल बार उस तरफ़ है,' मैंने कहा।

'मैं ड्रिंक नहीं करता,' अंकल ने अनन्या की ओर देखते हुए कहा।

'श्योर,' मैंने कहा।

सभी अठारह टेबलों की भी दस सीटें जल्द ही क्लाइंट्स से भर गईं। हर टेबल पर एक या दो बैंक एजेंट अपने क्लाइंट्स के साथ बैठे थे। मैंने अनन्या के परिवार को उस स्टाफ़ टेबल पर बैठाया था, जो मुख्यत: चेन्नई के जूनियर सिटीबैंकर्स के लिए थी। बाला और कंट्री मैनेजर की अलग टेबल थी और वे हमारे सबसे बड़े क्लाइंट्स के साथ बैठे थे। ऐसे क्लाइंट्स, जिनकी संपत्ति पाँच करोड़ या इससे भी अधिक थी। मुझे इन क्लाइंट्स पर तरस आ रहा था। सच कहूं तो मैं ऐसा अमीर नहीं होना चाहता था, जिसे सीनियर बैंकर्स के साथ बैठकर डिनर करने की तकलीफ झेलनी पड़े।

साढ़े सात बजे बत्ती मद्धम हो गई। राउंड टेबल पर हो रही गपशप बंद हो गई। बाला स्टेज पर आया। उसने सूट के नीचे क्रीम कलर की चमकदार सिल्क शर्ट पहन रखी थी और उसे देखकर लग रहा था मानो वह कोई ट्रेनी दलाल हो।

'वेलकम एवरीवन, क्या शानदार शाम है! मेरा नाम है बाला, प्रायर्टी बैंकिंग ग्रुप का रीजनल मैनेजर,' उसने कहा और अपने चेहरे से पसीना पोंछा।

'तुम्हारा बॉस?' अनन्या ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए पूछा।

मैंने सिर हिलाकर हां कहा।

'उसकी शर्ट तो देखो।'

'श्श्श,' मैंने कहा। मंजू और अनन्या के पिता ध्यान से बाला को सुनते रहे।

'मैं एक स्पेशल पर्सन को स्टेज पर बुलाना चाहता हूं 'बाला ने कहा।

लोगों ने तालियां बजानी शुरू कर दी, क्योंकि उन्हें लगा कि हरिहरन या एसपी में से कोई स्टेज पर आने वाला है।

'प्लीज़ वेलकम मिस्टर अनिल माथुर, कंट्री मैनेजर एंड एमडी, सिटीबैंक इंडिया।' लोगों ने एक साथ निराशा के साथ आह भरी।

अनिल स्टेज पर आया और उसे यह महसूस हो गया कि किसी को भी उसकी परवाह नहीं थी। उसने एक जोक सुनाने की कोशिश की। 'हैलो एवरीवन, भला

किसने सोचा था कि हमारे कुछ सबसे बड़े क्लाइंट्स डोसा और इडली की धरती के होंगे?'

लोग इतने चुप हो गए कि समीप के समुद्रतट की लहरों की आवाज़ सुनाई देने लगी। अनन्या ने शॉल्ड होकर मेरी ओर देखा। मैंने कंधे उचका दिए। उस पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं था।

अनिल समझ गया कि उसका जोक टांय-टांय-फिस्स हो गया है। उसने अपने बचाव के लिए कहा,' यू सी, बॉम्बे में इडली और डोसा को सिंपल स्नैक्स माना जाता है।'

'यह तो पूरा बेड़ा गर्क किए जा रहा है,' अनन्या ने कहा।

'हां, गनीमत है कि उसे केवल पाँच मिनट ही बोलना है।'

अनिल समझ गया कि उसका सेंस ऑफ़ ह्यूमर केवल उन्हीं लोगों पर कारगर रहता है जो उसके नीचे काम करते हैं। लिहाज़ा उसने फ़ौरन वह करना शुरू कर दिया, जो बैंकर्स सबसे अच्छी तरह से कर सकते हैं : बोरिंग पॉवरपॉइंट स्लाइड प्रेजेंट करना।'तो देखा आपने, जब हम चेन्नई आए थे तब हमने एक छोटे-से कदम से शुरूआत की थी और आज हम एक वटवृक्ष बन गए हैं। हम एक छोटी-सी इडली से पेपर डोसा बन गए हैं,' अनिल ने अपने हाथ से दोनों डिश का आकार बनाते हुए कहा।' प्लीज़, कोई जाकर इसको चुप कराए,' अनन्या ने दुखी मन से कहा।

'हम इसको चुप नहीं करा सकते। यह सबसे बड़ा बॉस है मैंने कहा।

अनिल ने अपनी स्पीच ख़त्म की और स्टाफ़ ने जोरों से तालियां बजाई। दो रिसर्च एनालिस्ट्स स्टेज पर आए और कांफिडेंस के साथ अगले दस सालों के ग्लोबल कॉर्पोरेट आउटलुक के बारे में बताने लगे, हालांकि उन्हें ख़ुद नहीं पता था कि वे क्या बोल रहे हैं। लोग धैर्य से उनकी बात ख़त्म होने का इंतज़ार करते रहे।

'यदि हम मानें कि हमारी जीडीपी विकास दर सात फ़ीसदी तक पहुंच जाएगी तो तस्वीर कुछ ऐसी नज़र आएगी,' एनालिस्ट ने कहा। किसी ने नहीं पूछा कि हम क्यों मान लें कि विकास दर सात फ़ीसदी रहेगी। लेकिन एनालिस्ट के पास बहुत सारे चार्ट्स थे और वह बताता रहा कि वास्तव में सात फ़ीसदी विकास दर के साथ क्या हो सकता है।

प्रेजेंटेशन साढ़े आठ बजे ख़त्म हुआ। बाला फिर स्टेज पर आया। लोग अब बेचैन होने लगे थे।' नहीं, अब और नहीं,' लोगों के मन में आए इस विचार को लगभग सुना जा सकता था।

'और अब, म्यूज़िक कंसर्ट का संचालन करने के लिए मैं स्टेज पर बुलाता हूं मिस टीएस स्मिता को,' बाला ने कहा।

लोगों ने तालिया बजाकर इस घोषणा का स्वागत किया। भारी-भरकम वक्षों वाली स्मिता स्टेज पर आई। उसने एक लो-कट ब्लाउज़ पहन रखा था और सिटीबैंक के लिहाज़ से वह कुछ ज़्यादा ही लो-कट था।

'वेलकम, लेडीज एंड जेंटलमेन,' स्मिता ने हाथ में माइक थामे कहा।' आर यू हैविंग अ गुड टाइम?'

किसी ने कोई रिस्पांस नहीं किया।

‘इसने क्या पहन रखा है?’ अनन्या ने इस तरह पूछा कि हमारी पूरी टेबल ने सुना और सभी खी-खी कर हँसने लगे।

‘हां, उसने थोड़ी भड़काऊ ड्रेस पहन रखी है,’ मैंने कहा।

‘उसकी छातियों के बीच इतनी जगह है कि वह माइक को वहां भी फंसाकर रख सकती है। हैंड्स-फ्री,’ अनन्या ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा।

‘शट अप, अनन्या,’ मैंने अपनी मुस्कान को दबाते हुए कहा।

‘आज हमारे लिए तीन टैलेंटेड सिंगर्स परफ़ॉर्म करेंगे,’ स्मिता ने कहा। मेरा दिल जोरों से धड़कने लगा। ‘ऑफ़ कोर्स, हम सभी अपने दिग्गज सिंगर्स का इंतज़ार कर रहे हैं। लेकिन हमारी पहली सिंगर हैं, न्यू एंड -बेरी टैलेंटेड, राधा। प्लीज़, स्टेज पर उनका स्वागत कीजिए।’

लोगों ने तालियां बजाईं। मैं गर्दन उचकाकर स्टेज की ओर देखने लगा। अनन्या की मां ऑ रेंज साड़ी में स्टेज पर आईं।

‘ये तो मॉम हैं,’ सबसे पहले मंजू ने उन्हें पहचाना और वह उठकर खड़ा हो गया।

39

'क्या?' अनन्या के पिता भी खड़े हो गए।

अनन्या ने पहले स्टेज की ओर देखा और फिर मुझे देखा।' क्रिश, ये सब... ''श्श्श ध्यान से सुनो,' मैंने होंठों पर अंगुली रखकर उसे चुप कराते हुए कहा। राधा ने हाथ में माइक लिया।

'मॉम! 'मंजू ज़ोर से चिल्लाया।

अनन्या की मां ने हमारी ओर देखा और मुस्करा दीं।

'आप हमारे लिए सबसे पहले क्या गाने वाली हैं राधा?' स्मिता ने एक खास अदा के साथ पूछा।

'फिल्म कहो ना प्यार है का गीत इक पल का जीना,' अनन्या की मां ने शर्माते हुए जवाब दिया।

जैसे ही गीत का इंट्रो बजना शुरू हुआ, लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उसका स्वागत किया।

राधा आंटी अच्छा गा रही थीं। मैंने देखा कि कई क्लाइंट्स के पैर थिरकने लगे थे या वे संगीत की धुन के साथ सिर हिला रहे थे। तमिल नींद में भी बता सकते हैं कौन-सा सिंगर अच्छा है, ठीक वैसे ही, जैसे पंजाबी पलभर में बता सकते हैं कि अच्छा बटर चिकन कौन-सा है। श्रोताओं में से कोई भी ऐसा नज़र नहीं आ रहा था, जो राधा आंटी के गायन को सराह नहीं रहा हो।

'राधा यहां तक कैसे पहुंची?' अनन्या के पिता ने शॉक से रिकवर होने के बाद कहा।

'ज़ाहिर-सी बात है डैड, यह सब क्रिश ने अरेंज किया है। क्या आप अनुमान नहीं लगा सकते?' अनन्या ने कहा।

'उसने मुझे भी नहीं बताया,' अंकल ने कहा लेकिन उनकी आखें गर्व से चमक रही थीं।

'मॉम कितना अच्छा गा रही हैं अनन्या ने मंजू से कहा। मंजू ने सिर हिलाकर हामी भरी और तरह-तरह के स्नैक्स लेकर फेरी लगाने वाले वेटर्स के पास पहुंच गया। अनन्या आगे झुकी और मेरे गालों पर एक पप्पी दे दी। उसके पिता का ध्यान हम पर नहीं गया, क्योंकि उनकी आखें स्टेज पर जमी हुई थीं। अलबत्ता कुछ एजेंट्स ने ज़रूर यह देख लिया। मैं झेंपते हुए मुस्करा दिया।

'अनन्या, ये ऑफिस का इवेंट है मैंने फुसफुसाते हुए कहा।

'ऑफ़ कोर्स, इसीलिए तो मॉम अभी स्टेज पर हैं उसने अपने पैरों से मेरे पैरों के साथ खेलते हुए कहा।

इसके बाद आंटी रजनीकांत की फिल्म का लेटेस्ट तमिल हिट गाना गाने लगीं। श्रोताओं का रोमांच और बढ़ गया। यह एक धीमा बैलेड था और इसे गाने के लिए आवाज़ के खासे उतार-चढ़ाव की दरकार थी। आंटी ने गीत के एक मुश्किल हिस्से को पूरी सफाई से गाया तो तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी।

जैसे ही अनन्या की मां ने एक ही पंक्ति में तीन सप्तक बदले, अनन्या के पिता के मुंह से निकल पड़ा,' लवली, ब्यूटीफुल!!'

अनन्या की मां ने इसके बाद चार और गीत गाए। हर गीत को श्रोताओं का भरपूर प्यार मिला।

स्मिता फिर स्टेज पर आई।

'दैट वाज़ वंडरफुल, राधा। और इससे पहले कि आप स्टेज छोड़े, मैं हमारे अगले सिंगर मिस्टर एस पी बालासुब्रमणियम को स्टेज पर बुलाना चाहूंगी, जो आपके बारे में कुछ कहना चाहते हैं।'

साउथ इंडिया के महानतम गायकों में से एक एसपी के स्टेज पर पहुंचते ही श्रोताओं ने अपनी जगह पर खड़े होकर उनका अभिवादन किया। राधा आंटी ने हाथ जोड़कर झुकते हुए उन्हें प्रणाम किया।

एस पी ने कहा 'गुड इवनिंग, चेन्नई एंड थैंक यू सिटीबैंक। इससे पहले कि मैं अपनी परफॉर्मेंस शुरू करूं मैं राधाजी के अद्भुत गायन के लिए उनकी सराहना करना चाहता हूं। उन्होंने जो गीत गाए, वे पॉपुलर थे, लेकिन मैंने पाया कि शास्त्रीय संगीत पर राधाजी की अच्छी पकड़ है। क्या आप अक्सर गाती हैं राधा? '

'नहीं, इस तरह के कार्यक्रम में यह पहली बार था।'

'वेल, आपको और गाना चाहिए। है ना, चेन्नई?'

सभी ने मेज़ें थपथपाते हुए एसपी की बात का समर्थन किया। अनन्या की मां ने झुककर दर्शकों का अभिवादन स्वीकार किया। जब उन्होंने सिर उठाया तो उनकी आखें नम हो चुकी थीं।

'तो, आप आगे भी गाएंगी ना?' एसपी ने राधा की ओर माइक बढ़ाते हुए कहा।' जी ही, मैं गाऊंगी। सर, मैं यह भी कहना चाहती हूं कि आज मेरी ज़िन्दगी का सबसे खुशीभरा दिन है। मैं आपके साथ स्टेज पर खड़ी हूं।'

श्रोताओं ने तालिया बजाईं। राधा आंटी बड़ी मुश्किल से अपने आसुओं को बहने से रोक पाईं और स्टेज से चली गईं।

'और मुझे लगता था कि मां के जीवन का सबसे बड़ा खुशीभरा दिन वह था, जब मैं जन्मी थी,' अनन्या ने बुदबुदाते हुए कहा। उसकी तालियां रुकने का नाम नहीं ले रही थीं।

शाम जवां होती चली गई और एसपी और हरिहरन ने अपनी आवाज़ के जादू से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। सभी के लिए वास्तविक शो की शुरुआत अब जाकर हुई थी, लेकिन मेरे लिए वास्तविक शो ख़त्म हो चुका था।

दस मिनट बाद अनन्या की मां हमारे साथ टेबल पर थीं।

'आपका गायन अद्भुत था,' समीप की एक टेबल पर बैठी एक महिला ने अनन्या की मां से कहा।

अनन्या के पिता ने शर्माते हुए अपनी पत्नी की ओर देखा। एसपी फिल्म एक दूजे के लिए का गीत गा रहे थे : तेरे मेरे बीच में। मैंने अनन्या की ओर देखा। हमारी कहानी इस फ़िल्म की कहानी से मिलती-जुलती थी, लेकिन मैं उम्मीद कर रहा था कि हमारी कहानी का अंत इस फ़िल्म की तरह न हो।

एक घंटे बाद बाला मेरी टेबल पर आया।

'क्रिश, मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें मशहूर ज्वेलर मिस्टर मुरुगुप्पा से मिलवाना चाहता हूं 'बाला ने कहा।

'क्या?' मैंने कहा।

‘आओ तो वह दस करोड़ का एक अकाउंट खुलवाना चाहता है। उसे सिटी के बारे में कुछ बताओ। मुझे अनिल को ड्रॉप करने एयरपोर्ट जाना है।’

‘सर मेरे साथ मेरे मेहमान हैं मैंने कहा। अनन्या ने मेरी दुविधा को भाप लिया।’ इट्स फ़ाइन, हम मैनेज कर लेंगे। डिनर उस तरफ़ है ना?’ अनन्या ने कहा।

‘ओह तो ये ही हैं वो?’ बाला ने अनन्या की ओर मुड़ते हुए कहा।

‘लेट्स गो, बाला,’ मैंने कहा।

मैं मिस्टर मुरुगुप्पा से मिला। पचासेक साल का एक थुलथुल आत्मतुष्ट व्यक्ति।’ पंजाबी? तमिल इल्ले?’ उसने कहा और मुझे अपना कार्ड दिया।

‘तो आप ही ज्वेलरी किंग हैं?’

‘किंग? किंग नहीं एंपरर! चेन्नई में हमसे आगे कोई नहीं।’

‘सर जहां तक आपके अकाउंट का संबंध है कहते-कहते मैंने दूर से अनन्या के परिवार को देखा। वे हँसते-खेलते डिनर कर रहे थे। अनन्या की मां को बधाई देने कई लोग आ रहे थे। मैंने सोचा कि सही वक़्त अब आ पहुंचा है।

‘मिस्टर मुरुगुप्पा, एक्चुअली, शायद मुझे ही कुछ ज्वेलरी की ज़रूरत पड़ सकती है मैंने कहा और उन्हें अपने साथ डिनर टेबल पर ले आया।

'ओह, मेरा भरोसा करो, वे उस दिन के बाद से सातवें आसमान पर हैं। उन्हें थैंक्स कहने के लिए डिनर देने की कोई ज़रूरत नहीं है,' अनन्या ने फ़ोन पर कहा।

हम अपने-अपने ऑफिस में थे। मैंने अनन्या के परिवार को डिनर पर निमंत्रित किया था।

'लेकिन हमने तो उन्हें कंसर्ट के लिए पे भी नहीं किया। कम से कम मैं उन्हें डिनर पर तो बुला ही सकता हूं 'मैंने कहा।

'तुम पहले ही बहुत कर चुके हो,' अनन्या ने कहा।

'मेरा यक़ीन करो, डिनर कुछ खास है मैंने कहा।

'रियली? क्या बात है?'

'अगले शुक्रवार रेनट्री पर तुम्हें ख़ुद पता चल जाएगा। आठ बजे मिलते हैं,' मैंने कहा।

रेनट्री रेस्टॉरेंट बिन्नी रोड पर ताज कॉनेमारा होटल में है। आउटडोर रेस्टॉरेंट पेड़ों के एक शामियाने तले था। पेड़ों की शाखाओं पर बत्तियां लगी थीं और टेबल पर मोमबतियां सजी हुई थीं। एमेथिस्ट के अलावा यह शहर की एक और ऐसी जगह थी, जहां सुकून के पल बिताए जा सकते थे।

मैं एक आउटडोर टेबल पर अनन्या के परिवार के साथ बैठ गया। मेरी जेब गर्म थी।' दिस इज़ स्टनिंग,' अनन्या ने छोटी-छोटी बत्तियों को देखते हुए पूछा। उसने सफ़ेद रंग की पोशाक पहन रखी थी, जिस पर सितारे थे। शाम के धुंधलके में वे सितारे चमक रह थे।

'आप लोग इससे पहले यहां कभी नहीं आए?' मैंने पूछा।

'नहीं, हम यहां पहले कभी नहीं आए। है ना, डैड? '

अंकल ने सिर हिलाकर हामी भरी। वे हमारे सामने पत्तियों के एक गुच्छे को निहार रहे थे। वर्दी में सजे-धजे वेटर्स ने वेलकम ड्रिंक के रूप में हमारे सामने ताजे पुदीने के साथ नारियल पानी पेश किया। वह हमारी टेबल पर मेनु कार्ड छोड़ गए। यह रेस्तरां चेट्टीनाड फूड के लिए जाना जाता था। फूड का यह नामकरण तमिलनाडु के दक्षिण में स्थित एक क्षेत्र के नाम पर किया गया था। चेट्टिनाड फूड अपने तीखे मसालों और ज़ायके के साथ ही नॉन-वेज की लंबी रेंज के लिए मशहूर था।

'सर, कॉकटेल के लिए मैं कोथामल्ली मेरी रिकमेंड करूंगा,' वेटर ने कहा।

'कोथा-व्हॉट?' मैंने पूछा।

'सर, यह ब्लडी मेरी की तरह है टोमैटो जूस और वोदका, लेकिन चेट्टिनाड मसालों के साथ।'

मैंने अंकल की ओर देखा। अपनी धर्मपत्नी के सामने अल्कोहल के लिए हामी भरने से वे झिझक रहे थे।

'मुझे एक चाहिए,' अनन्या ने कहा।

अनन्या की मां ने उसे तीखी नज़रों से देखा।

'कम ऑन, केवल एक कॉकटेल,' अनन्या ने कहा।

मैंने मेनु खोला। मैं डिशेस के लंबे-लंबे नामों का उच्चारण नहीं कर पा रहा था। स्पेशल डिशेस में कुरुवपिल्लई येरा और कोझि मेलगु चेट्टिनाड शामिल थे। मैंने बाक़ी के बारे में पढ़ने की जेहमत नहीं उठाई।

'इस फूड के बारे में आप अच्छी तरह जानते हैं प्लीज़ आप ही ऑर्डर कीजिए,' मैंने कहा।

अनन्या के पैरेंट्स ने अनेक बार मेनु को ऊपर से नीचे तक पढ़ा।

'यह तो बहुत महंगा है,' अनन्या की मां ने कहा।

'इट इज़ फ़ाइन,' मैंने कहा।' अनन्या, प्लीज़।'

अनन्या ने मेनु लिया और सभी के लिए ऑर्डर किया। ऑर्डर में कोझाकट्टाई मसाला पनियरम, अविकल, कंधारप्पम सीयम और अठिरसम शामिल था। यक़ीनन, मुझे कतई नहीं पता था कि ये कौन-सी डिशेस थीं और ये किस सामग्री से बनाई गई थीं। मैंने सोचा कि कम से कम उनमें से एक तो खाने लायक होगी। वेटर ने हमें यह भी सुझाव दिया कि हम इडियाप्पम ऑर्डर करें। यह राइस नूडल्स था, जिसे किसी चिड़िया के घोंसले के आकार में बनाया जाता था।

'आईआईटी की तैयारी कैसी चल रही है मंजू?' वेटर के जाने के बाद मैंने पूछा।

'गुड। मैं मयलापुर मॉक आईआईटी टेस्ट में दसवें नंबर पर आया,' मंजू ने कहा। मैंने सिर हिला दिया।' तो, कोई और साइनिंग ऑफ़र्स?' मैंने आंटी की ओर मुड़ते हुए पूछा।

आंटी मुस्करा दीं।' मुझे शर्मिंदा मत करो। ही, लेकिन मुझे एक नए गुरुजी ज़रूर मिल गए, जो कर्नाटिक संगीत को आधुनिक तरीक़े से सिखाते हैं।'

मैं अनन्या के डैड की ओर मुडा।' बैंक में काम कैसा चल रहा है, अंकल?

'गुड, सब लोग आज भी तुम्हारे उस प्रेजेंटेशन के बारे में बात करते हैं।'

खाना आ गया: मसालेदार, तीखा और लज़ीज़।

'दिस इज़ ग्रेट,' मैंने मसाला पनियरम को चखते हुए कहा। यह डिश इडली की ही नाते-रिश्तेदार थी, लेकिन उसका आकार गेंद की तरह गोल था और वह उससे अधिक स्वादिष्ट थी।

रेनट्री स्टाफ़ एक ट्रॉली ले आया, जिसमें दस चटनियां थीं। हमें उनमें से अपने लिए चटनियां चुननी थीं।

'मैं कसम खाकर कहता हूं दिल्ली को एक बार यहां आकर इसे चखना चाहिए। हम लोग अभी तक पनीर मसाला डोसा से आगे नहीं बढ़ पाए हैं मैंने इडियप्यम के साथ एक चम्मच भर टमाटर-इमली चटनी लेते हुए कहा।

‘तुम्हें यह अच्छी लगती है? मैं इसे तुम्हारे लिए घर पर भी बना सकती हूं ‘अनन्या की मां ने कहा।
मुझे महसूस हुआ कि सही वक़्त अब बहुत क़रीब है। शायद मीठे के दौरान, मैंने ख़ुद से कहा। हमने मीठे के मेनु पर नज़र दौड़ाई। अनन्या के पिता ने नारियल आइस्कीम चुनी। साउथ इंडियंस को नारियल बेइंतहा पसंद है। हमें आइसक्रीम हरे नारियल के गोले में ही परोसी गई।
‘सुपर्ब,’ अनन्या के पिता ने कहा। मैंने इसे रेडी, गेट सेट गो के सिग्नल की तरह लिया।
‘मैं आपसे एक ज़ुरूरी बात करना चाहता हूं ‘मैंने कहा।
अनन्या के पिता ने आइस्कीम खाते हुए नज़र उठाकर देखा।
‘यदि आपको इससे कोई परेशानी न हो तो?’ मैंने साथ में यह भी जोड़ दिया। अंकल ने सिर हिलाकर हामी भरी। अनन्या की मां ने अनन्या और मेरी ओर देखा।
‘मंजू तुम भी,’ मैंने कहा। उसने अपना चेहरा आइस्कीम बॉउल से इतना सिमटाकर रखा था कि उसके चश्मों पर आइस्कीम लग गई थी।
सभी का ध्यान मेरी ओर था।’ हाय,’ मैंने गला साफ़ किया। ‘अंकल, आंटी, मंजू मैं यहां छह महीने पहले आया था। यह कोई राज़ की बात नहीं है कि मैंने अपनी पहली पोस्टिंग के रूप में चेन्नई को क्यों चुना था। ख़ैर, मैं यहां पूरी ज़िन्दगी नहीं रह सकता। आज से लगभग तीन साल पहले मैं अनन्या से मिला था और हमारी पहली लड़ाई को छोड़ दें तो तब से आज तक मैं उसे प्यार करता आ रहा हूं।’
टेबल के नीचे अनन्या ने मेरा हाथ अपने हाथों में ले लिया।
‘और हमने सोचा था कि एक-दूसरे के साथ शादी करने के लिए हमारा प्यार ही काफ़ी होगा। हमने सोचा था कि कंवोकेशन में हमारे पैरेंट्स मिलेंगे और उसके बाद सब कुछ ठीक-ठीक होगा। वेल हम ग़लत थे।’
वेटर आइस्कीम की प्लेट्स लेने आया। मैंने उसे कहा कि वह पाँच मिनट बाद आए। ‘हम भागकर शादी कर सकते थे। हम अपने फैसले को आप पर थोप सकते थे। लेकिन अनन्या ने मुझे कहा कि उसका सपना है कि हमारी शादी के दिन हम दोनों के पैरेंट्स मुस्कराते हुए वहां मौजूद रहें। और इसीलिए, मैं यह देखना चाहता हूं कि क्या हम ऐसा करने में कामयाब हो सकते हैं। बात यह भी है कि मुझे नहीं लगता कि हमने ऐसा कुछ ग़लत किया हो, जिसके लिए हमें भागकर शादी करनी पड़े।’
अनन्या के पैरेंट्स चुप्पी साधे रहे। या तो वे बहुत ध्यान से मेरी बातों को सुन रहे थे या आइस्कीम कुछ ज़्यादा ही ठंडी थी।
‘और जिस दिन से मैं चेन्नई आया हूं उस दिन से मैं यही कोशिश करता आ रहा हूं कि आप मुझे स्वीकार कर लें। मैं यह उम्मीद तो नहीं करता कि आप लोग मुझे उस तरह प्यार करेंगे, जिस तरह आप हरीश को करते हैं लेकिन कम से कम आप मुझे स्वीकार तो सकते हैं।’
अनन्या की मां कुछ कहना चाहती थीं। मैंने इशारे से उन्हें अभी चुप रहने को कहा। ‘और हो सकता है कि आप मुझे प्यार न करें, लेकिन मैं यह भी नहीं चाहता कि आप मुझे चुपचाप बर्दाश्त करते रहें। इन दोनों के बीच में ही वह बात है जिसे मैं स्वीकार करना कहता हूं।’ मैंने अपना सीधा हाथ अपनी पतलून की जेब में डाला और उसमें रखे चार छोटे-छोटे बॉक्स को अपनी अंगुलियों से पकड़ लिया।
‘इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, आपकी बेटी की खुशी के बारे में विचार करते हुए और आप मेरे बारे में जो कुछ जान पाए हैं उसके मद्देनज़र,’ मैंने कहा और सांस लेने के लिए पल भर को रुका। मैंने चारों छोटे-छोटे लाल बॉक्स बाहर निकाले और उन्हें टेबल पर रख दिया। सभी बॉक्सेस पर लिखा था: ‘मुरुगुप्पा ज्वेलर्स ‘। मैंने चारों बॉक्स को खोला सभी में सोने की अंगूठी थी। मैं अपनी कुर्सी से उठा और फ़र्श पर घुटनों के बल बैठ गया।
‘मैं क्रिश मलहोत्रा, आप सभी को प्रपोज़ करना चाहता हूं। क्या आप सभी मुझसे शादी करेंगे?’ मैंने कहा और चारों बॉक्स अपनी हथेली में रख लिए।
अनन्या के पैरेंट्स बार-बार अनन्या और मुझे देखते रहे। मंजू का मुंह खुला का खुला रह गया। उसके मुंह में कोकोनट आइस्कीम साफ़ देखी जा सकती थी।
अनन्या के पिता ने अनन्या को इशारा किया कि अब क्या करना है।
‘मॉम और डैड, आपके बाद,’ अनन्या ने कहा,’ और मंजू र तुम भी।’
मंजू ने अपना बॉक्स उठा लिया। ‘नाइस रियल गोल्ड?’ उसने पूछा।
मैंने सिर हिलाकर हां कहा।
‘ऑरम, एटॉमिक नंबर सेवंटी-नाइन,’ मंजू ने अपनी रिंग उठाते हुए कहा।
‘अंकल?’ मैंने कहा। कांक्रीट के फ़्लोर पर मेरे घुटने दर्द करने लगे थे।
‘यदि तुम वादा करो कि तुम मेरी बेटी का ख़्याल रखोगे,’ अनन्या के पिता ने कहा,’ तो मेरी तरफ़ से हां है।’ वे आगे झुके और अपना बॉक्स उठा लिया।
अनन्या ने अपने पिता को गले लगा लिया।’ थैंक्स, डैड,’ उसने कहा,’ आई लव
यू
अनन्या के पिता ने उसके सिर पर हाथ रखकर उसे आशीष दिया।
अनन्या की मा ने कहा,’ ऐसी बात नहीं है कि हम तुम्हें पसंद नहीं करते। लेकिन हमारी कम्मुनिटीज़... '
‘मॉम, कम ऑन,’ अनन्या ने उन्हें बीच में ही टोकते हुए कहा।
अनन्या की मां ने जवाब देने में एक मिनट का समय लिया।’ मुझे पता है कि क्रिश तुम्हारा ख़्याल रखेगा। लेकिन क्या क्रिश के पैरेंट्स भी मेरी बेटी के साथ सम्मान से पेश आएंगे? '
‘हम उस मामले में कोई न कोई हल निकाल लेंगे,’ मैंने कहा। मैं जानता था कि दिल्ली में एक और चुनौती मेरी राह तक रही

है।’ यदि मेरे पैरेंट्स अनन्या के साथ सम्मान से पेश आएं तो? '

‘तो मेरी ओर से भी हां है अनन्या की मां ने कहा।

अनन्या खुशी से उछल पड़ी। आंटी ने रिंग ले ली और अनन्या ने उसके माथे पर एक चुंबन जड़ दिया।

‘अक्का, तुमने अपनी रिंग नहीं उठाई है,’ मंजू ने कहा। मां-बेटी का प्यार जारी रहा। जब वे दोनों अलग हुईं तो दोनों की आंखो में आंसू थे।

‘ओह ऑफ़ कोर्स, ये रही मेरी रिंग।’ अनन्या ने अपनी रिंग उठाते हुए कहा। मैं अपनी सीट पर लौट आया।

‘सर, आपको खाना अच्छा लगा?’ वेटर ने प्लेट्स उठाते हुए कहा।

‘यक़ीनन,’ मैंने वेटर को बिल से भी ज़्यादा टिप देते हुए कहा।

41

‘मैं तुम्हें मिस करूंगा,’ बाला ने अपने ऑफ़िस में मुझे ट्रासफ़र पेपर्स थमाते हुए कहा।

‘काश, मैं भी यही कह सकता,’ मैंने कहा। बाला का मुंह लटक गया। ‘अरे, मैं तो मज़ाक कर रहा हूं। चीयर अप। अब यहां आपको ब्लैकमेल करने वाला कोई नहीं रहेगा,’ मैंने कहा।

मेरे ब्लैकमेल के कारण ही बाला ने अनिल माथुर से बात कर मेरा ट्रांसफ़र दिल्ली करवाया था। इस पूरी कार्रवाई में दो महीने लगे। मैं जल्द से जल्द घर जाना चाहता था। आखिर, चेन्नई में मेरा जो काम था वह पूरा हो गया था। हां, हमें अभी दिल्ली में कुछ और लड़ाइयां जीतनी थीं। अनन्या का पंजाबियों की फुल फ़ोर्स से सामना होने वाला था।

ख़ैर, ज़िन्दगी में एक समय पर एक मुसीबत से जूझना ही ठीक रहता है।

हमें ऑपरेशन दिल्ली कम समय में निपटाना था। अनन्या ने अपने बॉसेस को कंविंस कर लिया था कि वे उसे एक हफ़्ते के लिए दिल्ली भेजें। अनन्या ने कहा था कि आखिर हर एचएलएल मैनेजर को नॉर्थ इंडिया का एक्सपोज़र मिलना ही चाहिए। अनन्या के पैरेंट्स हमें एयरपोर्ट तक छोड़ने आए। अनन्या की मा दिल्ली के बारे में सोचकर चिंता कर रही थी। आखिर, दिल्ली को लड़कियां छेड़ने के मामले में पूरी दुनिया की राजधानी होने का खिताब जो मिला है।

‘मॉम, एचएलएल गेस्ट हाउस सेफ़ है। मैं ज़्यादा समय बाहर नहीं रहूंगी,’ अनन्या ने कहा।

अनन्या के डैड को भी कुछ चिंताएं थीं। ‘याद रखो, हमने हां ज़रूर कह दिया है लेकिन अभी तुम दोनों की शादी नहीं हुई है। ऐसा कुछ मत करना जिससे हमें शर्मिंदा होना पड़े अंकल ने हमें गुडबाय कहते हुए कहा।

‘ऑफ़ कोर्स अंकल मैंने कहा। मैं समझने की कोशिश कर रहा था कि वे क्या कहना चाह रहे हैं। शायद नो सेक्स।

अनन्या और मैं टर्मिनल में चले आए। जैसे ही उसके पैरेंट्स नज़रों से ओझल हुए, उसने मेरी बांह ज़ोर से पकड़ ली। फ़्लाइट ने टेक ऑफ़ किया। मैंने अनन्या को हमारे अगले क़दम के बारे में समझाने के लिए नोटबुक निकाली: ऑपरेशन दिल्ली।

‘यानी, मुझे हर बात पर तुम्हारी मॉम से सहमत होना पड़ेगा। हर बात यानी हर बात अनन्या ने कहा। फ़्लाइट को टेक ऑफ़ किए बीस मिनट हो चुके थे और हम हवा में तीस हजार फीट की ऊंचाई पर थे।

एयर टरब्यूलेंस के कारण हवाई जहाज़ में उथल-पुथल हुई।

‘हां, हर बात से,’ मैंने अपनी सीट-बेल्ट को टाइट करते हुए कहा,’ और तुम्हारी ट्रिप की टाइमिंग इससे बेहतर नहीं हो सकती थी। अगले हफ़्ते मेरी कज़िन सिस्टर मिंटी की शादी हो रही है। तुम शादी में आओगी, सभी से मिलोगी, बस, हो गया काम।’

अनन्या ने मेरी बांह को कसकर पकड़ने के लिए आर्मरेस्ट उठा दिया।’ आई एम श्योर, जब तक मैं तुम्हारे साथ हूं सब ठीक ही होगा।?’

‘देखो तुम्हें केवल मॉम का दिल जीतना है। पापा कभी इस रिश्ते के लिए राज़ी नहीं होंगे, इसलिए वे हमारे प्लान का हिस्सा भी नहीं हैं। बस मा को खुश कर दो ओके

‘आर्मरेस्ट नीचे कर दीजिए, यह सेफ़ नहीं है,’ हमारे पास से गुज़र रही फ़्लाइट अटेंडेंट ने सख़्त लहज़े में कहा।

जब कपल एक-दूसरे के साथ होते हैं, तो वे कभी इस बात को नहीं समझ पाते कि एक-दूसरे के लिए उनका प्यार दूसरों को कितना भद्दा लग सकता है।

‘वह अपने आपको समझती क्या है?’ अनन्या ने तमतमाते हुए कहा।

‘कौन, मेरी मा? '

‘अरे नहीं, ये एयरहोस्टेस। और इतनी सारी रेड लिपस्टिक लगाने की क्या ज़रूरत है? वह फ़्लाइट अटेंडेंट है या कोई आइटम गर्ल?’

मुझे नहीं पता, लड़कियों को दूसरी लड़कियों के अपियरेंस पर कमेंट करने में इतना मज़ा क्यों आता है। मेरे पास एक गंजा बैठा था, जो फ़्लाइट के दौरान लगातार खर्राटे भर रहा था, लेकिन मेरा ध्यान उस पर कतई नहीं गया।

‘फ़ोकस अनन्या। तुम्हारा पाला एक पंजाबी सासु मां से पढ़ने वाला है। तुमने इस तरह के हालात का सामना इससे पहले कभी नहीं किया होगा,’ मैंने कहा।

अंक 4: दिल्ली एक बार फिर

42

'मेरी बांह छोड़ो,' मैंने कहा।
'क्यों?' अनन्या ने पूछा।
'मुझे सामने मां नज़र आ रही हैं।'
मां अराइवल्स एरिया में मेरा इंतज़ार कर रही थीं। वे उन दस हजार ड्राइवरों के बीच खड़ी थीं, जो लगभग हर पंजाबी नाम की तख्ती लिए खड़े थे। अब यहां कहीं भी वेंकट या रामास्वामी नज़र नहीं आ रहे थे, हर तरफ़ केवल अरोरा और खन्ना ही थे।
जब लोग चेन्नई हवाई अड्डे पर लैंड करते हैं तो वे एक-दूसरे को देखकर मुस्कराते हैं और शालीनता के साथ कार पार्क की ओर बढ़ चलते हैं। लेकिन दिल्ली हवाई अड्डे पर तो जैसे ट्रैफिक जाम ही हो जाता है। लोग तब तक एक-दूसरे को गले लगाते रहते हैं जब तक उनका दम न घुटने लगे। मां ने मुझे कसकर गले लगाया और मुझे यह अच्छा लगा। चेन्नई में छह महीनों के दौरान मुझे किसी ने इस तरह गले नहीं लगाया था (अनन्या को छोड़कर, ऑफ़ कोर्स, लेकिन वह प्यार की एक दूसरी कैटेगरी है)। हम ऑटो स्टैंड की ओर बढ़ चले। अनन्या ने मां को नमस्ते किया, लेकिन उन्होंने उसे नज़रअंदाज़ कर दिया।
'तुमने खाना खाया?' मां ने मुझसे सबसे जुरूरी सवाल पूछा।
मैंने सिर हिलाकर हां कहा।
'उन्होंने क्या सर्व किया था?' मैंने ग़ौर किया कि वे अनन्या को पूरी तरह नज़रअंदाज़ करने की कोशिश कर रही हैं।
'पनीर मसाला और राइस,' मैंने कहा।' मॉम आप अनन्या से मिल चुकी हैं याद आया?' मा ने अनन्या को एक फ़ेक स्माइल दी और फिर मुझसे बात करने लगीं। 'रोटियां नहीं दी? '
'मॉम, अनन्या दिल्ली ऑफिस में एक हफ़्ते काम करने आई है।'
'वह रुकेगी कहा?' मा ने पूछा। उनकी आवाज़ से झलक रहा था कि वे चिंतित हो रही हैं।
'कंपनी के गेस्ट हाउस में,' अनन्या ने कहा।
'हां, लेकिन वह सोमवार तक ही वहां जा पाएगी। मैंने सोचा कि अगर वह वीकेंड के लिए घर पर आती है तो बहुत अच्छा होगा।'
'किसके घर?' मां ने हैरान होते हुए पूछा।
'हमारे घर और किसके,' मैंने कहा। ऑटो स्टैंड पर मैंने ट्रॉली से हमारे बैग्स उतारे। मां खामोश हो गईं। मैंने प्री-पेड स्टैंड पर पैसा चुकाया। हम अपने बैग्स के साथ ऑटो में ठसाठस बैठ गए। मैं बीच में बैठा था। अनन्या मेरे दांई और मां बाइं ओर बैठी थीं।
'मिंटी की शादी की तैयारियां हो गईं?' मैंने कहा।
'मिंटी की शादी बहुत अच्छे लड़के से हो रही है,' मां ने कहा।
'रियली? बहुत अच्छा लड़का है क्या?' मैंने पूछा।
'ओह हां, सो गुड-लुकिंग। दूध की तरह गोरा,' मां ने कहा। 'और ज़रा कल्पना करो शादी का बजट कितना होगा? '
मैंने कंधे उचका दिए।
'रज्जी मामा केवल पार्टी पर ही पाँच लाख ख़र्च कर रहे हैं। साथ ही शगन पर लड़के के लिए एक बड़ा सरप्राइज़ गिफ्ट भी देने वाले हैं।'
'लड़के का नाम क्या है?' मैंने पूछा।
अनन्या ने हमारी बातचीत में कोई हिस्सा नहीं लिया। वह चुपचाप बैठी खिड़की से बाहर का नजारा देखती रही। हवा में उसके बाल उड़ रहे थे और कभी-कभी मेरे चेहरे को सहला जाते थे।
'मुझे उसका रियल नेम तो याद नहीं, लेकिन सभी उसको ड्यूक बोलते हैं।'
'ड्यूक? लाइक ब्रिटिश रॉयल्टी ड्यूक?' मैंने कहा।
'हां, उसने किसी डोनेशन कॉलेज से इंजीनियरिंग की है। अभी वह एस्कॉर्ट्र्स सॉफ़्टवेयर में काम कर रहा हैं और उसके पैरेंट्स तो इतने भले हैं कि बस कुछ न पूछो,' मां ने कहा।' वे जितनी बार तुम्हारे मामा-जी से मिले, उतनी ही बार मेरे लिए भी कुछ न कुछ लाए। वे ऑलरेडी मुझे तीन साड़िया भेंट कर चुके हैं।'
'अमेजिंग,' मैंने कहा।
'तुम्हें देखना चाहिए कि वे मेरी कितनी इज़्ज़त करते हैं। लड़का हर बार मेरे पैर छूता है।'
मैंने सिर हिला दिया। मैं यह विषय ख़त्म करना चाहता था, लेकिन मा फ़ुल फॉर्म में थीं। 'मैंने रज्जी मामा से पूछा कि वे इतना ख़र्चा क्यों कर रहे हैं। पता है उन्होंने क्या जवाब दिया?'
'क्या?' मैंने पूछा।
'उन्होंने कहा, दीदी आजकल अच्छे लड़के मिलते ही कहौ हैं?' तो मैंने कहा,' यदि ड्यूक को इतना मिल रहा है तो क्रिश को कितना मिलेगा? '
मैं चुप रहा। मां ने अपनी रामायण जारी रखी। 'उन्होंने कहा यदि ड्यूक का बजट पाँच लाख है तो तुम्हारा बजट तो दस लाख होना चाहिए। गिफ्ट अलग।'
'मेरी कीमत लगाने के लिए शुक्रिया,' मैंने कहा।
'मैं तो बस इतना ही कह रही थी... 'मा ने कहा।
अगले पाँच मिनट तक हम चुप रहे। जगह की तंगी होने के कारण मां अपनी सीट पर सिमटकर बैठ गईं।
'आप कार बुक करा सकती थीं। मैं पेमेंट कर देता,' मैंने कहा।

‘मुझे पता नहीं था कि तुम चेन्नई से एक्स्ट्रा बैगेज लेकर आओगे,’ मां ने जवाब दिया।

मैंने अनन्या को गेस्ट-रूम दिखाया। उसने एक भी शब्द कहे बिना बाथरूम में जाने के लिए नए कपड़े निकाले।

‘हे मां की बातों के लिए आई एम सॉरी। वे ज़रा बातूनी हैं लेकिन दिल की भली हैं।’

‘मर्डरर्स भी दिल के भले होते हैं। मैंने सोचा था कि तुमने उन्हें मेरे यहां आने के बारे में बता दिया होगा।’

‘मैं उन्हें सरप्राइज़ देना चाहता था,’ मैंने कहा।

‘फ़क ऑफ़ अनन्या ने मुझे कमरे से बाहर धकेलते हुए कहा।

मेरे पिता एक बिज़नेस मीटिंग के सिलसिले में कहीं बाहर गए थे। आर्मी छोड़ने के बाद से ही वे कई अलग-अलग कामों में हाथ आज़माते रहे थे। इन्हीं में प्रॉपर्टी डीलरशिप, सिक्योरिटी एजेंसी और फ्रेट फ़ॉरवर्डिंग एजेंसी का काम भी शामिल था, लेकिन कोई भी कारगर साबित न हुआ। उनका मानना था कि बेईमान पार्टनर्स और भ्रष्ट अफ़सरों के कारण ऐसा हुआ, लेकिन मेरा सोचना यह था कि उनकी नाकामी की वजह था उनका गुस्सा और आर्मी अफ़सर की मुद्रा से बाहर नहीं निकल पाना। जब आपको इस बात की आदत हो कि सैकड़ों लोग आपको दिनभर सलाम ठोंक रहे हैं तो फिर आपके लिए यह कठिन हो जाता है कि आप जाहिल बिल्डर्स के साथ पटरी बैठा पाएं। ख़ैर, मेरे पिता एक नाकामी से दूसरी नाकामी की ओर बढ़ते रहे। इसी कारण वे ज़्यादा समय घर से बाहर ही रहते थे। कुछ लोग तो यह भी कहते

थे कि कहीं पर उनकी कोई मिस्ट्रेस भी है, हालांकि मुझे नहीं लगता कि कोई और औरत उन्हें बर्दाश्त कर सकती थी।

अनन्या घर पर आने के बाद से ही अपने कमरे से बाहर नहीं निकली थी। शाम छह बजे मां अपनी रोज़ की सैर पर निकलीं।

‘तुम भीतर क्यों हो? बाहर आ जाओ, मां वॉक करने गई हैं।’

उसने दरवाज़ा खोला। वह अब भी अपसेट नज़र आ रही थी।

‘चलो प्यार करें?’ मैंने उसे आख मारते हुए कहा।

‘अपनी क़िस्मत मत आजमाओ मिस्टर मल्होत्रा। मुझे गुस्सा आ रहा है।’ उसने मुझे एक तरफ़ किया और लिविंग रूम में चली आई। उसने आंटीवी चालू कर लिया।

‘इस तरह के एटिट्यूड से कैसे काम चलेगा, अनन्या? तुम्हें तो मेरे परिवार का दिल जीतना है मैंने कहा।

‘दिल नॉर्मल लोगों का जीता जाता है, बदतमीज और इसेंसेटिव लोगों का नहीं, जो अपने मेहमानों की बेइज्जती करते हैं उसने कहा।

‘तो क्या तुम कमरे के भीतर ही बैठी रहोगी और गुस्से से अपना खून चलाती रहोगी? '

मैंने आंटीवी बंद कर दिया।

‘मुझे समझ नहीं आ रहा है क्या करूं उसने कहा।

‘यदि तुम मेरी बात ध्यान से सुनो तो तुम उनके दिल में जगह बना सकती हो।’ ‘बताओ, मैं सुन रही हूं ‘उसने रूखे मन से कहा।

‘डिनर,’ मैंने कहा।

‘डिनर व्हॉट? तुम लोग खाने के अलावा और किसी चीज़ के बारे में नहीं सोचते क्या? और वे क्या पूछ रही थीं? प्लेन में तुम्हें खाने को क्या दिया था? तुम्हारे दिल्ली पहुंचने के बाद यह उनका पहला सवाल था।’

मैंने फ्रिज खोला और उसमें से दो फ्रूआंटीज़ निकालीं। उसमें से एक मैंने उसे दे दी।

‘वे वॉक से लौटकर डिनर की तैयारी शुरू कर देंगी। तुम उनसे कहो कि तुम उनकी मदद करना चाहती हो। यह एक अच्छी शुरुआत होगी।’

‘उनकी मदद?’ उसने फ्रूटी में ज़ोर से स्ट्रॉ घुसाते हुए कहा।

‘यू नो, एकाध डिश बनाओ। या यदि तुम सीधे उनके दिल में बस जाना चाहती हो तो आज का पूरा डिनर तुम ही बनाओ।’

‘काट? आर यू केजी? मैंने आज तक कभी पूरा खाना नहीं बनाया।’

‘रियली?’ मैंने फ्रूटी सुड़कते हुए कहा।

‘अब इस तरह ‘रियली’ मत कहो। क्या तुम्हें खाना बनाना आता है?’

‘नहीं, लेकिन मैं पूरे समय पढ़ाई करता रहता था।’

‘आईआईएमए तो मैं भी गई थी।’

‘हां लेकिन,’ मैंने कहा और चुप हो गया।

‘हां लेकिन क्या? चूंकि मैं लड़की हूं इसलिए मुझे टफ़ लक कहो और किचन का रास्ता दिखा दो, क्यों?’ उसने कहा और फ्रूटी के डिब्बे को टेबल पर फेंक दिया।

‘अनन्या, मैं तो केवल तुम्हें यह बताने की कोशिश कर रहा हूं कि तुम किस तरह मेरी मां का दिल जीत सकती हो। तुम्हीं ने तो कहा था कि इसके लिए तुम्हें चाहे जो करना पड़े, तुम करोगी।’

‘फ़ाइन, क्या मुझे एक और फ्रूटी मिल सकती है? मुझे भूख लग रही है।’

मैंने अनन्या को एक और फ्रूटी दी। दरवाज़े की घंटी बजी। अनन्या अपने कमरे में जाने के लिए उठ खड़ी हुई।

‘अभी रुको,’ मैंने कहा और दरवाज़ा खोल दिया।

मां सब्जियों से भरी प्लास्टिक की दो थैलियां लेकर लौटी थीं। मैंने सब्जिया किचन तक ले जाने में उनकी मदद की। उन्होंने सब्जियां रखने के लिए फ्रिज खोला।

'फ्रूटीज़ कहां गईं?' मां ने पूछा।

'मैंने पी ली। अनन्या ने भी पी।'

'तीन फ्रूटीज़ गायब हैं। उसने दो पी लीं?' उन्होंने कहा।

मैं चुप रहा।

हम लिविंग रूम में चले आए। मां एक बड़ी-सी फूलगोभी, एक तश्तरी और एक चाकू ले आईं। फिर वे चाकू से गोभी काटने लगीं।

'आंटी, क्या मैं मदद कर सकती हूं?' अनन्या ने कहा।

'मदद?' मां ने पूछा।

'हां, डिनर बनाने में अनन्या ने कहा।

'हां मॉम आज अनन्या को ही डिनर बनाने दो ना?' मैंने मुस्कराते हुए सुझाव दिया। अनन्या ने मेरी ओर घूरकर देखा। मदद करना एक बात है और पूरा डिनर तैयार करना दूसरी बात। लेकिन यदि अनन्या को मां को इम्प्रेस करना था तो केवल सब्जियां धोकर रख देने से बात नहीं बनती।

मां ने अनन्या की ओर देखा।

'श्योर आंटी, व्हाय नॉट? बहुत मज़ा आएगा,' अनन्या ने कहा।

मां ने कंधे उचका दिए। फिर उन्होंने अनन्या की ओर तश्तरी बढ़ा दी। 'क्रिश को गोभी आलू पसंद है। हम काली दाल, भिंडी, रायता और सलाद भी बनाएंगे। बस, ज़्यादा कुछ नहीं। सिंपल डिनर।'

'मॉम,' मैंने कहा ताकि वे मेनु को बढ़ाती न चली जाएं।

'गैस स्टोव के नीचे एक डिब्बे में आटा रखा है। रोटियों के लिए थोड़ा-सा आटा गूंध दो,' मां ने कहा। 'ठीक है ना, क्रिश?'

'आप अनन्या की मदद करना चाहोगी, ताकि डिनर जल्दी तैयार हो जाए?' मैंने कहा।

'यदि वह चाहे तो अकेली ही पूरा डिनर तैयार कर सकती है। वैसे भी मुझे अभी ज़्यादा भूख नहीं लग रही है। समय लगता है तो लगने दो,' मां ने कहा और टीवी चालू कर दिया।

अनन्या ने अपनी गोद में गोभी को ऐसे रखा, जैसे वह कोई नवजात शिशु हो। वह उसे बहुत सफ़ाई से नहीं काट पा रही थी। वह गोभी के फूलों को एक-एक कर काट रही थी और चाकू का इस्तेमांल किसी आरी की तरह कर रही थी।

मां खी-खी कर हँस पड़ी। मैंने उन्हें एक डर्टी लुक दी। 'मेरा सिर दुख रहा है। मैं तो अपने कमरे में जाकर आराम करूंगी। जब डिनर बन जाए, तो मुझे बुला लेना,' मां ने कहा और वहां से चली गईं।

'अनन्या, तुम्हें मदद चाहिए,' मैंने पूछा।

'लीव मी अलोन,' अनन्या ने गोभी से नज़रें उठाए बिना कहा।

'अपने अंगूठे का इस्तेमांल कर काटो, इस तरह,' मैंने कहा और उसे अपने हाथ से इशारा कर सब्ज़ी काटने का सही तरीक़ा बताया।

अनन्या ने कोशिश की। दो फूल काटने के बाद उसने अपना हाथ काट लिया।

'आउच।' वह चिल्लाई

'क्या हुआ?'

'कुछ नहीं,' उसने एक सिसकी भरते हुए कहा। 'तुम जाओ और अपनी मां के साथ आराम करो।'

'तुम्हें खून आ रहा है?' मैंने कहा। 'यू आर हर्ट!'

'इट्स ओके। मैंने कहा था ना कि मुझे जो भी करना हो, करूंगी। फिर थोड़ा खून क्या चीज़ है?'

'इस कट में मेरी मां की कोई गलती नहीं है,' मैंने कहा।

'शट-अप और मुझे एक बैंड-एड लाकर दो। और हां, फ्रिज से भिंडी भी लेते आना,' उसने कहा।

एक घंटे बाद हम अलग—अलग डिशेस के लिए गोभी, भिंडी, प्याज़, अदरक, टमांटर, खीरा और हरी मिर्चें काट चुके थे। अगर हम कभी खुद खाना नहीं बनाएं तो हमें कभी पता ही न चले कि हमांरी मांएं रोज़ खाना बनाने में कितनी मेहनत करती हैं।

हम किचन में गए। मैंने एक बॉउल में आटा निकाला।

'मुझे आटा गूंधना नहीं आता,' उसने कहा।

'कोई बात नहीं। मैंने अपनी मां को आटा गूंधते हुए देखा है। मैं कोशिश करता हूं 'मैंने कहा और बडल में पानी डाल दिया।

'और प्याज़ को फ्राय भी कर दो... इसमें?' अनन्या ने बर्तनों की अलमांरी से एक कढ़ाई निकालते हुए कहा।

'ठीक है,' मैंने कहा और गैस जला दी। मैंने मसालों का डिब्बा खोला, लेकिन अनन्या को पता नहीं था कि इन मसालों का क्या उपयोग किया जाए।

'हर पंजाबी डिश में पड़ने वाले पाँच नियमित मसालों को हमेशा याद रखो: नमक, हल्दी, लाल मिर्च, पिसा धनिया और गरम मसाला,' मैंने कहा।

अनन्या सब्ज़ी पकाती रही, जबकि मैं आटा गूंधने की कोशिश करता रहा। पानी ज़्यादा हो जाने के कारण मुझे दो बार फिर से आटा लेना पड़ा। तभी किचन में धुंआ उठने लगा। हम दोनों खांसने लगे।

‘तुमने क्या किया?’ मैंने पूछा।
‘पता नहीं...’ अनन्या ने खांसने हुए कहा।
मां किचन में चली आईं। ‘ये तुम क्या कर रही हो?’ वे दौड़कर स्टोव के पास पहुंचीं और उसकी आच मद्धम कर दी।’ इतनी आच पर भला कौन पकाता है? देखा, मसाले जल गए हैं।’
अनन्या स्टोव से पीछे हट गई।
‘और तुम? तुम यहां क्या कर रहे हो?’ मां ने पूछा।
‘मैं... मैं तो बस कुछ चलने की बू सूंघकर यहां आया था,’ मैंने कहा।
‘और तुम्हारे हाथ अपने आप आटे से सन गए?’ उन्होंने गीले आटे में लथपथ मेरे हाथों और अंगुलियों की ओर इशारा करते हुए कहा।
मैं चुप रहा।
‘देखना, शादी के बाद यह इसी तरह तुमसे काम लेगी। इसे तो रोटियां बनानी भी नहीं आतीं।
अनन्या किचन से बाहर चली गई। मैं उसके पीछे-पीछे जाना चाहता था, लेकिन मॉम की मौजूदगी में ऐसा करना मुझे ठीक नहीं लगा। मैंने अपने आटे सने हाथ निराशा में झटक दिए।
‘वह साउथ इंडियन है मॉम आप, उससे कैसे उम्मीद कर सकती हो कि... ’
‘तुमने ही तो कहा था कि वह डिनर बनाना चाहती है। ओके, उसे कहो कि यदि वह चाहे तो डोसा बना दे। वह डोसा तो बना सकती है ना?’
‘येस, आई एम श्योर। लेकिन उसके लिए ग्राइंडर की ज़रूरत होगी...’
अनन्या किचन में चली आई। ‘नहीं आंटी, मुझे डोसा बनाना नहीं आता,’ उसने कहा। ‘मुझे रोटियां बनानी भी नहीं आतीं। इन फ़ैक्ट, मुझे कुछ भी ठीक से पकाना नहीं आता है।’
‘मेरे बेटे को फांसने के लिए खाना बनाने के अलावा और क्या योजना बना रखी है तुमने,’ मां ने कहा।
दोनों ने एक-दूसरे की ओर ऐसी नज़रों से देखा, मांनो वे जंग के मैदान में आमने-सामने हों। अनन्या नाराज़ होकर किचन से बाहर चली गई।
‘मॉम! ‘मैंने झल्लाते हुए कहा।
‘क्या? यह झांसा नहीं तो और क्या है?’ मां ने कहा। ‘उसने तुम पर जादू चला रखा है। तुम उसे अपने घर लाते हो। उसके लिए आटा गूंधते हो। तुम उसे दो फ्रूटीज़ पिला देते हो जो मैंने मेहमांनों के लिए रखी थीं। तुम्हें उसकी तो बहुत फिक्र है, लेकिन कभी तुमने मेरी कोई चिंता की है?’
‘आपकी प्रॉब्लम क्या है, मॉम?’
‘वो यहां क्या कर रही है?’
‘मॉम, आपकी आवाज़ उस तक पहुंच रही है।’
‘देखा, तुम्हें केवल उसी की चिंता है। तो जाओ, उसी के साथ रहो।’
मां ने किचन में प्लेट्स फिर से जमा दीं। हमने जो मसाला पकाया था, उसे उन्होंने फेंक दिया और नया तैयार करने लगीं। मैं वहां से बाहर चला आया।
‘मुझे गेस्ट हाउस ले चलो। मैं यहां एक पल को भी नहीं रुकना चाहती,’ अनन्या ने कहा। उसका चेहरा आंसुओं के कारण गीला हो चुका था।
‘नहीं,’ मैंने उसके आंसुओं को पोंछते हुए कहा। ‘तुम ऐसा नहीं कर सकतीं।’
‘मैं ऐसा नहीं कर सकती,’ उसने कहा। ‘मैंने तो सोचा था कि मेरे पैरेंट्स को कंविंस करना ही काफ़ी होगा। तुमने कहा था कि तुम्हारी मां स्वीट हैं। स्वीट? यदि वे स्वीट हैं तो हिटलर तो एक प्यारा-सा खिलौना होगा।’
‘अनन्या, एक शॉवर ले लो,’ मैंने कहा। ‘चलो साथ में डिनर करते हैं।’
हम डिनर के लिए साथ-साथ बैठे। मां ने मुझे खाना परोसा, लेकिन अनन्या ने अपना खाना खुद लिया।
‘मुझे वहां रोज़ जाना पड़ेगा,’ मां ने खाना खाते हुए कहा। ‘पूजा होगी, फिर संगीत होगा। ऑफ़ कोर्स, सबसे जुरूरी कार्यक्रम शगन और शादी हैं, जो अगले शुक्रवार और रविवार को होंगे। तुम आओगे, ना?’
‘शगन और शादी, ऑफ़ कोर्स। मैं अनन्या को भी अपने साथ लाऊंगा।’
मां ने मुझे घूरकर देखा। वे अनन्या की मौजूदगी में इस बारे में बात नहीं करना चाहती थीं।
‘मॉम, इस बात से बचने की कोशिश मत करो। मैं अनन्या को यहां इसीलिए लाया हूं कि आप और हमांरा परिवार इससे जान-पहचान बढ़ा सके।’
‘मैं इतना तो जान ही चुकी हूं कि इसे डिनर पकाना नहीं आता,’ मां ने कहा।
‘आई एम सॉरी, आंटी,’ अनन्या ने कहा। मुझे अनन्या से इस मांफी की उम्मीद नहीं थी, लेकिन उसके ऐसा करने से मुझे राहत ज़रूर मिली।
‘इट्स फ़ाइन, आजकल की लड़कियां ऐसी ही होती हैं। इसीलिए मैं चाहती थी कि क्रिश की शादी...’
‘मॉम, मैं अनन्या से शादी करना चाहता हूं,’ मैंने कहा, ‘इन केस, अगर अभी तक आपको यह साफ़ नहीं हुआ हो तो।’
मां ने रोटी का कौर फिर से अपनी प्लेट में रख दिया और उठने के लिए अपनी कुर्सी पीछे खिसका ली।
‘मॉम, प्लीज़ यहां से मत जाओ। मैं आपसे बात करना चाहता हूं,’ मैंने कहा।
‘भला मैं क्यों बात करूं? तुम तो फिर भी वही करोगे, जो तुम्हारा मन कहेगा। अभी मंदिर जाओ और इससे शादी कर लो।’
‘आंटी, हम चाहते हैं कि आप हमांरे रिश्ते को लेकर खुश हों,’ अनन्या ने कहा।’

वेल, मैं खुश नहीं हूं। तुम मुझे खुश होने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। हर कोई मिंटी की मां के फैसले की तारीफ़ कर रहा है। मैंने अपने बेटे को पाल-पोसकर बड़ा करने के लिए सालों तकलीफ़ें झेलीं। मुझे भी ऐसी ही खुशी क्यों नहीं मिल सकती? मैं अपने बेटे की शादी धूम-धड़ाके से करना चाहती हूं। मैं चाहती हूं कि लड़की के मौ-बाप मेरी इज़्ज़त करें। मैं चाहती हूं लड़की को मेरे भाई और बहन भी पसंद करें।'

'वे अनन्या को पसंद करेंगे। वह इंटेलीजेंट है, एजुकेटेड है और...'

'और साउथ इंडियन है,' मां ने मेरी बात को बीच में ही काटते हुए कहा।

'तो क्या हुआ? देखना आपके भाई-बहन अनन्या के बारे में क्या कहते हैं। यह शादी एक बहुत अच्छा मौक़ा साबित होगी।'

'और मैं लोगों को क्या बताऊंगी कि यह कौन है?' मां ने सख्ती से पूछा।

'कह देना कि यह क्रिश की क्लासमेट है और इसने पहले कोई पंजाबी शादी नहीं देखी थी, इसलिए यहां चली आई,' मैंने कहा।

मां चुप रहीं। उन्होंने अपना रोटी का कौर उठाया और फिर खाने लगीं।

'आंटी, आई एम सॉरी कि मैं बिन बताए चली आई। मुझे लगा था कि क्रिश ने आपको मेरे आने के बारे में बता दिया होगा।'

'यह मुझे कभी कुछ नहीं बताता। यह बहुत लापरवाह लड़का है,' मां ने कहा।'

आई एग्री, क्रिश कभी भी अच्छी तरह से कम्युनिकेट नहीं करता है,' अनन्या ने कहा।

'देखा,' मां ने मुझसे कहा।

वे दोनों मेरे विरुद्ध लामबंद हो रहे थे, फिर भी मैंने उन्हें ऐसा करने दिया। मैं चाहता था कि वे एक-दूसरे से सहमत हों, फिर चाहे वह कोई भी विषय हो।

'दाल बहुत अच्छी बनी है, आंटी, आपको मुझे ऐसी दाल बनाना सिखानी चाहिए,' अनन्या ने कहा।

'फिर गिलहरियों की तरह थोड़ा-थोड़ा क्यों खा रही हो? जी भर कर खाओ,' मां ने कहा।

'मैं मिंटी से बात करूंगा,' मैंने बीच में अपनी बात रखते हुए कहा।' आई एम श्योर, यदि मैं शादी में किसी को अपने साथ दोस्त की तरह लाता हूं तो उसे कोई ऐतराज़ नहीं होगा।'

'केवल एक दोस्त की तरह मां ने कहा।

'थैंक्स, मॉम,' मैंने कहा और उन्हें गले से लगा लिया।

'तुम्हारे डैड ने मुझे कभी कुछ नहीं दिया, लेकिन कम से कम तुम तो मुझसे वह खुशी मत छीनो जिसकी मैं हक़दार हूं 'मां ने कहा।

'अंकल कहा हैं?' अनन्या ने पूछा।

'भगवान जाने?' मां ने कहा।' वे देर से आएंगे। तुम उनसे सुबह ही मिल पाओगी। तुम गेस्ट रूम में सोओगी और क्रिश अपने कमरे में, है ना? '

'ऑफ़ कोर्स, मॉम,' मैंने कहा।

मां ने डिनर पूरा किया। अनन्या ने कहा कि प्लेट्स वह साफ कर लेगी। मां ने कहा कि यह काम करने के लिए सुबह मेड आ ही रही है। लेकिन अनन्या ज़िद करती रही। मां अपने कमरे में चली गईं।

'ओके, मिस ब्रांड मैनेजर आर यू श्योर कि आपको मदद की ज़रूरत नहीं है?' मैंने किचन की दीवार से परे झुकते हुए कहा।

अनन्या ने एक वायर मेश से प्लेट्स पर विम लगाया।' नहीं, मैं नहीं चाहती कि मुझ पर फिर प्रिंस ऑफ़ पंजाब को झौसे में लेने का इस्लाम लगे,' अनन्या ने कहा और बेरहमी से कढ़ाई को रगड़ने लगी।

'चलो, मैं प्लेट्स सुखा देता हूं 'मैंने कहा।

'परे हटो, आई बेग यू 'उसने मुझे किचन से बाहर धकेलते हुए कहा।

44

‘गुड मॉर्निंग, अंकल अनन्या ने लिविंग रूम में आते हुए कहा। उसने अपना नाइट-सूट पहन रखा था। सुबह के साढ़े सात बज रहे थे। पापा अपनी आर्मी की आदत के मुताबिक अभी तक नहाकर तैयार हो चुके थे। उन्होंने अख़बार से सिर उठाकर देखा, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं की।

‘मैं अनन्या हूं क्रिश की दोस्त।’

‘गुड,’ पापा ने कहा और फिर अख़बार में खो गए। वे चुपचाप रहे। मैं जानता था कि अनन्या के जाने के बाद वे आसमान सिर पर उठा लेंगे। मैं लिविंग रूम में चला आया, लेकिन मैंने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया।

‘अनन्या, तैयार हो जाओ, इससे पहले कि ट्रैफिक बड़े हमें यहां से निकल जाना चाहिए।’

‘कहौ जा रहे हो?’ पापा ने पूछा।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। पापा खड़े हो गए और किचन की ओर चले गए।

‘क्या बड़ों से इसी तरह बर्ताव किया जाता है?’ उन्होंने मां पर चिल्लाते हुए कहा।

‘क्या हुआ?’ मां ने कहा। मेरे कान किचन में हो रही बातचीत पर लगे हुए थे।’ मैंने उससे पूछा कि वह कहा जा रहा है तो उसने कोई जवाब नहीं दिया। और वह लडकी कौन है?’

‘वह अनन्या को उसके गेस्ट हाउस में ड्राप करेगा और फिर ऑफ़िस चला जाएगा। क्या बात है?’ मां ने कहा।

‘इतना भर कहने में उसका क्या बिगड़ रहा था? और तुमने मुझे बताया क्यों नहीं कि हमारे घर में कोई आ रहा है?’

‘मुझे ख़ुद नहीं पता था,’ मां ने कहा।

‘तुम फिर झूठ बोल रही हो,’ पापा ने चिल्लाते हुए कहा।

अनन्या के चेहरे पर हवाइया उड़ रही थीं।

‘वेलकम टु माय वर्ल्ड मैंने कहा,’ चलो, यहां से रफा-दफा हो जाते हैं।’

मैं काम से घर लौटा तो पाया कि घर में मरघटी शौति पसरी थी। ज़ाहिर है पापा घर पर थे। वे मां के साथ डायनिंग टेबल पर बैठे थे।

‘क्रिश, तुम्हारे पापा तुमसे बात करना चाहते हैं मा ने कहा।

‘उनसे कह दो मैं उनसे बात नहीं करना चाहता,’ मैंने कहा।

‘वे कह रहे हैं कि यदि तुमने उनसे बात नहीं की तो वे मिंटी की शादी में नहीं जाएंगे,’ मा ने कहा। हमें पापा की सबसे ज़्यादा ज़रूरत तभी महसूस होती थी, जब मां के खानदान में शादी-ब्याह का कोई कार्यक्रम हो। मा चाहती थीं कि घर में सब कुछ सामान्य रहे। यदि पापा शादी में अपनी शक्ल दिखा दें तो हफ्तों तक कइयों की जुबानें बंद हो जाएंगी। मेरे सामने कोई और विकल्प नहीं था। मैं उनके पास जाकर बैठ गया।

‘तो अब आप ब्लैकमेल पर आमादा हो गए हैं कहिए क्या कहना चाहते हैं मुझसे?’ मैंने कहा।

‘यह ब्लैकमेल नहीं है। जब मेरा परिवार मुझसे बात ही नहीं करना चाहता तो मैं भी... ‘उन्होंने कहा।

‘जो भी हो। बताइए, क्या बात है?’

‘वह लड़की कौन है?’

‘अनन्या स्वामीनाथन, '

‘तुम उसे कैसे जानते हो? '

‘वह कॉलेज में मेरी क्लासमेट थी और अब मेरी गर्लफ्रेंड है।’

‘देखा कविता,’ पापा ने कहा,’ और तुम कह रही थीं कि वे दोनों केवल दोस्त है।’

‘मुझसे बात कीजिए। आप हर बात के लिए मां को भला-बुरा क्यों कहते हैं?’

‘उसके यहां आने का मक़सद क्या है?’ पापा ने पूछा।

‘वह एक वर्क असाइनमेंट पर आई है। मिंटी ने उसे शादी में भी बुलाया है। आपको कोई प्रॉब्लम है? '

‘तुम शादी के लिए ख़ुद कोई लड़की नहीं चुन सकते, मैं तुम्हारे लिए सही लड़की चुनूंगा पापा ने कहा।

‘आप मुझे बेच देना चाहते हैं। और अब जबकि आप मोल-भाव कर ही रहे हैं तो बता भी दीजिए कि आपने मेरी क्या कीमत लगाई है?’

‘कविता यह लड़का '

‘यह लड़का यहां है। मुझसे बात कीजिए।’

‘मैं मिंटी की शादी में नहीं जाने वाला,’ पापा ने घोषणा की।

‘प्लीज़, ऐसा मत कीजिए। क्रिश, ठीक से बात करो,’ मा ने मिन्नत करते हुए कहा।

‘नहीं मॉम ये नहीं आना चाहते तो न आएं। हम कह देंगे कि वे बीमार हैं। दिमागी रूप से।’

‘जुबान संभाल के पापा ने कहा और हाथ उठा लिया।

‘हाथ उठाने की हिम्मत मत करना,’ मैंने कहा और खड़ा हो गया। फिर मैं अपने कमरे में चला गया, लेकिन उनकी आवाजें मुझे सुनाई पड़ रही थीं।

‘कविता मैं शादी में नहीं जाऊंगा,’ पापा ने कहा। फिर एक तश्तरी की छनछनाहट की आवाज़ सुनाई दी। शायद, पापा ने उसे डायनिंग टेबल से उठाकर फेंक दिया था।

मैं बिस्तर में लेट गया। मैं सोच रहा था कि आखिर हम एक परिवार की तरह साथ क्यों रहते हैं। मैंने कभी नहीं सोचा था कि ऐसा होगा, लेकिन मैं चेन्नई को मिस कर रहा था। ही, यह सच है कि वहां के लोगों से मैं जुड़ाव महसूस नहीं करता था, लेकिन कम से कम वहां कोई मुझे भीतर तक धक्का तो नहीं पहुंचाता था। मैंने सोचा कि अनन्या को कॉल करता हूं लेकिन मैं उसे अपने ख़राब मूड में शामिल नहीं करना चाहता था। क्या मैं अनन्या को अपने परिवार का एक हिस्सा बनाकर ठीक कर भी रहा हूं? वह मेरे बारे में क्या सोचेगी? क्या उसका मन मुझसे हट जाएगा? दिमाग में रोज़ रात को ऊधम मचाने वाले इन स्टुपिड विचारों के कारण मैं पूरी रात बिस्तर में करवटें बदलता रहा।

मिंटी की शगन की रस्म धौला कुआ में ताज पैलेस होटल में हुई। सच कहूं तो हमारे खानदान के लिए यह बहुत बड़ी बात थी। हम इससे पहले कई आलीशान शादियां देख चुके थे लेकिन इससे पहले हमारे खानदान में कभी किसी की इंगेजमेंट सेरेमनी किसी पाँच सितारा होटल में नहीं हुई थी। ताज की बुकिंग कराते ही रज्जी मामा हमारे सभी सगे-संबंधियों पर भारी पड़ गए थे।

जिस हॉल में प्रीतिभोज होना था, उसके प्रवेश द्वार पर यह लिखा था :

तलरेजा परिवार आपका हार्दिक अभिनंदन करता है
अपनी प्यारी बिटिया
मनोरमा (मिंटी)
की
डैशिंग जेटलमैन
धर्मवीर (ड्यूक) बी टेक
के साथ शगन सेरेमनी में।

'हँसो मत मैंने अनन्या से कहा, जबकि मैं ख़ुद अपनी हँसी दबाने की कोशिश कर रह था।

'कंट्रोल नहीं हो रहा है उसने खिलखिलाते हुए कहा। उसने पाँचवीं बार अपनी बॉटल ग्रीन और गोल्ड साड़ी का पल्ल ठीक किया।

'वेलकम-जी, वेलकम रज्जी मामा ने मुझे और मेरी मा को गले लगाते हुए कहा।

हम हॉल में चले आए जिसमें दो सौ लोग थे। मेन स्टेज पर दो सजी-धजी कुर्सियों थीं, जिन्हें मानो किसी राजा के महल से चुराया गया हो। उनके पास मिठाई के पचहतर डिब्बे और फलों की पाँच बड़ी-बड़ी बास्केट्स थीं।

अधिकतम महिलाएं चाट और जूस कॉउंटर पर खड़ी थीं। सभी पुरुष बार पर खड़े थे। मैंने अपनी फीमेल कजिन्स की वोदका पाने में मदद की। मैंने वोदका का अपना गिलास उन्हें दे दिया, जिसे उन्होंने अपने जूस में उड़ेल दिया।

'तो, ये रहे रज्जी मामा, लप्पा मामा, शिप्रा मासी और तुम्हारी मां-एक-एक कर, है ना?' अनन्या ने कहा।

'ही, और चूंकि मेरी मां उनमें से सबसे छोटी है इसलिए उन्हें अपने जीवन में कुछ भी करने से पहले उन सभी से इजाज़त लेनी पड़ती है,' मैंने कहा।

'फ़ाइन, चलो मुझे ठीक से समझ लेने दो। मिंटी और रोहन रज्जी मामा के बच्चे हैं अनन्या ने कहा और एक नोटपैड निकाल लिया।' और वह लड़की कौन है, जिसे तुमने वोदका दी थी? '

'वह टिंकी है और उसकी एक छोटी बहन भी है निक्की। दोनों कॉलेज में पड़ती हैं। वे लप्पा मामा की बेटिया हैं। और शिप्रा मासी को एक बेटा और एक बेटी है बिट्टू और किट्टू। बस। मेरी मां की इकलौती संतान मैं हूं।'

'ओके ओके अनन्या ने नोट्स लेते हुए कहा।

'क्रिश, यहां आओ मा ने मुझे पुकारा। वे स्टेज के पास खड़ी थीं।

'लेट्स गो,' मैंने अनन्या को अपने साथ ले चलते हुए कहा।

अनन्या पहले तो हिचकिचाई लेकिन फिर मेरे साथ चल दी। मां अस्सी साल की एक महिला के साथ बैठी थीं, जिसने सोने का नेकलेस पहन रखा था। नेकलेस का पेंडेंट ओलिंपिक गोल्ड से भी बड़ा था।

'ये स्वरन आंटी हैं मेरी मासी,' मा ने कहा।

कुछ साल पहले मेरी नानी की मौत हो गई थी। स्वरन आंटी हमारे परिवार की सबसे बुज़ुर्ग महिला थीं और शादी-ब्याह जैसे मांगलिक अवसरों पर उन्हें सभी को आशीर्वाद देने के लिए लाया जाता था।

मैं उनके पैर छूने को झुका। मैंने अनन्या को इशारा किया। उसने भी मेरे साथ उनके पैर छुए।

'कविता तेरी नू है?' स्वरन आंटी ने पंजाबी में मां से पूछा कि क्या यह लड़की उनकी बहू है।

मा ने उन्हें समझाया कि वह मेरी फ्रेंड है।

'फ्रेंड क्या होता है?' स्वरन आंटी ने मुझसे पूछा।

'आंटी, आपको चाट चाहिए?' मैंने बात पलटते हुए कहा।

'ही, मुझे कोई भी कुछ नहीं लाकर दे रहा है,' उन्होंने शिकायत भरे लहज़े में कहा। मैं चाट की एक प्लेट ले आया। अनन्या स्वरन आंटी और मां के पास बैठी थी।

'लड़की मद्रासी है?' स्वरन आंटी ने इतनी तेज़ आवाज़ में कहा कि उससे उनकी उम्र का अंदाज़ा लगा पाना मुश्किल था।

'तमिल,' अनन्या ने कहा।

'लेकिन लड़की का रंग तो साफ है।' स्वरन आंटी ने कंफ्यूज़न में कहा। उनकी उम्र के बावजूद उनकी नज़रें अभी ख़राब नहीं हुई थीं।

जेवरों से लदी शिप्रा मासी पास से गुजरी। उन्होंने जो कुछ पहन रखा था-कपड़े गहने, हैंडबैग और जूते वग़ैरह-उसमें कम-ज़्यादा मात्रा में असल सोना था।

‘शिप्रा, देखो गोरी मद्रासन,’ आंटी ने चिल्लाते हुए कहा।
‘हैलो कविता, कैसे हो क्रिश? '
‘फ़ाइन आंटी। मेरी दोस्त अनन्या से मिलिए।’
‘ओह हम सभी जानते हैं कि यह तुम्हारी किस तरह की दोस्त है। अरे ही, यह तो गोरी है।’
शिप्रा मासी ने रज्जी मामा और लम्बा मामा की बीवियों कमला और रजनी को बुलाया।’ आओ, क्रिश की दोस्त को देखो। अरे वही मद्रासन, जिसके बारे में कविता ने हमें बताया था,’ शिप्रा मासी ने चीखते हुए कहा।
रजनी आंटी और कमला आंटी आईं। हमने विनम्रतापूर्वक एक-दूसरे का अभिवादन किया। मा उन्हें समझाने लगीं कि मेरे पिता को वायरल बुखार हो गया है और वे आ न सके। सभी को सच मालूम था, लेकिन इसके बावजूद वे यही जताते रहे कि मां की इस बात पर उन्हें यक़ीन है। शिप्रा मासी ने तो कुछ दवाइयों के नाम भी सुझा डाले।
‘अनन्या स्वामीनाथन, आंटी,’ अनन्या ने कमला आंटी को अपना नाम एक बार फिर बताया। वे पहली बार में उसका नाम समझ नहीं पाई थीं।
‘तुम इतनी गोरी हो। तुम हैड्रेड परसेंट साउथ इंडियन हो?’ कमला मामी ने पूछा। वह आईआईएमए पासआउट और एचएलएल की ब्रौड मैनेजर भी है मैं कहना चाहता था, लेकिन ये ऐसी चीज़ें हैं जिनके बारे में चेन्नई में बात की जा सकती है दिल्ली के ताज पैलेस में तलरेजा परिवार की शगन सेरेमनी के दौरान नहीं।
‘साउथ इंडियन की तुलना में तो यह बहुत सुंदर है शिप्रा आंटी ने समझदारी भरी बात कही।
‘पता है, नहीं तो वे लोग कैसे काले-कलूटे और भद्दे होते हैं कमला आंटी ने कहा।
अनन्या को छोड़कर सभी हँस पड़े। वह अभी तक मुस्कराने की कोशिश कर रही थी, लेकिन अब उसके होंठों से मुस्कराहट गायब हो गई। मैं उसके पास चला गया और उसकी पीठ पर हल्के-से थपकी दी। मैं नहीं चाहता था कि वह कोई प्रतिक्रिया करे। मैं चाहता था कि वह बेअक्लों की तरह मुस्कराने लगे, क्योंकि मेरे परिवार में
उसे स्वीकारे जाने के अवसर इसी तरह उजले हो सकते थे। कई बार प्यार बड़े अजीब ढंग से हमारी परीक्षा लेता है।
‘लड़के वाले आ गए हैं!’ मेरा सबसे छोटा कज़िन किट्टू इस तरह दौड़ता हुआ भीतर आया मानो अमिताभ बच्चन राह भूलकर हमारे यहां चले आए हों।
‘चलो, चलो,’ कमला आंटी ने सभी महिलाओं को हाकते हुए कहा। महिलाएं सोने के सितारों से चमकते अपने बैग स्वरन आंटी के पास छोड़ गईं। चलने-फिरने से लाचार होने के कारण स्वरन आंटी सबके लिए एक बहुत अच्छा सामानघर बन गई थीं।
‘तो, सरप्राइज़ गिफ्ट क्या है?’ मा ने कमला आंटी से पूछा।
‘आप बहुत जल्दी देख लेंगी, जी। लेकिन शादी के खर्चों ने हमारी कमर तोड़ दी। मिंटी के डैडी को तो लोन लेना पड़ा।’
‘इट्स ओके, आखिर आप लोगों की एक ही तो बिटिया है शिप्रा मासी ने कहा। सभी महिलाएं बाहर चली गईं।
पंजाबी आंटी गैंग के जाते ही अनन्या ने राहत की सांस ली।
‘तुम ठीक तो हो न?’ मैंने कहा।’ नो, लेट मी गैस, तुम ठीक नहीं हो।’
‘मुझे ड्रिंक की ज़रूरत है। चलो बार पर चलते हैं अनन्या ने कहा।
‘चलो, लेकिन बार से थोड़ी दूर पर रुक जाना। मैं तुम्हारे लिए ड्रिंक ऑर्डर कर दूंगा,’ मैंने कहा।
हम बार तक पहुंचे। टिंकी और निक्की दौड़ती हुई हमारे पास आईं। उन्होंने लहंगों को हाथों से ऐड़ियों तक उठा रखा था।
‘क्रिश भैया, नीट वोदका का एक फुल ग्लास लेते आना। मेरे कॉलेज के दोस्त आ गए हैं।’
‘लड़कियां ख़ुद ड्रिंक्स क्यों नहीं ले सकतीं?’ अनन्या ने कहा।
टिंकी और निक्की ने हैरत से अनन्या की ओर देखा। उन्नीस और सत्रह साल की ये लड़कियां अपने डिज़ाइनर कपड़ों में कुछ ज़्यादा ही लदी-फदी लग रही थीं।
‘टिंकी, निक्की, ये अनन्या है मैंने कहा।
‘अच्छा तो तुम ही हो वो टिंकी ने कहा।
‘वो यानी कौन?’ मैंने पूछा।
‘ये आपकी गर्लफ्रेंड हैं ना, क्रिश भैया?’ निक्की ने कहा।
मैंने कोई जवाब नहीं दिया।
‘आप शरमा रहे हैं टिंकी ने कहा और अनन्या की ओर मुड़ी।’ मुझे आपकी ईयर रिंग्स बहुत अच्छी लग रही हैं। ये आपको कहा से मिलीं? '
‘कोयंबटूर,’ अनन्या ने कहा।
‘ये कहा है?’ टिंकी ने पूछा।
‘तमिल नाडु में। मैं भी तो वहीं की हूं ‘अनन्या ने कहा।
‘स्टुपिड, तुमने जियोग्राफी की पढ़ाई नहीं की थी क्या?’ निक्की ने अपनी बहन को झिड़कते हुए कहा। फिर वह मेरी ओर मुड़ी,’ आपकी गर्लफ्रेंड बहुत सुंदर है। और उनकी साड़ी भी बहुत अच्छी है।’
‘थैंक्स,’ अनन्या ने कहा।’ तुम दोनों भी बहुत अच्छी लग रही हो। मैं चाहती हूं कि मेरे पास भी तुम्हारे जैसा लहंगा हो।’
मैंने बार से एक पूरा गिलास भरकर वोदका ली और उसे तीन गिलासों में उड़ेल दिया। फिर मैंने उसमें साइट मिला दी और लड़कियों के लिए ले आया।
‘मैं ड्रिंक नहीं करती। मैंने तो केवल बाद में डीजे के लिए मागी थी,’ टिंकी ने सफाई देते हुए कहा।’ वैसे, मैं अब अठारह साल की हो चुकी हूं।’
‘तुम आईआईएमए में थीं ना? तब तो तुम बहुत इंटेलीजेंट होओगी। क्या लड़कियां भी आईआईएम में जा सकती हैं?’ निक्की ने

पूछा।

‘ऑफ़ कोर्स, क्यों नहीं? लड़की होने से भला क्या फ़र्क पड़ता है अनन्या ने कहा। मैं आगे बढ़ गया। लड़कियां दस मिनट तक बतियाती रहीं। कम से कम अनन्या मेरे परिवार की नौजवान लड़कियों से तो घुल-मिल गई थी। लेकिन बड़े लोगों का दिल जीतना इतना कठिन क्यों साबित हो रहा था?

‘कहौ हो तुम?’ मां की गुस्से भरी आवाज़ ने मेरा ध्यान भंग कर दिया।’ सेरेमनी शुरू होने वाली है।’

मैंने लड़कियों को बुलाया और फिर हम स्टेज की ओर बढ़ चले। मिंटी स्टेज के फ्लोर पर बैठी थी और ड्यूक उससे आगे बैठा था। उनके पास ही एक पुरोहित जी थे। मेरी आटिया तो यही कहतीं कि ड्यूक सेहतमंद है। लेकिन अनन्या ने उसे देखते ही तपाक से कहा,’ यह तो मोटा है।’

‘शट अप, कोई सुन लेगा,’ मैंने कहा।

‘ओह इधर के लोग वाक़ई इस बात को लेकर बहुत सावधान रहते हैं कि कौन क्या कह रहा है,’ अनन्या ने कहा। उसकी बातों में कटाक्ष उसी तरह चमक रहा था, जैसे उसके ब्लाउज पर सितारे।

‘कम ऑन अनन्या, ये लोग तो जानते भी नहीं होंगे कि उनके व्यवहार से किसी

को ठेस पहुंच रही है। जैसे-जैसे तुम उन्हें समझने लगोगी, तुम उन्हें पसंद करने लगोगी।’

‘प्लीज़, मुझे तो तुम्हारी कज़िन अच्छी लगीं, मैं उन्हीं के साथ रहती हूं ‘अनन्या ने कहा। वोदका के कारण उसके बोलने का लहजा बदल गया था।

‘हमको भी ये अच्छी लगती हैं निक्की और टिंकी ने अनन्या से लिपटते हुए अपनी ओर से भी यह सबूत दे दिया कि वे उसे पसंद करती हैं। लड़कों की ही तरह लड़कियां भी अल्कोहल के बाद ज़्यादा मैत्रीपूर्ण हो जाती हैं।

ड्यूक यक़ीनन दूध की तरह गोरा था। उसके गोलमटोल शरीर और गोरे रंग के कारण उसे देखकर लगता था जैसे बड़ा हो जाने के बाद भी उसकी परवरिश केवल सेरेलेक पर ही हो रही हो। उसने चमकीला मरून कुर्ता पहना था। शायद, उसका कुर्ता उसी कपड़े से बना था, जिससे अनन्या की मां की कोई एक साड़ी बनी होगी। धत् मैं यहां भी अनन्या की मां को याद कर रहा था। फोकस, मैंने ख़ुद से कहा।

मिंटी ने ऑरेंज कलर का लहंगा पहना था, जो स्वारोक्की मोतियों और ऐसे ही महंगे लाल-जवाहरों से सज़ा था। मां कह रही थीं कि अकेला यह लहंगा ही बीस हजार रुपए का था, जबकि शादी का जोड़ा तो तीस हजार का था। मेरे दिमाग़ ने एक ऊलजुलूल-सा हिसाब लगाया कि शादी का दस फ़ीसदी ख़र्च तो अकेले दुल्हन के कपड़ों पर ही हो गया। पुरोहित ने मंत्रों का जाप शुरू कर दिया। मिंटी ने अपनी कजिन्स की ओर इशारा करके पूछा कि वह कैसी लग रही है।

निक्की ने अंगूठे और तर्जनी को मिलाते हुए इशारा किया कि वह बहुत ख़ूबसूरत लग रही है। फिर निक्की ने अपने माथे पर अंगुली रखकर इशारा किया कि मिंटी को बिंदी ठीक करने की ज़रूरत है। मिंटी उसके इंस्ट्रक्यास का पालन करते हुए अपनी बिंदी ठीक करने लगी, जबकि उसके दाएं हाथ पर पुरोहित जी एक धागा बौध रहे थे। इससे मुझे महिलाओं के बारे में तीन बातें पता चलीं: (1) वे हमेशा यह ध्यान रखती हैं कि वे कैसी लग रही हैं (2) वे चाहे जैसे हो इंस्ट्रक्टास देकर एक-दूसरे की मदद करती हैं और (3) वे एक साथ कई काम कर सकती हैं। ज़ाहिर हैं मैं सेरेमनी पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था। मैं यही सोच रहा था कि आखिर मेरा परिवार अनन्या को कैसे पसंद करने लगे। ड्यूक ने अपने कुर्ते की जेब से इंगेजमेंट रिंग निकाली। उसने कैमरों के सामने रिंग दिखाई। जैसे ही महिलाओं को पता चला कि वह मणि वाली अंगूठी है उनके मुंह से एक साथ आह निकल गई।

‘कम से कम डेढ़ कैरेट की होगी,’ शिप्रा मासी ने फ़ौरन अनुमान लगाते हुए कहा। ड्यूक ने मिंटी को अंगूठी पहनाई तो तालियौ गूंज उठीं। मिंटी ने शर्माहट भरी मुस्कान

बिखेरते हुए अपनी अंगूठी निकाली। वह एक सादी-सी सोने की अंगूठी थी। उसने ड्यूक को अंगूठी पहना दी।

‘कितनी प्यारी लग रही है ना टिंकी ने कहा और दोनों बहनें एक-दूसरे से लिपट गईं। उनकी आखें नम थीं। महिलाओं के पास ज़रूरत से ज़्यादा ही भावनाएं होती हैं और उन्हें मू. बहाने के लिए किसी बड़ी घटना की ज़रूरत नहीं होती।

रिंग सेरेमनी के बाद ड्यूक का परिवार अपेक्षा भरी नज़रों से किसी चीज़ का इंतज़ार करने लगा। रज्जी मामा ने अपनी कमीज़ की जेब से एक छोटा-सा बॉक्स निकाला और उसे ड्यूक की ओर बढ़ा दिया। ड्यूक ने उसे लेने से तीन बार इनकार किया, लेकिन रज्जी मामा तब तक ज़ोर देते रहे जब तक कि उसने उसे ले नहीं लिया। ड्यूक ने ब्लैक बॉक्स खोला। उसमें एक चाबी थी, जिस पर लिखा था: हुंडई मोटर्स।

इस बार महिलाओं के साथ ही पुरुषों की भी आह निकल गई। जी ही, रज्जी मामा ने मणि की अंगूठी को भी पीछे छोड़ दिया था।

‘उन्होंने लड़के को कार दी है शिप्रा मासी ने कहा। वे चाहती थीं कि यदि किसी को समझ न आया हो कि हुआ क्या है तो उस तक भी यह खबर पहुंच जाए।

दोनों पक्षों के बड़े लोगों ने अपने-अपने मिठाई के डिब्बे खोले और जबरन एक-दूसरे का मुंह मीठा कराने लगे। हम सभी एक-एक कर स्टेज पर गए और वर-वधू को बधाई दी। मिंटी के पैरेंट्स ने ड्यूक के सभी अंकल और आटियों को गिफ्ट दी। ड्यूक के पैरेंट्स ने भी उन्हें भेंट दी। मा और शिप्रा मासी को एक-एक साड़ी मिली।

‘तुम्हारी साड़ी दिखाओ शिप्रा मासी ने मां से कहा। गनीमत है कि दोनों को एक जैसी ही साड़ियों मिली थीं। ड्यूक के पैरेंट्स पर भेदभाव का आरोप नहीं लगाया जा सकता था। सभी ने रज्जी मामा के मास्टरस्ट्रोक गिफ्ट के लिए उनकी सराहना की। वे फूलकर कुप्पा हो गए।

‘अंकल डीजे चालू करो,’ निक्की ने रज्जी मामा से कहा।

रज्जी मामा ने डांस क्लोर की ओर इशारा किया। राजौरी गार्डन का डीजे पुसीकैट्स इस लम्हे के लिए घंटों से इंतज़ार कर रहा था। डीजे में दो मुटाए लड़के शामिल थे। उन्होंने ढोल बीट्स से शुरुआत की। सभी नौजवान कजिन्स डांस क्लोर पर चले गए। अंकल्स

को अभी वहां तक पहुंचने के लिए कुछ और फेस और आटियों को अपने बच्चों की कुछ और मनुहार की दरकार थी।

'उन्होंने लड़के को कार दी है?' अनन्या ने शॉल्ड आवाज़ में कहा। निक्की उसे डांस फ्लोर पर ले जाने के लिए खींच रही थी।

'हां, सिल्वर सेंट्रो,' निक्की ने कहा,' आओ ना, दीदी।'

अनन्या लड़कियों के साथ चली गई। अपनी सालों की भरतनाट्यम की हैनिंग के कारण वह डांस फ्लोर पर बेस्ट परफ़ॉर्मर साबित हुई। उसने पंजाबी स्टेप्स बहुत जल्दी सीख लीं और मेरी कजिन्स को कुछ इंप्रोवाइज्ड स्टेप्स भी सिखाईं। वह अपनी गहरी कांजीवरम साड़ी में बहुत ख़ूबसूरत लग रही थी। किसी इडियट की तरह मुझे उससे एक बार फिर प्यार हो गया।

'तुमने खाना खाया?' मा ने मेरे पास आकर पूछा।

'अम्... नहीं,' मैंने अपनी आंखो को क्लोर से बड़ी मुश्किल से हटाते हुए कहा।' तो जल्दी से खा लो, नहीं तो हमें घर जाने के लिए ऑटो नहीं मिलेगा,' मा ने कहा।

'हम जल्द ही एक कार खरीद लेंगे,' मैंने कहा।

'जैसे कि तुम्हारे पापा हमें खुरीदने देंगे। एनीवेज, हमें कार खुरीदने की क्या ज़रूरत है। कमला कह रही थी कि तुम्हारी शादी होने तक हमें कोई भी बड़ी खरीदारी नहीं करनी चाहिए। हमें डुप्लीकेट आइटम्स नहीं चाहिए।'

'मॉम,' मैंने विरोध जताते हुए कहा।

'जल्दी करो, पनीर ख़त्म हो जाएगा। और अपनी दोस्त से भी कह दो कि वह भी कुछ खा ले।'

मैंने अनन्या को इशारा किया कि वह आकर मेरे साथ कुछ खा ले। मेरे साथ बेफे तक जाने में वह हौफने लगी। मैंने अपनी प्लेट में काली दाल, शाही पनीर और रोटियां लीं। अनन्या ने पीली दाल और चावल लिया।

'बस इतना ही? '

'मुझे इस सबमें से बस इतना ही भाता है उसने कहा।

बार से हो-हल्ले की आवाजें आने लगीं। ड्यूक और उसके दोस्त बार्टेंडर से लड़ रहे थे।

'क्या हुआ?' मैंने पूछा।

'वे लोग बड़े शो नहीं बना रहे हैं। इस बात पर ड्यूक के दोस्तों का उनसे झगड़ा हो गया,' एक व्यक्ति ने मुझे बताया।

रज्जी मामा ने बीच-बचाव किया। होटल स्टाफ़ ने भांप लिया था कि व्हिस्की ख़त्म हो सकती है, इसलिए वे छोटे शो बना रहे थे। इस होटल में भी उस ब्रौड की कोई और एन्व्हा बोतलें नहीं थीं। रज्जी मामा ने नोटों की एक गड्डी निकालते हुए होटल स्टाफ़ को दी। व्हिस्की लाने के लिए एक वेटर को दिल्ली बॉर्डर तक भेजा गया।

जैसा कि हमेशा होता है, पैसे की चमक देखते हुए सब कुछ शांत हो गया और लोग पहले की तरह जश्न मनाने लगे।

'यह शादी है?' अनन्या ने कहा।

'ऑफ़ कोर्स। सभी शादियां ऐसी ही होती हैं। तुम्हारे यहां ऐसी शादियों नहीं होतीं?' मैंने पूछा।

'शर्त लगा लो,' अनन्या ने कहा।

हमने रज्जी मामा और कमला आंटी को अलविदा कहा। जब मैं मा और अनन्या के साथ वहां से बाहर निकल रहा था, तभी शिप्रा मासी ने हमें पुकारा।

'जी, आंटी,' मैंने उनके पास जाते हुए कहा।

'याद रखना कि तुम हमारे परिवार के ग़ौरव हो। कोई भी बेवकूफीभरा कदम मत उठाना। इन मद्रासियों ने तुम्हें फंसाने के लिए जाल बिछाया है।'

'गुड नाइट, आंटी,' मैंने कहा।

'देखो, मैं तो तुम्हारे भले के लिए ही यह कह रही हूं। तुम्हारी मा को बहुत तकलीफें झेलनी पड़ी हैं अब उसे खुशी दो। तुम्हें ऐसी लड़कियां मिल सकती हैं जो तुम्हारा घर तोहफों से पर देंगी।'

मैं नीचे झुक गया। जब आपके नाते-रिश्तेदारों पर कोई और जुगत कारगर साबित नहीं होती तो यही किया जा सकता है कि उनके चरण छू लिए जाएं।

'शिप्रा मासी क्या कह रही थीं?' अनन्या ने मुझसे पूछा।

'वे कह रही थीं मैं इस बात का ध्यान रखूं कि अनन्या ठीक से अपने घर पहुंच जाए,' मैंने एक ऑटो रोकते हुए कहा।

मैं वसंत विहार में अनन्या से पंजाबी बाय नेचर में मिला। अनन्या की मौजूदा मानसिक स्थिति को देखते हुए मुझे इससे बेहतर नाम वाली किसी जगह की तलाश करनी चाहिए थी। बहरहाल, यह जगह बहुत आरामदेह थी और यहां खाना भी बहुत अच्छा मिलता था।' मुझे समझ नहीं आता कि इसमें क्या तुक है कि मैं इन फ़ैमिली इवेंट्स को अटेंड करूं मुझे वहां बड़ा अजीब लगता है अनन्या ने शुरू करते हुए कहा।

'बस एक और सेरेमनी है-एक्चुअल वेडिंग। चिंता मत करो, कल जब मेरी आटिया तुमसे मिलेंगी तो वे तुमसे पहले की तुलना में ज़्यादा परिचित होकर मिलेंगी। एक बार मेरी मां ने उन्हें तुम्हें कुबूल करते हुए देख लिया तो उन्हें भी देर-सबेर ही करनी ही पडेगी।'

'मुझे तो लगता है कि वे किसी की रजामंदी से ज़्यादा एक कार की चाबियों का गुच्छा चाहती हैं,' अनन्या ने कहा।

'नहीं, मेरी मा ऐसी नहीं है। वे कार नहीं चाहतीं, वे यह चाहती हैं कि उनके भाई-बहन इस बात की सराहना करें कि उन्होंने कार पाने में कामयाबी हासिल की। बात समझीं? '

'नहीं,' अनन्या ने सिर हिलाते हुए कहा।

वेटर ऑर्डर लेने आया। हमने एक परौठा मंगवाया। पराठे में इतना मक्खन था कि वह किसी के भी हार्ट को फ़ौरन फ़ेल कर देने के लिए काफ़ी था। हमने अपने अगले कदम के बारे में सोचते हुए खाना खाया।

'सर क्या आप वोदका के साथ हमारे गोलगप्पे आजमाना चाहेंगे?' वेटर ने पूछा।' क्या?' अनन्या ने कहा।

'नो थैंक्स,' मैंने वेटर से कहा और फिर अनन्या से मुखातिब हुआ।' यह एक गिमिक है। भरोसा करो। पंजाबी ऐसा अक्सर नहीं करते।'

'मैं दो दिन बाद चेन्नई जा रही हूं 'अनन्या ने कहा।

'जानता हूं। लेकिन मैं मा से बात करूंगा। ज़रूरत हुई तो शादी के बाद अपने अंकल्स से भी। मैं इस मामले को अब पक्का कर देना चाहता हूं 'मैंने कहा।

'और तुम्हारे डैड के बारे में क्या?' अनन्या ने पूछा।

'वे कभी राजी नहीं होंगे। हमें उनके बिना ही शादी करनी पड़ेगी। क्या मां के पक्ष के लोग काफ़ी नहीं हैं?'

'वे तो ज़रूरत से ज़्यादा हैं। उनका हर इंसान मेरे दस सगे-संबंधियों से ज़्यादा बोलता है। फिर भी।'

'अनन्या, ज़िन्दगी में हम हर चीज़ नहीं पा सकते। तुम्हारे पैरेंट्स, मेरी मा उनके संबंधी-हमारे पास अच्छी-ख़ासी मात्रा में आशीर्वाद होगा। पापा की ज़रूरत ही नहीं होगी।'

'फिर भी तुम्हें उनसे बात करनी चाहिए। वे तुम्हारे पिता हैं अनन्या ने कहा।

'खाना अच्छा है ना?' मैंने अपने पराठे पर मक्खन लगाते हुए कहा।

मिंटी की शादी ने तो धूम-धड़ाके वाली शादियों को नए मायने दे डाले। प्रवेश द्वार पर सचमुच के हाथियों और बर्फ की परियों ने हमारा स्वागत किया। वर पक्ष के

लोग अभी तक नहीं आए थे। मेहमान फूलों की पंखुरियों के थाल लिए धैर्य से बैठे थे। मेन पार्टी एरिया तक पहुंचने के लिए हमें बगीचों और डॉल्फिन शेप्ड दो दर्जन फौवारों को पार करना पड़ा। कैटरर ने वर्ल्ड थीम चुनी थी। फूड स्टील्स पर आठ तरह का खाना परोसा जा रहा था: पंजाबी, चाइनीज, होम-स्टाइल इंडियन, थाई इटैलियन, मैक्सिकन, गोअन और लेबनीज, और हर शैली के कम से कम पाँच व्यंजन थे। इनके अलावा चाट के दो स्टील थे। एक रेगुलर ईटर्स के लिए तो दूसरा हेल्थ कौशियस मेहमानों के लिए। रेगुलर काउंटर पर समोसा और टिक्की परोसी जा रही थी तो हेल्थ काउंटर पर अंकुरित दानों से भरे गोलगप्पे। मेरी आटियों ने दोनों ही किस्म की चाट खाईं : एक जायके के लिए तो दूसरी सेहत के लिए।

दो बार भी थे। पहले बार में जॉनी वॉकर ब्लैक लेबल मैग्नम का एक बड़ा-सा पीपा था। सभी अंकल्स यहां एकजुट हुए और वेटर्स उनके लिए पनीर टिक्का और हरा-भरा कबाब लाते रहे। दूसरा वाला बार मॉकटेल बार था। इसे लेडीज बार निकनेम दिया गया था। इस बार का डिस्प्ले शेल्फ तरह-तरह के आकारों वाले दो दर्जन गिलासों से सज़ा था। गिलासों में रंग-बिरंगी फ्रूट ड्रिंक्स थी।

'बहुत अच्छे रज्जी, तुमने हमारे खानदान का नाम रोशन कर दिया,' मां ने दुल्हन के स्टेज की पुष्प सज्जा को सराहते हुए कहा।

'ये ऑर्किड्स थाईलैंड से मंगवाए गए हैं। ये बैंकॉक से अभी दो घंटा पहले ही यहां पहुंचे हैं रज्जी मामा ने कहा।

'पचास हजार रुपए तो बस फूलों पर ही ख़र्च हुए हैं,' शिप्रा मासी ने कहा। हमने इस बात पर हैरत जताने के लिए अपनी-अपनी भौहें तान दीं।

तभी मेरा कज़िन रोहन दौड़ते हुए आया और उसने सभी को यह सूचना दी कि बारात आन पहुंची है। हम बाहर चले गए और बारात का स्वागत करने के लिए हाथियों के पास जाकर खड़े हो गए। रोहन ने मुझे एक गुलाबी पगड़ी दी। इसे दूल्हे का स्वागत करने वाले दुल्हन के सभी भाइयों और करीबी पुरुष संबंधियों को पहनना होता है।

'तुम वरट लग रहे हो,' अनन्या ने खिलखिलाते हुए कहा।

सभी पगड़ीधारी पुरुषों ने ड्यूक के पक्ष से आए अपने समकक्षों के साथ तस्वीरें खिंचवाईं। मैंने ड्यूक के कज़िन प्रिंस के साथ फ़ोटो खिंचवाया। मिंटी के पिता ने खीसें निपोरते हुए ड्यूक के पिता को गले लगाया और उनके साथ फ़ोटो खिंचवाया। ड्यूक के पिता की त्यौरियों चढ़ी हुई थीं।

'लड़के का बाप इतना गुस्से में क्यों है?' अनन्या ने पूछा।

'शायद उसे भूख लग रही है मैंने कहा। हमें जल्द ही पता चल गया कि मैं ग़लत था। ड्यूक का परिवार भीतर नहीं आया और वहीं सोफे पर बैठ गया। उन्होंने कुछ भी खाने से इनकार कर दिया।

'वन कोल्ड ड्रिंक-जी,' कमला मामी ने ड्यूक की मां की मिन्नत करते हुए कहा। उन्होंने सिर हिलाकर ना कह दिया।

'हमें भूख नहीं है,' ड्यूक के पिता ने कहा। ड्यूक उसके माता-पिता और उसके दर्जनों अन्य सगे-संबंधी स्टेज के पास सोफे पर बैठे थे। चूंकि लड़का पक्ष के लोगों ने कुछ भी खाने से इनकार कर दिया था, इसलिए आधा दर्जन वेटर्स टेर लिए खड़े थे।' स्नैक्स गर्म नहीं हैं जाओ जाकर गर्म वाले स्नैक्स ले आओ,' मिंटी के पिता ने वेटर्स पर चिल्लाते हुए कहा। उनका गुस्सा जायज नहीं था, क्योंकि लड़के वालों ने खाना खाने से इसलिए मना नहीं किया था क्योंकि वह ठंडा था।

'पूछो, बात क्या है? कुछ न कुछ तो गड़बड़ है शिप्रा मासी ने कहा।

'लेकिन पूछेगा कौन?' रज्जी मामा ने कहा,' वे लोग तो कुछ भी नहीं कह रहे हैं।' कमला आंटी के चेहरे पर चिंता के भाव बने रहे। दस मिनट बीत गए।

'यहां क्या हो रहा है?' अनन्या ने पूछा।

'मैंने कंधे उचका दिए। शिप्रा मासी ने मेरे कजिन्स को कहा कि वे भीतर चले जाएं। फिर उन्होंने हाथ जोड़े और ड्यूक के पिता के पास चली गईं। उन्होंने नज़रें फेर लीं।

अनन्या और मैं कुछ मीटर पीछे हट गए। अब हम सब लोगों को देख सकते थे, लेकिन सुन नहीं सकते थे।

मां और उनके दोनों भाई ड्यूक के माता-पिता के सामने हाथ जोड़े थे। वे उसी तरह उनके जवाब का इंतज़ार कर रहे थे जैसे भूमिहीन किसान जमींदारों के सामने खड़े होकर करते हैं। कुछ मिनट बाद ड्यूक की आटियों में से एक ने मेरी मां से बात की। मां ध्यान से उनकी बात सुनती रहीं और सिर हिलाती रहीं। ड्यूक की आंटी की बात ख़त्म होने पर मां आईं और अपने भाई-बहनों को एकजुट कर लिया।

'यह तो बहुत ड्रामा हो रहा है कुछ पता तो चले कि आखिर हो क्या रहा है?' अनन्या ने कहा।

मैं मा को एक तरफ़ ले आया।

'सैंट्रो के कारण गड़बड़ हुई है मां ने कहा।

'क्या? गाड़ी स्टार्ट नहीं हो रही है क्या? '

'बी सीरियस, क्रिश।'

'सॉरी, क्या हुआ? '

'कुछ ग़लतफहमी हुई है। जब रज्जी ने हुंडई की चाबियौ दीं तो ड्यूक के माता-पिता को लगा कि उन्हें हुंडई एक्सेंट दी जा रही है लेकिन उन्हें मिली हुंडई सैंट्रो। एक्सेंट पाँच लाख की आती है जबकि सैंट्रो केवल तीन लाख की।'

'मेरे ख़्याल से वह एक गिफ्ट थी,' अनन्या ने कहा।

मा को हमारे पारिवारिक मसले में अनन्या का दखल देना अजीब लगा, लेकिन अनन्या इस बात को लेकर गंभीर थी।

‘ही, वह तो सरप्राइज़ गिफ्ट थी ना?’ मैंने कहा।

‘क्रिश, तुम्हें क्या लगता है? यह कोई बर्थडे पार्टी है? सभी को इस सरप्राइज़ के बारे में पता था। ड्यूक के पैरेंट्स ने पहले ही अपने परिवार को बता दिया था कि उन्हें एक्सेंट मिलने वाली है। वे ख़ुद को अपमानित और ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं।’ बड़ी अजीब बात है हाथियों द्वारा स्वागत किए जाने के बावजूद लोग ख़ुद को अपमानित कैसे महसूस कर सकते हैं।

‘अब क्या?’ मैंने कहा।

‘कुछ नहीं। वे लोग कह रहे हैं कि जब तक कार नहीं बदली जाएगी, शादी नहीं होगी।’

‘ऐसा हो सकता है?’

‘शादी के खर्चा से पहले ही रज्जी की कमर टूट चुकी है। लेकिन अब उसके सामने भला क्या चारा रह गया है? उसने वादा किया है कि वह उन्हें एक्सेंट देगा।’

‘फिर वे लोग वहां मुंह लटकाए क्यों बैठे हैं?’ मैंने पूछा।

‘उन्हें गारंआंटी चाहिए। ड्यूक के पिता चाहते हैं कि दोनों गाड़ियों में जो दो लाख रुपए का फ़र्क है वह उन्हें अभी कैश दिया जाए।’

‘अभी?’ मैंने कहा।

अनन्या की भौहें धनुष की तरह तन गईं। उसे समझ नहीं आ रहा था कि इस पर किस तरह रिएक्ट करे। शिप्रा मासी ने फिर मेरी मां को बुलाया और बड़े-बुजुर्गों की मीटिंग फिर गहमागहमी से शुरू हो गई।

‘जो कुछ हो रहा है उसके बारे में मैं क्या कहूं? मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रहा अनन्या ने कहा।

‘मैं भी तुम्हारी ही तरह शॉल्ड हूं ‘मैंने कहा।

हम लेडीज बार में गए और दो मॉकटेल डायकिरीस का ऑर्डर किया।

‘वे डिस्कस किस बारे में कर रहे हैं? वे पुलिस को क्यों नहीं बुलाते?’ अनन्या ने कहा।

‘अनन्या,’ मैंने कहा,’ आर यू स्टुपिड?’ मैंने उसे एक गिलास दिया।

‘नहीं, मैं कुछ अपराधियों को जेल भेजना चाहती हूं। क्या यह बेवकूफी है?’

‘ही, यदि तुम्हें मिंटी की रेखुटेशन की चिंता है तो, उन्होंने ये जो इतना सारा खर्चा किया है उसका क्या होगा?’ मैंने अलग-अलग स्टॉल्स की ओर इशारा करते हुए कहा।’ ओह, और इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि तुम्हारी बहन ऐसे वाहियात लोगों के परिवार में ब्याही जा रही है?’

‘ऐसी चीज़ें होती रहती हैं। बड़े लोग मिलकर मामला सुलझा लेंगे,’ मैंने कहा।

‘हमें इस समय परिवार के साथ होना चाहिए अनन्या ने अपना गिलास नीचे रखते हुए कहा।

हम फिर उस जगह पर चले आए, जहां ड्रामा हो रहा था। रज्जी मामा ने अपनी गुलाबी पगड़ी ड्यूक के पैरेंट्स के पैरों पर रख दी थी, लेकिन वे उन्हें नज़रअंदाज़ कर रहे थे। उन्होंने एक चेक देने की पेशकश की, लेकिन ड्यूक के पैरेंट्स ने उसे ठुकरा दिया। इतने कम समय में कोई भी इतनी बड़ी रकम लेकर नहीं आ सकता था। इसी दौरान नए मेहमान भी पार्टी में आने लगे थे। रज्जी मामा अपनी तकलीफ छुपाकर मुस्कराकर और गले लगाकर उनका स्वागत करते जा रहे थे। लेकिन हमारे परिवार की महिलाएं एक अजीबोरारीब प्लान बना चुकी थीं।

‘जल्दी करो, कविता, अपनी ज्वेलरी उतारो शिप्रा मासी ने अपना नेकलेस उतारते हुए कहा। मां अपनी चूड़िया उतारने लगीं। कमला और रजनी मामी ने भी अपनी ज्वेलरी उतार ली।

शिप्रा मासी ने सभी गहनों को एक प्लास्टिक बैग में रखा और उन्हें रज्जी मामा को दे दिया।’ यह उन्हें दे दो। उन्हें कहो कि जब तक नई कार नहीं आ जाती, तब तक वे इसे अपने पास रखें,’ उन्होंने कहा।

रज्जी मामा शिप्रा मासी के पैरों में गिर पड़े।

‘पागल हो गए हो क्या? तुम मेरे छोटे भाई हो, मिंटी हमारी भी बिटिया है शिप्रा मासी ने कहा। सभी भाई-बहनों की आखें नम हो गईं। ड्यूक के पिता अब भी सोफे पर जमे हुए थे। वे अपनी आख के कोने से हमें देख रहे थे।

‘अब जाओ,’ शिप्रा मासी ने कहा।

‘मैं पहले उनसे बात कर आता हूं ‘रज्जी मामा ने कहा। वे ड्यूक के पिता के पास गए।

‘आई काट बिलीव दिस,’ अनन्या ने कहा।

‘श्श्श, जल्द ही सब कुछ नॉर्मल हो जाएगा,’ मैंने कहा।

रज्जी मामा ड्यूक के माता-पिता से मीटिंग कर लौटे।

‘शिप्रा दीदी, वे लोग ज्वेलरी को सिक्योरिआंटी के रूप में रखने को तैयार हो गए हैं रज्जी मामा ने कहा।

रज्जी मामा ने शिप्रा मासी से बैग ले लिया।

‘अंकल रुकिए अनन्या ने कहा।

सभी की आखें उसकी ओर घूम गईं। इस सबका तुमसे कोई लेना-देना नहीं है अनन्या मैं उससे कहना चाहता था।

‘इससे पहले कि आप यह उन्हें दें अनन्या ने कहा ‘क्या मैं आपको एक सुझाव दे सकती हूं?’

‘क्या?’ मां ने हैरत से पूछा।

‘आंटी, घर के बड़े लोगों ने इस समस्या को सुलझाने के लिए इतनी सारी मीटिंग कर लीं। अब क्या घर के छोटे कजिन्स ड्यूक से बात कर सकते हैं?’ अनन्या ने कहा।

‘अनन्या, यह बड़ों का मामला है मैंने कहा।

‘शादी ड्यूक की है। हमें उससे एक बार बात करनी चाहिए,’ अनन्या ने कहा।’ हम ज्वेलरी देने को तैयार हैं फिर क्यों? कमला मामी ने कहा।

‘प्लीज़ अंकल, शिप्रा मासी, प्लीज़। आखिर इसमें बुराई क्या है?’ अनन्या ने कहा। शिप्रा मासी ने एक गहरी सांस छोड़कर अपनी सहमति दी।

टिंकी, निक्की, रोहन, किट्ट-बिट्टू और हम दोनों बड़ों से दस मीटर दूर कुर्सियों पर बैठ गए। अनन्या ड्यूक के परिवार की ओर गई जहां उसने बीस साल के एक लड़के को पहचान लिया।’ तुम ड्यूक के कज़िन हो ना?’

‘येस, मायसेल्फ़ प्रौजल उसने कहा।

‘गुड, क्या आप ड्यूक के सभी कजिन्स को इकट्ठा कर यहां ला सकते हैं, जहां मिंटी के कजिन्स बैठे हैं अनन्या ने हमारे ग्रुप की ओर इशारा करते हुए कहा।

‘ये क्या हो रहा है?’ ड्यूक के पिता ने कहा।

‘अंकल परिवार के हम छोटे सदस्य एक मीटिंग करना चाहते हैं। कम ऑन, प्रांजल, उन्हें जल्दी से ले आओ अनन्या ने कहा।

‘ये लड़की कौन है?’ ड्यूक की मां ने कहा।

‘मैं लड़की वालों की फ़ैमिली फ्रेंड हूं ‘अनन्या ने कहा और दूल्हे से मुखातिब होते हुए कहा,’ ड्यूक, क्या आप हमारे साथ बातचीत में शामिल हो सकते हैं?’

ड्यूक ने अनन्या को हैरानीभरी नज़रों से देखा। अनन्या तब तक ड्यूक की ओर देखती रही, जब तक कि वह शर्मिंदा होकर उठ न गया। उसने उससे कहा कि वह उसके पीछे-पीछे आए।

‘क्रिश, मिंटी को यहां बुला लाओ,’ अनन्या ने कहा।

‘ मिंटी?’ मैंने चिल्लाते हुए कहा।

‘मैं उसे ले आती हूं ‘टिंकी ने कहा और दौड़कर भीतर चली गई।

मिंटी और ड्यूक के अलावा हम कोई बारह लोग थे। हमने एक सर्कल बना लिया। परिवार के बड़े हमें संदेह भरी नज़रों से दूर से देखते रहे। वे उत्सुक थे कि आखिर ये लोग क्या करना चाहते हैं लेकिन अनन्या ने इस बात का ध्यान रखा था कि हम सभी की पीठ बड़ों की तरफ़ हो।

'हमें उन्हें ऐसा नहीं करने देना था,' ड्यूक की मां ने कहा।

'ऑफ़ कोर्स जी, टू मिनट जी,' रज्जी मामा ने ड्यूक के पैरेंट्स की ही में हा मिलाते हुए कहा।

'हैलो एवरीवन,' अनन्या सभी को संबोधित करने के लिए उठ खड़ी हुई। मैं उसके पास बैठा था।

सभी ने जवाब में निरीह-सी आवाज़ में 'हाय 'कहा।

'यहां जो कुछ हो रहा है क्या आपको लगता है, वह सही है?' अनन्या ने पूछा। ड्यूक और उसके कजिन्स नीचे देखने लगे। वे हमसे नज़रें मिलाने से बच रहे थे। मेरे कज़िन मिंटी के क़रीब बैठे थे और उसे शांत रखने की कोशिश कर रहे थे।

'तुम क्या कर रही हो?' शिप्रा मासी ने अनन्या से कहा,' यदि बारात लौट गई तो मिंटी का जीवन बर्बाद हो जाएगा।'

'मुझे लगता है कि यदि ऐसा ही चलता रहा तो उसकी ज़िन्दगी बर्बाद हो जाएगी। आंटी, प्लीज़, हमें थोडी-सी प्राइवेसी चाहिए। आप केवल इतना ध्यान रखिए कि ड्यूक के पैरेंट्स हमसे दूर रहें अनन्या ने कहा।

शिप्रा मासी के जाते ही अनन्या ड्यूक की ओर मुड़ी।' येस, यू यदि आप खड़े हो सकते हों तो खड़े हो जाइए।'

ड्यूक खड़ा हो गया। वह अनन्या से छह इंच ऊंचा था और उसका वजन अनन्या के वज़न से दोगुना था। ज़ाहिर है, ये शारीरिक तथ्य मेरी पागल गर्लफ्रेंड को डिगा नहीं सकते थे।

'ड्यूक, आप क्या करते हैं?' अनन्या ने पूछा।

'मैं सॉफ़्टवेयर इंजीनियर हूं,' उसने कहा।

'आप कितना कमा लेते हैं? अनन्या ने पूछा।

ड्यूक चुप रहा।

'बताइए,' अनन्या ने ऊंची आवाज़ में कहा।

'दस हजार रुपया महीना,' उसने भारी पंजाबी लहज़े में कहा।

'ग्रेट, मुझे पच्चीस हजार रुपया महीना तनख्वाह मिलती है। लेकिन क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आपने ऐसा क्या किया है जो आप इतनी आलीशान शादी के लायक बन गए हैं? आपने ऐसा क्या किया है जो आप भेंट में मिली एक कार के हक़दार हो गए हैं?'

'मैं मैं... लड़के वालों की तरफ़ से हूं,' ड्यूक ने हकलाते हुए कहा।

'तो? आपने मिंटी को देखा है?' अनन्या ने कहा।

ड्यूक ने सिर हिलाकर ही कहा।

'आपकी शादी हो रही है, इसीलिए आपको ऐसी लड़की मिल रही है। यदि आपको उसे पटाना पड़ता तो क्या कभी सपने में भी सोच सकते थे कि आपकी ऐसी गर्लफ्रेंड होगी?'

ड्यूक चुप रहा और अपने शरीर के भारी वज़न को एक पैर से दूसरे पैर पर शिफ़्ट करता रहा।

'क्या?' अनन्या ने कहा।

'दिस इज़ टू मच,' ड्यूक ने कहा।

'आई एम टू मच,' अनन्या ने सहमति जताते हुए कहा और ड्यूक को भरतनाट्यम स्टाइल में घूरकर देखा। इसके बाद वह फिर बोलने लगी।

'क्या आपको पता है आपके लिए यह शादी रचाने के लिए मिंटी के माता-पिता को क्या-क्या कर गुज़रना पड़ा है? वह कार आपकी ढाई साल की तनख़्वाह के बराबर है, मिस्टर ड्यूक! इन दोनों पार्टियों ने उन्हें कर्ज में झोंक दिया है। अब आपको एक्सेंट चाहिए? लेकिन वह आपकी एक्सेंट नहीं होगी, वह एक ऐसी चीज़ होगी, जिसे आपने एक असहाय पिता से छीन लिया है, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि उसकी बेटी के ब्याह पर ड्रामा हो और उसकी शादी एक स्कैंडल बन जाए।'

ड्यूक की समझ के हिसाब से ये शब्द बहुत थे। अपने सभी कज़िन्स की ही तरह वह भी स्तब्ध रह गया, लेकिन इसकी वजह अनन्या द्वारा कही जाने वाली बातों से ज़्यादा उसका आत्मविश्वास और उसकी फर्राटेदार अंग्रेजी थी।

'बैठ जाइए,' अनन्या ने कहा। ड्यूक ने फ़ौरन उसकी आज्ञा का पालन किया। अनन्या सभी से मुखातिब होते हुए बोली, 'ड्यूक के सभी भाइयों और बहनो, सुनों। कोई एक्सेंट नहीं दी जाएगी। परिवार के बड़ों ने अपना असली रंग दिखा दिया हैं इसलिए अब पूरा बीड़ा ड्यूक और आप लोगों को ही उठाना है। यदि ड्यूक सम्मानपूर्वक मिंटी से विवाह करना चाहते हैं तो उन्हें यही बात कहनी चाहिए। यदि वे ऐसा नहीं कहते हैं तो वे नासमझ हैं और हम यह शादी नहीं चाहते।'

'अनन्या बेटा...?' हमारी मीटिंग को लंबा खिंचते देख रज्जी मामा चले आए।

'अंकल हमारी मीटिंग तक़रीबन पूरी हो चुकी है अनन्या ने कहा। 'बस पाँच मिनट और बचे हैं ड्यूक। जल्दी से कोई फ़ैसला कीजिए।'

सभी चुप हो गए। ब्रौड मैनेजर एचएलएल, एमबीए, आईआईएमए में पॉपुलर वोट से बेस्ट गर्ल घोषित की गई और मेरे वोट के कारण बेस्ट गर्लफ्रेंड आकी गई अनन्या स्वामीनाथन ने ड्यूक के परिवार के युवाओं को सोचने पर मजबूर कर दिया था।

समय बीतता रहा, लेकिन कज़िन्स चुप्पी साधे रहे। ड्यूक कुछ कहना चाहता था, लेकिन उसने दूर से अपने माता-पिता के तने हुए चेहरे देखे तो वह चुप रह गया। फिर वह अपने कज़िन्स की ओर मुड़ा और वे एक-दूसरे के कानों में कुछ फुसफुसाने लगे। चार मिनट बाद वह फिर खड़ा हो गया और अनन्या को संबोधित करते हुए बोला,' 'एक्सक्यूज़ मी, मैडम।'

'मेरा नाम अनन्या है। कहिए?'

'क्या हम बड़े-बुजुर्गों के पास जा सकते हैं? मैं मां से बात करना चाहता हूं।'

'किस बारे में?' अनन्या ने उसका रास्ता रोकते हुए कहा।

'तुम इतनी सूरमा क्यों बन रही हो? जाने दो मुझे।'

'चलो, सभी चलते हैं,' अनन्या ने कहा।

सभी कज़िन्स अपनी-अपनी कुर्सियों से उठ खड़े हुए और बड़ों की ओर चल पड़े। ड्यूक अपनी मां के पास गया।

'मम्मी, मैं मिंटी से शादी करना चाहता हूं।'

ड्यूक की मां ने अपने बेटे को हैरत से देखा।

'लेकिन उन्होंने हमारे साथ धोखाधड़ी की है बेटा,' ड्यूक के पिता ने कहा।

रज्जी मामा एक बार फिर उनके पैरों में गिर पडे। अनन्या ने उन्हें रोका।

'डैडी, मैं बहुत देर तक चुप बैठा रहा। है ना? हर चीज़ आप ही ने तय की। अब चाहे जो हो लेकिन मेरी शादी में रोड़े मत डालिए।'

'बेटा, लेकिन उन्होंने हमसे वादा किया था,' ड्यूक की मां ने कहा।

'मम्मी, बहुत हुआ! और उन लोगों की ज्वेलरी लेने का यह नाटक किसलिए? आपको क्या लगता है मैं अपने पैसे से एक कार नहीं ख़रीद सकता? '

'पाँच मिनट पूरे हुए,' अनन्या ने कहा,' हम पैक अप करें या फिर... '

'तुम कैसी लड़की हो? तुम तो मुझे अपने माता-पिता को कंविंस करने का समय भी नहीं दे रही हो ड्यूक ने अनन्या से कहा।

ड्यूक के अंकल्स में से एक उठ खड़े हुए। 'चलिए, शुरू कीजिए-जी। हमें अपने बच्चे की खुशियों को ग्रहण नहीं लगाना चाहिए। जयमाला सेरेमनी के लिए समय निकला जा रहा है।'

'सब ठीक तो है ना?' रज्जी मामा ने ड्यूक के माता-पिता की ओर देखते हुए कहा। 'चिंता मत कीजिए। ग़लतफ़हमियां होती रहती हैं। हमें जीवन भर के एक रिश्ते को बर्बाद नहीं करना चाहिए,' ड्यूक के अंकल ने सभी संबंधियों को उठने का इशारा करते हुए कहा।

'कृपया सभी लोग स्नैक्स का मज़ा लें,' ड्यूक ने कहा। ड्यूक का इतना कहना था कि सभी नाते-रिश्तेदार वेटर्स पर टूट पड़े। शादी के दौरान पंजाबियों को खाने से दूर रखना बहुत ज़्यादती है, ख़ास तौर पर तब, जब दूल्हे को मिलने वाली कार से उन्हें कोई फ़ायदा न होने वाला हो।

लड़की वालों ने लड़के के माता-पिता को गले लगाया। जवाब में उन्होंने लड़की वालों को गले नहीं लगाया, लेकिन उन्हें दूर भी नहीं धकेला। रज्जी मामा मिठाई का एक डिब्बा ले आए और ड्यूक के माता-पिता का मुंह मीठा कराया। शक्कर की मिठास ने उनके हावभाव बदले। डीजे ने म्यूज़िक बजाना शुरू कर दिया। शादी फिर पटरी पर आ गई।

सभी लोग सोफ़े से उठकर स्टेज की ओर चल दिए, लेकिन एक लड़की वहीं खड़ी रही। वह साउथ इंडियन लड़की थी, जो मेरे साथ चेन्नई से यहां तक आई थी।

'उसने उन लोगों से क्या कहा?' शिप्रा मासी ने मुझसे पूछा। वे सभी को अपनी-अपनी ज्वेलरी लौटा चुकी थीं। मैंने कंधे उचका दिए।

'तुम बहुत समझदार लड़की हो,' कमला आंटी ने अनन्या को गले लगाते हुए कहा।' थैंक यू बेटा, तुमने हमारी इज़्ज़त रख ली।'

'लेकिन एक बात बताओ तुम वाक़ई पच्चीस हजार रुपया महीना कमाती हो?' रजनी आंटी ने वह सवाल पूछा, जो सभी पूछना चाहते थे।

मा आईं और उन्होंने मुस्कराकर अनन्या की ओर देखा। मां ने भले ही कुछ न कहा हो, लेकिन मैं जानता था कि अनन्या का यह काम उनके लिए बहुत मायने रखता था।

'लड़की इतनी बुरी नहीं है जयमाला के दौरान शिप्रा मासी ने मां से कहा।

'गर्ल तुमने आधी बाज़ी मार ली है, तुम भी यह बात जानती हो,' मैंने अनन्या से कहा। हम ड्यूक और मिंटी पर फूलों की पंखुड़ियां उछालते रहे।

'तो, मॉम मैंने कहा,' जैसा कि मैं कह रहा था।' हम किचन में थे।

'तुम यह चार बार कह चुके हो। तुम्हें कुछ कहना भी है या नहीं?' मा ने कहा। उन्होंने उबलती हुई चाय स्टोव से हटाई।

'अनन्या कल जा रही है।' मैंने कहा।

'ठीक है,' मां ने कहा। उन्होंने मेरी ओर चाय का एक प्याला बढ़ाया।

'जाने से पहले मैंने उसे कुछ बात करने घर बुलाया है।'

'और,' मां ने कहा।

'हम आपके फ़ैसले के बारे में जानना चाहते हैं,' मैंने कहा।

'यह तुम्हारा फ़ैसला है,' उन्होंने कहा।

'ठीक है, हम आपकी राय जानना चाहते हैं जो कि मेरे फ़ैसले के लिए बहुत जुरूरी है।'

'उफ़्फ़, तुम और तुम्हारे एमबीए टर्म्स,' मा ने कहा।

अनन्या दोपहर तक घर आई। हम डायनिंग टेबल पर बैठे थे। मां ने एक खरबूज़ा काटा। ' मॉम, जो न सोचा था, वह हो गया। आपके रिश्तेदार अनन्या को पसंद करने लगे हैं। क्या, अब मुझे उससे शादी करने के लिए आपकी अनुमति मिल सकती है?'

'तुम्हें मेरी अनुमति की ज़रूरत नहीं है,' मां ने मेरी ओर खरबूज़े की एक फांक बढ़ाते हुए कहा।

'अनुमति नहीं तो सहमति। क्या हमें आपकी सहमति मिलेगी?' मैंने कहा।

उन्होंने कुछ फांकें अनन्या की ओर बढ़ाई।

'क्या इसे मैं हा समझूं?' मैंने कहा।

'कमला और रज्जी इसे बहुत पसंद करने लगे हैं,' मां ने कहा।

'क्या आप भी मुझे पसंद करती हैं, आंटी? यदि नहीं तो मुझे बता दीजिए,' अनन्या ने कहा।

'ऑफ़ कोर्स, बेटा, मैं तुम्हें पसंद करती हूं,' मा ने अनन्या के सिर पर हाथ रखते हुए कहा। 'लेकिन दूसरे लोग भी हैं जैसे तुम्हारे परिवार के लोग।'

'मेरे परिवार के लोग क्रिश को बहुत पसंद करते हैं!'

'हां, लेकिन क्या दोनों परिवार एक-दूसरे को पसंद करते हैं? तुम दोनों खुश हो सकते हो, लेकिन घर के बड़े भी तो अपने संबंधियों के साथ खुश होने चाहिए। साबरमती आश्रम वाली घटना याद है ना? '

'धैर्य रखो, मॉम। समय के साथ दोनों परिवार एक-दूसरे के कुरीब आ जाएंगे,' मैंने कहा। जाने से पहले अनन्या ने एक बार फिर मेरे पिता का ज़िक्र किया। 'क्रिश के डैड राज़ी नहीं होंगे?' उसने पूछा।

मां एक टेढ़ी मुस्कान मुस्करा दी। 'वे हमें टीवी तक तो देखने नहीं देते, क्रिश द्वरा अपनी पसंद की लड़की से शादी करना तो दूर की बात है। लेकिन ठीक है, अगर मेरे भाई-बहन राज़ी हैं तो अच्छी बात है। नहीं तो, ऐसा कभी नहीं हो सकता था,' मां ने कहा।

अनन्या ने सिर हिला दिया। मां अपने कमरे में गईं और सोने की दो चूड़िया ले आईं। 'नहीं आंटी,' अनन्या ने कहा, लेकिन मां ने उसे वे चूड़िया पहना दीं और उसका माथा चूम लिया।

हवा में गुलाब की पंखुडियों की तरह खुशी तैरने लगी और मैंने कल्पना की कि मैंने हवा में तीन बार मुक्का लहराया है।

......

'तो नेक्सट स्टेप क्या होगा? शादी की तारीख?'

अनन्या और मैं अपने-अपने ऑफ़िस के फ़ोन पर बतिया रहे थे।

'यू नो, तुम्हारी मा सही हैं। एक गैप तो है,' अनन्या ने कहा।

'कौन-सा गैप?' मैंने कहा।

'' मेरे पैरेंट्स तुम्हें पसंद करते हैं। तुम्हारी मां मुझे पसंद करती हैं। लेकिन ये दोनों तो एक-दूसरे को पसंद नहीं करते। अहमदाबाद में जो कुछ हुआ, उसे कैसे भुलाया जा सकता है?' अनन्या ने कहा।

'हां लेकिन,' मैंने कहा। 'ओह मैन, मैं तो सोच रहा था कि हमारा काम पूरा हो गया।'

'नहीं, दोनों परिवारों को एकजुट होना ही पड़ेगा। यक़ीन मानो ऐसा होना बहुत जुरूरी है। हमें उन्हें आपस में मिलवाना चाहिए,' उसने कहा।

'लेकिन कहा? क्या मैं मां को लेकर चेन्नई आऊं?' मैंने कहा।

'नहीं, चलो किसी न्यूट्रल वेन्यू पर चलते हैं जहां हमारे और कोई नाते-रिश्तेदार न हों।'

'गुड पॉइंट। मैं कुछ बंदोबस्त करता हूं 'मैंने फ़ोन रख दिया।

मैं काम करने लगा। सिटीबैंक दिल्ली में अभी तक मेरा कोई फिक्स डिवीजन या बॉस नहीं था। मैं डिपार्टमेंट्स के बीच घूमता रहता था और यह दिखावा करने की कोशिश करता था कि मैं उनके लिए उपयोगी हूं। मैं क्रेडिट कार्ड्स डिवीजन में कुछ समय काम कर चुका था। मुझे एक क्रेडिट कार्ड प्रमोशन प्लान तैयार करना था, लेकिन न तो ऐसा करने में मेरी कोई दिलचस्पी थी और न ही मुझे इसमें कोई विशेषज्ञता हासिल थी। मैंने अपने क्रेडिट कार्ड कस्टमर्स के लिए ऑफ़र्स का एक मौजूदा ब्रोशर खोला। गोवा पैकेज पर एक स्पेशल डील थी।

मैंने फ़ोन उठाया और अनन्या का नंबर लगाया। 'गोवा,' मैंने कहा। 'चलो सभी गोवा चलते हैं। दो परिवारों को एकजुट करने

के लिए समुद्र धूप और रेतीले तटों से बेहतर और कुछ नहीं हो सकता। फिर वहां हमें भी बहुत मज़ा आएगा। तो क्या कहती हो अगले महीने?'

'वह तो बहुत महंगा होगा उसने कहा।

'लेकिन प्यार से अच्छा इंवेस्टमेंट और क्या होगा?' मैंने कहा और देवल एजेंट को फ़ोन लगाने के लिए काड्र्स उलट-पुलटकर देखने लगा।

अंक 5 : गोवा

51

'मैं तुम्हें पहले ही बता दे रही हूं। मुझे उसकी मा बिल्कुल पसंद नहीं-घमंडी औरत,' मां ने कहा। हम टैक्सी स्टैंड पर खड़े थे। अनन्या और उसके पैरेंट्स से दो घंटा पहले मैं और मां गोवा के डाबोलिम एयरपोर्ट पर उतर गए थे। मैंने कोशिश की थी कि दोनों फ़्लाइट्स के गोवा पहुंचने के बीच कम से कम फ़ासला हो।

'नहीं मा, ऐसी बात नहीं है। वे शांत लोग हैं,' मैंने कहा।

'उन लोगों के ज़्यादा बहकावे में मत आओ,' मा ने कहा।

'ऐसा नहीं है। लो, वे आ गए। याद रखना, उनका मुस्कराकर स्वागत करना,' मैंने कहा। अनन्या के पैरेंट्स की दूसरी बार मेरी मा से आमने-सामने भेंट हुई।

'हैलो कविता-जी,' अनन्या के पिता ने कहा। उन्होंने एक-दूसरे का अभिवादन किया। इतनी गर्मजोशी के साथ नहीं, जैसा दिल्ली हवाई अड्डे पर किया जाता है लेकिन पूरी तरह ठंडा भी नहीं।

मैंने एक क्वालिस बुलवा ली थी। मैं अनन्या के बैग्स कार में रखने में ड्राइवर की मदद करने लगा। मां ने मुझे हैरतभरी नज़रों से देखा।

'क्या हुआ?' मैंने पूछा।

उन्होंने अपना सिर हिलाया।

मैं गाड़ी में सबसे आगे बैठ गया। अनन्या का परिवार बीच की सीटों पर बैठा था।' मैं तो सबसे पीछे बैठूंगी,' मा ने कहा।

मैं समझ गया कि यह गड़बड़ वाली स्थिति है। 'नहीं, मॉम मैं पीछे की सीट पर बैठूंगा,' मैंने कहा। लेकिन मां ने इनकार कर दिया, क्योंकि वे पहले ही अपनी जगह पर विराजित हो चुकी थीं।

'पार्क हेयट,' मैंने कहा। ड्राइवर ने कार को दक्षिणी गोवा की ओर घुमा लिया। मां ने अपने बैग से प्लास्टिक का पैकेट निकाला। 'यह लीजिए, यह आपके लिए है,' मां ने कहा और अनन्या की मां की ओर एक साड़ी बढ़ा दी।

अनन्या की मां पीछे मुड़ी और पैकेट ले लिया। 'थैंक यू 'उन्होंने कहा।

'यह तुषार सिल्क है मा ने कहा,' मैंने इसे असम एम्पोरियम से लिया है।'

'सिल्क साउथ में भी बहुत पॉपुलर है हमारे यहां कौजीवरम साड़ियों मिलती हैं। अनन्या की मां ने कहा और साड़ी बैग में रख ली।

रिज़ॉर्ट तक पहुंचने तक हमारे बीच ज़्यादा बातें नहीं हुईं।

होटल स्टाफ़ ने फूलों की माला और फ्रूट-पंच वेलकम ड्रिंक के साथ हमारा स्वागत किया। हममें से कोई भी इससे पहले किसी फाइव स्टार होटल में नहीं ठहरा था।' यह महंगी तो नहीं है?' मा ने कहा।

'उन्होंने मुझे एक डील दी है। मैंने उनसे प्रॉमिस किया है कि सिटीबैंक की एनुअल कांग्रेस यहीं करवाऊंगा,' मैंने कहा।

'वेलकम, मिस्टर क्रिश, हमने आपके लिए दो गार्डन व्यू रूम्स बुक किए हैं रिसेप्शनिस्ट ने कहा। 'और मेरे पास एक अच्छी खबर भी है। एक रूम को हमने एक बड़े सी-व्यू रूम के रूम में अपग्रेड भी किया है।'

'वॉव अनन्या ने कहा,' मैं इससे पहले कभी किसी सी-ज्यू रूम में नहीं ठहरी।'

ज़ाहिर है अनन्या और मुझे अलग-अलग रहना था। मुझे मां के साथ और अनन्या को अपने पैरेंट्स के साथ रूम शेयर करना था। और चूंकि वे लोग तीन थे, इसलिए मैंने अपना रूम भी चुन लिया।

'अनन्या, तुम्हारी फ़ैमिली बड़ा रूम ले सकती है। मॉम और मैं दूसरा कमरा ले लेंगे,' मैंने कहा।

बेल-बॉय हमारे कमरे में लगेज ले आया। 'नाइस प्लेस, है ना?' मैंने मा से कहा। हम एक फ्लॉवर गार्डन से गुज़रे।

मा ने कोई जवाब नहीं दिया।

'सब ठीक तो है ना?' मैंने पूछा।

मा ने धीमे से सिर हिला दिया। जब तक हम रूम में नहीं पहुंच गए, वे चुप रहीं। 'बहुत रूखे लोग हैं,' मां ने कहा।

'कौन? होटल स्टाफ़ वाले?' मैंने गार्डन व्यू देखने के लिए परदे खोलते हुए कहा।

'शट अप, ये लोग, जिन्हें तुम अपने ससुराल वाला बनाना चाहते हो। ये तुम्हारे ससुराल वाले हैं? वे अपने दामाद से अपने लगेज उठवा रहे हैं?'

'अरे, कब? '

'एयरपोर्ट पर। क्या तुम्हें यह भी पता नहीं कि तुम उनके नौकर बन गए हो?'

'मैं...' मैंने जवाब की तलाश करते हुए कहा, 'मैं तो केवल उनकी मदद करना चाहता था।'

'बकवास। और उन्होंने सी-ज्यू वाला कमरा क्यों लिया? लड़के वाले तो हम हैं।'

'क्योंकि वे लोग संख्या में हमसे ज़्यादा हैं। इसके अलावा, गार्डन भी तो कितना सुंदर है।'

'जो भी हो, लेकिन तुमने उनकी सबसे बड़ी ग़लती पर ध्यान दिया?' उन्होंने कहा।

'क्या?'

'वे लोग कुछ समझ ही न पाए। मैंने उनकी बेआंटी को दो चूड़िया दीं। उन्हें थोड़ी शर्म आनी चाहिए।'

पंजाबियों के लिहाज से अनन्या के पैरेंट्स ने भारी भूल कर दी थी। लड़के वालों से कभी ख़ाली हाथ नहीं मिला जाता है।

'और मैंने उसे दो हजार रुपए की सिल्क साड़ी दी और उसने उसकी तारीफ़ भी नहीं की।'

'उन्होंने तारीफ़ तो की थी।'

'नहीं, वह अपनी साउथ इंडियन साड़ियों को लेकर डींगें हाक रही थी,' मा ने कहा।

शादी करने के सबसे बड़े नुक्सानों में से एक यह भी है। लड़कों को साड़ियों और सोने के जेवरों के बारे में होने वाली बातचीत में शामिल होना पड़ता है।

'मॉम, हम यहां पर उन्हें अच्छी तरह जानने-समझने के लिए आए हैं। प्लीज़, पहले से कुछ तय मत करो। और डिनर के लिए तैयार हो जाओ।'

'तुम तो हमेशा उनकी ही साइड लोगे। तुम उनके झांसे में जो आ चुके हो।' उन्होंने बड़बड़ाते हुए कहा 'बेवकूफ लड़का, इसे अपनी ही कीमत नहीं पता है।'

पंजाबियों और तमिलों के बीच के अंतर को बुफे भोजन जिस तरह उजागर कर सकता है वैसे और कोई नहीं कर सकता। तमिलों के लिए यह साधारण-सी बात है। वे सबसे पहले सफ़ेद चावल का ढेर लगा लेंगे और फिर उसमें दाल दही या कोई भी ऐसी चीज़ डाल देंगे, जिसमें राई के दाने, नारियल और कड़ी पत्ता हों।

लेकिन पंजाबियों का भोजन से एक भावुक जुड़ाव होता है ठीक वैसे ही, जैसे संगीत से उनका भावुक संबंध होता है। पंजाबियों के लिए बुफे में उपलब्ध डिशेस की संखला फिलाहार्मोनिक ऑर्केस्ट्रा की तरह है। वे यह चाहते हैं कि एक ही प्लेट

में ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में कैलोरीज़ जमा कर लें, क्योंकि बहुतेरे पार्टी कैटरर उपयोग की गई प्लेटों की संख्या के आधार पर बिल बनाते हैं। साथ ही मा बचपन से ही मुझे यह भी समझाती आ रही थीं कि पार्टी में कभी भी कोई ऐसी चीज़ न लो, जिसे आसानी से घर पर भी बनाया जा सकता हो या जिसमें इस्तमाल की गई सामग्री सस्ती हो, जैसे पीली दाल, गोभी आलू या सलाद। पंजाबियों का ध्यान चिकन पर केंद्रित रहता है। या फिर ऐसी डिशेस पर, जिसमें ख़ूब सारे मेवे हों। या फिर, रसीली मिठाइयों पर।

'मॉम, यहां एक प्लेट से ज़्यादा खाना लिया जा सकता है,' मैंने कहा। वे मुझे तीन बार बटर चिकन परोस चुकी थीं।

'रियली? नो एक्स्ट्रा चार्ज?' उन्होंने कहा।

हम अपनी टेबल पर लौट आए। 'आप लोग राइस ले रहे हैं?' मां ने अनन्या के पैरेंट्स की प्लेट्स देखकर पूछा।

अनन्या के पैरेंट्स ने सिर हिला दिया। वे चम्मच से खा रहे थे लेकिन उनकी अंगुलियां दही और दाल को चावल में मिलाकर खाने के लिए मचल रही थीं। अनन्या ने उन्हें चम्मच से खाने को कहा था, ताकि मेरी मा को ज़्यादा शक न पहुंचे।

'चिकन बहुत अच्छा बना है। आपने लिया?' मां ने उनके लिए एक पीस उठाते हुए कहा।

'हम लोग वेजीटेरियन हैं अनन्या की मा ने ठंडे भाव से कहा। उनके सामने चिकन की टल हवा में टंगी हुई थी।

'ओह मा ने कहा।

'इट्स ओके आंटी, मैं ट्राय करती हूं 'अनन्या ने कहा।

हम चुपचाप खाते रहे, केवल खाना चबाने की मचमच आवाज़ होती रही।

'अम्मा, समथिंग समथिंग,' अनन्या ने तमिल में फुसफुसाते हुए कहा। वह उन्हें कुछ बोलने के लिए उकसा रही थी।

'आपके हसबैंड नहीं आए?' अनन्या की मां ने पूछा।

'नहीं, उनकी तबीयत ठीक नहीं है। डॉक्टर ने उन्हें हवाई यात्रा करने से मना किया है मा ने कहा।

'दिल्ली से गोवा तक सीधी ट्रेन भी तो है,' अनन्या के पिता ने कहा। अनन्या ने अपने पिता को देखते हुए एक इशारा किया, जिसका मतलब था केवल खाने पर ही ध्यान केंद्रित कीजिए।

'हम लोग ट्रेन से सफ़र नहीं करते मा ने झूठ बोलते हुए कहा। पता नहीं क्यों। वे बोलती रहीं।' एक्चुअली, पंजाबी बहुत दिलवाले लोग होते हैं। हम शानदार ज़िन्दगी जीना पसंद करते हैं। जब हम लोगों से मिलते हैं तो उन्हें अच्छे-अच्छे-से गिफ्ट देते है।?'

'मॉम, आप मीठे में कुछ लेंगी। यहां मैंगो आइस्क्रीम है मैंने कहा।

उन्होंने मुझे नज़रअंदाज़ कर दिया।' ही, हम लोग कभी किसी से ख़ाली हाथ नहीं मिलते। और लड़के वालों से ख़ाली हाथ मिलने के बारे में तो सोचा भी नहीं जा सकता,' मां ने कहा। मैंने धीमे-से उनके पैरों को एक धक्का दिया।

'ओके मैंने कल साइटसीइंग के लिए एक कार बुक कर ली है। प्लीज़, सात बजे तक कॉफी शॉप पहुंच जाइएगा,' मैंने कहा।

'इल्ला साइटसीइंग,' अनन्या की मां ने बुदबुदाते हुए कहा।

'श्योर, हम लोग पहुंच जाएंगे,' अनन्या ने कहा।

खाने के बाद अनन्या और मैं पार्क हेयट के प्राइवेट बीच पर मिले।

'मेरे पैरेंट्स अपसेट हैं अनन्या ने कहा तुम्हारी मम्मी को ठीक से बातचीत करना सीखना चाहिए।'

समुद्र की लहरें थपेड़े खा रही थीं। कई टूरिस्ट कपल्स हमारे सामने हाथों में हाथ डाले घूम रहे थे। मैं दावे के साथ कह सकता था कि वे अपने होने वाले सांस-ससुर के बारे में बात नहीं कर रहे थे।

'और तुम्हारे पैरेंट्स को सीखना चाहिए कि ठीक से बिहेव कैसे किया जाता है मैंने कहा।

हम भारत की सबसे रोमैंटिक जगहों में से एक पर थे लेकिन हमारे बीच अनबन हो रही थी। एक भारतीय लव मैरिज में जब तक प्रेमी-प्रेमिका शादी कर पाते हैं तब तक पता नहीं, दोनों के बीच कितना प्यार बाक़ी रह पाता है।

'वे इससे अच्छा बिहेव और क्या करेंगे?' उसने कहा।

'मैं तुम्हें बताता हूं। लेकिन तुम्हें ठीक वही करना होगा, जो मैं तुम्हें कहूंगा,' मैंने कहा।

'यदि तुम्हारी बात समझदारी भरी हुई तो,' मेरी समझदार गर्लफ्रेंड ने कहा।

'स्टेप वन, मेरी मां के लिए एक महंगा-सा गिफ्ट खुरीदो।'

'रियली? '

'येस, स्टेप टू कल जब हम गोवा घूमने जाएंगे तो हमेशा ख़ुद पे करने को तैयार रहो।'

'हर जगह? '

'हां, रेस्टॉरेंट, टैक्सी, हर जगह। और जब तुम लोग पे करने को कहोगे तो वे ना कहेंगी, फिर भी तुम लोग जिद करो कि पे तुम ही करोगे। यदि हो सके तो मां से उनका पर्स छीन लो ताकि वे ख़ुद पेमेंट न कर सकें। पंजाबियों को यह अच्छा लगता है। न केवल अच्छा, बल्कि प्यारभरा।'

अनन्या का मुंह उतर गया।

'स्टेप थी, जब सभी लोग आसपास हों तो मुझे कोई काम मत करने दो। उदाहरण के लिए, ब्रेकफास्ट टेबल पर अपनी मा को

बोलो कि वे मेरे लिए टोस्ट लाएं।'

उसने गहरी सांस छोड़ी।

'मेरी मां यही अपेक्षा रखती हैं। ऐसा ही करो,' मैंने कहा।

उसके चेहरे को देखकर लग रहा था कि वह कभी ये बातें नहीं मानेगी।

'और कुछ?' उसने पूछा।

'हां, स्टेप फोर। बीच पर मुझे प्यार करो।'

'नाइस ट्राय, प्रिटी पंजाबी बॉय। लेकिन सॉरी, अब जब तक हम आखिरी मंजिल तक नहीं पहुंच जाते तब तक कुछ नहीं।'

'अनन्या, कम ऑन,' मैंने उसे फुसलाते हुए कहा।

'पहले हमें इस फ़ैमिली सिचुएशन को फिक्स करना होगा। मैं इतने तनाव में हूं कि किसी और बात के बारे में सोच भी नहीं सकती,' अनन्या ने कहा।

'ओके यदि कल सब कुछ ठीक रहता है तब क्या हम बीच पर प्यार कर सकते हैं? हम उसे ऑपरेशन बीच पैशन कहेंगे।'

'देखते हैं। बीच पैशन,' वह मुस्कराई और मेरे सिर पर एक थपकी लगाई।' चलो, चलते हैं डैड मेरा इंतज़ार कर रहे हैं।'

गोवा का डे टूर बिना किसी धमाके के ख़त्म हो गया। इसका श्रेय जाता था हमारे खुशमिजाज गोवन टूर गाइड को। हम गोवा के सबसे पुराने चर्च बोम जीसस बैसिलिका में भी गए थे।

'किसी ऐसे इंसान के साथ कैंडल जलाओ जिसे तुम प्यार करते हो गाइड ने कहा था। मुझे अनन्या और मेरी मां के बीच चुनाव करना था। यात्रा की नाजुक स्थिति को देखते हुए मैंने मां को चुना।

हम डोना पॉउला भी गए। फिल्म एक दूजे के लिए का क्लाईमैक्स यहीं फिल्माया गया था।

'यहीं पर वह मशहूर फिल्म फिल्माई गई थी। उत्तर भारत की लड़की, दक्षिण भारत का लड़का। दोनों शादी नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्होंने जान दे दी,' गाइड ने कहा।

'इसके अलावा और हो भी क्या सकता था?' मा ने बनावटी हँसी हँसते हुए कहा। मैं चुप रहा।

अनन्या के पैरेंट्स शॉपिंग के लिए पंजिम में ही रुक गए।

हम अनन्या के पैरेंट्स से डिनर के समय मिले। पार्क हेयट पर सभी बुफे मील पैकेज का ही एक हिस्सा थे। वे तीन बड़े ब्राउन बैग्स के साथ कॉफी शॉप पहुंचे।

'कविता-जी, यह आपके लिए है,' अनन्या के पिता ने मेरी मां की ओर बैग्स बढ़ाते हुए कहा।

'नहीं, नहीं, इसकी क्या ज़रूरत थी?' मां ने बनावटी मुस्कराहट के साथ भेंट स्वीकारते हुए कहा।

पहले बैग में तीन साड़ियों थीं। दूसरे बैग में मेरे लिए चार शर्ट थीं। तीसरे में मिठाइया, नमकीन स्नैक्स और गोवा के काजू थे।

मैं अनन्या के साथ बुफे काउंटर्स तक गया।

'इतना काफ़ी है या उन्हें और भी चाहिए?' अनन्या ने कहा।

'इट्स कूल। बिल्कुल इसी की ज़रूरत थी,' मैंने कहा।

हम सभी टेबल पर बैठ गए और चुपचाप खाते रहे। मुझे हमेशा अनन्या की फ़ैमिली के साथ खाना खाते समय डर लगता था। वे लोग इस तरह खाते थे जैसे किसी मातम में बैठे हों। लेकिन जहां इस तरह चुपचाप खाना मुझे अजीब लगता था, वहीं मेरी मा तो इसे बर्दाश्त ही नहीं कर सकती थीं। वे सीट में बार-बार बेचैनी से अपनी जगह बदलती रहीं। खाने के समय आने वाली इकलौती आवाज़ प्लेट्स से चम्मच टकराने की ही थी। पांच मिनट बाद मां बोलीं। 'देखिए ना, समय कितना बदल गया है। अब हमारे बच्चे पहले फ़ैसला ले लेते हैं और फिर हमें एक-दूसरे से मिलना पड़ता है।'

'हां, पहले-पहल तो हमें बड़ा शॉक लगा था। लेकिन क्रिश चेन्नई में छह माह रहा। जैसे ही हम उसे जानने लगे सब ठीक हो गया,' अनन्या की मां ने अपनी स्वाभाविक सख़्त आवाज़ में कहा।

'ठीक क्या? आप लोग तो भीतर ही भीतर बहुत खुश हो रहे होंगे। आपको इस जैसा काबिल लड़का और कहा मिलता?' मा ने कहा। मैंने मन ही मन प्रार्थना की कि अनन्या की मां इस बात का जवाब देने की कोशिश न करें। लेकिन उन्होंने जवाब दिया।

'एक्चुअली, हमें काबिल लड़कों की कमी नहीं थी। तमिल लोग एजुकेशन को बहुत महत्त्व देते हैं। अनन्या के सभी अंकल्स इंजीनियर्स या डॉक्टर्स हैं। अनन्या को अमेरिका से कई रिश्ते आए थे।'

'हां, लेकिन वे तो सभी काले-कलूटे लड़के होंगे। क्या उनमें से कोई भी क्रिश जैसा गोरा-चिट्टा रहा होगा? लुक्स की बात करें तो तमिल पंजाबियों का मुकाबला नहीं कर सकते मां ने बड़े आराम से कहा। उनके लहज़े से ऐसा नहीं लग रहा था कि वे कोई बहुत कठोर बात कह रही हैं, लेकिन मुझे स्पैगेटी खाते-खाते एक धक्का-सा लगा।

'मॉम, आज मीठे में कुछ नया है मैंने खौसते हुए कहा,' आप ब्रेड पुडिंग पसंद करेंगी? '

'और मेरे भाई भी बहुत अच्छी पोजिशन में हैं मां ने कहा।' अनन्या से पूछिए, कैसी आलीशान पार्टी दी थी। उन्होंने दूल्हे को एक सैंट्रो कार दी है। आपने मेरा बेटा हथिया लिया, इसका मतलब यह नहीं कि उसकी कोई वैल्यू नहीं है।'

अनन्या किसी स्तब्ध गोल्डफिश की तरह चुपचाप देखती रही। मैंने उसे देखकर सिर हिलाया, मानो मा की इस बात की जवाबदेही लेने से बच रहा होऊं।

'हमने किसी को नहीं हथियाया है अनन्या की मा ने आखिरकार जवाब दिया।' आपका लड़का ही हमारे घर के चक्कर काटता रहता था। हम भले लोग हैं, इसलिए हम ना नहीं कह पाए।'

'मॉम,' अनन्या ने कहा।

'मैं भला क्यों चुप बैठूं और झूठे इस्लाम सहती रहूं? हमने किसी को झौसे में नहीं लिया। क्या हमें दुख नहीं हो रहा है? हम सभी जानते हैं कि क्रिश के पिता इसके खिलाफ हैं। हमारे रिलेटिव्ज़ पूछेंगे तो हम क्या जवाब देंगे? फिर भी हम इस रिश्ते के लिए राज़ी हुए हैं अनन्या की मां ने कहा।

'आप लोग क्या राज़ी हुए हैं? आप तो मेरे बेटे के लायक भी नहीं हैं मां ने ऊंची आवाज़ में कहा।

'प्लीज़ चिल्लाइए मत। हम एजुकेटेड लोग हैं अनन्या के पिता ने कहा।

'क्या आप यह कहना चाहते हैं कि हम लोग एजुकेटेड नहीं हैं?' मा ने चुनौती देते हुए कहा।

'उनका मतलब था "हम" यानी हम सभी, ठीक है ना, अंकल? हम सभी एजुकेटेड हैं मैंने जल्दी से बीच में दखल देते हुए कहा।

'क्या तुम हमेशा इन्हीं लोगों की साइड लेते रहोगे और जब तुम्हारी मा की बेइज्जती होगी तो बैठकर तालिया बजाओगे?' मा ने कहा।

'नहीं, मॉम,' मैंने कहा, मैं सोच रहा था मैंने भला किसकी साइड ली। 'ऐसा नहीं होगा।' अनन्या की फ़ैमिली एक-दूसरे से तमिल में बतियाने लगी। अंकल ख़ास तौर पर नाराज दिख रहे थे और उनकी सासें तेज़ चल रही थीं।

'पापा की तबीयत ठीक नहीं है। हम अपने रूम में जा रहे हैं अनन्या ने कहा। मैंने उनकी ओर चिंता के साथ देखा।

'क्रिश, हम तुमसे बाद में मिलते हैं अनन्या ने कहा।

'मॉम,' उनके जाने के बाद मैंने विरोध के स्वर में कहा।

'क्या? आज ब्रेड पुडिंग बनी है ना। चलो थोडी-सी मंगवा लेते हैं उन्होंने कहा। मैं मां के साथ अपने कमरे में चला आया। वे यह दिखावा कर रही थीं, मानो कुछ हुआ ही न हो।

'यह रिमोट कैसे काम करता है? मुझे सीरियल देखना है मा ने कहा।

'मॉम, आप वहां थोड़ा बेहतर व्यवहार कर सकती थीं,' मैंने कहा।

मा ने शब्दों में जवाब नहीं दिया। उन्होंने परमाणु शस्त्र का इस्तेमाल किया। उनके गालों पर मू. लुढ़कने लगे।

'ओह प्लीज़,' मैंने कहा।

मा ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने अपना पसंदीदा आंटीवी सीरियल लगा लिया, जिसमें बेटा अपने बूढे माता-पिता को घर से

निकाल बाहर कर रहा था। मां टीवी के उन माता-पिता के साथ रोती रहीं। वे अपनी सिचुएशन को उनसे जोड़कर देख रही थीं। वे पार्क हेयट में थीं और उन्होंने मीठे में चार तरह की आइस्क्रीम और ब्रेड पुडिंग ली थी, लेकिन ज़ाहिर है दुनिया का हर बेटा विलेन होता है। वह अपनी बीवी के हाथ की कठपुतली होता है।

'यदि आप यह स्टुपिड सीरियल देखती रहेंगी तो हम बात कैसे करेंगे,' मैंने कहा।

'यह स्टुपिड नहीं है। यह सौ फ़ीसदी सच्चाई है,' उन्होंने जवाब दिया।

मैंने टीवी बंद कर दी। मा ने मेरे सामने हाथ जोड़ लिए। 'प्लीज़, मुझ पर रहम करो उन्होंने कहा।' मुझसे इस तरह का बरताव मत करो।'

दरवाज़े की घंटी बजी। मैंने दरवाज़ा खोला। बाहर अनन्या खड़ी थी। उसका चेहरा भी आसुओं से भीगा हुआ था। जब आप पर चारों तरफ़ से परमाणु आँखों से हमला होता है तो आप ज़्यादा कुछ नहीं कर सकते।

'क्या हुआ?' मैंने कहा।

'डैड के सीने में दर्द हो रहा है,' अनन्या ने अपने मू. रोकते हुए कहा।

'मैं डॉक्टर को बुलाऊं?' मैंने कहा।

'नहीं, अब वे बेहतर हैं लेकिन कोई और चीज़ है जिससे उन्हें आराम मिल सकता है।'

'क्या?' मैंने पूछा।

'तुम्हारी मॉम भीतर हैं? मैं उनसे बात कर सकती हूं?' उसने कहा।

'श्योर।' मैं पीछे हट गया।

अनन्या भीतर आई। मा बिस्तर पर बैठी थीं। उसने उनसे कहा,' आंटी, मुझे लगता है आपको मेरे पैरेंट्स से माफी मांगनी चाहिए।'

'हां, रालती तो हमेशा मेरी ही होती है ना,' मां ने मुंह बनाते हुए कहा। फिर उन्होंने समर्थन के लिए मेरी ओर देखा।

'आंटी, प्लीज़ ऐसी बातें मत कीजिए। आज हम पंजिम में चार घंटे तक आपके लिए गिफ्ट खुरीदते रहे। मेरे माता-पिता ने वही किया, जो क्रिश ने हमसे करने को कहा था।'

'क्या?' मां ने कहा।

'आंटी, आपने उनका अपमान किया है। उन्होंने किसी को झौसे में नहीं लिया। वे तो शुरू से ही क्रिश के खिलाफ थे। और अब जब उन्होंने क्रिश को स्वीकार कर लिया तो वे ज़रा शालीन व्यवहार की उम्मीद रखते हैं।'

'मैं नहीं... 'मां ने अपनी बात शुरू की।

'ओके इनफ़ मैंने कहा।

दोनों महिलाएं मेरी ओर मुड़ी।

'अपने पैरेंट्स को भी यहां ले आओ,' मैंने कहा,' चलो, अब सीधे-सीधे ही बात करते हैं। सभी ने सभी का अपमान किया है।'

'नहीं क्रिश आज मेरे पैरेंट्स ने कुछ नहीं किया है अनन्या ने कहा।

मा बाथरूम में चली गईं।

'अनन्या, समझने की कोशिश करो,' मैंने फुसफुसाते हुए कहा।' तुम मेरी मा को एक तरफ़ करती जा रही हो। इससे हालात और बदतर हो जाएंगे। चलो दोनों पक्ष एक-दूसरे से माफी मांग लेते हैं।' मैं अनन्या के साथ दरवाज़े तक पहुंचा।

'मुझे यह अच्छा नहीं लग रहा है अनन्या ने दरवाज़े पर खड़े होकर कहा।

'सभी को यहां ले आओ, प्लीज़ मैंने कहा।

मैं रूम में चला आया। मां अपना मुंह धो चुकी थीं।

'मैंने सभी को यहां बुलाया है। चलो सीधे-सीधे शब्दों में बात कर लेते हैं मैंने कहा। वे चुप रहीं।

'क्या बात है, मॉम? कुछ कहो तो मैंने कहा। मैं चाहता था कि अनन्या और उसके पैरेंट्स के आने से पहले मां कुछ कहें।

'तुमने अनन्या को देखा? तुमने कभी किसी लड़की को अपनी सांस से इस तरह बात करते हुए देखा है?' मां ने पूछा।

'वह ज़रा फेमिनिस्ट टाइप की है, मैं स्वीकारता हूं 'मैंने कहा।

'वह मुझसे कह रही है कि मैं माफी मां!। क्या तुम कभी कल्पना कर सकते हो कि मिंटी ड्यूक की मा से ऐसा कह सकती है?'

'वह अलग तरह की लड़की है। यह काफिडेंट, इंडिपेंडेंट और इंटेलीजेंट है। लेकिन वह सबको साथ लेकर चलने वाली और संवेदनशील भी है।'

'वह ज़रूरत से ज़्यादा इंटेलीजेंट है इतनी कि वह एक अच्छी बहू नहीं बन सकती।'

मुझे नहीं पता था कि मैं इस बात का क्या जवाब दूं लेकिन मुझे उन्हें शांत करना था।' वह इतनी इंटेलीजेंट भी नहीं है मॉम,' मैंने उन्हें समझाते हुए कहा।' उसने इकोनॉमिक्स की पढ़ाई की है लेकिन मैंने उसे उसके ही सब्जेक्ट में पछाड़ दिया था।'

'पंजाबियों की बहू चाहे जितनी ही हाई-प्रोफ़ाइल क्यों न हो, लेकिन ऐसी कभी नहीं होती। हमें अपनी बहुओं को सीधे रखना आता है,' मां ने कहा।

'हम भी उसे सीधे ही रखेंगे,' मैंने उन्हें शौत करने की कोशिश करते हुए कहा।' वह क़ाबू से बाहर हो चुकी है।'

'मॉम, वो यहां अपने पैरेंट्स के साथ है लेकिन मैं केवल उससे शादी कर रहा हूं। एक बार वह हमारे घर आ जाए, फिर हम उसे क़ाबू में कर लेंगे। तुम एक बार ना कह दो और वह कुछ नहीं बोलेगी। ये साउथ इंडियन दन्यू और डरपोक होते हैं मैं वही सब कह रहा था, जो मेरी मां सुनना चाहती थीं।

'मैं नहीं चाहती कि मेरी बहू मेरे सामने अपनी आवाज़ ऊंची करे या मुझे पलटकर जवाब दे। उसे मेरे अंगूठे के नीचे रहना चाहिए।'

'ठीक है, ऐसा ही करना 'मैंने कहा 'लेकिन अब नॉर्मल हो जाइए।'

‘मैंने सब कुछ सुन लिया है,’ अनन्या ने कहा। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा रहा
था। वह अपने पैरेंट्स के साथ खड़ी थी। बेड़ा गर्क मैं उसके जाने के बाद दरवाज़ा बंद करना भूल गया था।
‘अनन्या, मुझे पता नहीं था कि तुम यहां हो मैंने कहा।
‘और मुझे भी नहीं पता था कि मैं क्या कर रही हूं। तो, शादी के बाद मुझे अंगूठे के नीचे रखा जाएगा। बहुत ख़ूब, क्रिश तो तुम भी अपनी मा की ही तरह हो,’ अनन्या ने कहा।
‘अनन्या, मैं... ‘दोनों महिलाएं आसू से भरी आंखो के साथ मुझे देख रही थीं और अपने अल्टिमेट इमोशनल लेजुर हथियार का उपयोग करने के लिए पूरी तरह तैयार थीं।
अनन्या के पिता ने अपनी पत्नी के कंधे पर थपकी दी, जिसका मतलब था कि यहां से बोरिया-बिस्तर बौधकर घर चलो।
‘मैंने अपने पैरेंट्स को कहा था कि तुम्हारी मां उनसे माफी मांगेंगी, लेकिन यहां तो तुम लोग और भी बड़ी प्लानिंग कर रहे थे,’ अनन्या ने कहा और अपने पैरेंट्स के साथ कमरे से बाहर चली गई।
मैं दौड़कर अनन्या के पास गया।’ रुको, कहौ जा रही हो?’
‘सब कुछ ख़त्म हो गया उसने कहा। उसका गला रुँधा हुआ होने के बावजूद उसके शब्द दृढ़तापूर्ण थे।
‘क्या मतलब है तुम्हारा?
‘सब कुछ ख़त्म हो गया,’ अनन्या ने स्पष्ट करते हुए कहा,’ तुम्हारे और मेरे बीच में।’
‘तुम मुझसे ब्रेक अप कर रही हो? क्या? अनन्या, पागल हो गई हो क्या? मैं तो अपनी मां को केवल फुसला रहा था, ताकि वे शांत हो जाएं।’
‘मुझे बहलाने-फुसलाने से नफ़रत है, क्रिश, और मुझे ऐसे लोगों से और भी ज़्यादा नफ़रत है, जो ऐसा करते हैं,’ अनन्या ने कहा। उसकी आंखो से मू. की धार बह निकली।
अनन्या के पिता आगे बड़े और अनन्या का हाथ थाम लिया।’ सवाल कम्युनिटीज़ का नहीं है। सवाल यह है कि हम किस तरह के लोगों के साथ अपना नाता जोड़ना चाहते हैं उन्होंने कहा।
अनन्या का परिवार वहां से चला गया। मैं कॉरिडोर में अकेला खड़ा रहा। मुझे लग रहा था जैसे मेरे पैरों के नीचे धरती धंस रही हो।
कहने की ज़रूरत नहीं कि उस रात हम अपने ऑपरेशन बीच पैशन को अंजाम नहीं दे पाए।

अंतिम अंक: दिल्ली और चेन्नई और दिल्ली और चेन्नई

गोवा के बाद मैं वर्कोहोलिक हो गया। मैं दिन में चौदह-चौदह घंटे पागलों की तरह ऑफ़िस में काम करता रहता। मैं कंपनी का लैपटॉप भी घर ले आता और घर पर भी काम में जुटा रहता। मैंने अपने वर्क टारगेट से दोगुना काम कर दिखाया। मैंने लोगों से मिलना-जुलना बंद कर दिया, फिल्में देखना बंद कर दीं और रेस्तरा में जाना भी बंद कर दिया।

'तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल है मेरे नए बॉस रणविजय ने मुझसे कहा।

जब सिटीबैंक आपका भविष्य उज्ज्वल देखती है तो इसका मतलब यह होता है कि आपकी ज़िन्दगी में आज का कोई मुक़ाम नहीं रह गया है। 'थैंक्स, रणविजय,' मैंने कहा।' हालांकि तुम्हें शेव बनवा लेनी चाहिए। ये नया लुक भला क्यों? दादी क्यों बढ़ा रहे हो? और तुम थोड़े कमज़ोर भी लग रहे हो... भई अपनी सेहत का ख़्याल रखो।'

गोवा से लौटने के बाद मैंने कई बार अनन्या से बात करने की कोशिश की। यदि मैं घर पर फ़ोन लगाता तो उसके पैरेंट्स अनन्या को फ़ोन नहीं देते और यदि मैं ऑफ़िस में फ़ोन लगाता तो रिसेप्शनिस्ट मुझे कह देती कि वह अभी मीटिंग में हैं। कभी जब मैं उससे बात कर पाने में कामयाब हो जाता तो वह कोई बहाना बना जाती और मुझसे बात नहीं करती। अब उसने एक सेलफ़ोन रखना शुरू कर दिया था, लेकिन वह दिल्ली से आने वाला कोई फ़ोन अटेंड नहीं करती थी। एक बार हमारे ऑफ़िस में सिटीबैंक मुंबई से कोई विजिट पर आया। मैंने उससे अनुरोध किया कि क्या मैं उसके फ़ोन से एक कॉल लगा सकता हूं।

'हैलो अनन्या ने फ़ोन उठाया।

'हाय, फ़ोन मत रखना, मैं बोल रहा हूं 'मैंने कहा।

'क्रिश, प्लीज़ ये किसका फ़ोन है? '

'मुंबई ऑफ़िस का एक कॉलीग। लिसन, मैं एक बार फिर माफी मौगता हूं। तुम्हारी रिसेम्बानिस्ट को पता होगा कि मैंने इससे पहले तुमसे बात करने की कितनी कोशिश की।'

'क्रिश, सवाल माफी मांगने का नहीं है।'

'तो फिर यह नाराजगी किसलिए।'

'मैं नाराज नहीं हूं। मैं वही कर रही हूं जिसमें सभी की खुशी है।'

मैं सोचने लगा कि इस कपाट-विजन किस्म की बात पर क्या जवाब दूं।' और तुम्हारी और मेरी खुशी का क्या? '

'मेरी खुशी इसमें है कि मुझे अपने पैरेंट्स को बेइज़्ज़त होते नहीं देखना पड़े।'

'तुम मुझे मिस नहीं करतीं?' मैंने पूछा।

वह चुप रही। मैंने फ़ोन चेक किया। चार मिनट हो चुके थे। मेरा कॉलीग मुझे उलझन भरी नज़रों से देख रहा था कि आखिर मुझे उसका फ़ोन इस्तेमाल करने की ज़रूरत क्यों आन पड़ी।

'अनन्या, मैंने पूछा तुम मुझे मिस नहीं करतीं? '

'इस बात में भला अब क्या तुक है? मान लो कि मैंने तुम्हें माफ कर दिया, लेकिन उससे क्या फ़र्क पड़ेगा। क्या तुम्हारी मा बदल जाएंगी? क्या मेरे बारे में साउथ इंडियंस के बारे में लड़की वालों के बारे में उनका नज़रिया बदल जाएगा? '

'वे दिल की भली हैं अनन्या। मेरी बात का यक़ीन करो मैंने कहा।

'ओह रियली, तो फिर वे आकर मेरे पैरेंट्स से माफी क्यों नहीं मांगती?' उसने कहा। अब चुप रहने की मेरी बारी थी।

'देखा,' उसने कहा।

'अब वे हर चीज़ को लेकर बहुत सेंसिटिव हो गई हैं।'

'नहीं, बात यह है कि उन्हें लड़के की मां होने का गुरूर है।'

मैंने ठंडी सांस छोड़ी।' अनन्या, चलो कहीं भाग चलते हैं मैंने कहा।

'और हम जाएंगे कहा? मेरी केयरिंग प्यारी सासू मा के पास?' अनन्या ने कहा,' नहीं, मैं ऐसे घर में शादी करना चाहती हूं जहां मेरे पैरेंट्स को बराबरी का दर्जा मिले।'

'तब तो तुम्हें एक लड़के के रूप में पैदा होना चाहिए था,' मैंने कहा।

'यह तो बड़ी बकवास बात है यदि तुम न होते तो इस बात पर मैं फ़ोन रख चुकी होती।'

'यानी तुम्हें मेरी परवाह है। यानी तुम मुझे प्यार करती हो। क्या हमारा प्यार हर चीज़ से ऊपर नहीं है? '

'ग़ैरव्यावहारिक सवाल मत पूछो,' उसने कहा। उसकी आवाज़ भारी थी।

'क्या मैं कुछ कर सकता हूं? कुछ भी?' मैंने कहा।

'आगे से मुझे कभी फ़ोन मत करना। इस सबसे बाहर आने में मेरी मदद करो,' उसने कहा।

'आई लव यू 'मैंने कहा।

'बाय, क्रिश।'

मैं घर चला आया और आंटीवी के सामने बैठ गया। बिखर रहे परिवारों के लिए आंटीवी से बड़ा कोई दूसरा वरदान नहीं। यदि यह इलेक्ट्रॉनिक चुंबक नहीं होता तो लाखों भारतीय परिवार टूटकर बिखर चुके होते।

न्तुड़क चैनल्स पर अमर प्रेम की दास्तां सुनाने वाले गाने बज रहे थे। गानों में नायक-नायिका बहुत खुश नज़र आ रहे थे। शायद वे सभी एक ही स्टेट, एक ही धर्म एक ही जाति और एक ही संस्कृति के थे और उनके पैरेंट्स भी एक-दूसरे को पसंद करते थे। वरना, आखिर भारत में प्यार करना कैसे संभव है? हमारे घर के किसी न किसी बड़े-बुज़ुर्ग को हमारे चुनाव पर हर्ज़ तो होना ही है।

मां कभी गोवा के बारे में बात नहीं करती थीं। न ही उनके हावभाव देखकर लगता था कि उन्हें किसी तरह का पछतावा है। ही, उन्हें मेरे ख़राब मूड पर ज़रूर अफसोस होता था, लेकिन इसका प्रायश्चित्त वे रोज़ पनीर की डिशेस बनाकर करती थीं।

'आज मैंने पनीर भुर्जी बनाई है। तुम इसके साथ पराठे लोगे?' उन्होंने कहा। मैंने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने इसे मेरी मौन सहमति समझा। बीस मिनट बाद वे डिनर बनाकर ले आईं। 'तुम्हें सफ़ेद मक्खन चाहिए?' उन्होंने पूछा।

मैंने सिर हिला दिया।

'ऑफ़िस में बहुत काम है? घर के पास ही कैनेरा बैंक है। मैं वहां जाकर मैनेजर से तुम्हारे जॉब के लिए बात करूं?'

'नहीं, मुझे ऑफ़िस में कोई परेशानी नहीं है मैंने कहा।

मैंने खाने की कोशिश की, लेकिन निवाला गले से नीचे नहीं उतार पाया। मैंने तीन दिन से कुछ नहीं खाया था। मैंने मा की नज़र बचाकर पराठों को लैपटॉप बैग में छुपा दिया।

'शिप्रा मासी ने एक और लड़की के बारे में बताया है। उनका शालीमार बारा में एक बंगला है। तुम उससे मिलना चाहोगे?' उन्होंने कहा।

मैंने मा की ओर देखा।

'क्या हुआ?' उन्होंने कहा।

'लड़की देखने की कोई ज़रूरत नहीं। तुम चाहती हो तो मैं उसी से शादी कर लूंगा। ठीक है?' मैंने कहा।

'क्रिश, ऐसी बातें मत करो। मैंने भला तुम्हें कब फोर्स किया है? '

'आखिर इन लड़कियों को देखने से फ़ायदा क्या है? मैं एक घंटे में आखिर ऐसा क्या जान लूंगा? उसका रंग-रूप? उसका फिगर? वह दुबली है या मोटी? उसके घर में लगा मार्बल असली है या नहीं? जब हमें किसी इंसान के साथ पूरी ज़िन्दगी बितानी होती है तो इनमें से कोई भी चीज़ मायने नहीं रखती। तो बेहतर यही होगा कि वक़्त बर्बाद न किया जाए। पैरेंट्स आपस में मिल लें। जिस भी लड़की के माता-पिता आपके अंहकार को ज़्यादा सहला पाएं, उसे ही कह दीजिए।'

'तुम्हें हो क्या गया है? ये मल्टीनेशनल कंपनियां तुम्हारा खून चूस रही हैं मां ने कहा।

'क्या आप अनन्या के माता-पिता से माफी मांग सकती हैं?' मैंने पूछा।

मा ने कोई जवाब नहीं दिया। वे सोफे से उठीं और किचन में चली गईं।

मैं उनके पीछे-पीछे चला आया।' आप ऐसा क्यों नहीं कर सकतीं?' मैंने कहा। उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने एक स्पंज पर डिशवॉशिंग डिटर्जेंट लगाया और बर्तन मौजने लगीं। फिर वे बड़बड़ाने लगीं, मानो किसी काल्पनिक व्यक्ति से बतिया रही हों : 'पहले नाकारा पति मिला, अब नाकारी औलाद। मैंने तो सोचा था बेटे के ब्याह के बाद मुझे मान-सम्मान मिलेगा। मैंने उसकी पसंद की लड़की के लिए ही भी कर दी, लेकिन कम से कम लड़की वाले तो लड़की वालों की तरह पेश आएं। अब मेरा बेटा चाहता है कि मैं उनके पैरों में गिरकर नाक रग,। आखिर इस लड़की में ऐसे कौन-से सुरखाब के पर लगे हैं? शिप्रा सच कहती है, सभी मतलबी हैं।' 'बस करो मॉम, मैं आपसे उनके सामने गिड़गिड़ाने को नहीं कह रहा हूं। आप फ़ोन पर भी खेद जता सकती हैं।'

'खेद किस बात के लिए? जो मेरा हक है उसकी उम्मीद करना क्या ग़लत है? क्या मैंने तुम्हारी दादी मा की उनकी मौत तक देखभाल नहीं की थी? '

'क्या अनन्या ने भी ड्यूक के परिवार को समझाने में मदद नहीं की थी? क्या आपने भी इसीलिए उसके लिए हा नहीं कही थी? '

'मैं ग़लत थी। मैं तब तक उसके पैरेंट्स से नहीं मिली थी। मैं अपने जीवन में कभी ऐसे रूखे-सूखे लोगों से नहीं मिली। खाना खाते हैं तो ऐसे मुंह लटकाकर, जैसे खाने की सज़ा मिली हो। अनन्या की मा को क्या तुमने कभी हँसते हुए देखा है? भीतर से भी काली, बाहर से भी काली।'

दरवाज़े की घंटी बजी। पिता अपने एक और बेरंग कारोबारी अभियान से लौटकर आए थे। मैंने टीवी बंद किया और दरवाज़ा खोल दिया। मैंने उन्हें गोवा के बारे में

आधी-अधूरी बातें ही बताई थीं। मैंने उन्हें कहा था कि गोवा में एक ऑफिशियल कांग्रेस है और मैं मां को घुमाने ले जा रहा हूं। गोवा से लौटने के बाद मैं चुप-चुप-सा रहने लगा था। और अब मेरी पापा से झगड़ने में भी कोई दिलचस्पी नहीं रह गई थी। वे भीतर आए तो मा और मेरे बीच पसरी खामोशी को उन्होंने भाप लिया। उन दिनों घर में ऐसी अनेक शामें गुज़रती थीं, जब कोई किसी से एक शब्द भी नहीं कहता था।' तो क्या अब तुमने अपनी मा से भी बात नहीं करने की कुसम खा ली है?' पापा ने सोफे पर बैठकर अपने जूते निकालते हुए कहा।

इससे आपको कोई सरोकार नहीं होना चाहिए, मैं हमेशा की तरह यही जवाब देना चाहता था। लेकिन मैं इस दुनिया से पर्याप्त झगड़ा कर चुका था। एक और बहस से अब कोई फ़र्क नहीं पड़ सकता था।

'हमारे बीच सब ठीक हो जाएगा,' मैंने कहा। मैं मन ही मन दुआ कर रहा था कि मां जल्द ही उनके लिए डिनर ले आएं।

'क्या तुम्हारा काम में मन नहीं लग रहा है?' पापा ने पूछा।

'काम तो बढ़िया चल रहा है। वे लोग कहते हैं कि मेरा भविष्य बहुत उज्वल है मैंने कहा। पता नहीं, मैंने यह आखिरी वाली बात क्यों कही थी। शायद मैं इस बात की ज़रूरत महसूस कर रहा था कि मैं अपने पिता को बताऊं मैं कितना अच्छा काम कर रहा हूं।

'तुम्हारी अपनी मां से अनबन क्यों हो गई है?' उन्होंने पूछा।

अब बहुत हो चुका था।' इससे आपका कोई सरोकार नहीं,' मैंने कहा।

'क्या तुम मुझे यह कहना चाहते हो कि मेरा अपने परिवार से कोई सरोकार नहीं है?' उन्होंने कहा।

'डैड, बहुत हो चुका। मैं बहुत थक चुका हूं।'

मा उनके लिए खाना ले आईं और मैं फिर अपने कमरे में चला गया। मैंने अनन्या की तस्वीरें निकाल लीं। फिर मैं देर तक बिस्तर पर इस ऊहापोह में करवटें बदलता रहा कि अब क्या किया जाए। जब हमें नींद नहीं आती है, तब हमारा दिमाग़ अजीबो-रारीब किस्म की योजनाएं बनाता रहता हैं। मैं फ़ोन पर उन तमाम बातों को अमल में नहीं ला सकता था, इसके लिए मुझे उससे पर्सनली मिलना जुरूरी था। मैं सुबह चार बजे उठा और नहा लिया।

‘तुम इस वक़्त ऑफ़िस जा रहे हो?’ मा ने मुझे तैयार होते देखकर पूछा।

‘मुझे एक प्रेजेंटेशन देना है। मैं शाम को भी देर से आऊंगा मैंने कहा।

मैं ऑटो पकड़कर सीधे एयरपोर्ट गया और अपनी महीने भर की तनख़्वाह से पूरे देश को नापने वाली खुशियों की उड़ान का टिकट ले लिया।

‘सेम डे रिटर्न टिकट टु चेन्नई प्लीज़,’ इंडियन एयरलाइंस के काउंटर पर मैंने कहा।

55

अपनी इस दूसरी यात्रा पर मुझे चेन्नई इतना जाना-पहचाना लग रहा था कि मुझे ज़रा अजीब महसूस होने लगा। मैं बड़ी आसानी से तमिल नियम-फायदों का पालन कर पा रहा था और ऑटो वालों से मोल-भाव कर पा रहा था। मुझे सभी मुख्य सड़कें पता थीं। मैं ग्यारह बजे अनन्या के दफ़्तर पहुंचा।

'हाय, आई एम क्रिश,' मैंने रिसेप्शनिस्ट से कहा।

'ओह दैट क्रिश,' उसने कहा और सीधे अनन्या का नंबर मिलाया।

अनन्या बाहर आई। मैं उसे गले लगाने के लिए अपनी बौहें खोलने ही वाला था कि उसने आकर मुझसे हाथ मिलाया।

'मैं दिनभर के लिए यहां आया हूं 'मैंने कहा। हम एचएलएल के कैफेटेरिया में बैठे थे।

'तुम्हें यहां नहीं आना चाहिए था,' उसने कहा।' और यह दादी वाला लुक किसलिए? और तुम इतने कमज़ोर क्यों लग रहे हो? बीमार पड़ गए थे क्या? '

'मैं तुम्हारे पैरेंट्स से मिलना चाहता हूं 'मैंने कहा।

'इससे कोई फ़ायदा नहीं होने वाला। तुम अब चाहे जो कर लो, लेकिन अब वे तुम पर भरोसा नहीं करेंगे,' अनन्या ने कहा।

'क्या तुम मुझ पर भरोसा करती हो? '

'यह एक बेकार सवाल है उसने कहा।

'मैं तुम्हारे घर जाऊंगा,' मैंने कहा।

'ऐसा मत करना। हरीश के पैरेंट्स चेन्नई आए हुए हैं। वे आज मेरे पैरेंट्स से मिलने आ रहे हैं।'

मैंने ख़ुद को क़ाबू में रखने के लिए गहरी सांस ली।' कम से कम तुम तो आज का दिन मेरे साथ बिता मैंने कहा।

'ऐसा नहीं हो सकता। मुझे काम है। इसके अलावा तुमसे मिलना मेरे पैरेंट्स की प्रतिष्ठा के लिए ठीक नहीं होगा।'

मेरा चेहरा लाल हो गया।' कौन-सी प्रतिष्ठा? अहमदाबाद को भूल गईं? वे दिन भूल गईं, जब तुम चेन्नई में मुझसे मिलने के लिए उनसे झूठ बोला करती थीं? रला स्टोर्स को भी भूल गईं?' मेरी आवाज़ उतनी ही तेज़ थी, जितना मेरा शरीर थका हुआ था।

वह उठ खड़ी हुई।' प्लीज़ मेरे ऑफ़िस में सीन क्रिएट मत करो।'

'और तुम प्लीज़ मेरी ज़िन्दगी के साथ खिलवाड़ मत करो।'

'मैं कुछ नहीं कर रही हूं! थोड़ा मजूबूत बनो, आगे की सोचो,' उसने कहा।' यह मेरे लिए भी आसान नहीं है इसलिए कम से कम मुझे तो यूं न सताओ।'

वह अपने ऑफ़िस में चली गई। मैं वहीं बैठा रहा। थकान से मेरा बदन टूट रहा था, लेकिन गुस्से के कारण मेरे शरीर में आग-सी लगी हुई थी। मैंने दस दिन से शेव नहीं की थी। कैफेटेरिया में दूसरी लड़कियां मुझसे दूरी बनाए हुए थीं। मैं टॉलीवुड के किसी विलेन की तरह लग रहा था, जो कभी भी, कहीं भी, किसी का भी रेप कर सकता था। मेरी रिटर्न फ्लाइट शाम को थी। मुझे आधा दिन काटना था, लेकिन मेरी जेब पूरी तरह ख़ाली थी। एक लूजर की तरह मैंने तय किया कि मैं सिटीबैंक जाकर बाला से मिल आता हूं।

'क्रिश! 'बाला ने कहा। वह मेरे हुलिये और अचानक यहां चले आने से स्तब्ध रह गया था।

'हाय, साउथ के चैम्पियन के क्या हाल हैं? '

'मैं तो ठीक हूं लेकिन तुम्हारा हुलिया देखकर लगता है, जैसे तुम्हारे बारह बज चुके हो।'

'हां, ऐसा ही हुआ है मैंने कहा और उसके सामने लड़खड़ाकर कुर्सी पर गिर पड़ा। बाला ने हम दोनों के लिए कॉफी ऑर्डर की। फिर उसने अपनी कुर्सी आगे बढ़ाई। वह दूसरे ऑफ़िस के गॉसिप सुनने के लिए उत्सुक नज़र आ रहा था।

'क्या तुम्हारी यह हालत सिटीबैंक दिल्ली ने कर दी है? कहीं तुम वापस यहां तो नहीं आना चाहते?'

'बाला, छोड़ो भी, तुम्हें क्या लगता है सिटीबैंक मेरी यह हालत कर सकता है?' मैंने कहा।

'सिटीबैंक नहीं तो किसी और ने तुम्हारी यह हालत की है। बच्चू र अपनी आखें तो देखो। तुम्हें कंजक्टिवाइटिस तो नहीं हो गया?'

मैंने अपना सिर हिलाकर ना कहा। उसने मेरी बौह छुई।

'डूड, तुम्हें तो बहुत तेज़ बुखार है। तुम किसी डॉक्टर से मिलना चाहोगे? '

'मैं ड्रिंक करना चाहता हूं। क्या तुम मुझे एक ड्रिंक लाकर दे सकते हो?' मैंने कहा।

'अभी? अभी तो लंचटाइम भी नहीं हुआ है।'

मुझे उकाई आ रही थी, लेकिन रानीमत है कि मैंने कै नहीं की और बाला का दफ़्तर पहले की तरह साफ-सुथरा ही रहा।

'तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं लग रही है। मेरा एक कज़िन डॉक्टर है मैं उसे बुलाता हूं। वह पास ही की स्ट्रीट में सिटी हॉस्पिटल में काम करता है।'

'लड़कियों को क्या लगता है कि हम उनके बिना जी नहीं सकते?' मैंने बड़बड़ाते हुए कहा। मुझे यक़ीन नहीं हो रहा था कि मैं बाला के सामने अपने दिल का बोझ हल्का कर रहा था, लेकिन मुझे किसी हमदर्द की ज़रूरत थी। चाहे वह कोई भी हो।

बाला ने मुझे उसके कज़िन डॉ रामाचंद्रन या डॉ राम के क्लिनिक पर ड्रॉप कर दिया। डॉ राम दो साल पहले यूएस से आए थे। वे यूएस में जनरल सर्जन की हैसियत से प्रैक्टिस कर रहे थे और साथ ही कैंसर रिसर्च पर काम करते हुए अनेक शीर्ष डिग्रियों भी हासिल कर रहे थे। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं उनके एग्जामिनेशन बेड पर चला जाऊं जबकि वे अपने उपकरण लेने चले गए।

'मैं तुमसे बाद में मिलता हूं 'बाला ने कहा।

‘तुम साउथ इंडियंस के पास दिमाग़ तो बहुत बड़ा होता है लेकिन दिल छोटा होता है मैंने बाला से कहा। वह बाहर चला गया।
‘मैंने तुम्हारी बात सुन ली है डॉ राम ने बाहर आते हुए कहा। उन्होंने छाती पर एक ठंडा स्टेथेस्कोप रख दिया।
‘तो मामला लड़की का है?’ डॉ राम ने पूछा।
‘कौन-सी लड़की? '
‘तुमने आखिरी बार खाना कब खाया था?’ उन्होंने पूछा।
‘याद नहीं,’ मैंने कहा।
‘यह बू कैसी आ रही है?’ डॉक्टर ने कहा। उन्होंने मेरे लैपटॉप बैग को टटोला। वह बू बासी पराठों से आ रही थी।’ यह क्या है? '
‘पिछली रात का डिनर,’ मैंने कहा।’ ओह मेरा लैपटॉप, आई होप वह ठीक होगा।’
मैंने अपना लैपटॉप खोला और पॉवर ऑन किया। वह ठीक-ठीक था।
‘क्या मैं इसे देख सकता हूं?’ डॉ राम ने मेरे कंप्यूटर की ओर इशारा करते हुए कहा।
‘येस श्योर, क्या आप कोई लैपटॉप खरीदना चाहते हैं?’ मैंने कहा।
उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने मेरे कंप्यूटर को पाँच मिनट चलाया और फिर उसे मुझे लौटा दिया।
‘क्या हुआ?’
‘तुम्हें आराम करना चाहिए और अच्छी खुराक भी लेनी चाहिए। लेकिन तुम्हें एक बार किसी मनोविश्लेषक से भी मिल लेना चाहिए।’
‘क्या? क्यों?’ मैंने कहा। निश्चित ही, मैं थोड़ा-बहुत पागल हूँ, लेकिन मैं इसे ज़ाहिर नहीं होने देना चाहता था।
‘लड़की का नाम क्या है?’ डॉ राम ने कहा।
‘कौन-सी लड़की? मैं लड़कियों को पसंद नहीं करता।’
‘बाला ने मुझे बताया था कि लड़की तमिल है। अनन्या स्वामीनाथन, जो मयलापुर में रहती है राइट?’ उन्होंने कहा।
‘मैं तमिलों को पसंद नहीं करता,’ मैंने चिल्लाते हुए कहा। ‘और मेरे सामने उसका नाम मत लो, न ही उसके रहने की जगह का ज़िक्र करो।’
‘गुड, क्योंकि मैं तुम्हें जिस मनोविश्लेषक के पास भेज रहा हूं वह एक तमिल लड़की है। डॉ अय्यर ऊपर के माले पर बैठती हैं। उनसे मिल आइए।’
‘डॉक्टर, मुझे एक फ़्लाइट पकड़नी है। मैं पूरी तरह से ठीक हूं।’
मैं जैसे-तैसे उठा। मेरी टाँगें ऐसी हो रही थीं, जैसे किसी ने उनका पूरा खून सोख लिया हो। मैं संतुलन खो बैठा और फर्श पर गिर पड़ा।
डॉ राम ने उठने में मेरी मदद की।
‘मुझे क्या हो गया है? ‘मैंने कहा। मुझे पहली बार अपनी सेहत को लेकर फ़िक्र हो रही थी।
उन्होंने मुझे स्पेशलिस्ट रेफरल लेटर थमा दिया और फिर कहा ‘तुम्हारी बीमारी के लिए कोई एक सटीक मेडिकल टर्म तो नहीं है, लेकिन कुछ लोग इसे नर्वस ब्रेकडाउन के शुरूआती संकेत बता सकते हैं। '

'तो ये है मेरी कहानी। मैंने आपको सब कुछ बता दिया है, 'मैंने कहा। मेरी कहानी ख़त्म होते ही डॉ नीता अय्यर ज़ोर से हँस पडीं।

'यह तो बड़ी अजीब बात है। आपको मेरी ट्रैजेडी कॉमेडी लग रही है? 'मैंने चिढ़ते हुए कहा।

लेकिन उनकी हँसी नहीं थमी।

'मैं आपको इस बात की फ़ीस दे रहा हूं कि आप मेरा इलाज करें, 'मैंने कहा और घड़ी देखी। 'और मुझे बीस मिनट में एयरपोर्ट के लिए निकलना है।'

तब जाकर मुझे समझ पड़ा कि मैं उससे चार घंटों से बात कर रहा था और मेरे पास उसे देने के लिए इतना पैसा नहीं था।

'सॉरी,' उसने कहा, 'तुम्हें देखकर मुझे अपने पहले बॉयफ्रेंड की याद आ गई। वह नॉर्थ इंडियन था। '

'तुमने उससे शादी नहीं की? '

'वह किसी बंधन में बंधना नहीं चाहता था, 'उसने सिर हिलाते हुए कहा।

'ओह सॉरी, 'मैंने कहा।

'इट्स ओके। अब मैं उस सबको पीछे छोड़ चुकी हूं। '

'ऑफ़ कोर्स आप एक थैरेपिस्ट जो हैं। यदि और कुछ नहीं तो आप अच्छे से अपना इलाज तो कर ही सकती हैं। '

वह खिड़की की ओर चली गई। 'आह क्रिश, ऐसा नहीं होता है। एक टूटे हुए दिल को जोड़ना सबसे मुश्किल होता है। '

मैंने आह भरी। 'आप सिटीबैंक क्रेडिट कार्ड्स एक्सेप्ट करती हैं?' मैंने अपना पर्स खोलते हुए पूछा।

'इट्स फ़ाइन। मुझे बाद में एक चेक भेज देना, 'उसने कहा। 'तुम दोनों को एक-दूसरे के साथ भाग जाना चाहिए था। '

'हमें लगा था कि हम अपने पैरेंट्स को मना लेंगे। यदि हमारे पैरेंट्स ही खुश न हों तो हमें शादी करने की खुशी भला कैसे होगी।?' मैंने कहा।

वे मेरे पास आईं और मेरा कंधा थपथपाया।

'तुम्हें जाना है। ऐसे में मैं तुम्हारे लिए भला क्या कर सकती हूं? तुम्हें दवाई चाहिए? 'उन्होंने कहा।

'आपका मतलब है एंटी-डिप्रेशन दवाइयां? वे तो हमारी सेहत के लिए बुरी होती हैं ना? '

'ही, लेकिन यह इस पर निर्भर करता है कि हम अभी कितना बुरा अनुभव कर रहे हैं। मैं नहीं चाहती कि तुम आत्महत्या करने के तरीक़ा के बारे में गष्ट्राल सर्च करो। '

'मैं ऐसा नहीं करूंगा, 'मैंने कहा, 'शायद मैं उसके बिना ही एक दिन ख़त्म हो जाऊंगा। इन दवाइयों से बेहतर और कोई विकल्प है क्या? '

'थैरेपी है। इस तरह के सेशंस। हालांकि इसमें कुछ महीने लग सकते हैं। मैं दिल्ली में तुम्हारे लिए कोई अच्छा-सा थैरेपिस्ट ढूंढ सकती हूं। '

'नहीं, यदि मेरे पंजाबी परिवार को यह पता चल जाए तो कबाड़ा हो जाएगा। वे तो मुझे पागल ही घोषित कर देंगे। '

'तुम पागल नहीं हो। लेकिन एक चीज़ है जो तुम ज़रूर कर सकते हो। '

क्या?

'जब तुमने मुझे अपनी कहानी सुनाई तो गुरुजी वाली उस घटना का ज़िक्र क्यों किया? '

'अरबिंदो आश्रम वाली घटना?'

'ही और हालांकि इससे अनन्या या उसके पैरेंट्स का कोई संबंध नहीं है लेकिन क्या तुम्हें अच्छी तरह याद है उन्होंने क्या कहा था? '

'ही, उन्होंने क्षमा करने के बारे में कुछ कहा था। '

'ही, वह बात तुम्हारे लिए ज़रा महत्त्व की हो सकती है उसने कहा।

मैं चुप रहा। उसके कमरे की घड़ी ने बताया कि अब मेरे यहां से जाने का समय हो गया है। मैं वहां से चला आया।

'एयरपोर्ट, वेंगामा, 'मैंने एक ऑटो वाले को बुलाते हुए कहा।

मुझे पता था कि मुझे भोजन की दरकार है मेरा दिमाग़ यह जानता था, लेकिन मेरा शरीर उसकी बात सुनने को तैयार नहीं था। चेन्नई से लौटने के बाद मैंने केवल ऑफिस में सूप लिया। घर पर आकर मैंने कह दिया कि मैं डिनर कर चुका हूं। मां ने पूछा कि मैं शेव कब करूंगा। वे मुझे किसी नई लड़की से मिलवाना चाहती थीं। मैंने उन्हें कह दिया कि अब मैं ताउम्र दादी बढ़ाए रखूंगा। उन्होंने मुंह बनाया और कमरे से बाहर चली गईं। पापा दस बजे घर आए। वे कुछ ज़्यादा थके हुए लग रहे थे। आमतौर पर वे शर्ट इन रखते थे, लेकिन आज वह भी बाहर निकली हुई थी। उनके बाल रोज की तरह कशीदे से काढ़े हुए नहीं थे। वे मेरे सामने बैठ गए।

'मैंने डिनर कर लिया है, 'उन्होंने मा से कहा।

'पता नहीं मैं खाना किसके लिए बनाती हूं 'मां ने बड़बड़ाते हुए कहा और वहां से चली गईं।

'पिछली रात तुम देर से घर आए थे पापा ने कहा। एयरपोर्ट से घर तक पहुंचने में आधी रात हो गई थी।

'ऑफिस में ज़्यादा काम था, 'मैंने कहा।

'सब ठीक तो है ना? 'उन्होंने पूछा।

मैंने सिर हिला दिया।

'मेरा दिन तो बहुत ही ख़राब बीता, 'उन्होंने कहा। 'मेरे पेंशन के कागज सरकारी दफ्तरों में अटक गए हैं। कमबख़्त कामचोर कहीं के। '

मैंने उनकी तरफ़ ध्यान दिए बिना सिर हिला दिया। मेरे दिमाग़ में विचार बिखरे-बिखरे हुए थे। मुझे अनन्या की बहुत ज़रूरत भी महसूस हो रही थी और उसके प्रति मेरे मन में घृणा के भाव भी आ रहे थे। मैं मां से भी बहुत नाराज था। मेरी समस्याएं रिटायरमेंट की उन फाइलों से कहीं बड़ी थीं, जो किसी सरकारी दफ़्तर में उलझी हुई थीं।

'अब वे मुझसे कह रहे हैं कि मुझे तीन अलग-अलग लेटर्स सबमिट करने होंगे। मुझे उन्हें कल टाइप करवाना होगा, 'पापा ने कहा।

जब पापा को मुसीबतों का सामना करना पड़ता था तो वे यह भूल जाते थे कि दूसरों को मुसीबत में डाल देना उनका शाल है। घर आने के बाद वे एक बार भी चिल्लाए नहीं थे। 'तुम्हें कोई ऐसी जगह पता है, जहां ये लेटर टाइप करवाए जा सकें? तुम्हारे पास कंप्यूटर है ना?' उन्होंने कहा।

'ही, है मैंने कहा।

पापा मेरी ओर उम्मीद भरी नज़रों से देखते रहे।

'ओके मैं उन्हें अभी टाइप कर देता हूं और कल ऑफिस से प्रिंट आउट निकाल

लूगा

मैंने कहा। वैसे भी मैं मन लगाने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा काम करना चाहता था। मैंने अपना लैपटॉप खोला।

'थैंक यू 'उन्होंने कहा। मुझे पता नहीं था कि उन्हें ये शब्द भी पता हैं।

मैंने आधे घंटे में उनके तीनों पत्र टाइप कर दिए।

'तुम्हारी दोस्त कैसी है?' उन्होंने मुझसे कहा।

'कौन-सी दोस्त?' मैंने कहा।

'वह लड़की, जो शादी में शामिल होने के लिए चेन्नई से यहां आई थी, 'उन्होंने कहा। अनन्या के ज़िक्र ने मेरी भावनाओं में उफान ला दिया। मुझे लगा जैसे किसी ने मेरे पेट में मुक्का दे मारा हो। शायद, मुझे वे एंटी-डिप्रेशन पिल्स ले लेनी चाहिए, मैंने सोचा।

'पता नहीं। ठीक ही होगी, 'मैंने एक मिनट रुकने के बाद कहा।

'तुम उसके संपर्क में नहीं हो?'

'डैड, सभी अपनी-अपनी ज़िन्दगी में व्यस्त रहते हैं मैंने कहा। 'आपके लेटर्स हो गए हैं, मैं कल प्रिंटआउट ले आऊंगा। 'मैंने अपना कंप्यूटर शट डाउन कर दिया। 'यह अच्छा होगा कि हम कभी-कभी आपस में बात कर लिया करें, 'उन्होंने कहा।

'गुड नाइट, डैड, 'मैंने कहा और अपने कमरे में चला गया।

मैं जाकर बिस्तर में लेट गया और डिप्रेशन ने मुझे पूरी तरह अपनी गिरफ्त में ले लिया। डॉ अय्यर ने ठीक ही कहा था, अभी मुझ पर जो कुछ बीत रही थी, कोई भी दवाई उससे बदतर नहीं हो सकती थी। मैं बिना हिले-डुले लेटा रहा। मुझे लग रहा था कि मैं इस बिस्तर से कभी उठ नहीं पाऊंगा। मैं अपने जीवन में शामिल हर इंसान के बारे में सोच रहा था। एक-एक कर मैं उनके नाम याद कर रहा था और सोच रहा था कि वे सभी किस तरह मुझसे नफ़रत करते हैं। यदि मैं कल इस दुनिया में न रहूं तो वे सभी खुश हो जाएंगे। मुझे जीने की कोई वजह नज़र नहीं आ रही थी। ऐसा कोई नहीं था, जिसे मैं अपनी हालत के बारे में बता पाता, सिवाय पाँच सौ रुपया प्रति घंटा फ़ीस लेने वाली किसी मनोविश्लेषक के। मुझे पैसों से नफ़रत हो रही थी, मुझे सिटीबैंक से नफ़रत हो रही थी, मुझे अपने काम से भी नफ़रत हो रही थी। मैं पूरी दुनिया के लिए नफ़रत का अनुभव कर रहा था।

शांत हो जाओ क्रिश यह सब जल्द ही गुज़र जाएगा, मैंने ख़ुद से कहा। मेरे भीतर का कोई समझदार हिस्सा यह बात कह रहा था। नहीं बन्द, इस बार तुम्हारी कुछ ऐसी बारह बजी है कि अब तुम ज़िन्दगी भर ऐसा ही महसूस करते रहोगे, मेरे भीतर के किसी बददिमाग़ हिस्से ने कहा। नॉनसेंस। ज़िन्दगी में जो भी बुरा होता है हम उससे उबर सकते है हम उसके आदी हो सकते है। तुम दुनिया के पहले इसान नहीं हो, जो ब्रेक-अप की तकलीफ़ झेल रहा है, समझदार हिस्से ने कहा।हां लेकिन कोई भी इस तरह प्यार नहीं करता है जैसे मैं करता हूं इसलिए कोई भी इस तरह की तकलीफ महसूस नहीं कर सकता, जैसी मैं कर रहा हूं, बददिमाग़ हिस्से ने कहा। ही, ठीक है समझदार हिस्से ने कहा, हमें अब सो जाना चाहिए। तुम तो जानते ही हो, तुम्हें अच्छी नींद की कितनी ज़रूरत है।

पागल हो गए हो? ऐसे में तुम सो कैसे सकते हो, जबकि हम रात भर जागकर इस बारे में सोच सकते है बददिमाग़ हिस्से ने

कहा।

दुनिया का सबसे समझदार इंसान और सबसे नासमझ इंसान दोनों हमारे भीतर रहते हैं लेकिन सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि हम कभी यह नहीं बता सकते कि समझदार कौन है और नासमझ कौन।

‘डैड कहा है? ‘मैंने मां से पूछा ‘उन्होंने बताया नहीं कि उन्हें कितनी कॉपीज चाहिए। ‘हालांकि मैं ऑफिस जाने से पहले नाश्ता करने बैठा था, लेकिन मैंने केवल दूध लिया। ठोस चीज़ों को पचा पाना अब भी मेरे बस के बाहर था। मैं जल्दी से ऑफिस पहुंचकर ख़ुद को काम में उलझा देना चाहता था, इससे पहले कि मेरा दिमाग़ फिर से अवसाद के ब्लैक-होल में धंस जाए।

‘मॉर्निंग वॉक, ‘मा ने कहा।

‘वे मोबाइल क्यों नहीं रखते?’ मैंने जूते पहनते हुए कहा।

‘हर लेटर की चार-चार कॉपीज़् निकाल लो, फिर देखा जाएगा, ‘मां ने कहा।

यह कोई बड़ी बात नहीं थी, लेकिन इन दिनों मुझे परेशान कर देने के लिए बड़ी बातों की ज़रूरत नहीं थी।

‘जैसे कि मेरे पास ऑफिस में करने को कोई और काम ही नहीं है मैंने कहा। ‘सारे तुनकमिजाज लोग मेरे ही घर में आ गए हैं चलो अब जाओ, ‘मा ने मेरे सामने हाथ जोड़ते हुए कहा। ‘पता नहीं, तुम उसे कब भूलोगे। '

‘और मुझे भी पता नहीं कि आप अपना यह ड्रामा कब ख़त्म करेंगी, ‘मैंने कहा। ‘यह लड़की ‘मा ने बात शुरू करते हुए कहा।

‘बाय, ‘मैंने कहा और जल्दी से घर से बाहर निकल गया।

मैं रात को देरी से घर पहुंचा। मैंने पूरा दिन जूस और दूध पर ही बिताया था।

‘आज भी डिनर नहीं? तुम आजकल खाना कहां खा लेते हो? अपनी हालत तो देखो कितने दुबले हुए जा रहे हो। और प्लीज़ शेव करा लो मा ने कहा।

‘डैड आ गए हैं?’ मैंने कहा, ‘ये रहे उनके पेपर्स। '

मैंने प्रिंटआउट्स निकाले और टेबल पर रख दिए। मां ने सिर हिलाते हुए बताया कि वे दिनभर से घर नहीं आए हैं।

‘प्लीज़, उन्हें दे देना, ‘मैंने कहा।

मैं अपने कमरे में गया और बिस्तर पर लेट गया। अवसाद के अंधेरे के डर से मैंने बत्ती भी नहीं बुझाई। मैं अखबार पढ़ने लगा और अपने दिमाग को व्यस्त रखने के लिए हर लेख को बहुत ध्यान से पढ़ने लगा। एक आइटम गर्ल, जिसने बिकिनी पहन रखी थी, कह रही थी कि वह चाहती है कि उसे सीरियसली लिया जाए। मुझे उसकी रिक्वेस्ट बहुत जायज लगी।

पापा आधी रात को आए।

‘आपको लगता है यह कोई होटल है?’ मैंने दरवाज़ा खोलते हुए कहा। पिछले कई हफ्तों से मेरी उनसे लड़ाई नहीं हुई थी, लगता है अब उसका समय आ गया था। पापा ने कोई जवाब नहीं दिया।

‘ये रहे आपके प्रिंटआउट्स। मुझे पता नहीं था कि आपको कितनी कॉपीज़् की ज़रूरत होगी। '

‘थैंक्स, ‘पापा ने कहा।

‘आप इतनी देर रात तक बाहर क्या करते हैं? आपकी रीयल एस्टेट एजेंसी का काम तो इतनी देर तक नहीं चल सकता, ‘मैंने कहा।

‘तुम्हें जवाब देना मेरी मजबूरी नहीं है पापा ने कहा।

‘और इसीलिए हमारा परिवार ऑफिशियली एक बरबाद परिवार है मैंने कहा। मैं अपने कमरे में चला आया। मैंने दरवाज़ा बंद किया और अपने दिमाग में मौजूद शैतानों के साथ संघर्ष की एक और रात बिताने के लिए तैयार होने लगा। मैंने ख़ुद से वादा किया कि मैं सुबह डॉ अय्यर को फ़ोन लगाऊंगा और खुशियों की उन दवाइयों का प्रिस्किएशन लूंगा। साइड इफेक्ट्स की ऐसी की तैसी। मैं अपने दिमाग के इन शैतानों से और लड़ाई नहीं लड़ सकता था।

रात तीन बजे मुझे झपकी लगी। फ़ोन की घंटियों से मेरी नींद खुल गई। मैंने घड़ी देखी। सुबह के पाँच बज रहे थे। इस वक़्त कमबख़्त कौन फ़ोन लगा रहा होगा? मेरे सिर में दर्द हो रहा था। मैं जैसे-तैसे उठा और लिविंग रूम तक पहुंचा। मैंने फ़ोन उठाया। मैं उस व्यक्ति पर ज़ोर से चिल्लाने वाला था जिसने इतनी सुबह मेरी नींद ख़राब करने की ज़रूरत समझी है।

‘हैलो एक लड़की की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी।

‘अनन्या? ‘मैंने कहा। मैं उस आवाज़ को बहुत अच्छे-से पहचानता था।

‘थैंक्स स्वीटी, थैंक यू सो मच, ‘अनन्या ने कहा। मैंने सोचा कहीं उसने ग़लत नंबर तो नहीं लगा दिया।

‘क्या? ‘मैंने कहा। मैं अभी तक पूरी तरह समझ नहीं पा रहा था कि हो क्या रहा है।

‘तुमने सब कुछ ठीक कर दिया। थैंक यू सो मच, ‘उसने कहा। उसकी आवाज़ में रोमांच की खनक थी।

‘भला मैंने क्या किया? ‘मैंने अपनी उनींदी आखें मिचमिचाते हुए कहा।

‘अब नाटक मत करो! तुम्हें कम से कम मुझे तो इस बारे में बता ही देना चाहिए था। '

‘क्या बता देना था? '

‘यही कि तुम्हारे डैड चेन्नई आ रहे हैं अनन्या ने कहा।

‘क्या? ‘मैंने कहा। मेरी नींद काफ़ूर हो गई भी।

‘अब ज़्यादा बनने की कोशिश मत करो। कल तुम्हारे डैड ने मेरे पैरेंट्स के साथ सात घंटे बिताए। उन्होंने उन्हें कंविंस किया कि उनके घर में मेरे साथ बेटी की तरह ही बरताव किया जाएगा और उन्होंने पिछली तमाम बातों के लिए माफी भी मांगी। ‘‘मेरे डैड?’ मुझे विश्वास नहीं हो रहा था।

‘ही, उनसे मिलने के बाद मेरे पैरेंट्स बहुत बेहतर अनुभव कर रहे हैं। इन फेंक, उन्होंने तो मुझसे यह भी पूछा कि क्या मैंने कोई तारीख सोच रखी है। कैन यू इमेजिन? ‘अनन्या इतनी तेजी से बोल रही थी कि उसके हर शब्द को समझ पाना मुश्किल था।

‘रियली? ‘मैंने कहा।

'अरे, पहले ठीक से जाग जाओ और फिर मुझे फ़ोन लगाना। आई लव यू बेबी। परसों वाली बात के लिए सॉरी, मैं बहुत डिस्टर्ब थी। '

'मैं भी, 'मैंने कहा।

'मैं भी क्या? तुम भी मुझे प्यार करते हो या तुम भी बहुत डिस्टर्ब थे? '

'दोनों, 'मैंने कहा, 'लेकिन रुको, क्या वाक़ई मेरे डैड तुम्हारे घर आए थे? '

'तुम्हें सच में कुछ नहीं पता था? '

'नहीं, 'मैंने कहा।

'वॉव उसने कहा, 'प्लीज़ उन्हें मेरी ओर से थैंक्स कह देना। '

मैं अपने पैरेंट्स के कमरे में गया। दोनों अभी सो ही रहे थे। पता नहीं क्यों मैंने एक पागलपन किया। मैं सीधे उनके पास गया और दोनों को अपनी बौहों में भर लिया। पलभर में मुझे गहरी नींद आ गई।

मैं पाँच घंटे बाद जागा। सुबह के दस बज रहे थे। मेरे पैरेंट्स रूम में नहीं थे। मैं फ़ौरन उठा। मुझे लगा कि आज मैं ऑफिस के लिए बहुत लेट हो जाऊंगा। मैं बाहर आया। 'डैड कहा हैं?' मैंने मा को देखते ही उनसे पूछा।

'बालकनी में मा ने कहा।

पापा कुर्सी पर बैठे थे और एक गमले के लिए मिट्टी खोद रहे थे। उन्होंने मुझे देखा, लेकिन चुप रहे। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उनसे क्या कहूं। मैंने एक और कुदाली उठाई और उनके साथ खुदाई करने लगा।

'डैड, आप चेन्नई गए थे?'

'आजकल ख़ूबरें बहुत तेजी से फैलती हैं उन्होंने कहा, लेकिन गमले से नज़रें नहीं उठाईं।

'क्यों? मेरा मतलब है कैसे?'

'मेरे बेटे को मदद की ज़रूरत थी, 'पापा ने मिट्टी से घास-फ़ूस निकालते हुए कहा। उनकी आवाज़ सीधी-सपाट थी, लेकिन इसके बावजूद मेरा गला रुँध गया।

उन्होंने गमले में एक पौधा रोपा और खोदकर निकाली गई ताजा मिट्टी उसके आसपास बिछा दी। मैं उनके पास जाकर बैठ गया और मिट्टी को अपने अंगूठे से दबाने लगा।

'आपको कैसे पता चला?' मैंने पूछा।

उन्होंने आखें उठाईं। उन्होंने कहा 'क्योंकि मैं तुम्हारा पिता हूं। बुरा पिता ही सही, लेकिन फिर भी मैं तुम्हारा पिता हूं। '

उन्होंने अपनी बात जारी रखी, 'और इसके बावजूद कि तुम्हें लगता है कि तुम्हें मुझसे अभी तक निराशा ही मिली है, मुझे लगा कि अब मुझे अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। हमें एक जीवन साथी की बहुत ज़रूरत होती है। अनन्या अच्छी लड़की है। तुम्हें उसे खोना नहीं चाहिए था। '

'शुक्रिया, डैड, 'मैंने अपने आसुओं को रोकते हुए कहा।

'यू आर वेलकम उन्होंने कहा। फिर उन्होंने मुझे गले लगा लिया। 'मैं पेरफ़ेक्ट इंसान नहीं हूं लेकिन ज़िन्दगी के इन आखिरी सालों में मुझे मेरे बेटे से दूर मत करो, 'उन्होंने कहा। मैंने भी उन्हें गले लगा लिया। अब मैं ख़ुद पर क़ाबू नहीं रख पाया और मेरी रुलाई फूट पड़ी। दुनिया मा और बेटे के रिश्ते के बारे में बहुत बात करती है, लेकिन हमें पिताओं की भी सख़्त ज़रूरत होती है।

मैंने अपनी आखें बंद कर लीं और गुरुजी को याद किया। मैं एक हरे-भरे पहाड़ की चोटी पर खड़े होकर ख़ूबसूरत सूर्योदय देख रहा था। जैसे ही मैंने पापा को गले लगाया, मेरे सिर से एक भारी बोझ गिर पड़ा। मैंने ख़ुद को फिर हल्का अनुभव किया।

'लेकिन मैं तुम्हारी शादी में नहीं आ पाऊंगा उन्होंने कहा।

'क्यों?' मैंने हैरत से पूछा।

'तुम्हारी मा अपने नाते-रिश्तेदारों के बिना जाएंगी नहीं और मुझे पता नहीं मैं उन्हें देखकर क्या कर गुजरू। '

'आप अपने बेटे की शादी में नहीं आएंगे? 'मैंने कहा।

'अनन्या तो हमारे घर ही आ रही है ना, 'उन्होंने कहा।

मैं इस वक्त उनके प्रति इतनी कृतज्ञता का अनुभव कर रहा था कि मैं उन पर नाराज नहीं हो सकता था।

'आपको आना ही होगा। मुझे काम में देरी हो रही है लेकिन मैं आपको बाद में राजी कर गा, 'मैंने कहा।

'जैसा कि मैंने कहा, हमारे लिए ज़्यादा सरल तो यही होगा कि तुम अपने नाते-रिश्तेदारों को लेकर चेन्नई आ जाओ अनन्या ने कहा।

'मैं उन सबको लेकर कैसे आऊंगा? मैं इतने सारे एयर टिकट्स अफोर्ड नहीं कर सकता, 'मैंने कहा।

यह शादी के बंदोबस्त को लेकर किए गए हमारे बेहिसाब कॉल्स में से एक था। 'वे अपने ख़र्च पर यहां नहीं आ सकते?' अनन्या ने पूछा।

'आर यू केजी?? जब तक बारात तुम्हारे यहां नहीं पहुंच जाती, तब तक उसका ख़्याल रखना हमारी जिम्मेदारी है। '

'इन पंजाबी रीति-रिवाजों को तो केवल तुम ही समझ सकते हो अनन्या ने कहा।

'तुम्हें भी इन्हें समझने की कोशिश करनी चाहिए, 'मैंने कहा।

'शादी तमिल शैली में होगी, 'अनन्या ने कहा।

'क्या? 'मैंने कहा।

'ही, तुम चेन्नई में और क्या उम्मीद कर सकते हो? वैसे भी, क्या तुम्हारे नाते-रिश्तेदार एक डिफेंट किस्म की शादी नहीं देखना चाहेंगे?

'सच पूछो तो नहीं, 'मैंने कहा।

'देखते हैं तुम टेरन से भी चेन्नई आ सकते हो। राजधानी एक्सप्रेस को दिल्ली से चेन्नई पहुंचने में अठाईस घंटे लगते हैं। '

'मेरे नाते-रिश्तेदारों के साथ सफ़र करने के लिहाज से यह बहुत लंबा समय होगा, 'मैंने कहा।

'लेकिन तुमने इस दिन के लिए कितना लंबा इंतज़ार किया है। यह दिन बार-बार तो नहीं आता ना? 'अनन्या ने कहा और फ़ोन रख दिया।

'आप सच में नहीं आएंगे? मैंने आपकी टिकट बुक करा ली है। '

पापा चुप रहे। डाइनिंग टेबल पर मां मेरे पास बैठी थीं।

'लेकिन दोनों में से किसी एक स्थिति को चुनने की नौबत ही भला क्यों आनी चाहिए? ऐसा क्यों नहीं हो सकता कि मॉम अपने संबंधियों के साथ आएं और साथ में आप भी आएं?' मैंने कहा। आखिर हम केवल एक बार के लिए एक नॉर्मल फ़ैमिली क्यों नहीं हो सकते? मैंने सोचा। फिर मुझे लगा कि दुनिया में नॉर्मल फ़ैमिली जैसी कोई चीज़ नहीं होती। सभी साइको हैं और जो सभी साइको में से एवरेज होता है उसे हम नॉर्मल कहते हैं।

'इन्हें लगता है कि मेरे संबंधियों ने बीते वक़्त में इनका अपमान किया है मां ने कहा।

'और क्या पापा ने उनका अपमान नहीं किया है?' मैंने कहा 'लेकिन आखिर इस सबका मेरी शादी से क्या नाता है? डैड, कुछ तो कहिए। '

'मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ रहेगा। लेकिन वहां मेरे मौजूद रहने की उम्मीद मत करो पापा ने कहा।

'इनका ड्रामा कभी ख़त्म नहीं होता, 'मा ने कहा। 'ये खुद चेन्नई गए और उन मद्रासियों को हा बोलकर आए। वरना यह शादी नहीं हो सकती थी। और अब जब मेरे परिवार में हर कोई शादी का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा है तो ये उन्हें आने से रोक रहे हैं। भला क्यों? क्योंकि ये उन्हें खुश नहीं देख सकते। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि ये मुझे खुश नहीं देखना चाहते। 'मां की आँखों से मू. फूट पड़े।

'डैड, क्या ऐसी बात है?'

'नहीं, मैंने तो तुम्हारे सामने एक चॉइस रखी है, 'उन्होंने कहा।

'आखिर ऐसा कौन-सा बेटा होगा, जो यह चाहेगा कि उसकी शादी में उसके पिता न शरीक हों?' मां ने कहा 'यह कोई चॉइस नहीं है, यह तो ब्लैकमेल है।'

'तुम इसे चाहे जो कहो लेकिन अगर यह शादी हो रही है तो मेरी वजह से, इसलिए मेहमानों को चुनने का हक भी मेरा होना चाहिए।'

'नहीं डैड, 'मैंने कहा, 'मॉम को भी इतना ही हक है। मुसीबत तो यही है कि मुझ पर आप दोनों का बराबर का हक है। '

'तो तुम्हीं फैसला करो, 'पापा ने कहा।

मॉम और डैड ने मेरी ओर देखा। मैं कमरे में दस मिनट तक चहलक़दमी करता रहा।

'डैड, मॉम के संबंधी तो आएंगे। आप जो करना चाहें, करें, 'मैंने कहा और कमरे से बाहर चला गया।

रज्जी मामा ने हजरत निजामुद्दीन स्टेशन पर दो ढोलकियों को बुलवा लिया था। मैंने राजधानी एक्सप्रेस के कंपार्टमेंट में अपने नाते-रिश्तेदारों के लिए सैंतीस टू-टियर एसी बर्थ रिजर्व करवाई थीं। मा की दो चचेरी बहनों ने ऐन वक्त पर चलने का मन बनाया तो हमें उन्हें भी एडजस्ट करना पड़ा। पापा के बारे में मां ने यह कहानी गढ़ ली कि उन्हें वायरल फीवर है जो कि मलेरिया भी हो सकता है। सभी को सच्चाई पता थी और सच पूछें तो अनन्या के पैरेंट्स के सामने झूठ बोलने से हमें जो असहजता महसूस होती, उसे छोड़ दें तो पापा के न आने से सभी को राहत ही थी। उनके आने से कोई भी शादी का मज़ा न ले पाता।

'यदि तुम्हारे पति महोदय आते तो हम आधी बातें भी नहीं कर पाते शिप्रा मासी ने मां से कह ही दिया।

मैं बोगी में खड़ा सभी बर्थ से उनके टिकट मिला रहा था। रज्जी मामा मुझे बाहर खींच लाए। 'तुम्हें थोड़ा नाचना नहीं चाहिए?

अरे भाई बारात जा रही है, ‘उन्होंने कहा। शाम के चार बजे प्लेटफॉर्म पर मौजूद सैकड़ों ऊबे हुए पैसेंजरों ने मेरे परिवार द्वारा मुहैया कराए गए मुफ़्त मनोरंजन का मज़ा लिया। ढोलकिए टेरन के साथ-साथ चल रहे थे और पेमेंट को लेकर रज्जी मामा से उलझ रहे थे। लेकिन टेरन के स्पीड पकड़ लेने के कारण वे उनसे ज़्यादा पैसा नहीं ऐंठ सके।

मैं अपने कंपार्टमेंट में चला आया, जिसे महिलाओं ने साड़ी की दुकान बना डाला था। नीचे की सभी बर्थ में वे पोशाकें फैलाकर दिखाई जा रही थीं, जिन्हें शादी के दौरान पहना जाना था।

‘यह वाली बहुत सुंदर है, ‘सत्तर साल की मेरी दूर की एक टी ने असली सोने के काम वाली एक मैजेंटा साड़ी दिखाते हुए कहा। साड़ियों को सराहने के लिए महिलाओं के सामने उम्र की कोई मजबूरी नहीं होती।

अगले कंपार्टमेंट में मेरे कजिन्स ने कला जमा रखा था। लड़कियों की मेक-अप किट्स खुली थीं। वे मस्कारा शेयर करने के बारे में बात कर रही थीं। अब जाकर मुझे समझ आया था कि शादी का नाम सुनते ही परिवार के सभी लोग उत्साहित क्यों हो जाते हैं। आखिर इसमें सभी के लिए कुछ न कुछ जो होता है।

मैं कंपार्टमेंट के दरवाज़े पर खड़ा होने के लिए बाहर आया। अगले कुछ घंटों में टेरन दनदनाते हुए आगरा, ग्वालियर और झांसी को पार कर गई। हमारा सफ़र अभी काफ़ी लंबा था। टेरन हमारे विशाल देश के उन अलग-अलग स्टेट की सरहदों को चीरते हुए आगे बढ़ रही थी, जिनसे पिछले एक साल से मैं लड़ाई लड़ रहा था। ये स्टेट्स मिलकर हमारे देश को बनाते हैं लेकिन ये हमारे देश को बौट भी देते हैं। और कभी-कभी ये स्टेट्स हमारी लव लाइफ़ में तूफान भी खड़ा कर देते हैं।

डिनरटाइम पर टेरन भोपाल पहुंची। मैं भीतर चला आया। जब मेरे नाते-रिश्तेदारों को पता चला कि राजधानी एक्सप्रेस में मुफ़्त खाना दिया जाता है तो वे अपना रोमांच छुपा न पाए।

‘नॉन-वेज लेना मद्रासी तो तुम्हें नॉन-वेज खिलाने से रहे शिप्रा मासी ने सभी को सलाह दी।

‘ओके टी, अगले तीन दिन तक वे मद्रासी नहीं तमिल हैं मैंने कहा।

शिप्रा मासी ने फ़ाइल से चिकन निकाला। ‘ही, ही, मुझे पता है तमिल नाडु एक राज्य है। लेकिन हम तो मद्रास ही जा रहे हैं ना? टिकट पर चेन्नई क्यों लिखा है?’ ’ दोनों एक ही हैं। जैसे देल्ही और दिल्ली एक ही हैं कमला टी ने अपना चिकन स्वीट कॉर्न सूप सुड़कते हुए कहा।

‘क्या यह बात सच है कि उनकी मुख्यमंत्री पहले फिल्मी हीरोइन थी? ‘मा की कज़िन ने पूछा।

‘येस-जी, ‘एक अन्य टी ने कहा, ‘ये साउथ इंडियन औरतें बहुत चालाक होती है। '

‘भगवान ने उन्हें दिमाग के अलावा और कुछ नहीं दिया है!’ एक और क्यू कमेंट आया। मेरा मन कर रहा था कि टेरन से बाहर कूद जाऊं।

अनन्या के पिता ने पूरी बारात को मयलापुर की संगीता रेसिडेंसी में बीस कमरों में ठहराया था। कमरे सीधे-सरल लेकिन साफ और एयर कंडीशंड थे। 'तुम्हारे पापा को क्या हो गया? अभी-अभी तो हम उनसे मिले थे, 'उन्होंने पूछा।

'उन्हें वायरल फीवर है, जो कि मलेरिया में तब्दील हो सकता है मैंने कहा।

'क्या ऐसा हो सकता है?'

'दिल्ली में हो सकता है। ख़ैर, शेड्यूल क्या है?' मैंने बातचीत का रुख दूसरी दिशा में मोड़ते हुए कहा।

'कल दोपहर पूजा है। शाम को फिर पूजा होगी। वेडिंग मुहूर्तम परसों सुबह का है उन्होंने कहा।

'अंकल डीजे और पार्टी नहीं है? 'मैंने अपने नाते-रिश्तेदारों के बारे में सोचते हुए कहा।

'परसों रिसेशन है, वहीं सब लोग मौज-मस्ती कर लेंगे, 'उन्होंने कहा और मां की ओर मुड़े। 'कविता जी, शिप्रा जी, क्या मैं एक सेकेंड के लिए आपसे बात कर सकता हूं?' मां, शिप्रा मासी और अनन्या के पिता मुझसे और अन्य नाते-रिश्तेदारों से थोड़ा दूर चले गए। वे पाँच मिनट तक बतियाते रहे। फिर मां मेरे पास आ गईं और शिप्रा मासी अपनी चाबियां लेने होटल के रिसेशन पर चली गईं।

'क्या हुआ?' मैंने पूछा। हम सीढियों से अपने कमरों की ओर जा रहे थे।

'कुछ नहीं, 'मा ने कहा।

'यह मेरी शादी है। मुझे जानने का अधिकार है। '

'उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मुझे कोई विशेष भेंट चाहिए, 'मां ने कहा। शायद, अनन्या ने अपने पैरेंट्स को मिंटी की शादी वाला किस्सा सुना दिया था।

'और? आपने क्या कहा? 'मैंने मां को अविश्वास भरी नज़रों से देखते हुए कहा। 'मुझसे इस तरह बात मत करो, 'मां ने कहा।

'मॉम, आपने एजैक्टली कहा क्या? 'मैंने कहा। मेरा लहजा अब और भी ख़राब हो गया था। 'क्या? कहीं आपने किसी को कोई कार खरीदने या उनका बैंक खाता तुड़वाने तो नहीं भिजवा दिया? '

'तुम मेरे बारे में यही सोचते हो? है ना? 'मां ने कहा। हम फ़र्स्ट फ्लोर पर पहुंच चुके थे। वे सांस लेने के लिए पलभर रुकीं। शिप्रा मासी की महंगी सैंडल्स की आवाज़ उनके आने से चार सेकंड पहले सुनी जा सकती थी। वे भी फ़र्स्ट क्लोर पर आ पहुंचीं।

'ज़रा मेरी नादान बहन को तो देखो। इसने कह दिया कि इसे कोई भी बड़ी भेंट नहीं चाहिए, 'शिप्रा मासी ने मुझसे कहा।

'आपने ऐसा किया? 'मैंने मां से कहा।

मा ने मेरी ओर देखा।

'तुम यह कभी नहीं समझ पाओगे कि मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूं 'मां ने कहा। शर्म से मेरा सिर झुक गया। मां ने मेरे सिर के पीछे एक हल्की-सी चपत लगाई जबकि मैं एक ज़ोरदार तमाचा खाने के लायक था।

शिप्रा मासी ने अपने हाथ लहराते हुए कहा, 'तुम और तुम्हारी मां, दोनों ही एक जैसे हैं-अव्यावहारिक। इसने उन्हें कहा कि मैंने अपने बेटे को एमबीए करने भेजा था, बदले में मुझे दो एमबीए मिल रहे हैं। अनन्या से अच्छी भेंट भला और क्या होगी, 'शिप्रा मासी ने कहा, 'ठीक है लड़की अच्छा पैसा कमाती है लेकिन कविता, जब कोई देने को ही राजी हो तो फिर भला लेने से ना क्यों करना। '

'क्योंकि हम उस तरह के लोग नहीं हैं शिप्रा मासी, 'मैंने कहा और मां को गले लगा लिया। 'मां बोलती बहुत हैं, लेकिन वास्तव में वे कभी ड्यूक की मा जैसी हरकत नहीं कर सकतीं। कभी नहीं, 'मैंने कहा।

मैं अपने होटल रूम में चला आया, जहां मेरे बिस्तर पर दस कजिन्स छह औटीज और चार अंकल्स बैठे हुए थे। जगह की किल्लत के कारण मैं क्लोर पर ही बैठ गया, जबकि हमें पूरे बीस कमरे दिए गए थें मेरे नाते-रिश्तेदारों को जगह की किल्लत मंजूर थी, लेकिन वे रसीली गपशप करने का मौक़ा नहीं गंवा सकते थे।

मेरे छोटे कजिन्स टीवी के रिमोट के लिए लड़ रहे थे। मैंने अपनी आटियों के सामने शेड्यूल दोहराया।

'ये लोग तो बड़े नीनस हैं। भला दिन भर पूजा कैसे की जा सकती है? 'कमला मामी ने कहा।

'उन्होंने तो संगीत कार्यक्रम भी नहीं रखा है?' मा ने कहा।

'मुझे तो लगता है वे लोग पैसा बचाने की कोशिश कर रहे हैं शिप्रा मासी ने कहा।

'लेकिन पूजा किस भाषा में होगी? मद्रासी? 'एक अन्य औटी ने कहा।

'तमिल में या शायद संस्कृत में मैंने कहा।

'तब तो मैं पूजा में नहीं आऊंगी, 'मा ने कहा।

मैंने मा की ओर नज़रें तरेरकर देखा।

'खाना कहां पर होगा? 'एक टी ने वह सवाल पूछा, जो सभी के मन में था।

'खाना वेडिंग वेन्यू पर ही एक डायनिंग हॉल में होगा। चलो अब सो जाते हैं, कल सुबह हमें जल्दी उठना है, 'मैंने कहा।

हमने सुबह साढ़े सात बजे होटल लॉबी में मिलने की योजना बनाई थी, लेकिन हमें निकलते-निकलते नौ बजे गए।

'पता क्या है?' रज्जी मामा ने पूछा।

मैंने कागज का वह टुकड़ा निकाला, जो अनन्या के पापा ने मुझे दिया था।

'मैं तो इसे नहीं पड़ सकता, 'रज्जी मामा ने कहा।

मैंने कागज वापस ले लिया। उस पर लिखा था:

अरुलमिगु कपालीस्वरार कपर्ताबल तिरुमना मंडपम
16, वेकंटेश अग्राहरम स्ट्रीट, मयलापुर चेन्नई
इसे पढ़ने की तीन बार कोशिश करने के बाद मेरा सिर दर्द करने लगा। मैंने अक्षर गिने। मेरे वेडिंग वेन्यू के नाम में पचास अल्फाबेट थे। दिल्ली में चीज़ें कभी इतनी कॉफ्लिकेटेड नहीं होतीं। मेरी एक कज़िन की शादी बत्रा बैंक्वेट में हुई थी। एक और कज़िन की शादी बावा हॉल में हुई थी।
आयोजन स्थल तक पहुंचने से पहले हम मयलापुर की सड़कों पर बीस मिनट तक भटकते रहे। गनीमत थी कि स्थानीय लोगों ने इस जगह के नाम को छोटा करते हुए एकेकेटी मंडपम कर दिया था। बात चाहे अभिनेताओं की हो या राजनीतिक दलों या शादी के मंडप की, तमिल पहले तो लंबे-लंबे नाम रखना पसंद करते हैं और फिर उन्हीं को छोटा कर देते हैं।
'नाश्ता ख़त्म हो गया है से तुम्हारा क्या मतलब है? 'शिप्रा मासी ने कहा।
'इल्यघ, इल्ला, 'एक तोंदू र काले-कलूटे, बालों से भरी काया वाले शेफ ने कहा और अपना सिर हिलाया। उसने लुंगी और शेफ की टोपी पहन रखी थी। यदि उसने टोपी इसलिए पहन रखी थी कि खाने में कोई बाल न गिर जाए, तब तो उसे अपने पूरे शरीर पर गिलाफ पहनना चाहिए था, क्योंकि उसकी बौहों और छाती पर भी बाल ही बाल थे।
'ओरुनिमिशुम, 'मैंने कहा, 'क्या हुआ? '
'तुम्हारा बेटा तमिल बोलता है?' शिप्रा मासी ने मां से कहा।
मा ने अपनी आखें घुमाईं।
'नहीं, मुझे तमिल नहीं आती। यह तो एक सेकंड रुको के लिए एक कॉमन तमिल शब्द है, 'मैंने कहा।
'अब ये लड़का पूरी तरह उन लोगों का हो गया है। वे लोग जो चाहेंगे, इससे करवाएंगे, 'मा ने ज़ोर से दुख मनाते हुए कहा।
'मॉम, प्लीज़। मुझे यह समस्या सुलझाने दो, 'मैंने कहा।
'तुम भला क्या समस्या सुलझाओगे। देखना, अब हमें अपना खाना भी ख़ुद ही पकाना पड़ेगा, 'मा ने कहा।
'सभी लोग, प्लीज़ डायनिंग हॉल में बैठ जाइए मैंने कहा और फिर मैं शेफ की ओर मुड़ा। 'क्या कुछ पका सकते हो? '
'तो फिर टिफिन कौन बनाएगा? हमें ग्यारह बजे टिफिन सर्व करना है शेफ ने कहा। मैंने घड़ी देखी। साढ़े नौ बज रहे थे। यदि मेरे परिवार के लोगों को इतनी देर तक भूखा रहना पड़े तो उन्हें मेडिकल इमर्जेंसीज हो जाएं।
'हमें अभी कुछ चाहिए, 'मैंने कहा, 'कुछ भी जल्दी से। '
'फिर टिफिन का क्या होगा? 'शेफ ने कहा।
'टिफिन को मारो गोली। हम लंच देर से लेंगे। '
'लड़की वालों को टिफिन चाहिए। वे सुबह साढ़े छह बजे ब्रेकफास्ट के लिए आए थे, 'शेफ ने कहा।
रज्जी मामा मेरे पास आए। 'इसे थोडी-सी पूस खिला दो उन्होंने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा।
मैंने सोचा कि अपनी ही शादी में अपने नाश्ते के लिए पूस देने में भला कौन-सी नैतिकता होगी।
'वोके अब मैं जाता हूं मैं बहुत लिखी हूं 'शेफ ने कहा और फिर मन ही मन बड़बड़ाते हुए कहा, 'पुंडई मगाने, थायोली कुट्टी। '
'अन्ना, रुको मैंने कहा।
शेफ ने मेरी ओर हैरत से देखा। आखिर दिल्ली के लहज़े में बोलने वाला कोई व्यक्ति तमिल के एकाध शब्द कैसे बोल सकता है?
मैंने हाथ में सौ रुपए का नोट रखा और उससे हाथ मिलाया। उसने उलझनभरी नज़रों से नोट को देखा।
'हम तुम्हें यह खुशी से दे रहे हैं अंकल ने कहा।
'मैं जल्दी से उपमा बना सकता हूं 'शेफ ने कहा।
'उपमा क्या होती है? 'अंकल ने कहा।
'नमकीन हलवा। नहीं, उपमा नहीं। क्या तुम डोसा बना सकते हो? 'मैंने कहा। 'डोसा एक-एक कर बनाना पड़ता है और हमारे पास इसके लिए स्टाफ़ नहीं है। फिर इससे लंच में भी देरी हो जाएगी, 'शेफ ने मुंह बनाते हुए कहा।
आखिरकार हम इडली पर राजी हुए। सांभर का बंदोबस्त तो ख़ैर तब भी नहीं हो पाया, अलबत्ता शेफ के पास कनस्तर भरकर नारियल की चटनी थी। इतनी चटनी से तो सडकें रंगी जा सकती थीं।
मेरा परिवार डाइनिंग हॉल में बैठ गया। उनके सामने केले के पत्ते रख दिए गए। 'अब क्या हम केले के पत्ते खाएंगे? 'शिप्रा मासी ने कहा, 'इन्होंने हमें समझ क्या रखा है? गाय? '
'यह प्लेट है? 'मैंने कहा, 'और केले के पत्ते के अलावा हमें और कोई कटलरी नहीं मिलेगी। '
'इन लोगों का तो शादी में कोई खर्चा ही नहीं होता, हाऊ लकी, 'कमला टी ने कहा।
हम चालीस लोग कम से कम दो सौ इडलियां चट कर गए।
जब हम नाश्ता कर चुके थे, तब जाकर अनन्या के पापा आए। 'नाश्ते का बंदोबस्त नहीं हो पाया था? आई एम सॉरी, 'उन्होंने कहा।
'इट्स फ़ाइन, 'मैंने कहा 'हम लोग ही देर से यहां पहुंचे थे। '
'हैलो कविता-जी, 'अनन्या के पापा ने हाथ जोड़ते हुए कहा। अनन्या ने उन्हें हिदायत दी थी कि जब भी लड़के वालों से मिलें हाथ जोड़कर मिलें। उन्होंने परोसने वालों से इडली की बाल्टी ली और एक इडली मेरी मां को परोसी।
'हैलो मा ने उनके हैलो का जवाब देते हुए कहा। उनकी आवाज़ से गर्व की भावना झलक रही थी। आखिर, लड़की के पिता उनके भाई-बहनों के सामने उनकी सेवा जो कर रहे थे। लगता है, हमारे बड़े-बुज़ुर्ग यही दिन देखने के लिए जीते हैं क्योंकि वे यूं भी अपनी ज़िन्दगी में बहुत ज़्यादा मौज-मज़ा नहीं कर पाते हैं।
'क्रिश के पिता अब कैसे हैं?' अनन्या के पापा ने पूछा।
'अब वे बेहतर हैं। कल रात उन्होंने सूप लिया था और आज सुबह उन्होंने थोड़ा-सा दलिया लिया। अब वे आराम कर रहे हैं।

उन्होंने अपनी ओर से शादी की शुभकामनाएं भेजी हैं मां ने कहा।

अनन्या के पापा ने सिर हिलाया, लेकिन उनके चेहरे से चिंता झलक रही थी। 'अंकल आज कौन-कौन-से कार्यक्रम होने वाले हैं?' मैंने अपने संबंधियों के लिए अनन्या के पापा से पूछा।

'सबसे पहले तो वृतम होगा, जो कि विवाह के प्रारंभ में होने वाली प्रार्थना है। फिर निश्चयार्थम होगा, जो कि औपचारिक सगाई समारोह है। शादी का पवित्र मुहूर्त इसी समारोह में तय किया जाएगा और करीबी रिश्तेदारों को भेंटें दी जाएंगी, 'अनन्या के पापा ने कहा।

मेरी आटियों का ध्यान केवल अंत के शब्दों पर केंद्रित था।

हम मुख्य हॉल में आए, जहां अगले दो दिन तक शादी की मुख्य रस्में होने वाली थीं। हॉल के बीचोबीच एक अग्नि वेदी थी और वह पंजाबी शादियों से बहुत अलग नहीं थी। हालांकि, हमारे यहां होने वाली शादियों में लोग केवल भोज के बाद ही आग के समीप आया करते थे लेकिन यहां सभी लोग पहले ही आग के पास मौजूद थे। मैं फर्श पर बैठ गया। चार पुरोहितों ने मंत्रजाप शुरू किया। मेरे साथ ही मेरे चार करीबी संबंधी भी फर्श पर बैठे थे, जबकि बाक़ी रिश्तेदार पीछे की क़तार में कुर्सियों पर बैठे थे। वृतम के दौरान पुरोहितों ने इतने ज़ोर से मंत्रजाप किया कि मेरे कुछ छोटे कज़िन डर के मारे रोने लगे और इस वजह से लोगों के लिए आपस में बात कर पाना भी तक़रीबन नामुमकिन हो गया। मेरे पीछे मेरी आटियों ने कई बार अपनी पोजिशन बदली।

'इसके बाद हम सिटी टूर पर चलें?' कमला टी ने कहा।

'चेन्नई में आखिर देखने लायक है क्या? यदि मद्रासियों को ही देखना है तो इस कमरे में ही काफ़ी हैं शिप्रा मासी ने कहा।

मैंने अनन्या के संबंधियों की ओर देखा। उनमें से कुछ आटियों को मैंने पहचान लिया। अनन्या के कजिन्स विदेश से आए थे। वे अपनी परंपरागत तमिल पोशाक पहने हाथ में मिनरल वाटर की बोतलें थामे बैठे थे।

'अनन्या दीदी, 'अनन्या के भीतर आते ही मिंटी ने कहा। उसने मस्टर्ड येलो-गोल्ड बॉर्डर वाली मरून कौजीवरम साड़ी पहन रखी थी। उसके कसकर गुंथे बालों को देखकर लग रहा था मानो वह कोई वरट स्कूलगर्ल हो। उसने चेहरे पर मेकअप लगा रहा था और वह तमिल फिल्मों के पोस्टरों पर अवतरित होने वाली तमाम हीरोइनों से अधिक ख़ूबसूरत लग रही थी। उसने आँखों में काजल लगा रखा था और इस कारण उनमें एक अजीब किस्म की गहराई आ गई थी। कुछ पलों तक तो मैं पहचान ही नहीं पाया कि वह मेरी अनन्या है। क्या यही वह लड़की है, जो मुझे मेस की लाइन में मिली थी और जो सांभर के लिए झगड़ रही थी?

हमारी आखें थोड़ी देर के लिए मिलीं। वह धीमे-से मुस्करा दी, मानो मुझसे पूछ रही हो कि वह कैसी लग रही है।

मैंने सिर हिला दिया। ही, इससे ज़्यादा ख़ूबसूरत वह आज तक कभी नहीं लगी। अगले एक घंटे तक प्रार्थनाएं चलती रहीं। कमरे में धुंआ भर गया। पुरोहित अग्नि में घी-लकड़िया डालते हुए हवन करते रहे। अनन्या और मेरी नज़रें कई बार मिलीं और हम कई बार मुस्कराए। क्या यह सब वास्तव में हो रहा है? क्या वाक़ई आखिरकार मेरी शादी हो रही है और क्या इसके लिए हर वह शख़्स राजी था, जिससे मेरा डीएनए मेल खाता है?

पुरोहित ने कहा दूल्हे के पिता को बुलाइए। मा ने कहा उनकी तबीयत ठीक नहीं है। मैंने फिर पापा के बारे में सोचा। आखिर ये बड़े लोग इतने उलझे हुए क्यों होते हैं? 'तुम्हारे दादा-दादी कौन-से गांव के थे? 'अनन्या के पिता ने मुझसे पूछा। पुरोहित को निश्चयार्थम की रस्म के लिए इस जानकारी की ज़रूरत थी।

मुझे इसका जवाब नहीं पता था। मैंने मा की ओर देखा। मां ने मेरी आटियों की ओर देखा। फिर मेरी आटिया राय-मशविरा करने लगीं कि कौन-सा जवाब ठीक रहेगा। 'लाहौर, 'उनका राय-मशविरा ख़त्म होने के बाद मां ने कहा।

'पाकिस्तान वाला लाहौर? 'अनन्या के पिता ने पूछा।

वे ज़रा चिंतित लग रहे थे। मुझे डर लगा कि कहीं उनका मन फिर न बदल जाए।

'मेरे दादा-दादी बंटवारे के बाद दिल्ली चले आए थे मैंने एक्सप्लेन किया। उन्होंने सिर हिला दिया।

'अंकल शादी की तमाम रस्में कब तक पूरी हो जाएंगी? यानी जिसके बाद हमारा रिश्ता अटूट हो जाए और कोई भी उस पर आपत्ति न कर सके?'

'तुम क्या कहना चाहते हो? 'उन्होंने कहा।

'कुछ नहीं, 'मैंने कहा। पुरोहित ने मुझे दक्षिणा देने को कहा।

मैंने उसे सौ रुपए का एक नोट दिया। उसने लेने से इन्कार कर दिया।

'उन्हें सीधे रुपए मत दो, इसे थैबूलम में रख दो, 'अनन्या के पिता ने पूजा की थालियों की ओर इशारा करते हुए कहा।

मैंने रुपए थाली में रख दिए। फिर मैंने उसे केले और पान के पत्तों और सुपारी से सजाया। इसके बाद मैंने उसे पुरोहित को दिया और इस बार पुरोहित ने उसे स्वीकार कर लिया। फिर पुरोहित ने शादी के ब्योरों की घोषणा की, जिसमें आयोजन स्थल का लंबा-चौड़ा नाम शामिल था और साथ ही उसमें लग्नम नक्षत्र और कल की तारीख भी शामिल थी।

'साढ़े छह बजे का मुहूर्तम है, 'पुरोहित ने कहा।

'सुबह के साढ़े छह बजे? 'रज्जी मामा ने कहा। वे शॉल्ड थे। मुहूर्त तय होने पर अनन्या के सगे-संबंधियों ने एक-दूसरे को शुभकामनाएं दी। लेकिन मेरे सगे-संबंधी भौंचक थे।

'यह शादी है या टॉर्चर? यह तो सुबह-सुबह की द्वघइट पकड़ने की तरह है कमला टी ने कहा।

सौभाग्यवश, अनन्या की मां ने हमारे परिवार की सभी महिलाओं को शांत कर दिया। वे दस बैग भरकर भेंटें ले आईं।

'मिसेज कमला, 'उन्होंने पहले बैग को पढ़ते हुए कहा। हर बैग पर भेंट पाने वाले का नाम था। साथ ही उससे मेरा संबंध और भेंट का कोड वर्ड भी बताया जा रहा था।

'मैं?' कमला टी ने कहा और अपना हाथ इस तरह उठा दिया, जैसे कोई बच्चा क्लास में अटेंडेंस दर्ज करवाने के लिए हाथ उठाता है। भेंट-तोहफ़ों में कुछ ऐसी बात ज़रूर होती है जो हम सभी को बच्चा बना देती है।

'हम इन्हें अपनी होटल में खोलेंगे, 'भेंट वितरण कार्यक्रम ख़त्म होने के बाद शिप्रा मासी ने कहा।

और अब, हम लोग लंच करेंगे। अनन्या के पिता ने हम सभी को डाइनिंग हॉल में भात सांभर, रसम, सब्जियों दही और पायसम के भोज के लिए निमंत्रित करते हुए कहा। ‘हमारे साथ तो धोखाधड़ी हो गई। खाने में पनीर है ही नहीं, ‘कमला टी ने कहा। हम पनीर-विहीन डाइनिंग हॉल में दाखिल हुए।

61

‘तो आज रात के लिए क्या प्लान है?’ होटल पहुंचने पर रज्जी मामा ने कहा।
‘आठ बजे डाइनिंग हॉल में डिनर होगा ‘मैंने कहा।
‘प्लीज़, अब मैं और भात नहीं खा सकती, ‘शिप्रा मासी ने कहा। महिलाओं ने भेंट मे मिलीं कांजीवरम साड़ियों खोल ली थीं। मैंने अनन्या से कहा था कि वह साड़ियों पर से प्राइस टैग न हटाए। जैसे ही मेरे सगे-संबंधियों ने देखा कि हर साड़ी तीन हजार रुपयों की थी तो उनके मन में अनन्या के प्रति सराहना का भाव और बढ़ गया।
‘डिनर के बाद क्या?’ रज्जी मामा ने कहा।
‘सुबह साढ़े छह बजे का मुहूर्तम है इसलिए हम सभी जल्दी सो जाएंगे।
‘देखो कविता, तुम्हारा बेटा किस तरह मद्रासी बन गया है ‘कमला टी ने कहा और सभी हँस पड़े, मानो उन्होंने दुनिया का सर्वश्रेष्ठ जोक सुनाया हो।
मैंने मुंह बनाया।
‘जल्दी कैसे सो जाएं, भई तुम्हारी शादी है ‘कमला टी ने मेरे गाल खींचते हुए कहा।
‘तो, क्या करना चाहती हैं आप? ‘मैंने कहा।
‘हम पार्टी करेंगे। मिंटी के डैडी, चलो चलते हैं कमला टी ने कहा और वे बाहर चले गए।
‘और तुम फेशियल करवाने ब्यूटी पार्लर जाओ ‘मा ने कहा।
‘मैं "
‘ही, लेकिन ध्यान रखना। यहां के ब्यूटी पार्लर तुम्हें दिखने में काला-कलूटा भी बना सकते हैं ‘शिप्रा मासी ने कहा और मेरे सगे-संबंधियों को उस तरह बुक्का फाड़कर हँसने का एक और बहाना मिल गया, जिस तरह केवल पंजाबी ही हँस सकते हैं। मैं यह तो नहीं कह सकता कि रज्जी मामा ने जो पार्टी रखी थी, वह बैचलर्स पार्टी थी, ख़ासतौर पर तब जब मेरी सभी आटिया वहां मौजूद थीं। बहरहाल, मेकशिफ्ट बंदोबस्त कुछ ऐसा किया गया था कि यह पार्टी किसी कुंआरे लड़के द्वारा मनाया जा रहा जश्न जान पड़ती थी। रज्जी मामा व्हिस्की की दो बोतलें वोदका की एक बोतल और बीयर का एक केट लेकर आए थे। कमला टी भी महिलाओं के लिए चिप्स और जूस लेकर आई थीं। ‘क्यों न आज रात महिलाएं भी ड्रिंक करें रज्जी मामी ने कहा तो कई आटियों ने डर जाने का दिखावा किया, लेकिन मेरी कजिन्स पहले ही वोदका बोतल बुक कर चुकी थीं। ‘आइस ‘रज्जी मामा ने होटल के वेटर को कहा और उसे सौ रुपए का नोट थमाया। वह बाल्टीभर बर्फ लेकर लौटा।
‘तुम्हारे पास म्यूजिक सिस्टम है? ‘रज्जी मामा ने वेटर से पूछा। वेटर ने कहा कि यदि उसे सौ रुपए और मिलें तो वह अपने दोस्त से म्यूजिक सिस्टम लेकर आ सकता है। अलबत्ता न्तुझक में क्या बजाया जाए, यह तय करना बड़ी चुनौती थी और हमें ख़ुद को ‘रोजा ‘और ‘जेंटलमैन ‘जैसी फिल्मों के साउंडट्रैक्स तक ही सीमित करना पड़ा। गानों के बोल तमिल में थे लेकिन कम से कम धुनें तो जानी-पहचानी थीं। दो ड्रिंक के बाद हम तमिल शब्द भी समझने लगेंगे, रज्जी मामा ने कहा।
पुरुषों ने रूम नंबर 301 चुना, जो कि मेरा रूम था। महिलाएं रूम नंबर 302 में चली गईं, जबकि मेरे कजिन्स रूम नंबर 303 में थे। तेरह से कम उम्र वाले बच्चों को रूम नंबर 304 दे दिया गया, जहां वे केबल टीवी पर कार्टून चैनल देख सकते थे और पाँच साल से कम और पचहत्तर साल से ज़्यादा उम्र वालों को रूम नंबर 305 में भेज दिया गया, जिसमें पचहत्तर साल से ज़्यादा वालों की जिम्मेदारी यह थी कि वे पाँच साल से कम वालों का ख़्याल रखें।
रज्जी मामा रूम नंबर 301 और 302 के बीच आवाजाही करते रहे। रूम नंबर 302 में वे महिलाओं से गपशप करते और फिर 301 में लौटकर पुरुषों से स्टॉक्स और रियल एस्टेट के बारे में बात करने लगते।
‘ग्यारह बज गए हैं मैंने अपने नाते-रिश्तेदारों को याद दिलाया, ‘अब हमें सो जाना चाहिए। '
‘अरे, चुप कर, ‘रज्जी मामा ने कहा और मुझे खुशी-खुशी गले लगा लिया। ‘यदि हम अभी सो गए तो सुबह उठ न सकेंगे, इसलिए चलो सुबह तक मौज-मस्ती करते हैं। '
पार्टी जारी रही और रूम नंबर 301 302 और 303 डिस्कोथेक में तब्दील हो गए। ‘इंडियन ‘फिल्म का साउंडट्रैक पाँच बार बजाया गया। मुझे लगा कि अगर अब भी मेरे नाते-रिश्तेदार नहीं सोए तो वे सुबह शादी में हरगिज शामिल न हो पाएंगे। आधी रात के बाद मैं लॉबी में चला गया।
‘पुलिस को बुलाओ, ‘मैंने फ्रंट डेस्क से कहा।
‘क्या? ‘मैनेजर ने कहा, ‘तुम तो दूल्हे हो। '
‘ही, और सुबह साढ़े छह बजे मेरी शादी का मुहूर्तम है। मुझे अपने सभी नाते-रिश्तेदारों को लेकर सुबह पाँच बजे वहां पहुंचना है। लेकिन ये लोग आराम करने के मूड में नहीं नज़र आ रहे। '
मैनेजर हँस पड़ा। रज्जी मामा ने उसे भी पूस खिला रखी थी। ‘डोंट वरी, सर, मैं उन्हें आधे घंटे बाद रोक दूंगा। '
तभी होटल के बाहर एक कार रुकी और उसमें से एक व्यक्ति बाहर निकला। अंधेरे के बावजूद मैं पहचान गया कि वह व्यक्ति कौन था। मैं तेजी से सीढ़िया चढ़कर ऊपर पहुंचा। मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था। रूम नंबर 302 में रज्जी मामा ‘रोजा ‘फिल्म के एक सैड सॉना पर कमला टी के साथ क्लॉज़-डासिंग कर रहे थे।

‘डैड आ गए हैं मैंने घोषणा की।
महज़ दो मिनट में ही हमारा नाइट क्लब इस तरह बंद हो गया, जैसे कि पुलिस का छापा पड़ा हो। सभी अपने-अपने कमरे में

सोने चले गए। जब तक डैड थर्ड क्लोर तक पहुंचते कॉरिडोर में सन्नाटा छा गया था।

‘डैड, ‘मैंने कहा।

हम चंद सेकंड तक एक-दूसरे की ओर देखते रहे। आखिरकार, उन्होंने आने का फैसला कर ही लिया था। मैं इससे आगे कुछ सोच नहीं पा रहा था। मैंने उन पर आने के लिए बहुत ज़ोर नहीं डाला था। वे भी मेरे जैसे ही थे हम भारतीय पुरुष अपनी भावनाएं प्रदर्शित करने के मामले में बहुत अच्छे नहीं होते।

‘तुम अभी तक सोए नहीं? चंद घंटों बाद तुम्हारी शादी होने वाली है ना? ‘उन्होंने धीमे-से पूछा।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। वे रूम नंबर 301 की ओर बड़े। मैंने उन्हें रोक दिया। मैं नहीं चाहता था कि वे मेरे मामाओं को नशे में धुत्त देखें।

‘ऊपर और भी रूम्स हैं। इस रूम में अभी कुछ मरम्मत का काम होना है, ‘मैंने कहा और उन्हें अगले फ्लोर पर ले गया। फिर मैंने उन्हें वहां अकेला छोड़ दिया, ताकि वे चेंज कर सकें। मा रूम नंबर 301 में थीं और जल्द से जल्द उसे साफकरने की कोशिश कर रही थीं।

‘इट्स फ़ाइन, वे ऊपर हैं मैंने कहा।

‘वे वहां क्या कर रहे हैं?’ मां ने कहा, ‘वे यहां हमारे लिए मुसीबतें पैदा करने आए हैं क्या? '

‘नहीं, मैंने कहा ‘वे बिल्कुल ठीक हैं। वे यहां मेरी शादी अटेंड करने आए हैं। ‘‘अब? वे अब जाकर आए हैं?'

‘इट्स ओके मॉम तुम जाकर सो जाओ। मैं उन्हें कह दूंगा कि आप सो चुकी हैं मैंने कहा। फिर मैंने उनके गाल पर किस किया और ऊपर चला गया।

पापा ने चेंज करके सफ़ेद कुर्ता पायजामा पहन लिया था।

‘थैंक यू डैड, ‘मैंने कहा।

‘डट बी सिली, ‘उन्होंने कहा। ‘तुम्हारी मां कहा है? '

‘सभी लोग जल्दी सो गए थे। हमें सुबह चार बजे उठना है ना, ‘मैंने कहा।

‘ओह तब तो मैं तुम्हारी नींद ख़राब कर रहा हूं। क्या तुम यहीं सोओगे? '

मैंने सिर हिलाकर ही कहा और बत्तियौ बुझा दीं। फिर मैं उनके क़रीब ही लेट गया, शायद पिछले बीस सालों में पहली बार।

‘आई लव यू बेटा, ‘उन्होंने कहा। उनकी आखें मुंदी हुई थीं।

मेरा गला भर आया। मेरे लिए इन शब्दों के वही मायने थे जो अनन्या द्वारा मुझसे पहली बार कहे गए इन शब्दों के थे।

‘मैं भी आपको प्यार करता हूं ‘मैंने कहा और सोचने लगा कि आखिर मैं कौन-सी प्रेम कहानी सुना रहा था।

मुझे अपने परिवार वालों को उठाने के लिए उन पर मग भरके पानी उड़ेलना पड़ा। रज्जी मामा को तगडा हैंगओवर था। मैं केवल तीन घंटे सोया था और दर्द के मारे मेरा सिर फटा जा रहा था। हमने रूम सर्विस को ट्रिपल स्टेंरथ कॉफी सर्व करने के लिए कहा।

'यह तो अमानवीय है, आखिर यह भी कोई वक़्त है शादी करने का, 'मां ने कहा। उन्होंने सूटकेस से इस अवसर पर पहनने के लिए अपनी नई साड़ी निकाली।

अनन्या के पिता ने मात्र दो सौ मीटर के सफ़र के लिए भी हमारे होटल तक बस भिजवाई थी। मैं बाहर खड़ा इंतज़ार करता रहा। मेरे परिवार की सभी महिलाएं अपने बालों को ब्लो-ड्राई कर रही थीं और लिपस्टिक लगा रही थीं। साढ़े पाँच बजते ही पैनिक कॉल्स शुरू हो गए।

'पुरोहितों ने अग्नि प्रज्जवलित कर दी है। मंत्रजाप शुरू हो गया है अनन्या के पिता ने कहा।

'दो और बुज़ुर्ग महिलाएं तैयार हो रही हैं हम जल्द से जल्द पहुंच रहे हैं मैंने कहा और फ़ोन रख दिया।

साढ़े पाँच बजे हम मंडपन् में पहुंचे। अनन्या के नाते-रिश्तेदार पहले ही सबसे अच्छी सीटों पर कला जमा चुके थे। पुरोहित तक पहुंचने के लिए मुझे ठसाठस भरे नाते-रिश्तेदारों के बीच से जगह बनाकर गुज़रना पड़ा।

दूल्हे की मां यहां बैठेंगी, पुरोहित ने कहा, और यदि पिता न आए हों तो कोई भी वरिष्ठ पुरुष संबंधी...

'मेरे पिता यहां मौजूद हैं मैंने कहा।

अनन्या के पैरेंट्स अपनी सीट पर से उछल पड़े। 'वेलकम अनन्या के पिता ने कहा, 'अब आपका बुखार कैसा है?'

'बुखार? कैसा बुखार? 'पापा ने अपनी जगह संभालते हुए कहा।

पुरोहित जोशोखरोश से मंत्रोच्चार करते रहे। रज्जी मामा अपने सभी संबंधियों की ओर सेरेडॉन स्ट्रिप्स बढ़ाते रहे क्योंकि सभी के सिर में दर्द हो रहा था। दूसरी तरफ़ अनन्या के अंकल्स एक-दूसरे की ओर द हिंदू की प्रतियों बढ़ाते रहे। शादी के दौरान भी वे नॉलेज पाने का मौक़ा नहीं छोड़ना चाहते थे।

'क्रिश, आ जाओ, 'अनन्या के पिता ने पाँच मिनट की प्रार्थना के बाद कहा।

क्या?

'तुम्हें चेंज करना होगा। मैं तुम्हारी मदद करता हूं 'उन्होंने बड़े सहज भाव से कहा। मैंने मेरून रंग का नया रेशमी कुर्ता-पायजामा पहन रखा था, जो मा ने मेरे लिए खरीदा था। 'इससे काम नहीं चलेगा, 'मैंने पूछा।

अनन्या खिलखिलाकर हँस पड़ी। अनन्या के पिता ने अपना सिर हिलाया और खड़े हो गए। मैं उनके पीछे-पीछे मुख्य हॉल के पास स्थित एक रूम में चला गया। उन्होंने दरवाज़ा लगा दिया। 'अपने कपड़े उतारो उन्होंने कहा।

'क्या? 'मैंने कहा। उन्होंने अपनी अंगुली से मेरे कुर्ते की ओर इशारा किया।

'जी, मैं ख़ुद निकाल लूंगा, 'मैंने झिझकते हुए कहा और अपना कुर्ता उतार दिया।

'पायजामा भी, 'उन्होंने कहा। मुझे कॉलेज के दिनों में हुई अपनी रैगिंग की याद आ गई। 'क्या यह जुरूरी है? 'मैंने कहा। मैं सोच रहा था कि क्या इस अवस्था में शादी के मंडप में जाने से मंत्रों का असर ज़्यादा होगा।

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। उनका हाथ मेरे पायजामे के नाई की ओर बढ़ ही रहा था कि मैंने तय किया मुझे ख़ुद ही शर्म-हया छोड़कर यह काम करना होगा। मैंने सफ़ेद अंडरवियर पहनी थी, जिस पर कई मिकी-माउस उछलकूद मचा रहे थे।

'ये तुमने क्या पहन रखा है?'

मैंने छह डिज़्नी थीम्द अंडरवियर्स का पूरा पैक खरीदा था। मैंने सोचा था कि अब चूंकि अनन्या से मेरी शादी होने जा रही है और उसे कार्टून कैरेक्टर्स बहुत अच्छे लगते थे, इसलिए शायद वह इसे पसंद करेगी। ज़ाहिर है, मैं अपने जल्द ही होने वाले ससुरजी को अंडरवियर पहनने का यह कारण नहीं बता सकता था।

'मुझे क्या पता था कि शादी में मेरी अंडरवियर का भी डिस्प्ले होगा? 'मैंने कहा। अनन्या के पिता के चेहरे पर चिंता की लकीरें थीं।

'क्यों क्या हुआ? 'मैंने पूछा।

'तुम्हें यह वेश्ठी पहनी होगी, 'अनन्या के पिता ने कहा और मुझे एक साफ क्रीम रंग की लुंगी दी। वह 'राम तेरी गंगा मैली 'में मंदाकिनी द्वारा झरने के नीचे नहाने वाले सीन में पहने गए कपड़ों की तरह थी।

'मुझे यह पहनना होगा? कैसे? 'मैंने लुंगी को उठाकर देखा। सुबह की किरणें उसमें से छनकर आ रही थीं।

'चलो, मैं तुम्हें दिखाता हूं 'अनन्या के पिता ने कहा और मेरी हैरत का तब कोई ठिकाना नहीं रहा, जब उन्होंने मेरी अंडरवियर में अपना आधा हाथ घुसा दिया। मैं सोचने लगा कि क्या कोई दूल्हा अपने ससुर पर यौन उत्पीड़न का मुकदमा दायर कर सकता है?

'प्लीज़, पहले मैं कोशिश करता हूं 'मैंने कहा। यक़ीनन, नर्वसनेस के कारण मैं फोकस नहीं कर पा रहा था। वेश्ठी बार-बार फिसल जा रही थी और मिकी माउस अंडरवियर पहनकर खड़ा मैं रुआसा हुआ जा रहा था।

'लाओ मैं कर देता हूं केवल एक मिनट लगेगा अनन्या के पिता ने उदारता दिखाते हुए कहा, ठीक वैसी ही उदारता जो डॉक्टर किसी बच्चे को इंजेक्यान लगाने से पहले दिखाता है।

मैंने अपनी आखें बंद कर लीं। अपने प्यार को हासिल करने के लिए यह आखिरी अपमान मुझे सहना ही पड़ेगा, मैंने सोचा। बस चंद घंटे और, उसके बाद यह सब ख़त्म हो जाएगा। वेश्ठी को फिट बैठाने के लिए एक बार अंकल के हाथ उस जगह तक भी जा पहुंचे, जहां उन्हें नहीं पहुंचना था। कुछ लोग कहते हैं कि यह रसम इसलिए रखी गई है ताकि यह पता लगाया जा सके कि दूल्हे के साजो-सामान सही-सलामत हैं या नहीं। अगर वाक़ई ऐसा है तो अंकल ने इस रस्म को बहुत सफाई-से अंजाम दिया था।

'हो गया? 'जब अंकल ने मेरी लुंगी की आखिरी चुन्नटें भी ठीक कर दीं, तब मैंने पूछा। मैंने अपने आपको आइने में देखा। दुनिया

से मेरी पहली टॉपलेस मुलाकात चंद लम्हों में होने जा रही थी। मेरी पारदर्शी वेश्ठी में से मिकी माउस खिलखिलाते हुए झांक रहे थे। कोई दिक्कत नहीं, बस कुछ देर की ही तो बात है मैंने ख़ुद से कहा।

'देखो, अब तुम्हारी शादी की सभी तस्वीरों में मिकी माउस भी आ जाएंगे, 'अंकल ने कंफर्म करते हुए कहा कि अपमान के ये लम्हे महज़ कुछ देर ही नहीं रहेंगे, ये ज़िन्दगीभर मेरा पीछा करते रहेंगे।

'तुम अंडरवियर बदलना चाहोगे? तुम मेरी पहन सकते हो। हम अदला-बदली करें?' उन्होंने कहा।

मैंने उनकी ओर देखा। मैं सोच रहा था कि उन्होंने अभी-अभी जो कहा था, क्या वाक़ई वह उन्होंने ही कहा था। 'चलिए, चलते हैं। मेरी शादी का मुहूर्त निकला जा रहा है। 'हम बाहर आए और मुझे देखते ही मेरे कजिन्स बुक्का फाड़कर हँस पड़े। 'मिकी माउस, 'मेरी पाँच साल की कज़िन चिल्ला पड़ी। निश्चित ही, अब कोई भी मिकी माउस को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था।

अनन्या नौ गज लंबी गहरे लाल रंग वाली एक रेशमी साड़ी में बैठी थी। उसने हीरे और सोने का कंठहार पहन रखा था। उसे देखकर लग रहा था, मानो वह कोई अप्सरा हो, जो मेरी पहुंच से बहुत दूर नहीं है।

'इस तरह की अंडरवियर पहनने की भला क्या ज़रूरत थी? 'उसने मेरे कानों में फुसफुसाते हुए कहा।

'मैंने यह तुम्हारे लिए ली थी... मेरा मतलब है हम दोनों के लिए, 'मैंने कहा।

'एक्सक्यूज़ मी? 'उसने कहा। पुरोहित ने हमें इस तरह मंडप में बतियाने के लिए झिड़क दिया और अपनी प्रार्थनाओं पर ध्यान केंद्रित करने को कहा। किसी ने मेरी आँखों पर स्कार्फ बौध दिया, ताकि मैं अगले दस मिनट तक कुछ न देख पाऊं। शायद यह शादी के दौरान दुल्हन से बतियाने की सजा थी, लेकिन मुझे किसी ने नहीं बताया कि ऐसा क्यों किया गया। मेरी आँखों से स्कार्फ हटा लिए जाने के बाद भी प्रार्थनाएं जारी रहीं।

'ठीक है अब आप काशी यात्रा के लिए जाइए, 'एक घंटे बाद पुरोहित ने कहा। उसने मुझे एक छाता और गीता की एक प्रति दी।

'इसका मतलब? 'मैंने कहा।

अनन्या के पिता ने मुझे समझाया। मुझे खड़े होकर यह कहना था कि मेरी शादी में कोई रुचि नहीं है और मैं साधु बनने के लिए काशी या वाराणसी जा रहा हूं। पता नहीं मुझे छाता क्यों दिया गया था, लेकिन मुझे उसे खोलकर अपने सिर पर तान देना था। इसके बाद अनन्या के पिता को मेरे पास आकर मुझे राजी करना था कि मैं साधु बनने के बजाय उनकी बेटी से ब्याह कर लूं।

मैंने तय किया कि मैं इस रस्म को बहुत अच्छे-से निभाऊंगा, क्योंकि वेश्ठी पहनने वाली रस्म की तो मैं पहले ही बारह बजा चुका था। मैं खड़ा हो गया, अनन्या के पैरेंट्स की ओर मुंह बनाकर देखा और हॉल से बाहर चला गया। अनन्या के पिता मेरे पीछे आए लेकिन मैं तेज़ व्हदमों से चलता हुआ उनसे दूर चला गया। मैं हॉल के बाहर मेन रोड पर आ चुका था। एक ऑटो वाले ने मुझे देखा और मेरे पास चला आया।

'व्हेयर, व्हेयर? 'उसने पूछा, उसका इंजिन अब भी फ़र्स्ट गियर में गड़गड़ा रहा था।

'काशी? 'मैंने कहा।

'काशी कहां है?' उसने पूछा।

'वाराणसी, यूपी में मैंने कहा।

'सेंट्रल स्टेशन? सत्तर रुपया लगेगा, सर, 'उसने कहा।

मैंने सिर घुमाया और अनन्या के पिता को मुझसे बीस मीटर के फासले पर देखा। चूंकि हम ज़िन्दगी में केवल एक बार ही शादी करते हैं इसलिए मैं तय कर चुका था कि काशी यात्रा की रस्म को सबसे बेहतरीन तरीक़े से निभाऊंगा।

मैं ऑटो में बैठ गया। ऑटो तेज़ गति से चल पड़ा।

'हे अनन्या के पिता फुल वॉल्यूम में चिल्लाए।

'वे कौन हैं?' ऑटो ड़ाइवर ने पूछा।

'कोई नहीं, 'मैंने कहा 'अब रुक जाओ। '

मैं ऑटो से बाहर निकला। अनन्या के पिता दौड़ते हुए मेरे पास आए।

'ये तुम क्या कर रहे हो? 'उन्होंने हांफते हुए पूछा।

'काशी जा रहा हूं 'मैंने कहा और मुस्करा दिया, 'आपने मुझे यह तो बताया ही नहीं कि मुझे रुकना कब है। '

उन्होंने मेरी बौह जोरों से भींच ली। 'अंदर चलो उन्होंने मुझे भीतर मंडपन् की ओर खींचते हुए कहा।

'अरे, आप मुझे अपनी बेटी से ब्याह करने के लिए राजी नहीं करेंगे? 'मैंने कहा।

इसके बाद हमारी शादी में कुछ और तमिल रह. हुईं। हमने मालाई मात्राल किया, जिसमें पंजाबी जयमाला की ही तरह वर-वधू एक-दूसरे से फूलमालाएं बदलते हैं। इस रस्म के दौरान अनन्या के नाते-रिश्तेदारों ने उसे ऊपर उठा लिया था और वह मेरी पहुंच से बाहर हो गई थी। मेरे नाते-रिश्तेदारों ने इसे एक चुनौती माना और मुझे उससे भी ऊपर उठा दिया। रज्जी मामा को यह समझने में थोड़ा समय लगा कि यह सब महज़ खेल है और वे अनन्या के एक अंकल से तक़रीबन झगड़ ही पड़े। इसके बाद ऊंजल की रस्म हुई जिसमें मैं और अनन्या एक झूले में बैठे और उसके संबंधियों ने हमें दूध में डूबे केले के छोटे-छोटे टुकड़े खिलाए। आखिरकार हम फिर अग्नि वेदी के पास जा बैठे और उसके संबंधियों ने हमें दूध में डूबे केले के छोटे-छोटे टुकडे खिलाए। आखिरकार हम फिर अग्नि वेदी के पास जा बैठे। कन्यादान की अंतिम रस्म के लिए अनन्या अपने पिता की गोदी में बैठी थी।

'ही, 'मैंने ख़ुद से कहा 'मैंने अपनी मंजिल को तक़रीबन पा लिया है। '

अनन्या और मैंने हल्दी के लेप में डूबे नारियल को थाम रखा था। अनन्या की मा ने उस पर जल डाल दिया। अनन्या अपने आसुओं को नहीं रोक पाई। मैंने उसके गले में सोने का मंगलसूत्र बौधा, जिसमें एक आयताकार पेंडेंट था। इस पेंडेंट को मांगल्यधारणम्

की ताली कहा गया था।

पुरोहित ने हमें सप्तपदी के लिए उठ खड़े होने को कहा। अनन्या और मुझे सात पवित्र क़दम साथ चलने थे। अनन्या की साड़ी और मेरी वेश्ठी के छोरों की गौठ बौध दी गई। और हमें एक-दूसरे का हाथ थामने को कहा गया। मैंने कई महीनों बाद अनन्या के स्पर्श को महसूस किया था।

‘तुम ठीक तो हो ना? ‘मैंने अनन्या से कहा। वह सिसकियौ भर रही थी।

‘तुम लड़की नहीं हो, तुम नहीं समझोगे, ‘अनन्या ने कहा और इसी के साथ पूरी ज़िंदगी चलने वाले ‘तुम नहीं समझोगे ‘की शुरुआत हुई जिसे विवाहित पुरुषों को हर रोज सहन करना पड़ता है।

मैंने अनन्या के पैरों के नीचे अपने पैर जमा दिए और अग्नि वेदी के इर्द-गिर्द सात क़दम चलने में उसकी मदद की। मैं उसके पंजों पर चौदी की अंग्हूइठयौ डालता जा रहा था।

जैसे ही सात कदम पूरे हुए, सभी ने तालियां बजाईं।

‘क्या हुआ?’ मैंने पूछा।

‘शादी की रस्में पूरी हो गईं। अब कमरे में जाकर सभी से आशीर्वाद लो, ‘मुख्य पुरोहित ने कहा।

मैंने मिस्टर स्वामी और उनकी पत्नी की ओर देखा। अब वे अनन्या के माता-पिता नहीं, मेरे सांस-ससुर थे। मैंने कर दिखाया था। दो स्टेट एक हो गए थे।

‘दो नमस्कारन् पुरोहित ने हमें निर्देश देते हुए कहा। अनन्या और मैंने सभी बुज़ुर्ग संबंधियों के सामने साष्टौग लेटकर उनके आशीर्वाद लिए। यह दुनिया की एकमात्र ऐसी शादी की रस्म थी, जिसमें कसरत भी करनी पड़ती थी।

‘मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है, ‘अनन्या के पिता ने हमें साष्टौग प्रणाम करने से रोकते हुए कहा।

‘भगवान तुम्हारा भला करे, ‘शिप्रा मासी ने मेरे चरण स्पर्श के उत्तर में कहा, ‘लेकिन अब मुझे नींद आ रही है, हमें होटल चलना चाहिए। '

'वे कुछ कहना चाहते हैं?' मैंने कहा। अनन्या और मैं हमारे रिसेशन में शाही कुर्सियों पर बैठे थे। कम से कम यह कार्यक्रम मेरे नाते-रिश्तेदारों को जाना-पहचाना लग रहा था, क्योंकि उन्हें खुले बगीचे में फूड स्टॉल्स नज़र आ रहे थे। हम मद्रास बोट क्लब में थे। पेड़ों से रंगीन बत्तियौ लिपटी हुई थीं। धुएं--से भरे मंडपनू के बाद झील के किनारे इस क्लब में हमें राहत महसूस हो रही थी।

'ही, वे पॉवरपॉइंट करना चाहते थे, लेकिन मैंने उसे रोका। वे तुम्हें अपनी स्पीच दिखाने के लिए होटल भी आए थे। '

'कब? 'मैंने कहा, 'मैं वहीं पर तो था। '

'थे तो, लेकिन दिन भर सो रहे थे, 'अनन्या ने कहा, 'वह केवल तुम्हारे खर्राटे ही सुन पाए। '

'तुम नहीं सोईं मैंने पूछा।

'सवाल ही नहीं उठता हमारे यहां इतने सारे मेहमान बाहर से आए थे। मैं पिछली दो रातों से सोई नहीं हूं। '

'इसके बावजूद तुम इतनी ख़ूबसूरत कैसे लग रही थीं? 'मैंने कहा।

वह शरमा गई। उसकी शरमाहट उसके कपड़ों के रंग से मेल खा रही थी। उसने इस शाम के लिए गुलाबी लहंगा पहन रखा था, जिस पर सोने-चौदी का खासा काम था। यह न केवल मेरे नाते-रिश्तेदारों बल्कि अनन्या की अपनी आटियों को भी हैरान कर देने वाली बात थी। बहरहाल, अब बहुत देरी हो चुकी थी। अनन्या की शादी हो चुकी थी। मेरे साथ। उस दूध के घुले हरीश की ऐसी-तैसी, मैंने सोचा और फिर मैं खुद को कोसने लगा कि आखिर मैं इस दिन उसके बारे में क्यों सोच रहा हूं।

'कॉन्ग्र्यूलेशंस, 'कोई अपरिचित व्यक्ति स्टेज पर हमसे मिलने आया और हम कैमरे के सामने सौवीं बार मुस्कराए।

डिनर नॉर्थ इंडियन था, लेकिन जायका दमदार नहीं था।

'इन लोगों ने गोभी-आलू को नारियल तेल में पकाया है मिंटी ने शिकायत भरे स्वर में कहा।

'कल हम सब जा रहे हैं मैंने कहा, 'तुम्हें जल्द ही अपने पराठे फिर मिलने वाले हैं। अब मुंह मत बनाओ और आइस्कीम खाओ। '

'हम केक कब काटेंगे? 'मेरे छोटे कजिन्स में से एक ने गार्डन के बीचो-बच रखे हुए एक केक की ओर इशारा करते हुए कहा, जिसे बिना अंडों के बनाया गया था। केक के पास एक छोटा-सा चबूतरा था, जिसके इर्द-गिर्द कुर्सियों लगी हुई थीं। एक वेटर ने हैंड-बेल बजाकर स्पीच और केक-कटिंग सेरेमनी की घोषणा की। सभी लोग पास आए और कुर्सियों पर बैठ गए। तमिल और पंजाबी एक-दूसरे की ओर देख रहे थे। लोग मेरी शादी अटेंड करने नहीं आए थे, वे दूसरी कम्मुनिटी के लाइव स्कूइज्यम को देखने आए थे।

'लेकिन डीजे कब शुरू होगा? 'मेरी एक कज़िन ने पूछा।

'धीरज रखो मैंने कहा।

अनन्या और मैं केक के पास खड़े हो गए। अनन्या ने पहले बोलने के लिए माइक लिया। 'यहां आने के लिए सभी को शुक्रिया। मैं आप सभी की शुक्रगुजार हूं कि आप हमारी खुशियों में शरीक हुए। ही, हमारी शादी ज़रा हटके है और हमें इस मकाम तक पहुंचने में खासा वक़्त लगा। इस वजह से यह शादी हमारे लिए और भी स्पेशल हो गई। अब मैं चाहूंगी कि मेरे प्यारे पापा आपसे कुछ शब्द कहें। '

अनन्या ने तालियां बजाकर अपने पिता का स्वागत किया। और लोगों ने भी उनका अभिवादन किया।

मेरे पापा और मा साथ बैठे थे और उनके चेहरे पर मुस्कराहट खिली हुई थी। कम से कम आज की रात तो उन्होंने एक-दूसरे के साथ होने का फैसला किया।

'हैलो एवरीवन, 'अनन्या के पिता ने कहा। 'मैं चाहूंगा कि लड़के वालों की ओर से भी कोई आए और कुछ कहे। '

उन्होंने पापा की ओर देखा। पापा ने हाथ जोड़कर ना कह दिया।

'मैं बोलूंगा रज्जी मामा ने कहा और अपना हाथ उठा दिया। ज़ाहिर है, वे बोट क्लब बार से होकर आए थे।

'वेलकम, एवरीवन, 'अनन्या के पिता ने शुरूआत करते हुए कहा। 'मुझे भाषण देना कभी अच्छा नहीं लगा, लेकिन पिछले साल अपने दामाद की मदद से मुझमें सार्वजनिक रूप से बोलने का आत्मविश्वास आ गया है। '

सभी की नज़रें मेरी ओर घूम गईं। ठीक है, ऑफिस प्रजेंटेशन देना एक बात है और अपने समुदाय के लोगों के सामने मन की बातें कह डालना दूसरी बात है। मैंने मन ही मन यह उम्मीद की कि अनन्या के पिता को यह पता हो कि वे क्या कर रहे हैं।

'मैं जानता हूं कि पार्टी में आप सभी लोग एक ही विषय के बारे में सबसे ज़्यादा बात कर रहे होंगे: आखिर स्वामी अपनी बेटी की शादी नॉर्थ इंडियन लड़के से क्यों कर रहा है? मैं जानता हूं क्योंकि अगर हम आपकी जगह होते तो हम भी यही बात कर रहे होते। '

सभी लोग खी-खी कर हँस पड़े।

'इन फेंक, जब अनन्या ने हमें सबसे पहले क्रिश के बारे में बताया, तो हम लोग बहुत अपसेट थे। जैसा कि सभी तमिल जानते हैं हमें अपनी संस्कृति पर बहुत गर्व है। हम यह भी सोचते थे कि हमारी बिटिया लाखों में एक है। उसका विवाह हमारी कम्मुनिटी के सबसे अच्छे लड़के से होगा। फिर उसने एक पंजाबी लड़के को क्यों ?' चुना

पार्टी में कौजीवरम साड़ी पहने हर महिला ने सिर हिलाया। लेकिन पंजाबियों में कोई हलचल नहीं हुई।

'हमने अनन्या का मन बदलने की हरसंभव कोशिश की। हमने क्रिश के साथ भी बहुत अच्छा बर्ताव नहीं किया, जबकि वह हमारे लिए ही चेन्नई आया था। हमने अनन्या को तमिल लड़के भी दिखाए। लेकिन आजकल के बच्चों को तो आप जानते ही हैं वे अपने मन की ही करके रहते हैं। '

इस बार सभी ने समझदारों की तरह सिर हिलाया।

'फिर आखिर पैरेंट्स को ऐतराज़ क्यों लेना चाहिए? 'उन्होंने कहा और अपने चश्मे को ठीक किया। 'सवाल केवल दूसरी कम्मुनिटी का ही नहीं है बात यह भी है कि हमारी बेटी ने अपने लिए एक जीवनसाथी का चयन किया है। पैरेंट्स होने के तौर पर हम

इससे निराश हुए थे। हमें लगा कि जैसे हमें दरकिनार कर दिया गया हो। हम अपने बच्चों को पाल-पोसकर बड़ा करते हैं फिर वे इस तरह हमें नज़रअंदाज़ कैसे कर सकते हैं? हमारी सारी झल्लाहट गुस्से के रूप में बाहर निकलती है। हम प्रेम विवाहों से कितनी नफ़रत करते हैं, है ना? '

अनन्या की आटिया मुस्करा दीं।

'लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि ऐसा इसलिए हुआ है, क्योंकि आपका बच्चा दुनिया में किसी को प्यार करना चाहता है। क्या यह वास्तव में इतनी बुरी बात है? आखिर बच्चे प्यार करना किनसे सीखते हैं? हमीं से ना? आखिर, वे ज़िन्दगी में सबसे पहले अपने माता-पिता को ही तो प्यार करते हैं। '

अनन्या ने मेरी बौह को कसकर थाम लिया। लोग ध्यान लगाकर सुन रहे थे।

'वास्तव में बात बड़ी सरल है। जब आपका बच्चा किसी नए इंसान से प्यार करता है तो आप या तो इसे किसी से नफ़रत करने का एक और मौक़ा मान सकते हैं। उस इंसान से, जिसे आपके बच्चे ने चुना है और उसके परिवार से। हमने भी कुछ समय तक यही किया। लेकिन आप इसे कुछ और लोगों को प्यार करने का एक अवसर भी मान सकते हैं। और, ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को प्यार करने में भला कौन-सी बुराई है? '

वे एक गिलास पानी पीने के लिए रुके और फिर बोलने लगे। 'ही, मेरे भीतर का तमिल ज़रूर ज़रा निराश है लेकिन मेरे भीतर का भारतीय बहुत खुश है। और इससे भी बढ़कर बात यह कि मेरे भीतर का इंसान तो सबसे ज़्यादा खुश है। आखिर हमने इस मौके का इस्तेमाल ऐसे लोगों को हमसे जोड़ने के लिए किया है जिनसे हम प्यार कर सकें। '

उन्होंने माइक झुका लिया। अनन्या ने उन्हें कसकर गले लगा लिया। तालिया गूंज उठीं। अनन्या और मैंने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच केक काटा। हमने एक-दूसरे को और अपने-अपने परिवार वालों को केक खिलाया। कैमरामैन ने दोनों परिवारों को एक मुप फ़ोटो के लिए एकजुट किया।

'अनन्या, देखो हम दोनों के पैरेंट्स मुस्करा रहे हैं मैंने कहा।

रज्जी मामा उठ खड़े हुए और स्पीच देने के लिए माइक संभाल लिया।

'मिंटी के डैडी को रोको, वे छह शो लगा चुके है कमला औटी ने कहा।

लेकिन तब तक रज्जी मामा की स्पीच शुरू हो चुकी थी। उन्होंने अपना हाथ उठाते हुए कहा, 'लेडीज एंड जेंटलमैन। '

मैं उनके पास गया।

'रज्जी मामा, बस कीजिए। आपके जैसा कूल इंसान बोरिंग स्पीच नहीं दे सकता, 'मैंने उनके कानों में फुसफुसाते हुए कहा।

'रियली? क्या हमें उन्हें जवाब नहीं देना चाहिए?' उन्होंने कहा।

'यह कोई कांपीटिशन तो है नहीं, 'मैंने कहा।

लेकिन उन्होंने बोलना शुरू कर दिया, 'लेडीज एंड जेंटलमेन ऑफ़ तमिल नाडु, थैंक यू -बेरी मच, अब मैं आपको डीजे पर कुछ पंजाबी स्टाइल डासिंग के लिए इनवाइट करता हूं। '

मेरे कजिन्स झट से उठे और दौड़कर डांस फ्लोर पर जा पहुंचे।

सॉना कलेक्शान हिंदी और तमिल फिल्मी संगीत का मिश्रण था। उनके पास पंजाबी न्तुड़क की भी एक सीडी थी, जिसे रज्जी मामा ने लूप में बजाने की हिदायत दी थी। डांस क्लोर पर मेरे परिवार के लोगों का बोलबाला था, लेकिन अनन्या ने अपनी आटियों और अंकलों से कहा कि वे भी वहां जाकर नाच में शामिल हों। मेरे ख़्याल से अब वे लोग भी मेरा परिवार ही थे।

रज्जी मामा मेरे नए परिवार के सदस्यों को इंप्रेस करने के लिए एक मुश्किल भांगड़ा-केक डांस स्मृज्न स्टेप करने के चक्कर में गिरते-गिरते बचे। मेरे कजिन्स ने मुझे और अनन्या को एक क्लॉज़ डांस के लिए धकेल दिया। मैंने अनन्या को बौहों में थाम लिया। हम डांस क्लोर पर पहुंचे।

'अनन्या, 'मैंने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा।

'क्या? 'उसने धीमे-से पूछा।

'मैं तुम्हें प्यार करता हूं और तुम्हारे पिता, तुम्हारी मां, तुम्हारे भाई और तुम्हारे सभी सगे-संबंधियों को भी, 'मैंने कहा।

'और मैं भी तुम्हें और तुम्हारे सभी नाते-रिश्तेदारों को प्यार करती हूं 'उसने कहा। हमने एक-दूसरे को चूम लिया। तमिल और पंजाबी हमारे इर्द-गिर्द नाच रहे थे।

'तो, हमने जो लक्ष्मण रेखा खींची थी, आज हमने उसे भी पार कर लिया है। तुमने कहा था ना कि हम यह तभी करेंगे, जब तक कि हम अपनी मंजिल को न पा लें मैंने कहा।

तुम पुरुष लोग क्या हमेशा इसी बारे में सोचते रहते हो? 'उसने कहा।

उपसंहार

कुछ सालों बाद

'क्या मेरा यहां होना ठीक है? 'मैने डिलीवरी रूम में लेटी अनन्या से पूछा। बीच मे खिंचा हुआ एक परदा उसके शरीर के ऊपरी और निचले हिस्से को अलग कर रहा था। डॉक्टरों ने उसे हाफ-बॉडी एनेस्थेटिक दिया था, जिसकी वजह से वह सी-सेफ्यान के दौरान भी जागी हुई रह सकती थी। परदे के दूसरी तरफ़ स्पेशलिस्टों की एक टीम उसके पेट को काट रही थी।

'उनके पास चाकू है 'मैने डॉक्टरों की ओर झांकते हुए कहा। मेरा सिर चकरा रहा था।

'मुझे हैरान मत कर, किसी और चीज़ के बारे में बात कर, 'उसने कहा। 'किताब का काम कैसा चल रहा है? '

'बेल, कल पांचवें पब्लिशर ने भी रिजेक्ट कर दिया, 'मैने कहा और परदे के उस तरफ़ झांकने के लिए फिर उठ खड़ा हुआ। 'एट लास्ट, अब मैं छठे पब्लिशर के पास तो जा सकता हूं... वॉव्र देयर इज़ ब्लड। '

'यदि तुम यह सब देखना बर्दाश्त नहीं कर सकते तो बैठ जाओ, और इतना डरो मत। एपिड्यूरल के कारण मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हो रही है 'उसने कहा। डॉक्टर ने बिना जनरल एनेस्थेसिया के सीजेरियन की सिफारिश की थी।

'काश तुम देख पाती, 'मैने कहा, 'ववि मुझे एक लेग दिखाई रही है। यह तो एलियन *3* की तरह है। '

'शट अप, 'उसने कहा।

'हे ये तो लड़का है 'मैने कहा।

'क्या वह मेरे जैसा दिखता है? '

'? श्त? नहीं अँ अभी तक उसका चेहरा नहीं देखा है। मैने तो केवल वही चीज़ देखी है। तुम जानती हो क्या। '

डॉक्टर ने पूरे बच्चे को बाहर निकाला।

'थैंर्क यू डॉक्टर थैंर्क यू सो मच, 'मैने भावनाओं में बहते हुए कहा और उनसे हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ा।

'अभी रुको, 'डॉक्टर ने कहा। उनका मुह मास्क के पीछे छुपा हुआ था।

'क्या हुआ? 'अनन्या ने पूछा।

'पता नहीं, 'मैने कहा। 'ओह वेट एक और लेगा ववि, एक और लड़का। '

'जुड़वां? 'उसने कहा। उसे यक़ीन ही नहीं हो रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह अभी राश खा जाएगी।

'येस्र 'डॉक्टर ने कहा, 'कॉन्तेव्यूलेशंस। '

नर्स ने दोनों बच्चों को धो-पोर्छकर मेरे हवाले कर दिया।

'ऐहतियात से 'उसने कहा। मैने दोनों बच्चों को अपनी दोनों बांहों में थाम लिया।

'आप दोनों दो अलग-अलग स्टेट्स से है ना? तो फिर, ये बच्चे किस स्टेट से हां?? 'नर्स ने कहा और मुह दबाकर हँस पड़ी

'वे एक ही स्टेट से होंगे, जिसका नाम है भारत, 'मैने कहा।

विशेष सूची